PRAKRIT TEXT SERIES No. 30

SVAYAMBHŪDEVA'S

RIṬṬHAṆEMICARIYA

(HARIVAṀSAPURĀṆA)

PART III (1)

JUJJHA-KAṀḌA

EDITED
BY
RAM SINH TOMAR

PKAKRIT TEXT SOCIETY
AHMEDABAD
1996

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

PRAKRIT TEXT SERIES No. 30

: General Editors :
D. D. Malvania H. C. Bhayani

SVAYAMBHŪDEVA'S

RIṬṬHAṆEMICARIYA

(HARIVAṀSAPURĀṆA)

PART III (1)

JUJJHA-KAṀḌA

EDITED
by
RAM SINH TOMAR

PKAKRIT TEXT SOCIETY
AHMEDABAD
1996

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Published by :

Dalsukh Malvania
Secretary,
Prakrit Text Society
Ahmedabad-380 009.

(c) Ramsinh Tomar

First Edition 1996

Price : 150-00

Printes by :

Dharnendra Kapadia
Dharnidhar Printers
42, Bhadreshwar Society,
Shahibag Road,
Ahmedabad-380 004.
R. 6631074

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राकृत ग्रन्थ परिषद् : ग्रन्थाङ्क–३०

कइराय-सयंभूदेव-किउ

रिट्ठणेमिचरिउ
(हरिवंसपुराणु)

तृतीय खण्ड (प्रथम भाग)

जुज्झ–कंड

: संपादक :

राम सिंह तोमर

प्राकृत ग्रन्थ परिषद्

अहमदाबाद.

१९९६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विषयानुक्रम

निवेदन

तइयं जुज्झ कंडं

तेत्तीसमो संधि	१
चउतीसमो संधि	११
पणतीसमो संधि	२१
छत्तीसमो संधि	३०
सत्ततीसमो संधि	४१
अट्ठतीसमो संधि	५१
उणतालीसमो संधि	६१
चालीसमो संधि	७२
एक्कचालीसमो संधि	७९
बायालीसमो संधि	८७
तेतालीसमो संधि	९६
चउतालीसमो संधि	१०५
पंचचालीसमो संधि	११४
छायालीसमो संधि	१२५
सत्तचालीसमो संधि	१३७
अट्ठचालीसमो संधि	१५०
उणपण्णासमो संधि	१६१
पण्णासमो संधि	१७३
एक्कपण्णासमो संधि	१८१
बावण्णासमो संधि	१९२
तिवण्णासमो संधि	२०४
चउवण्णासमो संधि	२१४
पंचवण्णासमो संधि	२२७
छप्पण्णमो संधि	१
सत्तावण्णमो संधि	९
अट्ठावण्णमो संधि	१७
उणसट्ठिमो संधि	२५
सट्ठिमो संधि	३२
एक्कसट्ठिमो संधि	४६
बासट्ठिमो संधि	५४
तेसट्ठिमो संधि	६५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

General Editors' Foreword

The Prakrit Text Society has great pleasure in publishing herewith a part of the third Kāṇḍa, the Jujjha-kaṁḍa, as Part III (1) of Svayambhūdeva's *Riṭṭhaṇemicariya* (Ariṣṭanemicarita) or *Harivaṁsapurāṇa* edited by Professor Ramsinh Tomar. Due to several reasons including printing difficulties this part appears after a lapse of three years after the pubulication of the Jāyava-kaṁḍa. This Part (Sandhis 33–63) contains the text of the first thirtyone Sandhis out of sixty Sandhis of the Jujjha-kaṁḍa. We had planned to inclnde in this part the text up to Sandhi 55, the rest of the Jujjha-kaṁḍa forming the second part. But fearing that it would involve further delay, we are publishing whatever was ready. Hence the discrepancy in pagination. Svayambhū has closely followed Vyāsa's *Mahābhārata* for the main narrative accomodating of course characteristically Jain variations. For the accounts of various battles in the Bhiṣma Parvan and the Droṇa-parvan he is guided by the Mahābhārata. He drops all the long descriptions, dialogues etc. and presents an epitome of the incidents and scenes. A discussion of the manner of his utilization of the Mahābhārata we reserve for the subsequent part

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

along with the interesting enquiry as to which recension of the latter was before Svayambhū. That would be also useful in determining the date-limit of that recension.

The Prakrit Text Society is thankful to Prof Tomar for making available to it his edition of the *Riṭṭhaṇemicariya* for publication.

We thank Shri Dharmendra Kapadia for his cooperation in the printing work.

Dalsukh Malvania
H. C. Bhayani

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जुज्झ-कंडं

तेत्तीसमो संधि *

मगहापुर-परमेसरु पुच्छइ गणहरु कुरुव-कंडु गउ खेमेहिं ।
पंच-महावय-धारा मयण-वियारा जुज्झ-कंडु कहि एवहिं ॥१

[१]

परमेसरु अक्खइ सेणियहो सम्मत्त-लद्धि-अक्खोणियहो
सुणु मुह-मज्झत्तु (?) कहंतरहो जउहरेहिं पराजउ जह परहो
गय पंडव दारावइहे थिय गोविंदे सुहि-पडिवत्ति किय
दिवसावसाणे णिसि-आगमणे सु-मणोहरि-रुप्पिणि-वर-भवणे
वीभच्छु कहइ दामोयरहो कुडिलत्तणु कुरु-परमेसरहो
दोवइ-केस-ग्गहु वण-वसणु किम्मीर-सरीर-वीर-महणु
तव-तालुय-णीय-जीय-हरणु दुज्जोहण-बंदि-मोक्ख-करणु
कीया-विणिवायणु गो-गहणु अहिवण्णुत्तर-पाणिग्गहणु
तं तुम्ह-पसाएं सव्वु हरि पंडवहं तरंडउं होहि वरि

---

* The following four verses are found in J. at the end of the Kuru-kāṇḍa :

सव्वे-वि सुया पंजर-सुयव्व पढिअक्खराइं सिक्खंति ।
कइरायस्स सुओ पुणु, सुओव्व सुइ-गब्भ-संभूओ ॥१
होसंति पिय-सुहिय-माणुसाइं मिलि-त्ति जुवइ-संघाया ।
सामग्गि तुम्ह सरिसा पुण्णेहिं विणा ण संपडइ ॥२
अरि भमर भसलइं दिंदिर छप्पय रे दुरेह भणिओ सि ।
मालइ समं च कुसुमं पुणो-वि जइ मालइ-च्चेव ॥३
अस्ति का तस्करी राजन् राष्ट्रे त्वद्-भुज-पालिते ।
आदायादाय मे मांसं प्रीणयत्यात्मनस्तनौ ॥४

1·2 समारणु 9.a. वयणे किं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

कण्हु-वि कहिवि(?कहइ) कहाणउ॑ णरहो चिराणउ पूयण-विहलीकरणउ।
रिट्ठ-कंठ-संकोडणु अज्जुण-मोडणु गिरि-गोवद्धण-धरणउं॥

[२]

जलयर-आऊरणु अहि- यणु सारंग-पमाण-समायरणु
कालिंदी-दहि कालिय-दमणु मुट्ठिय-चाणूर-कंस-वहणु
जीवंजस-परियण-संथवणु मगहाहिव-साहण-पट्ठवणु
जायव-कुल-कोडी-णिग्गमणु देवय-परिरक्खणु वण-गमणु
जिण-जम्मणु रुप्पिणि-अवहरणु दप्पुद्धर-चेदि-राय-मरणु
महएवी-गोवी-परिणयणु वम्मह-उप्पत्ति पुणागमणु
मायंग-विसेस-वेस-करणु णिय-माउल-कण्णा-अवहरणु
अणिरुद्ध-कुमारहो ओयरणु संवुब्भउ संव-समायरणु

घत्ता

रयणिहिं कहिउ कहाणउं ताम विहाणउं थिउ अत्थाणे जणद्दणु।
परिमिउ वंधव-सयणेहिं विहसिय वयणेहिं सुरेहिं णाइं संकंदणु॥

[३]

तहिं अवसरे पभणइ दुमय-सुय इंदीवर-दीहर-दाम-भुय
णारायण-णेमि-हलाउहहो सिणि-सच्चइ-णिसढ-दसारुहहो
अणिरुद्ध-सच्च-पिहु-पज्जुणहो उत्तर-विराड-धट्ठज्जुणहो
तुम्हइ-मि मज्झु ण परित्त किय पंडव अवहेरि करेवि थिय
सुहु दुक्खु चविज्जइ केण सहुं केस-ग्गहु हियवउ डहइ महु
दूसासणु अज्ज-वि जियइ जहिं वोल्लिज्जइ केसव काइं तहिं
किं भीमहो गरुय-गयासणिए × × ×
तहिं अवसरे जेहिं ण जुज्झियउ वलु आयहं सव्वहं वुज्झियउ

घत्ता

कहिं पंडव कहिं बंधव थिय जच्चंध-व को-वि णाहि महु सरणउं ।
दूसासण-सव सत्तहे परिह पवत्तहे(?) वरि करे अब्भुद्धरणउं ॥ ९

[४]

णारायणु पभणइ जायवहो पंचालहो मच्छहो पंडवहो
तहो बंधव-सयण-विरोहणहो दिट्ठइं कम्मइं दुज्जोहणहो
कवडक्खेहिं वसुमइ अवहरिय अण्ण-वि दोवइ-चिहुरेहिं धरिय
किं कहिमि णिरिंदहं एह किय जे णिग्गुण ताहं जे होइ सिय ४
गुणवंता गुणेहिं अलंकरिय तरलच्छिए लच्छिए परिहरिय
लच्छि-वि अलच्छि विणएण विणु जा जगे णिंदिज्जइ जेव तिणु
ते कउरव-णिम्मल-कुल-तिलय पंडव पुणु विक्कम-णय-णिलय
वप्पिक्कउ-अद्ध-महीयलहो किं होइ ण होइ जुहिट्ठिलहो ८

घत्ता

कहहो कहहो सामंतहो णं तो मंतहो महि संदेह-वलग्गी ।
किं पंडवहं ण जुज्जइ कुरुहुं जे भुंजइ सयल-कालु आवग्गी ॥ ९

[५]

संकरिसणु पभणइ कहहो हरि महु चित्तहो भावइ एहु वरि
णउ कण्णहो णउ दुज्जोहणहो णं सउणिहे णउ दूसासणहो
आयहो एक्कहो वि ण दोसु तहिं कहिं धम्म-पुत्तु दुव्वसणु कहिं
सव्वह-मि अणत्थहं मूल-दलु जूयहो जे पहावें णट्ठु णलु ४
दुव्वोलहं कुलहरु कलह-णिहि पज्जलइ झत्ति जहिं कोव-सिहि
सव्वत्थ-हारि संताव-भरि तं काल-कुट्टु-वि सु-खद्धु वरि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वरि उप्परि चडिउ हुवासणहो वरि जीविउ गउ जम-सासणहो
वरि मंडल गंधारिहिं(?) वसिउ ण-वि जूअ-विढत्तउ अहिलसिउ ८

घत्ता

जहिं णरिंदु जूयारिउ अह परयारिउ वसुमइ-रणपिंडु मंडइ ।
तं देसु वि णंदंतउ दुण्णयवंतउ लच्छि जणद्दण छंडइ ॥ ९

[६]

तं णिसुणेवि सच्चइ कुइउ मणे णं गज्जिउ पलय-मेहु गयणे
सह-मंडवे तिण-समु गणेवि मइं संकरिसण वोल्लिउ काइं पइं
तुहुं चक्किहे गुरु णारायणहो वसुएव-सरिसु अहिवायणहो
को अवरु जुहिट्ठिलु अहिखिवइ को फणिवइ फण-कडप्पु छिवइ ४
परमेसरु सोम-वंस-तिलउ जहिं अच्छइ सो पवित्त णिलउ
मह-णरु एहु गुरु भीमज्जुणहो को करइ ण पक्खवाउ गुणहो
पइसारमि इंदपत्थु णयरु देवावमि दुंदुहि-सुर-पयरु
अच्छहो पेच्छंता हरि-वलहो हउं एक्कु पहुच्चमि पर-वलहो ८

घत्ता

चूरमि रह-गय-वाहणु कउरव-साहणु उब्भिय-वीर-पडायहो ।
अच्छउ तुडिहे वलग्गी महि आवग्गी देमि जुहिट्ठिल-रायहो ॥ ९

[७]

कियवम्मु ताम मणे विक्कुइउ णं धूमिरु धूमकेउ उइउ
जइ तुहुं अणिराइउ पंडवहं तो मिलिउ गंपि हउं कउरवहं
जाणिज्जइ तुम्हहं अम्हह-मि सुहडत्तणु रणमुहे सव्वह-मि
वारमइ मुएप्पिणु नीसरिउ अक्खोहणि-साहण-परियरिउ ४

6.9.a भां. भडायहो; ज. उज्झिववीय खडायहो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गउ पासु ताम दुज्जोहणहो दुण्णय-दुज्जस-कलि-रोहणहो
एत्तहे-वि णियंतहं जायवहं सिरि-रामालिंगिय-अवयवहं
तवतणय-जमल-भीमज्जुणहं उत्तर-विराड-धट्ठज्जुणहं
दुमएण पुरोहिउ पट्ठविउ दूयत्तणु सयलु वि सिक्खविउ ८

घत्ता

गउ गयउरु कुरु-राउले णरवर-संकुले पइसारिउ पडिहारें।
वर-वायरणब्भंतरे सुत्त-णिरंतरे सिसु(?) जिह पच्चाहारें ॥ ९

[८]

धयरट्ठें पुच्छिउ दूय कहे किं कुसलाविग्घेहिं आउ पहे
किं कुसलु जुहिट्ठिल-राणाहो भीमहो भुवणुण्णय-माणाहो
किं कुसलु स-णउलहो अज्जुणहो सुर-भुयणुच्छलिय महा-गुणहो
किं कुसलु सव्व-लहुयाराहो सहएवहो अणुवय-धाराहो ४
किं कुसलु सुहद्दहे दोवइहे उत्तरहे पवड्ढिय-उण्णइहे
अहिमण्णु-कुमारहो किं कुसलु जो माय-पियंघि-कमल-भसलु
किं कुसलु राम-णारायणहं अवरह-मि अणेयहं सज्जणहं
तो चवइ दूउ धयरट्ठ सुणि सव्वह-मि कुसलु णियमेण मुणि ८

घत्ता

कुसलु जुहिट्ठिल-रायहो सयण-सहायहो णय-विक्कम-संपण्णहो।
पर महि-अद्धु ण देंतहो अवगुण लेंतहो अकुसलु कउरव-सेण्णहो ॥९

[९]

णिय-वयणु पडीवउ संवरइ धयरट्ठु जुहिट्ठिलु संभरइ
तुहुं पंडु विउरु तिहिं भेउ ण-वि पणवइ गंगेय-दोण-किव-वि
अहिवायणु सव्वहं पट्ठविउ जं जेंव आसीसु परिट्ठविउ
तं तेंव धयरट्ठु समल्लवहो सुहु जीवहो कुरुव-णराहिवहो ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मं भडयण मच्छर पडिहउ दुज्जोहणु तिहुयण-जसु लहउ
विस-जउहर-जूअइं ढोइयइं केस-गह-वसणइं जोइयइं
अवराइ-मि छलइं जाइं कियइं तहुं ताइ मि चित्ते णाहि थियइं
संधाणु समिच्छइ तव-तणउ मं वंसु विणासहो अप्पणउ ८

घत्ता

तो वुच्चइ जच्चंधे कुरुवइ-खंधें रण-भर-सयइं पडिच्छइ ।
महु ण करइ णिवारिउ दुट्ठु णिरारिउ दुक्करु संधि समिच्छइ ॥ ९

[१०]

महु पुत्तहो एक्कु जे गाहु पर संधाणु ण करइ ण देइ घर
जिह फणि ण फणामणि अल्लियइ जिह कुंजरु मोत्तिउ णउ धिवइ
जिह रवि ण समप्पइ णियय पह जिह सुरवइ देइ ण णियय सह
स-कसाय-वाय-संखोहिएण वोल्लिज्जइ दुमय-पुरोहिएण ४
खग-णाहहो काइं करेइ फणि फड मोडेवि तोडेवि लेइ मणि
सीहहो करि-कुंभइं केत्तियइं पाडेविणु कड्ढइ मोत्तियइं
रवि जइ-वि णहंगणे संचरइ पह गहकल्लोलु तो-वि हरइ
जसु पुण्णइं सो इंदत्तणउं अवहरइ कवणु एउ चिंत-णउं । ८

घत्ता

सायरु रयणइं जोयइ कहो वि ण ढोयइ कायंवरि-मय-मत्तउ ।
ण सुण्णइ सुरह-मि भासिउ तासु जे पासिउ णवर विरोलणु पत्तउ ॥ ९

[११]

रसु उच्छु ण देइ अ-पीलियउ गंधु वि फलोहु अण-सीलियउ
चंदणहो अ-पिट्ठहो गंधु ण-वि साहारु अ-भग्गु ण देइ सवि
कसवट्टए कंचणु णिव्वडइ जइ तुम्हहं सव्वहं आवडइ
तो सुंदरु संधि-कज्जु करहो मा जलणे जलंतए पइसरहो ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंडवहं परक्कम संभरहो विसु भक्खिउ णिग्गय जउहरहो
राहा हय परिणिय दुमय-सुय अवहरिय सुहद्द सुहद्द-भुय
ओहामिय खंडवे अमर-सय तव-तालुय-कालकेय णिहय
कुरुवइ मेल्लाविउ दुज्जएण सहुं विग्गहु कवणु धणंजएण

घत्ता

स-सर-सरासण-हत्थे एक्कें पत्थें गो-गह काइं ण पाविय ।
कण्ण-दोण-दूसासण किव-दुज्जोहण दंतेहिं तिणइं धराविय ॥

[१२]

तं सरि-णंदणु चवइ स-णेहउ जं जं भणहि दूय तं तेहउ
तहिं काले कण्णु कोवारुणिउ आहुइहिं हुयासणु णं हुणिउ
दुव्वियड्ढहो संढहो णिग्गुणहो वलु केत्तिउ वण्णहो अज्जुणहो
जइयहुं दोमइ दूसासणेण कड्ढिय णिय-करि णिव-दूसणेण
णव-णलिणि व मत्त महा-गएण लंकेसर-घरिणि व अंगएण
तवसुय-जम-भीम सहे जएण(?) तइयहुं किउ काइं धणंजएण
वइयत्तण-वयण-विरोहिएण स-कसाएं वुत्त पुरोहिएण
केस-ग्गहु जं ण मुयावियउ तं जणे अणुराउ चडावियउ

घत्ता

चंगउ किउ पइं अत्तणु कण्ण भडत्तणु अग्गए भाइ णिहम्मइ ।
अज्जुण-वाणहं संकेवि अंगइं ढंकेवि विह णासेप्पिणु गम्मइ ॥

[१३]

तुहुं दुण्णउ दुज्जसु तुहुं जे कलि उप्पण्णु कण्णु तुहुं कुरुहुं सलि
सिय णासिय पइं दुज्जोहणहो तुहुं पलउ असेसहो साहणहो
तुहुं पंडव भारहि तुहुं जे वलु तुहुं दुम्मुहु सव्वहं खलहं खलु
खउ आणेवि कउरव-पंडवहं अवहरेवि सहोयर-बंधवहं

11.9.a ज. हणणसमत्थे 12.8 b अणुराउ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कहे मरेवि लहेसहि कवण गइ णरए-वि ण सुज्झहिं अंगवइ
वंभणु भणेवि ण-वि तें वि हउ धयरट्ठें पुज्जिउ दूउ गउ
गावग्गण-णंदणु सिक्खविउ तहो पच्छए संजउ पट्ठविउ
वारवइ पराइउ दिट्ठु पहु णं दोस-णिहाएं गुण-णिवहु ८

घत्ता

किउ अहिवायणु धीरेहिं पंडव-वीरेहिं तेण-वि ताहं णियत्तियउ ।
कुसलाकुसलि करेप्पिणु आसणु देप्पिणु पुच्छिउ कुरु-वलु केत्तिउ ॥ ९

[१४]

गावग्गण-णंदणु अतुल-वलु वोल्लइ पप्फुल्लिय-मुह-कमलु
दुज्जोहणु सयल-कला-अहिउ एयारह-अक्खोहिणि सहिउ
जोइज्जइ जइ तो कुरु-णरहं तुम्हइं जि ताहं वलु भायरहं
तव-णंदणु पुणु वि वोल्ल करइ धयरट्ठु काइं मइं संभरइ ४
दूसासण-कण्ण-सउणि-कुरव किं संभरंति णर-वावरव(?)
किं संभरंति जलयर-रसिउ खय-काले णाइं वइवस-हसिउ
किं सरइ तिगत्तउ उत्थरिउ सहएव-णउल-भीमहुं चरिउ
किं सरइ असेसु वि कुरव-वलु जं पत्थें गोग्गहे किउ विहलु ८

घत्ता

णय-विक्कम-गुण-भरियइं पंडव-चरियइं ताइं काइं ण वियप्पइ ।
जेण दुजोहण राणउ पिसुणु अयाणउ वसुमइ-अद्धु ण अप्पइ ॥ ९

[१५]

तो वियसियच्छि-मुह-कंजएण तव-णंदणु पभाणिउ संजएण
गंधारि-भडारा संभरइ जइ रज्जु जुहिट्ठिलु परिहरइ
धयरट्ठु सुट्ठु सुमरंतु थिउ जं विसेण भीमु ण-वि खयहो णिउ
सुमरिय तुम्हइं दूसासणेण जउहरे-वि ण दड्ढ हुयासणेण ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुमरइ केस-ग्गहु दोमइहे जइ तत्ति ण किज्जइ वसुमइहे
तं कुरव-राउ संभरइ मणे मेल्लाविउ वइरिहिं केंव रणे
संभरिउ पत्थु दुज्जोहणेण किह ण लइउ सिरु सहुं गोहणेण
चंपाहिउ चंगउ संभरइ जइ तुम्ह मज्झे मज्झिमु मरइ
संभरइ सउणि जइ वीसरेवि अच्छहो बारमइहिं पइसरेवि

घत्ता

काइं जुहिट्ठिल आएं वयणुग्घाएं जुज्झु कंखु रणे रोहणु ।
अच्छउ महि खलु खेत्तु-वि तिल-तुस-मित्त-वि देइ णाहि दुज्जोहणु ॥

[१६]

कुरु कुरु-कुल-चित्तें दइव-हय तुम्हइं परमागम-पार-गय
ते णिग्गुण तुम्हि गुण-अहिया णय तुम्ह होंति दुण्णय-सहिया
जसु तुम्हहुं दुज्जसु ताहं घरे महि ताहं परक्कमु तुम्ह-करे
ते णिग्घिण तुम्हइं खंति-कर ते स-कलुस तुम्हइं धम्म-पर
गुरु वप्पु पियामहु जहिं मरइ जहिं बंधव-जणु उवसंहरइ
जहिं महरिसि-गो-बंभणहुं दुहु सो कवणु रज्जु तं कवणु सुहु
जइ सक्कहो तो वरि कहि-मि गय णउ दोण-पियामह वे-वि हय
जइ सक्कहो तो वरि तव-चरणु णउ बंधव-सयणहुं किउ मरणु

घत्ता

वरि अण्णइं दुद्धरिसइं तेरह वरिसइं अच्छिय कहि-मि महावणे ।
णउ जच्चंधे जाया सय-णव-राया घाइय भूमिहे कारणे ॥

[१७]

सुहि मारेवि कारणे दुज्जसहो लइ काइं करेसहो वइवसहो
ढुक्कइ पच्छइ जें जर-मरणु तहि अवसीरे तुम्हहो को सरणु
पर-वइरु अणेय-भवंतरइं णउ सोक्खइं लहहो णिरंतरइं
अट्ठारह अक्खोहिणिउ जहिं सिद्धंति सत्ति किर कवण तहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुहुं धम्म-पुत्तु दय-धम्म-परु खम-दम-सम-सच्च-सउच्च-धरु
जइ अद्धु ण देंति दीण-वयण तो किं मारेवा पइं सयण
जइयहुं दिवसयर-सम-प्पहेण कइकइहे दिण्णु वरु दसरहेण
तइयहुं वइसणउं वसुंधर-वि किं रामें भरहहो दिण्ण ण-वि ८

घत्ता

भीमज्जुणेहिं विरुद्धेहिं वुच्चइ कुद्धेहिं ताम समरे पहरेसहुं ।
लग्गेवि कुरुहुं कडच्छए णिहयहं पच्छए पायच्छित्तु चरेसहुं ॥ ९

[१८]

जोएप्पिणु वयणु धणंजयहो संदिसइ जुहिट्ठिलु संजयहो
भणु कुरुव-णराहिव केत्तिएण णिय-धम्मु चरेवउ खत्तिएण
करवालु करेप्पिणु पवरु करे जो हणइं हणेवउ सो समरे
ताह-मि महि-अद्धु ण देंताहुं अम्ह-वि बलिवंडए लिंताहुं ४
जं होइ होउ तं आहयणे गावग्गणि गंपिणु एम भणे
णारायणु भासइ सार-गउ जुज्झेवउ कारणु पद्धरउ
परिपुज्जिउ संजउ वियड-पउ सरहसु धयरट्ठहो पासु गउ
वित्तंतु कहिज्जइ राणाहो लइ आउ विणासु अयाणाहो ८

घत्ता

विक्कम-वल-संजुत्तेहिं पंडव-पुत्तेहिं तुम्हहं सिह भंजेवी ।
दासि जेम उज्जलए वसुमइ कलए लेवि सइं भुंजेवी ॥ ९

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलासिया-सयंभुव-कए

तेत्तीसमो सग्गो

*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउतीसमो संधि

आहासइ दूउ माण–गइंदारोहणहो ।
करे संधि अयाण देहि बुद्धि दुज्जोहणहो ॥१

[१]

इच्छहि जइ गयउरु णंदंतउ इच्छहि जइ कुलु रिद्धिहे जंतउ
इच्छहि जइ जीयंतइं सयणइं इच्छहि जइ सुवण्ण-मणि-रयणइं
इच्छहि जइ धणइं असरालइं इच्छहि जइ चामीयर-थालइं
इच्छहि जइ वहु-रसणा-दामइं इच्छहि जइ गोहणइं पगामइं ४
इच्छहि जइ सोवण्णइं छत्तइं इच्छहि जइ णिय-पुत्त-कलत्तइं
इच्छहि जइ स-रज्जु सीहासणु इच्छहि जइ जियंतु दूसासणु
इच्छहि जइ हय-गय-रह-वाहणु चाउरंगउ चउ-पासिउ साहणु
इच्छहि जइ समिध्धु कुरु-जंगलु इच्छहि जइ णिय-गोत्तहो मंगलु ८

घत्ता

तो दिज्जउ संधि दिज्जउ अध्दु वसुंधरिहे ।
मा कमे णिवडंतु कुरु-मिग अज्जुण-केसरिहे ॥ ९

[२]

वुत्तउ किण्ण करेहि अकारणे दुज्जय पंडव होंति महारणे
जहिं विराडु जहिं दुमउ स-संदणु जहिं सहाउ सयमेव जणद्दणु
जहिं पज्जुण्णु विज्जाहर-सामिउ जेण काल-संवरु ओहामिउ
जहिं सच्चइ अक्खोहणि-साहणु जहिं वसुएउ महागय-वाहणु ४
जेण सयंवरे रोहिणि-केरए लाइउ पर-वलु वहे विवरेरए
जहिं वलएउ हलाउह-हत्थउ जहिं अपमाणउ तुरय-चलत्थउ
जहिं आहुट्ठ-कोडि जायव-वलु णं मज्जाय-चत्तु सायर-जलु ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

जहिं णेमिकुमारु जो णिसुणिज्जइ आरिसेहिं ।
तहिं कुरुव-णरिंद कवणु गहणु तुम्हारिसेहिं ॥ ९

[३]

कउरव-णाह-जणेरु णिरुत्तरु जाउ णाउ मुहे एक्कु-वि अक्खरु
गावग्गाणि पयट्टु णिय-भवणहो ढुक्कु दिवायरो-वि अत्थवणहो
विउरु-वि कोक्काविउ घयरट्ठें कहे पंचंगु मंतु विणु छट्ठें
तेण-वि वुत्तु काइं मंतिज्जइ पढमउ-परम-धम्मु चिंतिज्जइ ४
जेत्थु धम्मु तहिं सव्वइं कज्जइं जेत्थु धम्मु तहिं विउलइं रज्जइं
जेत्थु धम्मु तहिं सच्च-सउच्चइं जेत्थु धम्मु तहिं कुलइ-मि उच्चइं
जेत्थु धम्मु तहिं सव्वइं दाणइं जेत्थु धम्मु तहिं दंसण-णाणइं
जेत्थु धम्मु तहिं सव्वइं सुक्खइं जेत्थु धम्मु तहिं होंति ण दुक्खइं ८

घत्ता

धम्मो-वि अहम्मु णाह पयट्टइ हिंस जहिं ।
पंडवेहिं समाणु वइरु करेप्पिणु सोक्खु कहिं ॥ ९

[४]

धम्में हूय देव अजरामर धम्में धरिय धरणि स-धराधर
धम्में सायर समउ ण चुक्कइ धम्में ओसहिं खयहो ण ढुक्कइ
धम्में वाइ वाउ महि-मंडले धम्में सग्ग-रिद्धि आहंडले
धम्में णहयले गह-णक्खत्तइं धम्में हलहर-चक्कहरत्तइं
जं जं दीसइ काइ-मि चंगउं तं तं धम्में णिम्मिउ अंगउं
धम्मु जे कम्मणु धम्मु रसायणु × × ×
धम्मु महा-चिंतामणि भावइ धम्मु जे पुण्ण-पवित्त-पयावइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

धम्मेण णरिंद पाएहिँ पडइ पुरंदरु-वि
विणु एक्कें तेण थाइ परम्मुहु कुलहरु-वि ॥ ८

[५]

दुज्जोहण-जणेरु पडिजंपइ परम--धम्मु सो केण विढप्पइ
कहइ णरिंदहो विउरु सणेहें धम्मु विढप्पइ अप्पण-देहें
धम्मु विढप्पइ विविह-पयारेहिँ अज्जव-सच्च-सउच्चायारेहिँ
धम्मु विढप्पइ सुह-परिणामें भत्ति पुव्व-गुरुदेव-पणामें ४
धम्मु विढप्पइ खम-दम-भावें उज्जम-संजम सील-सहावें
धम्मु विढप्पइ उत्तम-वुद्धिए काय-वाय-मण-कम्म-विसुद्धिए
धम्मु विढप्पइ दंसण-णाणें आगम-अभयाहार-पदाणें
धम्मु विढप्पइ वहु-उववासेहिं आएहिं अवरेहि-मि विण्णासेहिं ८

घत्ता

अह किं वहुएण छुडु जाणिज्जउ धम्म-विहि ।
धम्मेण जे राय लब्भइ अक्खय-सुक्ख-णिहि ॥ ९

[६]

धम्मु विढप्पइ पंच-पयत्थेहिँ हिंसालिय-चोरी-थी-गंथेहिँ
कवण हिंस इंदिय-विद्धंसणे काम-कोह-मय-मोह-विणासणे
कवणु असच्चु पाणि-परिरक्खणे सव्वस-हरणावसरे अणक्खणे
चोरिय कवण धम्म-पच्छायणे णिय-गुरु-अवगुण-सम-सम्मायणे ४
मेहुणु कवणु सिद्धि-पाणिग्गहे कवणु परिग्गहु गंथ-परिग्गहे
एंव विढप्पइ पंचहिँ भेयहिँ कवणु धम्मु जो होइ ण एयहिँ
धम्महो लक्खणु एत्तिउ सीसइ अप्पउ परेण समाणउ दीसइ
पंचहुं एम सुरक्खणु किज्जइ चिंतिउ तहि-मि धम्मु पाविज्जइ ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

जो रक्खइ हिंस मुह-गुज्झयरहिं चरण किय
तहो होइ णरिंद आण-वडिच्छिय मोक्ख-सिय ॥ ९

[७]

सव्वहं पुट्ठि-मंसु विरुयारउ होइ अणेयहुं दुक्खहुं गारउ
जो ण-वि छिप्पइ छम्मत्थेणं पायछित्त णिद्धम्म-कहेणं
धम्म-विणासु हवइ गुरु-णिंदणे जम्मु णिरत्थु जिणिंद-अ-नंदणे
पाउ महंतु दिंत-वारंतहुं गब्भिणियाहं गब्भु पाडंतहुं ४
गो-बंभण-रिसि वज्झ करंतहुं तीमइ-वाल-विद्ध-णासंहु
पइवय-देव-भोय-फेडंतहुं पडिमा-चोरी-पडिमा-खंतहुं
पावहिं पाउ पडइ तिहिं दिवसेहिं अहव ति-पक्ख-ति-मास-ति-वरिसेहिं
जेम जेम जम-जीउ पवज्जइ तइएणं सकुलेणुप्पज्जइ ८

घत्ता

जे देव मुवंति लेप्पिणु पंच-महव्वयइं ।
ते किमि-कुले जंति वरिसहुं सट्ठि-सहासयइं ॥ ९

[८]

वरि घाइ(य)उ साहु णउ हासिउ वरि णउ कियउ धम्मु विण्णासिउ
वरि ण चविउ विरुध्दु ण-वि भासिउ मरणु अणत्थु णिंद जसु पासिउ
दमिणु दुरुग्गमेण जं जायउ वरि ण दिण्णु तं दाणु पराइउ
वरि विस-तरु-मंजरि अग्घाई ण-वि सेविय पुण्णालि पराई ४
वरि तउ कियउ ण पच्छए खंडिउ वरि भरु लयउ अणंतरे छंडिउ
वरि पसाउ ण कियउ ण उद्दडियउ वरि णारूढु ण रुक्खहो पडियउ
वरि भंडणु ण कियउ ण-वि भग्गउ वरि जिणवरे ण लग्गु ण दुलग्गउ
वरि णउ कीय सेय ण दु-पालिय वरि दुणि-लित्त कम ण पक्खवालिय ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

वरि ण किउ सु-कामु पर-जुवई साणंदियइं ।
णा परहं कियाइं दुच्चरिएहिं वि णिंदियइं ॥

[९]

सो ण देहु जो धम्म विवज्जिउ सो ण धम्मु जो हिंस-परज्जिउ
ते ण वाल सिव-वाल-कडक्खेहिं जे ण सहंति लोउ रिसि-दिक्खहिं
ते ण सीस पर णिम्मिउ भारउ जेहिं ण पणविउ तिहुवण-सारउ
ते ण कण्ण तरु-कोडर-थाणइं जे ण सुणंति धम्म-वक्खाणइं
ते ण चक्खु पचक्ख भुयंगम जेहिं ण दिट्ठ देव-गुरु-आगम
णास-उडाइं ताइं अ-पसंसइं अग्घाइयइं जेहिं महु-मंसइं
त ण वयणु सुंदरु सव्वंगहुं जं वहु दुट्ठालाव-भुअंगहुं
सा ण जीह जा ण-वि पिय-वाइणि अच्छइ ललललंति जिह णाइणि
ते ण उट्ठ जे ण-वि विप्फुरिया जम्मण-मरणहुं कारणे डरिया

घत्ता

ते दंत ण दंत जेहिं अक्खद्धइं खद्धाइं ।
ते ण-वि आलाव जेहिं ण थोत्तइं वद्धाइं ॥

[१०]

सो ण कंठु पर थाणु सिलेसरु जेण ण गाइउ देउ जिणेसरु
सो ण हियउ जं जिणु अवहेरइ अप्पुणु इच्छइ इंदिय-पेरइ
ते ण हत्थ धणु जेहिं ण दिण्णउं चउ-कसाय-भवगहणु ण छिण्णउ
ताम ण ते-वि अदय अंगुलियउ जेहिं जंतु इ सयलु वि दरमलियउं
ताइं ण सुंदराइं णक्खग्गइं जाइं असइ-थणवट्टहिं लग्गइं
तं ण पोट्टु जं गुण-परिहरियउं विविह-पयारेहिं दुरिएहिं-भरियउं
सो ण णियंव-पएसु रवण्णउं जो पर णारि-सएहिं पडिवण्णउं
ते ण पाय जे ण गय सु-खेत्तइं जम्मण केवल णिव्वुइ-मेत्तइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

किं चल-णयणेहिं णिय-गुरु-विणय-पयासिरिए ।
सेवियइं ण जाइं समणिंदिय तिहुयण-सिरिए ॥ ९

[११]

माणुसु वरिस-सयाउ पउत्तउ दस वहरसे सिसु-भाउ णियत्तउ
वीसेहिं वट्टेवउ परिसेसइं तीसेहिं जोव्वणु अवरु गवेसइ
परम-णेहु चालीसेहिं फिट्टइ पंचासेहि लायण्णु विहट्टइ
सट्ठिहिं विमल-चक्खु ण विहावइ सुइ सत्तरि वरिसेहिं ण पहावइ ४
तिहिं चालीसेहिं मयणु विणासइ दसणावलि णवइहिं विहासइ
वरिस-सएण सरीरु सिढिल्लइ गत्तु मसाणोवरिं टिरिटिल्लइ
जीवें जाएवउ एक्कंगें सो ण लइज्जइ केण-वि संगें
सुहुमु अंणाइ-णिहणु गुण-जाणउ कत्तउ भुत्तउ उद्ध-पयाणउ ८

घत्ता

तणु-मेत्तउ णिच्चु कम्म—विमुक्कउ णीसरइ ।
तिहिं समयहं मज्झे अवरे कलेवरे पइसरइ ॥ ९

[१२]

तहि-मि सुक्क-सोणियइं पडिच्छइ जणणी-जणियाहारु समिच्छइ
विणु वयणेण-वि सत्ति पदरिसइ तत्त-लोहु जिह जलु आकरिसइ
पहिलए मासे एम उप्पज्जइ वीयए पुणु वुव्वुउ णिप्पज्जइ
तइयए मासे पवड्ढिय-मंसउ होइ चउत्थए पुणु चउरंसउ ४
पंचमे पंचावयवालिद्धउ छट्ठए सिर-कर-चरण-समिद्धउ
सत्तमे अंगुलियउ णह-रोमइं णासिय-णयण-कण्ण-मुह-पोमइं
अट्ठमे णिद्द भुक्ख तिस जाणइं णवमए भव-सामग्गी-करणइं
दसमए अप्पाणउ दरिसावइ कंचुउ मुएवि भुवंगमु णावइ ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

तहो तेत्थु वि दुक्खु णाल-छेय-सुइ-विंधणइं ।
थण-दुद्धाहारु वज्झइ बंधव-वंचणइं ॥ ९

[१३]

दुक्किय-कम्म-पहावें विट्टलु होइ जीउ दुक्कम्महं पोट्टलु
सत्त-धाउ सत्तुप्परि-चम्मइं सत्तसट्ठि तीसद्ध स-मम्मइं
हड्डहं तिण्णि-सयइं सु-विसेसहं तिण्णि सयाइं जे संधि-पएसहं ४
अंतइं पंच-सयइं सण्णामहं सत्त-सयइं सिरहिं णव-थामहं
अट्ठवीस किमि-कुलहं रउद्दहं सोलह कंडुराउ णव छिद्दहं
असिय लक्ख रोमुग्गम-कोडिहिं बाहत्तरि सहास वर-णाडिहिं
मुत्तहो कुडउ दिवड्ढु पुरीसहो मत्थिक्कंजलि अंतरे सीसहो
सुक्कंजलि चउरंजलि सोणिउ छंजलि पित्तु ति-अंजलि पाणिउ ८

घत्ता

एउ अवरु वि जीउ कम्म-णिबद्धउ वहइ जहिं ।
दुग्गंध-सरीरि कवणु पएसु पवित्तु तहिं ॥ ९

[१४]

तहि-मि अणेय रोय कु-कलेवरे दस सिरे अट्ठवीस कण्णंतरे
लोयणे रोय वीस छाहत्तरि एक्कतीस णासउडहं उप्परि
पंचसट्ठि मुह-कुहरब्भंतरे गंड-भेय चउवीस गलंतरे
उरे एयारहामे अट्ठोयरे असी वाय कफ वीस कलेवरे ४
अट्ठवीस अट्ठारह पित्तइं वड्ढिउ सत्त तिण्णि वरे सत्तइं
चउ वम्मीय चयारि-वि अप्फर तेरह सण्णिवाय बारह जर
सास-कास-उम्माय-भगंदर गुम्म-वियप्प पंच-पंचावर
सत्त-अंत–विदिउ सलत्तउ(?) मडइ सार सड सरिउ पउत्तउ ८

14-1b ज. अट्ठतीस. 8 ज. सडइ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एय अणेय रोय सुह-उज्झिय   अवरहं केण संस पुणु वुज्झिय
वाहिहिं कह-व कइ-व जइ चुक्कइ   मरणु अणेय-पयारेंहिं ढुक्कइ

घत्ता

तडि-जलण-जलाइं   जुवइ-जीह-कर-पहरणइं ।
चोरारि-विसाइं   आयइं मरणहो कारणइं ॥

[१५]

तो-वि जीउ जीवेवउं वंछइ   जाइ-जरा-मरणइं ण णियच्छइं
मंड-मंड दालिद्दें दम्मइ   जिह कल्होडु भरेण णिहम्मइ
मंड-मंड पेल्लिज्जइ पावें   मच्छु जेम जल-जाण-सहावें
कोह-दवग्गि जासु संवज्झइ   सो णर-तरु सव्वंगिउ डज्झइ
जम्म-वेल्लि जो डहेवि सक्कइ   सो चउ-गइहिं भमंतु ण थक्कइ
तिहुवण-वामलूरि जो वसियउ   काल-भुयंगमेण सो डसियउ
जो संसारु मुएवि ण णासइ   तहो जम-काउ करोडिहिं वासइ
उवसम-सेढि चडेवि णियत्तइ   पहिलारए गुण-ठाणे पवत्तइ

घत्ता

दुक्कम्म-वसेण   जाइ जीउ हेट्ठा-मुहउ ।
जह कूव-खणेरु   सलिलुप्पत्तिहे सम्मुहउ ॥

[१६]

वरि तं कम्मु णराहिव किज्जइ   जेण परम-गुण-ठाणे चडिज्जइ
तहिं परमागमे छट्ठ-पयारउ   मिच्छाइट्ठि तेत्थु पहिलारउ
सासण-सम्माइट्ठि दुइज्जउं   सम्मा-मिच्छाइट्ठि तइज्जउं
अवरउं सम्माइट्ठि चउत्थउं   पंचमु विरयाविरउ णिउत्तउं

15.3 ज. जलजालपहावें.

पुणु छट्ठउं पमत्त-थाणंतरु अपमत्तु सत्तमउं अणंतरु
खवग-सेढि पुणु सत्तम-ठाणेहिं आरुहिएव्वी गुण-सोवाणेहिं
तेत्थु अपुव्व-करणु पहिलारउं पुणु अणिवित्ति-थाणु सुह-गारउं
सुहुम मोहु उवसंत-कसायउं खीण-कसाउ अवरु विक्खायउं
पुणु स-जोइ सयलामल-केवलु सव्वोवरि अ-जोइ परु णिक्कलु

घत्ता

सुह-कम्म-वसेण चडइ जीउ उप्परि-मुहउं ।
जिह थवइ थवंतु घरु घर-सिहरहो सम्मुहउं ॥

[१७]

तो दुव्वयणासीविस-सप्पें वुत्तु विउरु दुज्जोहण-वप्पें
जाणमि जिह परयारु ण रम्मइ जाणमि जिह पहु णरयहो गम्मइ
जाणमि जिह दय-धम्मु विढप्पइ जाणमि जिह जम-करणु झडप्पइ
जाणमि परम-मोक्खु जिह णाणें सग्गु तवेण भोगु वर-दाणें
जाणमि जेम पाउ पारंभइ जाणमि सव्वु जेम जं लब्भइ
जाणमि जीउ जेम उप्पज्जइ जाणमि जिह सरीरु विप्पज्जइ
जाणमि जेम वहइ दुग्गंधइं रस-वस-सोणिय-मंस-समिद्धइं
जाणमि जिह वाहिहिं आढप्पइ जाणमि जिह गुण-थाणु विढप्पइ

घत्ता

जाणणहं ण जंति विसमइं चित्तइं कउरवहं ।
अच्छउ महि-अद्धु एक्कु-वि गामु ण पंडवहं ॥

[१८]

पभणइ विउरु विउरु कुरु णिग्गुण दुज्जय होंति वे-वि भीमज्जुण
जेहिं णियत्तिय विण्णि-वि गोग्गह जाहं गया-गंडीव परिग्गह
तेहिं समाणु कवणु समरंगणु णच्छइ अब्भिडंतु दुज्जोहणु
धुउ मरिएव्वउ कउरव-लोएं पइ कंदेवउ वड्ढिय-सोएं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं एवड्डु दुक्खु को पेक्खइ   मणु मह्रु तणउं तवोवणु कंखइ
परम-धुरंधरु होज्जहि रज्जहो   हउं पुणु जामि थामि णिय-कज्जहो
णमि-णेमिहिं णवकारु करेप्पिणु   णिय-सिरे मुट्ठिउ पंच भरेप्पिणु
जाउ महारिसि विंझे पइट्ठउ   किउ तउ जो पुरुएवें दिट्ठउ   ८

घत्ता

सण्णास-विहिए   कइहि-मि दिवसेहिं कालु किउ ।
इच्छिय--सुहाइं   सग्गे सइं भुंजंतु थिउ ॥   ९

*

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुव-कए
चउतीसमो सग्गो ॥३४॥

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

पणतीसमो संधि

राय-लच्छि-लंछिय-उरहो रण-धुर-धरण किणंकिय-खंधहो ।
स-वलु स-वाहणु सामरिसु कुरुवइ मिलिउ गंपि जरसंधहो ॥ १

[१]

जहिं वंछिय-विग्गहु कुरुव-राउ किव-कण्ण-पियामह-गुरु-सहाउ
पइसरइ तित्थु चक्कवइ-दूउ विण्णाण-कला-गुण-सार-भूउ
उवविसणु देवि सव्वायरेण परिपुच्छिउ कुरु-परमेसरेण
किं कुसलु णरिंदहो तणए गेहे किं साणुराय सिय वसइ देहे ४
किं णंदण आणावसि विहेय किं किंकर परहं अइण्ण-मेय
किं हय-गय-रह-रण-भर-समत्थ किं आण-पडीवा वइरि-सत्थ
किं मागह-मंडलु णिरुवसग्गु किं कालजमणु केण-वि ण भग्गु
किं जायव सयल करंति सेव किं पुच्छिउ दुज्जोहणेण एव ८

घत्ता

वुत्तु णरिंद-महत्तरेण सव्वहं कुसलु अणुज्झिय-सेवहं ।
एक्कहं णवर स-बंधवहं अकुसलु वासुएव-वलएवहं ॥ ९

[२]

कउ कुसलु कण्ह-संकरिसणाइं पडिवक्खु पिहिमि-परिपालु जाहं
कउ कुसलु असेसहं जायवाइं कुद्धउ चक्कवइ-कयंतु जाहं
सुणु कुरुवइ वइयरु कहउं तुज्झु जिह केसव-चक्केसरहं जुज्झु
जवणहो जावण-जाण-जुत्त वारवइहे मज्झे वहु वाणि-पुत्त ४
गय पुरु अम्हारउ भंडु लेवि परमेसरु दीसइ तेहिं एवि
मरगय-पवाल-मुत्ताहलेहिं कलहोय-महामणि-कंवलेहिं
तो राएं अखलिय-सासणेण संभासिय-पिय-संभासणेण
किं तुम्हहं कुसल सरीर-वत्त किं सहल मणोरह सहल जत्त ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

वुत्तु णाहु णाइत्तएहिँ मंछुडु आय रायगह-घट्टणे ।
अम्हहं होउ विढत्तएण मूलहो संसउ वट्टइ पट्टणे ॥

[३]

जइ तिहियत्थित्तणु होंत राय तो किं वारवइ मुएवि आय
जा सायरु सारेवि वासवेण णिम्मविय कुवेरें केसवेण
मेलवेवि पंच पुर एक्क-लग्ग अट्ठारह-कुल-कोडी-समग्ग
भुंजइ समुद्दविजय हो अमेय कामिणि-व वियड्ढहो वसि विहेय
वसुएउ जेत्थु जहिँ कामपालु जहिँ महुमहु णर-सुर-पलय-कालु
उप्पण्णु भडारउ णेमि जेत्थु को वण्णेवि सक्कइ रिद्धि तेत्थु
अवइण्णु मणोहरु जहिँ अणंगु किउ जेण कालसंवरहो भंगु

घत्ता

सो जणवउ सा वारवइ ते जायव सो संववहारु ।
जइ णिवसिय दस दिवस तहिँ तो संसारहो इत्तिउ सारु ॥

[४]

तं वयणु सुणेवि चक्कवइ-दुहिय जीवंजस पुण्णिम-चंद-मुहिय
मुच्छंगय णिवडिय भूमि-भाए सहयरिहिँ भणंतिहिँ उट्ठि माए
सिंचिय हरियंदण-वाहिणीहिँ विज्जिय चल-चामर-गाहिणीहिँ
कह-कह-वि समुट्ठिय कंस-पत्ति णं मगहाहिवहो महा-सिरत्ति
संतेण-वि पइं चक्केसरेण वसुमइ-ति-खंड-परमेसरेण
णिहि-रयणद्धद्ध-धुरंधरेण अमरह-मि रणंगणे दुद्धरेण
संतेण-वि पइं एहिय अवत्थ विहवत्तणु णिरलंकार हत्थ
संतेण-वि पइं पइ-मरणु पत्तु संतेण वि पइं जीवंति सत्तु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

तं णिसुणेवि मगहाहिवेण धीरिय धीय माए किं रोवहि ।
अज्जु-व कल्ले-व तव करमि जें व वइरि सिज्जहं सोवहिं ॥ ९

[५]

विणिवाइय जेहिं विसुद्ध-वंस मुट्ठिय-पलंव-चाणूर-कंस
ते स-वल-स-वाहण णंद-गोव णिट्ठवेवि ठवेवि एक्को व दो व
दारावइ जइ कल्लइ ण लेमि तो जलणे जलंतए झंप देमि
अवलोइय मंति स-मच्छरेण णं रासि-गएण सणिच्छरेण ४
कइयहु-मि ण पाविय एह वत्त जिह वल-णारायण रिद्धि-पत्त
णरवइ विण्णविउ महत्तरेहिं चिंतविय विचित्त-पडुत्तरेहिं
ते हरि-वल णउ सामण्ण देव दुव्विसह वलुद्धुर सावलेव
अहिठाणु जासु किउ वासवेण संगामु कवणु सहुं केसवेण ८

घत्ता

चेइ-राउ रणे जेण जिउ जसु सहाउ सयमेव पुरंदरु ।
तेण समउं वरि संघि किय जुज्झेवउ कुसुमेहि मि अ-सुंदरु ॥ ९

[६]

महुसूयणु पूयण-पलय-लीलु आरुट्ठ-रिट्ठ-णिट्ठवण-सीलु
जमलज्जुण-दुम-भंजण-सरीरु गोवद्धण-धर-धरणेक्क-धीरु
आसीविस-विसहर-सयण-कारि गय-संख-चक्क-सारंग-धारि
कालिंदिय-कालिय-काल-वासु चाणूर-कंस-मुट्ठिय-विणासु ४
सय-वार-णिवारिय-कालजमणु अवराइय-जीविय-अंत-गमणु
सो केण धरिज्जइ णरवरेण जसु दिण्णइं रयणइं सायरेण
जसु भायरु भायरु कामपालु सयणिज्जउ तिहुयण-सामिसालु
वसुएउ वप्पु वसु-मयणु पुत्तु अवइण्णु जणद्दणु सो णिरुत्तु ८

5. 4b रासिहो थिएण.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

जिह लंकाहिउ लक्खणहो जिह हयगीउ तिविट्ठ-णरिंदहो।
वर करेणु जिह केसरिहे तिह तुज्झु देव गोविंदहो ॥

[७]

णिय-मंति-वयण-दुप्पवण-छित्तु मगहाहिउ हुयवहु जिह पलित्तु
मरु मारमि मारण-पयहो ढुक्कु किर मंति भणेवि एत्तडेण चुक्कु
ते णंद-गोव केत्तडिय वत्थु जइ रूसमि तो तिअसहुं समत्थु
पेसिउ सुमित्तु णामेण दूउ जो सयल-कला-कुल-करण-भूउ
भणु जायव-संदहो मिलेवि थाहो जिव जीविउ लेप्पिणु कहि-मि जाहो
कुल-कोडिहिं ढुक्कु विणास-कालु परिकुविउ वसुंधर-सामिसालु
सयमेव पयाणु-वि दिण्णु आउ सायर-पमाण-साहण-सहाउ
मग्गइ गय घणु सारंगु अण्णु दारावइ रुप्पिणि पंचयण्णु

घत्ता

णाय-सेज्ज पण्णत्ति मणि जेव णागयइं असेसइं दिज्जहि।
जेंव अभिमहि समर-मुहे विहि णारायण एक्कु करेज्जहि ॥

[८]

हयवरहं सहासें दुज्जएण गयवरहं तहट्ठें रह-सएण
गउ दूउ पराइउ तुरिउ तेत्थु दारावइ सुर-णिम्मविय जेत्थु
तवणिज्ज-पुंज-पिंजरिय-देह मणि-रयण-किरण-विप्फुरिय-गेह
परिहा-पओलि-पायार-सार उत्तुंग-तोरणग्घविय-वार
वणि-वीहि-विहूसिय-णिरवसेस सइ जिह पर-पुरिसहं दुप्पवेस
पइसरिउ तित्थु आवास-मुक्कु जहिं महुमहु तं अत्थाणु ढुक्कु
पडिवत्ति जहारुह किय कमेण वोल्लिज्जइ अखलिय-विक्कमेण
परमेसरु तुम्हहुं साणुराउ एत्तडउ णवर गरुयउ विसाउ

8.8 a. भा. पिहिविसरु.

घत्ता

जल-दुग्गंतरे पइसरेवि जं अवहेरि करेविणु अच्छहो ।
जासु पसाएं एह सिय किं चक्कवइ-वयणु ण णियच्छहो ॥ ९

[९]

अवहेरि करेवए कवणु कालु जिह तुम्हइं तिह सो सामिसालु
सुमरइ समुद्दविजयप्पियाइं ओलग्गिय-धाविय-जंपियाइं
सुमरइ वसुएवहो तणिय लील सुमरइ णारायण बाल-कील
किं रज्जें जण्ण णियंतओय(?) जायव-कुल-द्धय-विट्ठि—भोय ४
किं रज्जें जाह हरि-बल ण वे-वि पइसंति महारउं भवणु एवि
किं रज्जें जहिं रिउ-गंध-हत्थि पज्जुण्णु संबु अणिरुद्ध णत्थि
सिणि-णंदणु पभणइ कोव-पुण्णु हरि मुएवि कवणु चक्कवइ अण्णु
जसु दिण्ण थत्ति रयणायरेण किउ पुरवरु अमरेहिं आयरेण ८

घत्ता

एक्कु चक्कु णारायणहो सोहइ जेण जियइं पर-चक्कइं ।
अवरइं लोयहं सावणइं(?) भग्गव-चक्क-सयइं करे थक्कइं ॥ ९

[१०]

जं णिंदिउ वसुमइ-सारभूउ तं हुयवहु जिह पज्जलिउ दूउ
चक्कवइ-चक्कु तिहुयणेण दिट्ठु जसु भइयए तुहुं सायरे पइट्ठु
जसु भइयए जायव-मिग वराय णिय जम्म-भूमि परिहरेवि आय
इत्थु वि णिवसंतहं पलय-कालु दक्खवइ महारउ सामिसालु ४
मीणउलइं भक्खेवि पिएवि मज्जु आरोडहि सुत्तउ सीहु अज्जु
णव-कोडिउ जासु तुरंगमाहं मण-पवण-गरुड-जव-जंगमाहं
सामेक्क-कण्ण-चंदप्पहाहं बावीस-वीस-लक्खइं रहाहं
गय तेत्तिय खत्तिय पुणु अणेय णिव णिय-णिय-सेण्णेहिं अप्पमेय ८

घत्ता

एयारह-अक्खोहणिहिं अज्जु कल्ले कुरुवइ-वि मिलेसइ ।
णाहु म्हारउ गरुडु जिह जायव-पण्णय-कुलइं गिलेसइ ॥ ९

[११]

जइ तुम्हहुं ण कारणु संगरेण तो एंव वुत्त परमेसरेण
पट्ठवहो पवर पण्णत्ति-विज्ज गय जलयरु रुप्पिणि णाय-सेज्ज
सारंगु सरासणु सहुं सरेहिं वारवइ लएवी कुरु-णरेहिं
तो दुज्जय दुद्धर दुण्णिवार हणु हणु भणंत उट्ठिय कुमार ४
णं हरि-किसोर गय-गंध-लुद्ध सयमेव संव-मयणाणिरुद्ध
अंकूर-विज्जरह-चारुजेट्ठ गय-दुंदुहि अवर-वि अमर-जेट्ठ
उद्धवणु करंत दसारुहेहिं कह-कह-व णिवारिय तुरिउ तेहिं
जिह दूउ तेंव वोल्लेवउं जे संकमओ उअरि वरि णिउंजे(?) ८

घत्ता

तो वलएवें पट्ठविउ जाहि दूय कहि णियय-णरिंदहो ।
सुहुं जीवहिं सामंतु जिह अप्पेवि चक्क-रयणु गोविंदहो ॥ ९

[१२]

गउ दूउ पयाणउं देवि तेत्थु वरु चार-चक्खु चक्कवइ जेत्थु
पणवेवि पाय पत्थिवहो वुत्त करि वइरिहिं उप्परि विजय-जत्त
ण गणेइ तुहारउं सउरि वयणु पच्चेलिउ मग्गइ चक्क-रयणु
तहिं अत्थ-धराधर-धरण-धीर एक्केक-पहाण-महा-पवीर ४
तहिं पंडव-दुमय-विराड-राय सत्तक्खोहिणि-साहण-सहाय
तहिं मिलिय तुहारा पुत्त वे-वि जय-विजय वलक्खोहिणिय लेवि
तहिं कइकय-चेइ-स-चेइयाण वसुएवहो णंदण अप्पमाण
तहिं सच्चइ-वल-केसव-सतोय जउ-जायव-अंधकविट्ठि-भोय ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

देव दुलंघउ वइरि-बलु तिह करि जिह रणउहे आवट्टइ ।
साम-भेय-दाणइं गयइं एवहिं खग्गहो अवसरु वट्टइ ॥ ९

[१३]

मेलावेवि हय-गय-णरवरोह हक्कारा जंतु अणंत जोह
सह सत्तें एंतु सामंत सव्व सउसक्ख-सरणु व सुरवर व्व
कंभीर-कुसीणर-कामरूव खरकेस-तुरंगम-रोमकूव
एक्कवय-कण्णपावरण-जट्ट खंधार-कीर-खस-टक्क-भोट्ट ४
जालंधर-सिंधव-मद्द-वच्छ मंगाल-गउड-गुज्जर-सकच्छ
कोसल-कलिंग-मालव-कुडुक्क लोक्खार-तिउर-ताइय-तुरुक्क
गोदंड-पउंड-वियब्भराय काविट्ठिय-कुरु-कोहल-किराय
वग्घाणण-गयमुह-सुप्पकण्ण उद्धसिय-रोम-थद्धद्ध-कण्ण ८
मरु-माहुर-जाउण-उज्झिहाण अउदुंबर-पल्लव-वच्छमाण
भद्दारि-मेय-मद्दव-वसल्ल पंडुक्कल-मेहल-पउम-मल्ल

घत्ता

आय-वि अवर-वि पवर-भड मेलावेप्पिणु देहि पयाणउं ।
तुह किंकर-तुहिणाहयउ पर-बल-कमलु होउ विद्दाणउं ॥ ११

[१४]

तं णिसुणेवि महि-परमेसरेण मेलाविउ बलु संवच्छरेण
तुम्ह-वि हक्कारउ कुरुवराय हउं आयउ अक्खमि बहु-पसाय
सह-मंडव विरइय गामे गामे पक्खण्णइं सलिलइं थामे थामे
संकंदण-संदण-सच्छहाहं सउ सउ सोवण्ण-महारहाहं ४

13.1b ज. अणेय जोह. 2a. सहसत्ति. 9a. महुरणिवासिय.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दस-सयइं गयहं मय-णिग्गमाहं एक्केक्कउं लक्खु तुरंगमाहं
पुंजिय चामीयर-कोडि कोडि इयप(?र)हुं सामण्णहुं परम-कोडि
एक्कु-वि पंडवहं समाणु जुज्झु अण्णु-वि चक्कवइ सहाउ तुज्झु
विण्णि-वि कारणइं महत्तराइं वलवंतइं होंति स-उत्तराइं

घत्ता

तं णिसुणेवि दुज्जोहणेण दिण्ण भेरि पारद्धु पयाणउं ।
परिपूरंतु दियंतरइं चालिउ सेण्णु मयरहर-समाणउं ॥

[१५]

दुज्जोहणु मिलिउ णराहिवासु णं गंगा-वाहु महण्णवासु
विज्जाहर-चक्कइं चल्लियाइं सामंत-वलइं मोक्कल्लियाइं
रह चलिय चक्क-चिक्कार देंत करि-पवर वलाहय-सोह लेंत
रमाण तुरंग तरंग-लोल उट्ठिय-विचित्त-वाइत्त-रोल
उब्भिय पवणुद्धय-धयवडाह गाहियाउह-णिवह पयट्ट जोह
कुरुखेत्तहो ढुक्कीहोंति जाम णारायण-केरउ दूउ ताम
संराइउ णामें लोहजंघु गरुडाणुगमणु मण-पवण-रंधु
कण्णंतरे कण्णहो कहिय वत्त वइसणए थाहिं करे विजय जत्त

घत्ता

कउ कुरुवइ को चक्कवइ सयल पिहिमि तउ-त्तणिय स-सायर ।
पंडु जणेरु कुंति जणणि पंडव तुज्झ सहोयर भायर ॥

[१६]

विहसेप्पिणु पभणइ अंगराउ किं एम्वहिं एहउ होइ णाउ
एत्तिल्लउ णवर करेमि कज्जु सिरु कुरुहुं देमि पंडवहुं रज्जु
णिउ एम भणेप्पिणु दूउ तेत्थु कुरुवइ-मगहाहिव वे-वि जेत्थु
वोल्लाविय तेण-वि कहिय वत्त पडिवालहो जायव जाम पत्त

16.2a. अज्जु. 3. ज. णेप्पि पुणु दुत्ति तित्थु.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुरुखेत्ते करेवी जमहो तित्ति अम्हारी कउ तुम्हहं पत्ति
जरसिंधु वहेवउ महुमहेण गंगेउ सिहंडि दुम्मुहेण
तव-सुएण सल्लु भड-मद्दणेण भूरीसउ सिणिवइ-णंदणेण
घाएवउ गुरु धट्ठज्जुणेण भयदत्तु जयद्दहु अज्जुणेण ८

घत्ता

तेण-वि चंपाहिवइ रणे कुरु-कुमार अहिवण्ण-कुमारें ।
गंधारेय विओयरेण पुव्वे जे (एउ) सज्जिउ सिद्धारें ॥ ९

[१७]

गउ एम भणेवि पल्लट्टि दूउ णय-विक्कम-वंत-पहाण-भूउ
दारावइ-णाहहो कहिय वत्त णर-केसरि हरि करि विजय-जत्त
जरसिंधु पयाणउं देवि आउ तहो मिलिउ स-साहणु कुरुवराउ
तं णिसुणेवि हय-गय-रह-वरेण्णु सण्णज्झइ स-रहसु सउरि-सेण्णु ४
रुप्पिणिपइ पूरिय-उ-पंचयण्णु धट्ठज्जुणु दुमउ सिहंडि अण्णु
वलएउ वलायावलि-वक्लखु उत्तरु विराडु मइरासु संखु
तव-तणउ भीमु णरु णउलु अण्णु सहएउ घुडुक्कउ साहिवण्णु
अणिरुद्धु संवु सच्चइ अणंगु विज्जाहर-साहणु पुलइयंगु ८

घत्ता

सव्वु स-पहरणु सामरिसु सव्वु जणद्दण-णेह-णिवद्धउ ।
सव्वु सयंभुव-भूसियउ स-रहसु स-कवउ सव्वु सण्णद्धउ ॥ ९

*

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंमुव-कए
पणतीसमो परिसग्गो ॥३५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छत्तीसमो संधि

सरहसु कुरुव-णराहिवइ जं मिलिउ गंपि जरसिंघहो ।
जउ-जलु वालुय-वरणु जिह सु-णिबद्धु वि एइ ण वंधहो ॥१॥

[१]

अट्ठारह-कुल-कोडिहिँ सहिउ अण्णु-वि तित्थयर-परिग्गहिउ
वारवइहिँ पगुण-गुणग्घविउ कह-कह-वि समुद्दविजउ थविउ
संचल्लिउ सरहसु सउरि-वलु णं जगे ण मंतु मयरहर-जलु
तो रुप्पिणि-सच्चहाम-सइहिँ गंधारि-गोरि-पउमावइहिँ ४
सिवदेवी-देवइ-दोमइहिँ रोहिणि-जसोय-पिह-रेवइहिँ
आसीस दिण्ण तहो महुमहहो अणिरुद्धहो संवहो वम्महहो
वलएवहो णिसढहो सच्चइहे सव्वहो सेण्णहो सेणावइहे
तव-तणयहो भीमहो अज्जुणहो मिच्छहो दुमयहो धट्ठज्जुणहो ८

घत्ता

केवल-कारणे केवलिहिँ जं सिद्धहं सिद्धिहे कारणे ।
तुम्हहं सव्वहं णरवइहिँ तं मंगलु होउ महारणे ॥ ९

[२]

आसीस-वयणु तं लहेवि गय दूरुज्जिय रण-वण-मरण-भय
जो णंदहो णंदणु पढमयरु णंदाणुउ णंदिणि-णंदयरु
दारुउ विण्णाणालंकियउ णारायण-णामेहिँ अंकियउ
सो सारहिं वइरि-पुरंजयहो गोविंदें दिण्णु धणंजयहो ४
माया-मउ घरु हणुवंतु थिउ णं दइवें सच्चमउ जे किउ
सुपरिट्ठिय हरि-वल वे-वि तहिँ परिरक्खण केसव(?) कोडि जहिँ
दिवसहिँ रण-भूमि परावरिय णं इंद-पडिंद-सुरावरिय
एक्कहिँ पएसे आवासु किउ जलु जोइउ खंधावारु थिउ ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

तं कुरुखेत्तु णिहालियउ दारावइ-पुरि-परिपालेण ।
विहि-मि बलहं सद्धालुएण णं मुहु णीवाइउ कालेण ॥

[३]

कुरुखेत्तहो बाहिरे सउरि-बलु दडि-झल्लरि-भंभ-भेरि-मुहलु
सरसइहे तीरे आवासियउ णं करणु णियंतें पेसियउ
उप्पाय जाय चक्कवइ-बले रवि-गहणु पदंसिउ गयणयले
रुहिरामिस-रस-वस-चच्चियउ छाया-कबंधु सु-पणच्चियउ
महि कंपिय मेहावलि रडिय धय-छत्तेहिं गिद्ध-पंति चडिय
सहुं मंतिहिं पिहिमिपालु चवइ दुणिमित्तइं एयइं मणु तवइ
परिचत्त-जयासा-लंभएण पच्चारिउ णरवइ डिंभएण
रूसिओसि आसि सिक्खविउ मइं हरि-उप्परि आइउ दिट्ठु पइं

घत्ता

दुज्जय जायव-णाहु रणे सो जोहिउ कवणे जोहेण ।
सीसु धुणाविउ देव हउ जिह एंते कत्ता छोहेण ॥

[४]

पहु पभणइ विहुणिय-भुय-जुवलु कहे केत्तिउ वइरिहिं तणउ बलु
अक्खइ य मंति णरवइ वलिय जे दाहिण ते तेत्तहो मिलिय
रयणायर-वासिय आडविय आहीर-लाड-किव-मालविय
अवरत्तय आसिय मुरल-भव महरट्ठह पंच कुडुक्क-चव
वर-केरल-चोल-पंडि-मलय कुस-सिंघल-जवण-लंक-णिलय
वसुएव-सेण्ण(?)-सुय-ससुर जहिं विज्जाहर मिलियाणेय तहिं
अहवइ किं वलेण चउरगुणेण एक्केण पहुच्चइ अज्जुणेण
सुर खंडवे कालंजय गयणे गंधव्व कुरुव-वंदि-ग्गहणे
गो-ग्गहे दुज्जोहण-पमुह जिय कउरव कह-कह-वि ण खयहो णिय

3.1b ज. भेरिरवमुहुल.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

जाणमि वर-चमु-चूरणहो पंडव-कुल-भवण-पईवहो ।
रणउहे लउडि-भयंकरहो को घाउ पडिच्छइ भीमहो ॥ १०

[५]

पण्णत्ति-पहावें दुम्महहो को मल्लु महाहवे वम्महहो
जिउ जेण कालसंवरु पवरु परिहविउ वियब्भ-राउ अवरु
णारायणु णर-सुर-पलय-करु गोवद्धण-धरु कंसासु-हरु
अवर-वि एक्केक्क-पहाण भड को सहइ ताहं संगाम-झड ४
मगहाहिउ झत्ति पलित्तु मणे सो णंद-गोउ महु मरइ रणे
कलि-कोडिउ कुरुव-राउ कुविउ हउं भीमहो धूमकेउ उइउ
चंपाहिउ मच्छर-मलिय-करु पभणइ महु हत्थइ मरइ णरु
अवर-वि अवहत्थिय मरण-भय स-पइज्ज पयाणउं देवि गय ८

घत्ता

दिट्ठु असेसेहिं णरवइहिं रिउ-साहणु दुप्परियल्लउं ।
वम्म-वियारउं मारणउ जिह कामिणि-पेम्मु णवल्लउं ॥ ९

[६]

अब्भिट्टइं वाहिय-वाहणइं पडिकेसव-केसव-साहणइं
णिप्पसरइं पसरिय-कलयलइं हय-तूरइं पहरण-करयलइं
वहवाविल-वूह-भयंकरइं धय-छत्तंतरिय-दिवायरइं
णिव-णिवह-णिरुद्ध-समीरणइं अवरुप्परु ण-किय-विहीरणइं ४
मेलाविय-असुर-सुरच्छरइं रण-रसियइं वड्ढिय-मच्छरइं
दाविय-पवणुद्धुय-धयवडइं गय-गंधुद्धाइय-गय-घडइं
सारहि-सारहिसारिय-रहइं खर-खुर-खर-खुण्ण-खोणि-पहइं
रण-रामालिंगिय-लालसइं सामरिसइं स-रसइं स-रहसइं ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

घरणिहे असणि-वियारियहे कह-कह-वि जाइं णिव्वडियइं ।
खंडइं उत्तर-दाहिणइं णं दइवें एक्कहिं घडियइं ॥ ९

[७]

तहिं ताव तुरय-खर-खुर-दलिउ रह-रहसें रण-रउ उच्छलिउ
खम-रहिउ को ण अमरिस-चडिउ मं जुज्झहो णं पाएहिं पडिउ
लग्गइ व कडच्छए उरसि करे वज्जरइ व भडहं कण्ण-विवरे
ओसरहो करहो किं चप्पणउं विद्दवहो अकारणे अप्पणउं ४
केत्तिउ अवलंवहो सुहड-किय कहो तणिय पिहिवि कहो तणिय सिय
कहो चिंधइं छत्तइं चामरइं ण सरीरइं जगे अजरामरइं
म वहहो जीवहं म करहो खउ को जाणइ केत्तहे होइ जउ
जं एव-मि सेण्णइं मिलियाइं तं वे-वि लेवि णं गिलियाइं ८

घत्ता

महियले कहि-मि ण माइयउं सरहसु गयणंगणे लग्गउं ।
केण-वि धरेवि ण सक्कियउं दुप्पुत्तु-व सीसे वलग्गउं ॥ ९

[८]

तहिं तेहए रण-रए दुव्विसहे भड भिडिय परोप्परु अणिय-वहे
हम्मंति हणंति जणंति भउ मारंति मरंति करंति खउ
महि मंडिय सिरेहिं स-कुंडलेहिं मुहयंदेहिं छण-चंदुज्जलेहिं
कंठेहिं कंठाहरणंकिएहिं वच्छयलेहिं हारालंकिएहिं ४
भुय-सिहरेहिं केऊरासिएहिं मणिवंधेहिं कंकण-भूसिएहिं
तल-ताणावेढिय-करयलेहिं कडिसुत्तालंकिय-कडियलेहिं
कम-कमलेहिं णह-पह-केसरेहिं धय-छत्तेहिं चिंधेहिं चामरेहिं
रह-चक्केहिं करि-कुंभत्थलेहिं रस-वस-वीसढ-सोणिय-जलेहिं ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

मयगल-मय-मसि-मइलियउ हय-लाला कद्दम-लित्तउ ।
रय-रक्खसु राएहिं मिलेवि णं सोणिय-वाहिणिहे घित्तउ ॥ ९

[९]

रए पसमिए पसरिए रुहिर-जले एक्केण-वि हूयए धरणियले
पहरण-णिवाय-अइसंधिएहिं मगहाहिव-अग्गिम-खंधिएहिं
पडिपेल्लिउ जायव-जोह-वलु णं खय-मारुवेहिं समुद्द-जलु
गलियाउहु विमुहु भयावरिउ गोविंदहो सरणु पईसरिउ ४
मा भज्जहो मा-मी-कारु किउ जंववइहे णंदणु संवु थिउ
णिय-खंधु समोड्डेवि रण-भरहो मुहे खेमविद्धि-विज्जाहरहो
उत्थरिय परोप्परु सरेहिं रणे पेक्खंति सुरासुर थिय गयणे
हरि-णंदणु जइ जइ वावरइ तिह तिह रिउ पउ पउ ओसरइ ८

घत्ता

छिण्णु महद्धउ भग्गु रहु हय हय वर-सारहि घाइयउ ।
पाण लएप्पिणु कहि-मि गउ कह-कह-वि ण जम-पहे लाइयउ ॥ ९

[१०]

जं खेमविद्धि ओसारियउ सर-जज्जरु कह-व ण मारियउ
तं वेगवंतु संवहो भिडिउ णं गयहो गइंदु समावडिउ
णं पंचाणणु पंचाणणहो णं घणु उत्थरिउ महा-घणहो
तो हरि-सुएण हरि-कुलिस-सम दुव्वार-वइरि-पडिपहर-खम ४
मणि-रयण-विहूसिय कणयमइ पट्टविय गयासणि वेगवइ
घाएण जे मासहो पुंजु किउ सवडंमुहु ताम्व विविंझु थिउ
जरसंधहो किंकरु दुव्विसहु धणु-करयलु वाहिय-पवर-रहु
एत्तहे-वि कंस-विणिवायणहो अवरेक्कु पुत्तु णारायणहो ८
समरंगणे चारुजेट्ठु वलिउ विज्जाहरु तेण पडिक्खलिउ

घत्ता

विसम महा-सिल दुव्विसह तहो उप्परि घित्त विविंझहो ।
पडिय तडत्ति तडक्क जिह फोडंति खयालइं विंझहो ॥

[११]

जं रणे विविंझु विणिवाइयउ तं सरहसु अवरु पधाइयउ
णामेण कालसंवरु खयरु जो भुंजए मेहकूड-णयरु
जसु कणयमाल णामेण पिय दक्खविय जाए विवरीय किय
पण्णत्ति समप्पिय वम्महहो उप्पाइउ कारणु विग्गहहो
कंदप्प-कालसंवर भिडिय णं सीह परोप्परु ओवडिय
रुप्पिणिहे मणोरह-गारएण विणिवारिय विण्णि-वि णारएण
जरसिंधहो सो पाइक्कु थिउ लहुक्क-महाहउ तेण किउ
रणे चारुजेट्ठु हक्कारियउ वलु वलु कहिं जाहि अ-मारियउ

घत्ता

जाम्व भिडंति भिडंति ण-वि तहिं अवसरे जयसिरि-संगेण ।
जय जय ताय भणंतएण रहु अंतरे दिण्णु अणंगेण ॥

[१२]

तुहुं पढमु वप्पु पुणु महुमहणु कहो सीसइ जाणइ सयलु जणु
पहिलारी कणयमाल जणणि पुणु पच्छइ रुप्पिणि पिय-भणणि
पइं होंतें हउं तियसहं अजउ पइं होंतें सोलह लंभ गउ
पइं होंतें सुरह-मि पुज्जियउ पइं होंतें तुहु-मि परज्जियउ
पइं होंतें कुरुवहं मलण किय पइं होंतें पंडव पंच जिय
पइं होंतें पुणु वारवइ गउ णारायणु कह-वि ण सरेहिं हउ
पइं होंतें जणणिहे जणिय दिहि सरु सेज्जहिं मेल्लेवि कोव-सिहि
म म पहरु महाहउ परिहरहि अम्हारए साहणे पइसरहि
गुणवंतहं सत्तहै महमहहि । × × ×

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

तो वुच्चइ विज्जाहरेण लज्जिज्जइ आएहिं वयणेहिं ।
सुज्झइ तिहिं पाइक्कु रणे जय-जीवग्गह-मरणेहिं ॥

[१३]

तो तेण जिणेप्पिणु वावरणे पणत्ति-पहावें धरिउ रणे
छुडु छुडु जे सय-संदणे सण्णिमिउ कियवम्महो पासु समल्लविउ
तहिं अवसरे धाइउ गयणगइ सिसुपालहो भायरु सो हवइ
णामेण सल्लु सल्लइं सरेवि कहिं जाहिं कालसंवरु धरेवि
महो-तणउ सहोयरु जेण हउ सो णंद-गोउ कहि केत्थु गउ
वहुवार रुद्ध चिर-वार मइं किर मइं समाणु रण-पिंडु रमइ
तें अप्पउ णव-रणु दक्खविउ कहिं एवहिं जाहि अ-सिक्खविउ
तं णिसुणेवि हरि-णंदणु कुविउ णं जुय-खए धूमकेउ उइउ
सर समर करेप्पिणु दुव्विसहु सण्णाहु वियारिउ छिण्णु रहु

घत्ता

सल्लु सल्ल-सय-सल्लियउ विहलंघलु पडिउ सवेयणु ।
जो अणंग-सर-जज्जरिउ सो सव्वु होइ निच्चेयणु ॥

[१४]

तो चेयण लहेवि विउद्धु पुणु वावरिउ चउग्गुणु पंच-गुणु
सर-णिवहें छाइउ कुसुमसरु णं जलहर-जालें दिवसयरु
अवरेक्कें उरसि कडंतरिउ अत्थक्कए मुद्धए अंतरिउ
विहलंघलु रहे ओणल्लियउ णं पायउ पवण-पणोल्लियउ
जुत्तारु विणासिय-पूयणहो किउ पासु णेइ महुसूयणहो
तहिं अवसरे चेयण-भाव-गउ उट्ठिउ कुमारु णं जगहो खउ
रहु सारहि सारहि सम्मुहउ किं कज्जें करहि परम्मुहउ
किं ण-वि हउं पुत्तु जणद्दणहो किं हरि ण वप्पु हउ णंदणहो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

दिज्जइ धणु भग्गंताहं पहरंतहं रणे पहरिज्जइ ।
विण्णि-वि सलग्घइं खत्तियहं विहिं अवरेहिं पुणु लज्जिज्जइ ॥

[१५]

लज्जिज्जइ देवहं दाणवहं विज्जाहर-किण्णर-माणवहं
लज्जिज्जइ सिंजय-पउरवहं लज्जिज्जइ पंडव-कउरवहं
लज्जिज्जइ वल-णारायणहं लज्जिज्जइ सव्वहं सज्जणहं
लज्जिज्जइ रुप्पिहो रुप्पिणिहे लज्जिज्जइ मागह-वाहिणिहे
लज्जिज्जइ पंचहं भूयह-मि मरिएव्वउ विमुहीभूयह-मि
जइ एम्व-वि एम्व-वि धुउ मरणु तो वरि चंगारउ वावरणु
णासिज्जइ मेल्लेवि सुहड-किय जइ जावज्जीविउ अचल सिय
ण गणिज्जइ तो संगाम-गइ माणुसु अजरामरु होइ जइ

घत्ता

एण सरीरें चंचलेण जइ सासय कित्ति विढप्पइ ।
तो पेक्खंतहं सुरवरहं किह सारहि रणु ण विढप्पइ ॥

[१६]

तं णिसुणेवि सूउ पलज्जियउ रहु वाहिउ भय-परिवज्जियउ
णं सरहं सरहं समावडिय मयरद्धय-सल्ल वे-वि भिडिय
विण्णि-वि विज्जाहर गयण-गइ विण्णि-वि जय-सिरि-गहणेक्क-मइ
विण्णि-वि अवहत्थिय-भय-पसर विण्णि-वि स-सरासण स-सर-कर
विण्णि-वि सुर-भवणुच्छलिय-जस विहि-वि संगाम-मुहेक्क-रस
विण्णि-वि जिण-चरण-कमल-भसल विण्णि-वि वावरण-करण-कुसल
जग-सल्लें सल्लहो सल्ल-धरु वंभत्थें छिण्णु दइच्च-सरु
अवरेहिं अवर सर कप्परिय तेण-वि तहो तुरय कडंतरिय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

चाव-चक्क-गय-संख-धरु गरुडद्धउ वाहिय-संदणु ।
सल्लराय-मयरद्धयहं थिउ अब्भंतरे ताव जणद्दणु ॥ ९

[१७]

णिय-सुय-कएण अमरिसे चडिउ णारायणु सल्लहो अब्भिडिउ
विज्जाहरु विज्जहिं वावरइ हरि चंदहो चरिएहिं अणुहरइ
सर-जालें छाइयउ गयणयलु लक्खिज्जइ ण-वि जलु ण-वि थलु
ण दिसामुहु ण-वि रवियर-णिवहु ण तुरंगु ण सारहि ण-वि य रहु ४
ण सरासणु आयवत्तु ण धउ णउ णावइ केसउ केत्थु गउ
उप्पण्णु कोवु दामोयरहो पच्छण्णु विसज्जिउ गोयरहो
पहरणइं पहारुद्धुआइं दिस-चक्कइं विमलीहूआइं
रिउ पहरइ अवरेहिं दारुणेहिं हुआसण-वायव-वारुणेहिं ८

घत्ता

तरु-गिरि-सिहरि-सिलायलेहिं गरुडत्थ-भुअंगम-पासेहिं ।
सव्वइं छिंदेवि घरियइं वाणारिं वाण-सहासेहिं ॥ ९

[१८]

सोहाहिउ मणे आरोसियउ णाराय-लक्खु परिपेसियउ
रहु ताडिउ सारहि सल्लियउ णारायणु संसए घल्लियउ
तो वण-रुहिरारुण-भुय-सिहरु णं फग्गुणे फुल्लु पलास-तरु
मायाविउ वोल्लइ को-वि णरु ओलग्गइ पाणेहिं कुसुमसरु ४
वसुएवहो फोडिउ वच्छयलु वलहद्दहो तोडिउ सिर-कमलु
जरसंधें जायव सयल जिय कुरु-जोहेहिं पंडव खयहो णिय
जे अज्जुण-णंदण रयणि गय तहिं णेमि-समुद्दविजय णिहय
वारवइ लइय सल्लहो वलेण एवहिं घाएवउ तुहुं छलेण ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

णरु णिब्भच्छिउ माहवेण महु पासिउ को मायारउ ।
दुक्करु जाइ जियंतु रणे तइं सहियउ सामि तुहारउ ॥ ९

[१९]

नारायण-वयण-किवाण-हउ माया-णरु णासेवि कहि-मि गउ
इंदहणु-सम-प्पहु लेवि धणु पारद्धु पडीवउ घोरु रणु
तहिं काले पसारिय-भुय-जुयलु विच्छाय-परिट्ठिय-मुह-कमलु
परिमोक्कल-केसु किउद्ध-कमु सव्वंग-णिवद्धुदहण-समु ४
वसुएवु पडंतु दिट्ठु णहहो परिगलिउ चाउ करे महुमहहो
मुच्छा-विहलंघलु सो हुयउ कह-कह-वि चेयण-भावु गउ
परियाणिय माया-कवड-किय हय-सल्लहो अणुहव-पाण-पिय
खय-सूर-समप्पह-सरवरेहिं रिउ वरिसिउ महि सहुं महिहरेहिं ८

घत्ता

दड्ढ महातरु सिहि-सरेहिं गिरि चूरिय कुलिस-पहारेहिं ।
जय-जय-कारिउ महुमहणु मयरद्धय-पमुह-कुमारेहिं ॥ ९

[२०]

तहिं अवसरे सारहि विण्णवइ एहु दुज्जउ सोह-पुराहिवइ
जावण्ण-वि अत्थइं पट्ठवइ जावण्णु—वि साहणु णिट्ठवइ
जावण्ण-वि चूरइ रह-तुरय जावण्ण-वि हणइ महा-दुरय
परमेसर पहरहि ताम तुहुं उज्जालहि जायव-जणहं मुहु ४
हणु चक्कें वइरि-विणासणेण पडिसत्तु-महा-अरि—दारणेण
तं णिसुणेवि झत्ति पलित्तु हरि पलयग्गि-सम-प्पहु मुक्कु अरि
भंजंतु असेसहं माण-सिह फुरमाणु-दिवायर—विंदु जिह
दोहाविउ तेण विमाणु णहे सहुं सल्लें णिवडिउ धरणि-वहे ८

घत्ता

जाम गयासणि लेइ करे   विद्दविउ ताम गोविंदेण ।
कुसुमइं घिवेवि सइंभुवेहिं   इय दुंदुहि सुरवर-त्रिंदेण ॥   ९

*

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय सयंभुएव-कए
छत्तीसमो इमो सग्गो ॥३६॥

*

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

सत्ततीसमो संधि

सल्लें समत्तए रह-तुरय-महागय-वाहणु ।
तूरइं देप्पिणु धाइउ जरसंघहो साहणु ॥१

[१]

दुवई

दुद्दम-देह-दारणं विविह-पहरणं विविह-धय-समूहं ।
वहलुच्छलिय-कलयलं धाइयं वलं रइय-चक्क-वूहं ॥

समुद्दाणुमाणं धुणी-घुम्ममाणं
पमाण-प्पहीणं फुरंतासि-मीणं
फरोहार-सारं अणं(?)-सुंसुवारं
दडी-दद्दुरोहं हयावत्त-सोहं
विमाणोवसेलं करेणुद्ध-वेलं
दिसालिंगियंगं पडाया-तरंगं
घरद्धारुहेणं(?) सियं-छत्त-फेणं
सया गज्जमाणं सिरी-संणिहाणं

घत्ता

वूहु रएप्पिणु तं चाउरंग-वलु धाइउ ।
जगहो कियंतेण णं काल-चक्कु उप्पाइउ ॥

[२]

दुवई

काल-वलाहं अंवरो हल-भयंकरो धय-णिहित्त-तालो ।
सुर-करि-कर-महा-भुओ रोहिणी-सुओ भणइ कामपालो ॥

अहो अहो अहो दुद्दम दणु-मद्दण चक्क-वूहु दुब्भेउ जणद्दण
आयहो को-वि जियंतु ण छुट्टइ तिहिं आएसु देहि जें फिट्टइ
अज्जुणु चक्कणेमि सेणावइ आयहं तणिय लीह को पावइ

२.३ ज. फुट्टइ.

तिण्णि-वि अ-णिहय सल्ल-रणंगणे तिण्णि-वि सारभूय तउ साहणे
तिण्णि-वि ससर-सरासण-हत्था तिण्णि-वि तिहुयणु जिणेवि समत्था
तिण्णि-वि जय-सिरि रामालिंगण तिण्णि-वि तोसिय-अमर-वरंगण
तिहिं आएसु दिण्णु गोविंदें तिण्णि-वि धाइय एक्कें विंदें
सिवसुय-सेणावइ-वीभच्छेहिं भिण्णु वूहु जिह सायरु मच्छेहिं

घत्ता

तिहिं भिडंतेहिं णिय रहवर कहिं-मि ण खंचिय ।
रणमहि-देवय णरवर-सिर-कमलेहिं अंचिय ॥

[३]

दुवई

णर-सारिय-कप्पया दंति दप्पिया गिरि-व पज्झरंति ।
रंगाविय-तुरंगमा किय अयंगमा महियले पडंति ॥

विद्ध महा-धय छिण्णइं छत्तइं पवर-विमाणइं वसुमइ पत्तइं
चूरिय रह रहंग रहिं सारहि केण-वि के-वि वुत्त णीसारहि
देहि तुरंगु जेण परिसक्कमि णर-सर-धोरणि धरेविण सक्कमि
केण-वि को-वि वुत्त कहिं गम्मइ जिम्व जय-सिरि जिम्व सुरवहु रम्मइ
जिम कु-सरीरें थिरु जसु लब्भइ तो संगामु किण्ण पारब्भइ
वट्टहिं जाम वोल्ल भड-संगरे महि-परमेसरेण तहिं अवसरे
पेसिय तिण्णि वइरि-मइ-मोहण रुप्पि-हिरण्णणाह-दुज्जोहण
तिण्णि-वि तेहिं धरिय तिहिं आएहिं णं सुरणइ-पवाह तिहिं भाएहिं

घत्ता

णरु कुरुणाहेण सिव-णंदणु रुप्पि-णरिंदें ।
रुहिरहो पुत्तेण सेणावइ हरि व मइंदें ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[४]

दुवई

भीम-भुवंग-चिंधेणं वण-मयंधेणं णिच्च-णिक्किवेणं ।
हक्कारिउ घणंजओ पर-पुरंजओ कुरु-णराहिवेणं ॥

खल-खुद्दहो पिसुणहो दुवियड्ढहो मइं विसु दिण्णु विओयर-संढहो
मइं लक्खाहरे लाइउ हुयवहु मइं दाविउ दोमइ-केसग्गहु
मइं सविसेसु देसु छंडाविय तेरह करिसइं दुक्खइं पाविय
तं संभरेवि पहरु जइ सक्कहि काइं अकारणे रणे परिसक्कहि
एम भणेवि आभिट्टइ जावेहिं भायर पुरउ परिट्ठिय तावेहिं
णरेण वुत्तु एत्तडेण ण मारिय तुम्हइं भीमें थुत्थुक्कारिय
एव पडुत्तरु देवि सवंतहं सरहसु साहणे भिडिय तिगत्तहं
विंधइ वलइ धाइ वि-यत्तइ णर-सिर-कमलइं तोडेवि घत्तइं

घत्ता

एक्कु घणंजउ जालंधर-सेण्णु अणंतउं ।
णं सहुं कालेण थिउ जोइस-चक्कु भमंतउं ॥

[५]

दुवई

ताव वियब्भ-णाहेणं वल-सणाहेणं सव्व-लोय-खेमी ।
रुप्पिणि-जेट्ठ-भाइणा हरि-अराइणा वुत्तु चक्कणेमी ॥

जायव तुम्हेहिं अम्हेहिं खत्तिय विहि-मि कुलहं वड्डुतरु पत्तिय
कम्मइं जाइं णंद-गोवालहं ताइं ण होंति पिहिवि-परिपालहं
आसव-पाणइं कण्णाहरणइं उत्तम-पुरिसहं मलिणीकरणइं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक्कु विणासु अवरु वय-खंडणु तुम्हहं पुणु दुच्चरिउ जे मंडणु
अहो सिवदेवि-समुद्दविजय-सुय पंच-जणहं णेमिहे पढमेल्लय
दिढरह-सुअ-महरिट्ठ-पयाइहिं णेमिणाह-गहणुत्तर-भाइहिं
चक्कणेमि तुहुं जेट्ठु स-विक्कमु पहरु पहरु जइ अत्थि परक्कमु
णं तो हउं धणुवेउ पदरिसमि जलहरु जिह सर-धोरणि वरिसमि

घत्ता

एम भणेप्पिणु रणे रुप्पें रुप्पिम-वाणेहिं ।
विद्धु सिवा-सुउ परमप्पउ जिह परमाणुहिं ॥

[६]

दुवई

वंचिउ चक्कणेमिणा सिग्घ-गामिणा सो सरो विमुक्को ।
गुरुमित्र धम्मवज्जिओ गउ अपुज्जिओ गुणि व मुक्खेण मुक्को ॥
हसिउ सिवासुउ धणु-वि ण वुज्झहि एण परक्कमेण तुहुं जुज्झहि
हउं खय-चक्कणेमि सो वुच्चमि रसमसकसमसंतु पइं रुच्चमि
फलु अणुहुंजहि मं अवराहहो अज्ज-वि पणवहि पंकय-णाहहो
णासिउ पाव-वुद्धि अप्पाणउ जायव-जणहं मज्झे तुहुं राणउ
वम्महु भाइणेउ सस रुप्पिणि भइणिवइउ सउरि वहु वाहिणि
तो आरुट्ठु सुट्ठु सुउ भिप्फहो छण-पावणेहिं किविणु णं विप्पहो
को किर णवइ णंद-गोवालहो मेल्लेवि चरण पिहिवि-परिपालहो
एम भणेवि वीसद्धेहिं वाणेहिं विद्धु खयारुण-किरण-समाणेहिं

घत्ता

जायव-वीरेण ते दस-सर दसहिं विहंजिय ।
दसहि-मि धम्मेहिं णं दस-वि अधम्म परज्जिय ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[७]

दुवई

कुंडिण-णयर-राएण धणु-सहाएण सट्ठि सर विमुक्का ।
ते समुद्दविजइणा गुण-पराइणा सट्ठिहिँ विलुक्का ॥

रुप्पिणि-भायरेण सउ भल्लहँ पेसिउ वइरि-उर-त्थल-सल्लहँ
छिण्ण सिवा-सुएण ते वाणेहिँ जिहँ कसाय महरिसि-सुह-झाणेहिँ
रुप्पें पंच सयइं पट्ठवियइं ताइ-मि सिव-सुएण णिट्ठवियइं
सिल-धुय-पुंख-परिट्ठिय-रुप्पहँ पेसियाइं छ-सयाइं खुरुप्पहँ
णेमि-सहोयरेण रणे छिण्णइं पवणें मेहउल-व विच्छिण्णइं
रुप्पें वाण-तरंगिणि मुक्की णं मंदाइणि थाणहो चुक्की
स-वि सिवणंदणेण धणु-धरणें पंति णिवारिय सरवर-वरणें
धणु सण्णहणु छत्तु धउ चामरु सारहि रहु रहंगु हरि कुव्वरु

घत्ता

सव्वइं छिंदेवि ओसारिउ वम्मह-माउलु ।
विरहावत्थहे भणु को-व ण होइ विसंठुलु ॥

[८]

दुवई

पूरिउ चक्क-णेमिणा विजय-गामिणा जलयरो रउद्दो ।
णावइ णव-घणागमे गिंभ-निग्गमे गज्जिओ समुद्दो ॥

भिप्फहो णंदणु वि-रहु णिएप्पिणु अण्णु-वि संख-सद्दु णिसुणेप्पिणु
महि-णिहि-रयणद्धद्ध-मयंधें पेसिय णव णरिंद जरसंधें
णं णव गह केत्तहिं वि ण संठिय णं णव णोकसाय विसमुट्ठिय

णं णव रस रस-वुद्धि पराइय हणु हणु हणु भणंत उद्धाइय
वेणुदारि अरिदमणु महिंजउ भद्दाहिउ सुसेणु सत्तुंजउ
सूरवम्मु महसेणु महोयरु आएहिं णेमि-कुमार-सहोयरु
छाइउ अविरल-सरवर-जालें णं महिहरु णव-पाउस-कालें
तेण-वि एक्केक्कउ पच्चारिउ दसहिं दसहिं सरवरहिं णिवारिउ

घत्ता

एक्कें होंतएण णव णरवइ जे पडिलग्गा ।
ते पंचमुहेण जिह मत्त महा-गय भग्गा ॥

[९]

दुवई

विमुहिय चक्कणेमिणा णिय-सुसामिणा दोच्छिया णियत्ता ।
णं उच्छलिय-मलहरा पलय-जलहरा उच्छरंत पत्ता ॥

वेणुदारि तिहिं वाणेहिं विंधइ सूरवम्मु सत्तासुग संधइ
अरिदमणें अट्ठारह पेसिय भद्दाहिवेण वीस परिपेसिय
तीस सुसेणु महेसु विसज्जइ पिहिविसेसु(?) पंचास विसज्जइ
चउसट्ठिहिं वावरइ महोयरु णं खय-किरणेहिं तवइ दिवायरु
घत्तइ सर सत्तरि सत्तुंजउ नवइ वाण पट्ठवइ अरिंजउ
सयल-वि जायवेण ते छिण्णा अहि-व खगेसरेण विक्खिण्णा
कोदंडइं कवयइं सीसक्कइं छत्तइं चामराइं रह-चक्कइं
सारहि वर-तुरंग विणिवाइय णट्ठ णराहिव कह-व ण घाइय

घत्ता

ताम विरुद्धएण सत्तुत्तमेण पुव्वज्जिय ।
विज्जु व मेहेण वइरोयणि सत्ति विसज्जिय ॥

[१०]

दुवई

सत्तुत्तमेण सत्तिया झत्ति घत्तिया धाइया वलंती ।
णं लल्लक्क-वयणिया पलय-रयणिया णहयलं गसंती ॥

सारहि भणइ भडारा जायव चक्कणेमि कुल-वल्लरि-पायव
एह सत्ति वइरोयण-केरी णं जम-जीह जुयंत-जणेरी
जाम ण पावइ ताम पयत्तें हणु कुलिसेण पुरंदर-दत्तें ४
तेण समाहय कलयलु घुट्ठउ किउ सत्तुतमु पाराउट्ठउ
तावण्णेण रहेण धणुद्धरु धाइउ कुंडिण-पुर-परमेसरु
सरु पट्ठविउ समीरण-वेएं सत्तईं णवर छिण्णु सइवेएं
दस धणुहरइं वियब्भ-णरिंदहो णं सिंगइं पाडियइं गिरिंदहो ८

घत्ता

तेण-वि रणमुहे कउवेरी मुक्क महा-गय ।
दुक्कुल-वहुय-व पइ-हत्थु वलेप्पिणु णिग्गय ॥ ९

[११]

दुवई

स-वि अग्गेय-वाणेण जायवाणेणं चडचडंति दड्ढा ।
णं गुण-धम्म-मुक्केणं लोह-दुक्केणं का-वि दुव्वियड्ढा ॥

तहिं अवसरे जगु जिणेवि समत्थइं वइरोयण-माहिंदइं अत्थइं
भोययडाहिवेण रणे मुक्कइं वेण्णि णाइं जम-करणइं ढुक्कइं
छिण्णइं जायवेण विहिं वाणेहिं भीम-भुयंगाहोय-समाणेहिं ४
रह-कोवंड-कवय-धणु-छत्तइं पंच-वि पंचहिं सरेहिं विहत्तइं
अवरें हउ णिडाले णाराएं करि-व वियारिउ अंकुस-धाएं
पडिउ घुलेप्पिणु मुच्छा-घारें णिउ णिय रहवरेण जुत्तारें
धाइउ वेणु-दारि पडिवारउ जगहो विरुद्धु णाइं अंगारउ ८
तेण समाणु अणेय णरेसर जायव मागह भिडिय समच्छर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

ताम धणंजउ जालंधर-साहणु चूरइ ।
सिवहं विहंगहं णिसियरहं मणोरह पूरइ ।। १०

[१२]

दुवई

णर-णाराय-पूरिया गिरि-व चूरिया कुंजरा णिवण्णा ।
णं खय-मायाहया णव-वलाहया महियलं पवण्णा ।।

कत्थइ णर-सरेहिं करि कप्पिय मलय-सिहर णं अहिहिं वियप्पिय
कत्थइ जीविएण गय मेल्लिय रण-देवयहे णाइं वलि घल्लिय
कत्थइ हत्थि हत्थ णिय वाणेहिं वम्मीयाहि-व खगेहिं पहाणेहिं ४
कत्थइ दंति-दंत सर-छिण्णा केयइ-हत्था णाइं विखिण्णा
कत्थइ रहवर णर-सर-खंडिय दइवें गिरि-व गणेप्पिणु छंडिय
कत्थइ कंचण-चक्कइं जडियइं रण-वहु वहु-कुंडलइं-व पडियइं
कत्थइ लुय-दंडइं सिय-छत्तइं णं जम-जेवण-रुप्पिय-पत्तइं ८

घत्ता

कत्थइ पत्थेण महि मंडिय णर-तरु-जालेहिं ।
वाहा-साहहिं णह-कुसुमेहिं पाणि-पवालेहिं ।। ९

[१३]

दुवई

ताम हिरण्णणाहेणं रह-सणाहेणं धवल-धयवडेणं ।
अण्णाविट्ठि कोक्किओ अहि-व रोक्किओ भुय-वलुब्भडेणं ।।

जायव थाहि थाहि कहिं गम्मइ अज्जु परोप्परु सरहिं णिहम्मइ
हउ-मि तुहु-मि विण्णि-वि सेणावइ विहि-मि णाउं सुर-भवणे णावइ
विण्णि-वि सुद्ध-वंस सहवासिय जिव सुरट्ठ जिव मगह-णिवासिय ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिम मइं पिहिवि दिण्ण जरसिंघहो जिम पइं देवइ-सुयहो मयंघहो
त्रिण्णि-वि करहो अज्जु एक्कंतरु मुए मुए सरवर-वरिसु णिरंतरु
पभणइ अण्णाविट्ठि अणाउलु तुहुं रोहिणिहे भाइ वल-माउलु
रुहिरहो पुत्तु सालु वसुएवहो समर-सएहिं वड्ढिय-अवलेवहो
रेवइ-जणणु भणेवि मुहु वंकमि णं तो कवणु जासु आसंकमि

घत्ता

सउरि मुएप्पिणु पइं पेसणु किउ जरसंघहो ।
जिह तालप्फलु सिरु जासु खुडेवउ खंघहो ॥

[१४]

दुवई

तो अमरिस-सणाहेणं हेमणाहेणं सत्तवीस वाणा ।
सेणावइहे पेसिया खर-सिला-सिया सविस-फणि-समाणा ॥

तो तहिं अण्णाविट्ठि कुमारें सीहेण-वि वण-विक्कम-सारें
घरणिधरेण घराघर-धीरें मयरहरेण-व अइ-गंभीरें
दिवसयरेण-व दूसह-तेएं छिण्णाइं ते सर सरेहिं सइत्तेएं
रुहिरहो णंदणेण पडिवारा सत्तरि सरह विमुक्क खय-कारा
ते-वि तिक्ख-णाराएहिं णिज्जिय रुहिरंगरुहें णवइ विसज्जिय
वाण-सएण छिण्ण जउ-वीरें दस सय अवर करे किय धीरें
तेहिं असेसु दियंतरु छाइउ सलह-वंदु जिह कहि-मि ण माइउ
रोहिणि-भायरेण धउ पाडिउ वइरिहे णाइं मडप्फरु साडिउ

घत्ता

जायव-वीरेण सण्णाहु छत्तु धउ धणुहरु ।
हरि रहु सारहि सत्त-वि कियाइं सय-सक्करु ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१५]

दुवई

तेण-वि तहो महारहो गिरि-सम-प्पहो खंडिओ सरेहिं ।
सुअ-सिहि-कंक-पक्खेहिं अणेय-लक्खेहिं अहि-भयंकरेहिं ॥

विण्णि-वि वि-रह परिट्ठिय चरणेहिं वावरंति विज्जाहर-करणेहिं
गयण-समप्पहेहिं णित्तिसेहिं आरणेहिं चल-चामर-मीसेहिं
विहि-मज्झे ठिय वड्ढिय-मलहर तडि-ससि-अंतराले णं जलहर ४
घाय दिंति वहु-विह विण्णासेहिं अग्गए पच्छए उप्परि पासेहिं
वइरिहे जायव-सेणाधीसें पाडिय वे-वि वाहु सहुं सीसें
अण्णेहिं सभुय खग्ग वल्लरि-गय भीम भुअंग-जीह णं णिग्गय
अण्णेहिं स-फरु वामु भुउ पडिउ णाइं सकमलु णालु णिव्वडियउ ८
अण्णेहिं सिरु उच्छलिउ स-कुंडलु णं सरइंदु महा-घण-मंडलु

घत्ता

रुंडेहिं अण्णेहिं महि मंडिय चउद्दु-मि खंडेहिं ।
तूरइं दिण्णइं जायवेहिं सइं भुव-दंडेहिं ॥ १०

*

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए ।
सत्ततीसमो इमो परिसंधि समत्तो ॥

*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठतीसमो संधि

जय-जस-विक्कम-सारा जायव-वाहिणि पूरइ ।
कासु णिवंधमि पट्टु मागह-णाहु विसूरइ ॥१॥

[१]

हए रुहिरहो णंदणे हेमणाहे अत्थइरि पराइए दिवस-णाहे
णिय-सिमिरहं गयइं सवाहणाइं चक्काहिव-मागह-साहणाइं
समरुद्धरियाउह-करयलाइं वण-वियणाउर-वच्छत्थलाइं
आणिय-पिय-पाहुड-मोत्तियाइं परिहव-पक्खालण-सोत्तियाइं ४
परिपूरिय-रण-बहु-दोहलाइं जय-लच्छि-करग्गह-सोहलाइं
सामिय-पसाय-णिक्खय-कराइं वंसावसेस-थिय-असिवराइं
संभाविय-जय-सिरि-संगमाइं णिग्गंत-खलंत-तुरंगमाइं
लुय-चिंधइं खंडिय-रहवराइं सर-भरिय-णिरंतर-गयवराइं ८

घत्ता

ताम समुट्ठिउ चंदु जोण्ह करंतु ण थक्कइ ।
तम-करि-जूहहो मज्झे णं केसरि परिसक्कइ ॥ ९

[२]

णिय-णिय-अत्थाणेहिं थिय णरिंद मगहाहिव-माहव जिह सुरिंद
जरसिंधु विसूरइ णिय-मणेण विणु एक्कें रुहिरहो णंदणेण
अत्थाणु महारउ णउ विहाइ गयणंगणु ससहर-रहिउ णाइं
रणे दुज्जय जायव-जोह जेत्थु सेणावइ किज्जउ कवणु तेत्थु ४

After Ghatta ज. reads :

लक्षशतानि नराणामन्यान्यपि मादृशानि जीवयसि ।
उपकुरु ममापि किंश्चित् यत्र शतं तत्र पंचाशत् ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आयामिय-गरुयाओहणेण वोल्लिज्जइ तो दुज्जोहणेण
परमेसर तुम्हहुं कवण चिंत किं हउं ण भिच्चु साहणु ण किंत(?)
अट्ठारह वासर भरु महुं जे इयरइ-मि वइरि पहणेवउं जे
तो वरि सव्वइं सेण्णइं णियंतु पर पंडव-कउरव खयहो जंतु ८

घत्ता

पच्छए पहरहो वे-वि तुहुं हरि-कारणे तेयहो ।
एम्व भणेविणु सइं जे वद्धु पट्टु गंगेयहो ॥ ९

[३]

णइणंदणु सेणावइ करेवि थिउ कुरुवइ रण-भर-धुर धरेवि
सुउ सउणिहे सयण-विरोहणेण पट्ठविउ दूउ दुज्जोहणेण
तो एम भणिज्जहि धम्मपुत्तु किल संढेण णउ अच्छणहं जुत्तु
विसरिज्जइ कालु ण दुव्वियड्ढ तुम्हइं तो लक्खा-भवणे दड्ढ ४
जिय जूए कयत्थिय केस-गाहे वण-मग्गे महण्णवे जिह अगाहे
परिपीयइं णिज्झर-पाणियाइं अवरइ-मि दुहइं परियाणियाइं
दोमइ परिहविय जयद्दहेण जक्खें विद्दविय विस-द्दहेण
थिय मच्छहो घरे पच्छण्ण-गत्त तं पाविय जं ण कयावि पत्त ८

घत्ता

सुमरेवि दुक्खइं ताइं तो-वि ण तुहुं अब्भिट्टहि ।
कहिं महु जाहि जियंतु परए स-भायरु फिट्टहि ॥ ९

[४]

तव-तणयाणुवहो सहोयरासु किल संढहो अक्खु विओयरासु
णउ लज्जहि गज्जहि लउडि लेवि भंजमि दुज्जोहणु ओरु वे-वि
दूसासणु मारमि कालु पत्तु सो एहु अवसरु तुहुं सो जे सत्तु
खल खुद्द पिसुण हय दुव्वियड्ढ ते कहिं गय सुहडालाव संढ ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भणु अज्जुणु अज्ज-वि करहि खेउ कहिं गउ गंडीव-सरावलेउ
भणु जमलहो जमलीहोह वे-वि वावरहु कोंत असिवरइं लेवि
गउ दूउ कहिउ तं णिरवसेसु विसु जलणु कय-ग्गहु वण-किलेसु
जइ सुमरहो तो किं विसहिएण अमरिस-जस-पउरिस-विरहिएण ८

घत्ता

तुम्ह-वि अम्ह-वि होउ रणु अट्ठारह वासर ।
सहुं वासवेण णियंतु वासुएव-चक्केसर ॥ ९

[५]

पट्ठविउ कहेवि जं कउरवेहिं पडिवण्णु सव्वु तं पंडवेहिं
गउ सउणिहे णंदणु कहिय वत्त थिय कुरु सरहस रण-रस-पमत्त
तहिं तेहइ काले अणज्जुणेण विण्णवेवि वुत्तु हरि अज्जुणेण
अट्ठारह दिवसिउ जुज्झु जाम महु महुमहु जमलीहोहि ताम ४
पच्चक्खु पेक्खु णिय-रहवरत्थु हउं काइं करमि गंडीव-हत्थु
भयदत्त-जयद्दह-अंगराय मारमि हरि हरिण व राय-राय
कउरवहं पहुच्चइ भीमसेणु णव-णलिण-मुणालहं जिह करेणु
परिपालिय-सयल-महावलेण सल्लेवउ सल्लु जुहिट्ठिलेण ८

घत्ता

भणइ जणद्दणु एम्व छुडु आढवहो महाहउ ।
भमर-सिलीमुह-अक्कु जहिं फग्गुणु तहिं माहउ ॥ ९

[६]

हरि-वयण-वयणु हियवइ धरेवि सोयाहिउ सेणावइ करेवि
गय णिय-णिय-णिलएहिं पंडु-पुत्त णं केसरि गिरि-कंदरेहिं सुत्त
णिसि वियलिय संझा-समउ ढुक्कु थिउ तारा-मंडलु पह-विमुक्कु
रवि उग्गउ पसरिउ कर-णिहाउ मं भिडहो णिवारउ णाइं आउ ४

5.3. माहव पभणिज्जइ अज्जुणेण.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णं पंडव कुरुबहं देइ बुद्धि सुहि वहेवि लहेसहु कवण सुद्धि
मड्डि-कारणे णट्ठाणेय राय वलि-रावण-णल-णहुस-हुण-जाय
पहरंतहं थाइ ण अंतराले पच्चेलिउ हसइ विणासयाले
कहो केरा मिलेवि मरंति एय जसु पुण्णइं तसु हउं वस-विहेय ८

घत्ता

हय पडु-पडह-सयाइं किय कलयलइं स-खग्गइं ।
रविहे घरंतहो णाइं वलइं वे-वि पिडे लग्गइं ॥ ९

[७]

अरुणुग्गमे सरहस-सरहसाइं पइसरियइं रण-रस-रण-रसाइं
रोमंच-पसाहण-साहणाइं रण-भर-णिव्वाहण-वाहणाइं
उक्खय-दप्प-हरण-पहरणाइं उट्ठिय-पर-वारण-वारणाइं
किय-भड-कडवंदण-वंदणाइं हरि-मुह-णीसंदण-संदणाइं ४
ओवाहिय-हयवर-हयवराइं संचूरिय-गयवर-गयवराइं
तोसाविय-देवंगण-गणाइं उच्छलिय-महा-भीसण-सणाइं
मयरद्धय-धय-उद्धय-धयाइं पाविय-जीविय-संसय-सयाइं
रुंदारुण-दारुण-लोयणाइं धवलच्छिहे लच्छिहे लोयणाइं ८

घत्ता

रण-रउ उट्ठिउ ताम वलइं वे-वि छायंतउ ।
णावइ गहकल्लोलु रवि-ससि-विंवइं लिंतउ ॥ ९

[८]

सो रण-रउ गउ लोयंतु पत्तु परि पसमिउ पडिवउ णं णियत्तु
मइं को-वि ण मइलिउ रण-रउद्दे मुउ पडेवि णाइं सोणिय-समुद्दे
थिउ णिम्मलु सयलु दियंतरालु केण-वि आमेल्लिउ वाण-जालु
णं अहिउलु दीसइ दुण्णिरिक्खु परिपिहिय-णिरंतर-अंतरिक्खु ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तोणा-तरु-कोडर-णीसरंतु   गयवर-वम्मीएहिं पइसरंतु
कत्थइ स-खग्ग करि कसण-देह   स-सयदह णिवडिय णाइं मेह
कत्थइ वण-मुह-रुहिरारुणंग   णं धाउ धराधर थिय तुरंग
कत्थइ भड-असि-रय-लद्ध-सोह   णं ताल-खंड तोडिय-फलोह

घत्ता

णच्चइ कहि-मि कबंधु   परिओसेण महंतें।
अज्जु गुरुत्तणु मज्झु   सीसें पएहिं पडंतें ॥

[९]

तहिं अवसरे रणउहे दुण्णिवारे   पहिलए कुरु-पंडव-संपहारे
गंगेउ पधाइउ दुज्जयाहं   मच्छाहिव-सोमय-संजयाहं
परिरक्खिउ पंचहिं पत्थिवेहिं   किव-दुम्मुह-सल्ल-णराहिवेहिं
कियवम्म-विविंझइ-राणएहिं   अवरेहि-मि कुरुव-पहाणएहिं
अहिमण्णु पिसंगेहिं घोडएहिं   परिमिउ सामंतेहिं थोडएहिं
कुद्धाणणु कुरु-कुल-कवल-हेउ   उब्भिय-कंचण-कणियार-केउ
विप्फारिय-धणु संजमिय-तोणु   अवगण्णेवि कुरुवइ दोणि दोणु
धाइउ किव-सल्ल-पियामहाहं   कियवम्म-विविंझइ-दुम्मुहाह

घत्ता

एयारह-सरेहिं   धउ गंगेयहो पाडिउ।
णाइं कउरव-णाहहो   पढमु मडप्फरु साडिउ ॥

[१०]

गंगेएं दसहिं सरेहिं विद्धु   पुणु विहिं कप्परिउ कुमार-चिंधु
सउहदें हिम-गिरि-पंडुरंग   चउ-सरेहिं वियारिय चउ तुरंग
मद्दाहिउ पंचहिं उरसि विद्धु   णं सविस-विसम-विसहरेहिं खद्धु
किउ छाइउ गिरि-व महा-घणेहिं   जल-थल-णह-मंडल-लंघणेहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक्कें कियवम्मु स-मम्मु भिण्णु   कह-कह-वि ण रण-देवयहो दिण्णु
अवरेण विविंझइ किउ णिरत्थु   रिउ संकिय एहु अणेक्कु पत्थु
दुम्मुहहो सरासणु किउ दुखंडु   अवरेक्कु लयउ जिह काल-दंडु
तं छिण्णु कुमारें कुद्धएण   सहु कवएं समउ महद्धएण ८

घत्ता

दुम्मुह-सूयहो सीसु   छिण्णु रणंगणे वालें ।
सरवरे णं सयवत्तु   तोडेवि घित्तु मरालें ॥ ९

[११]

णइ-णंदणेण णर-णंदणासु   समरंगणे पेसिउ सर-सहासु
तं छिंदइ भिंदइ हणइ वालु   णं खगवइ भीम-भुवंग-जालु
तहिं तेहए काले विओयरेण   कुरु-जाउहाण-जमगोयरेण
रवि-रहवर-विब्भम-रहवरेण   इंदहणु-सम-प्पह-धणुधरेण ४
तिहिं तिविहेहिं तवण-समुज्जलेहिं   कियवम्महो अट्ठहिं आसुएहिं
किय एक्कें दुम्मुहु वहु-विहेहिं   वारहहिं विविंझइ जम-णिहेहिं
मद्दाहिउ विद्धु दसहिं सरेहिं   तेण-वि ते तेत्तिय-तोमरेहिं
तहिं अवसरे समर-भयंकरेण   करि चोइउ सल्लहो उत्तरेण ८

घत्ता

जइ-वि जयंधु रउद्दु   मणु संतावइ एंतउ ।
पभणइ गरुवउ सत्तु   सोहइ दाणइं देंतउ ॥ ९

[१२]

सो करिवरु सुर-करिवर-समाणु   कलहोय-णिवद्ध-महाविसाणु
धाइउ मद्दाहिवे वद्ध-लक्खु   णं अंजण-गिरि उप्पण्ण-पक्खु
णं जलहरु परि उप्पण-देहु   मय-परिमल-मेलाविय-दुरेहु
सिक्कार-भरिय-भुवणंतरालु   णक्खत्तोवम-णक्खत्त-मालु ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिभमिर-भमर-झंकार-सोहु कण्णाणिल-चालिय-चामरोहु
सारहि तुरगु दूमंतु ढुक्कु सल्लाहिउ रणउहे कह-वि चुक्कु
करि पूरिउ सरवर-सरेहिं एंतु किं चुक्कइ अरि दाणइं-वि देंतु
वइराडिहे मुक्क वलंति सत्ति उरे णिवडिय णं खय-काल-रत्ति ८

घत्ता

सत्तिए भिण्णु कुमारु खंधोवरि जे गइंदहो ।
पाण विसज्जिय तेण सुमरणु करेवि जिणिंदहो ॥ ९

[१३]

विणिवाइउ उत्तरु रणे पयंडु णं णिवडिउ मच्छहो वाहु-दंडु
णं धम्म-सुयहो अहिमाण-खंभु णं भीमहो भीम-भुयावरंभु
णं पत्थहो समरुच्छाहु भग्गु णं जमलहुं अयस-कलंकु लग्गु
तहिं अवसरे धाइउ पवण-वेउ मच्छाहिव-सुउ णामेण सेउ ४
णय-विक्कम-विणय-सिरी-णिवासु सेणावइ-पट्टु णिवद्धु जासु
सो वेढिउ अट्ठहिं पत्थिवेहिं विंदाणुविंद-मद्दाहिवेहिं
जयसेण-रुप्परह-कोसलेहिं कण्हाय-णरिंद-विहव्ववेहिं
अवरेहि-मि पवर-महारहेहिं दुम्मुह-विहवत्त-जयद्दहेहिं ८

घत्ता

तो विप्फारेवि चाउ फुरिय-फणिंद-समाणेहिं ।
सयल-वि सेए विद्ध सत्तेहिं सत्तेहिं वाणेहिं ॥ ९

[१४]

तेहि-मि ओवाहिय-रहवरेहिं विप्फारिय-पवर-धणुद्धरेहिं
सो सत्तेहिं सत्तेहिं तोमेरेहिं हउ भीम-भुयंग-भयंकरेहिं
ते सयल-वि भग्गण मग्गियत्थ णं किविण-णिहेलणे गय णिरत्थ
गिरि-मेरु-समप्पह-संदणेण लहु-हत्थें मच्छहो णंदणेण ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सयलहं वि विहत्तइं धणुवराइं सयलहं वि हयइं रह-कुव्वराइं
सयलहं तणु-ताणइं ताडियाइं सयलहं धय-छत्तइं पाडियाइं
सयलाह-मि सत्तिउ पेसियाउ सयला वि सरेहिं णीसेसियाउ
सुउ सल्लहो सत्तेहिं सरेहिं छिक्कु रुप्प-रहुं वि-रहु किउ कहिं-मि लिहक्कु ८
सेणावइ विलसइ एम जाम धट्ठज्जुणु वहु-रहु पत्तु ताम

घत्ता

दुमय-विराडहं पुत्त दप्पुब्भड किलिकिलिया ।
पवण-हुवासण जेम विण्णि-वि एक्कहिं मिलिया ॥ १०

[१५]

एत्तहे-वि पियामहु रणे रउद्दु मज्जाय-विवज्जिउ जिह समुद्दु
गय-घड-वेलाउलु वल-जलोहु रंगंत-तुरंग-तरंग-सोहु
मंथणहण(?) सक्किउ पत्थिवेहिं सोमय-सिंजय-मच्छाहिवेहिं
स-सिहंडि-पंडि-धट्ठज्जुणेहिं तवतणय-भीम-जमलज्जुणेहिं ४

ण णिवारिउ केहि-मि समुहु एंतु कुंडल-मंडिय-भड-सिरइं लेंतु
सीसक्क-कवय-वर-धणु-धराइं महियले पाडंतु णिरंतराइं
तहिं अवसरे वाहिय-संदणेण पडिखलिउ विराडहो णंदणेण
सामण्ण-अण्ण-आहव-पइद्ध गंगेय थाहि कहिं जाहि विद्ध ८

घत्ता

पंडव-कुरुव-पहाण भिडिय वे-वि सेणावइ ।
देवासुर-संगामे सुक्क-विहप्फइ णावइ ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१६]

तिहुवण-वहिरण-रण-पडह देवि गंगेय-सेय पडिलग्ग वे-वि
तो परिओसिय-सक्कंदणेण पहिलउ जे विराडहो णंदणेण
दूसह-रवि-किरण-भयंकरेहिं गंगा-सुउ छाइउ सरवरेहिं
तहिं अवसरे पुलउब्भिण्ण-गत्तु दुज्जोहणु लेहु भणंतु पत्तु ४
आइट्टु विविंझइ अतुल-मल्लु दुम्मुहु कियवम्मु सुसम्मु सल्लु
सयलेहि-मि अ-खत्तें लइउ सेउ सयलहु-मि स-धणुवर छिण्ण केउ
सयल-वि समरंगणे किय णिरत्थ वियलिय-पहरण संसुढिय-गत्त
भाईरहि-णंदणु परम-चिंधु पण्णारह-वारह-सरेहिं विद्धु ८

घत्ता

तेण-वि थाणु रएवि सर सरवरेहिं परज्जिय ।
अवसें जंति ण मोक्खु णिग्गुण धम्म-विवज्जिय ॥ ९

[१७]

पुणु दूरोवग्गिय-वम्महेण हउ दसहिं सरेहिं पियामहेण
सेएण-वि किय-कडवंदणेण जेट्ठेण सुजेट्ठा-णंदणेण
धउ ताडिउ पाडिउ छत्त-दंडु गंगेय-सरासणु किउ दु-खंडु
लइ वट्टइ आइउ ताय-ताउ लहु णासहि हाहाकारु जाउ ४
तो सरि-सुएण घाय-दंडु छिण्णु विहिं भल्लिहिं एक्कें सूरु भिण्णु
अवरेहिं चऊहुं चयारि वाह मण-पवण-खगाहिव-जव-सणाह
वि-रहेण धरंतें घित्त सत्ति स-वि दसहिं सरेहिं विहत्त झत्ति
पुणु मुक्कु कुमारें लउडि-दंडु सो धरेवि ण सक्किउ रणे पयंडु ८

घत्ता

स-धउ स-तुरउ स-सूउ रहु गंगेयहो चूरिउ ।
देवेहिं दुंदुहि दिण्णु कउरव-णाहु विसूरिउ ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१८]

णहे ताव समुट्ठिय दिव्व वाणि   अहो सुर-णइ-णंदण कढिण-पाणि
ण णिहम्मइ एहु केण-वि परेण   मारेवउ पइं-जे महा-सरेण
वयणेण तेण थिउ सावहाणु   किर कइढेवि घिवइ ण घिवइ वाणु
तो सेएं वर-करवालु लेवि   धणु-गुण गंगेयहो छिण्ण वे-वि   ४
करे करइ सरासणु अवरु जाम   हउ भीमें सट्ठिहिं सरेहिं ताम
तहिं णर-णंदणेण वलुत्तणेण   विसहिं भल्लेहिं घट्टज्जुणेण
सइणेएं आहउ सर-सएण   पंचहिं एक्केक्कें कइकएण
ते सर णरवर-सरें सावलेव   विणिवारिय सीहें हरिण जेम्व   ८

घत्ता

पलय-करेण सरेण   विद्धु तरंगिणि-तोएं ।
पाडिउ महियले सेउ   कलयलु किउ कुरु-लोएं ॥   ९

[१९]

संभरिउ मरन्ते देव-देउ   परिणिमल्लु णिक्कलु णिरुवलेउ
णिरवज्जु णिराउहु णिरुवसग्गु   णिरवेक्खु णिरंजणु सुहय-भग्गु
पच्चक्खु परोक्खु पमाण-सिद्धु   परमट्ठ-महा-गण-समिद्धु
सयलामल-केवल-णाण-णयणु   णिरुवम-परमागम-वयण-वयणु   ४
जसु तिण्णि सियायव-वारणाइं   तइलोय-पहुत्तण-कारणाइं
जसु परमासोउ असोय-दाणि   जसु पर-उवयारिणि परम वाणि
जसु मणहरु सुरतरु कुसुम-वासु   भा-वलय-वलय-आवयवु जासु

घत्ता

तं देवाह-मि देउ   तिहुयण-मंगल-गारउ ।
सग्गु वलग्गु कुमारु   सरेवि सइंभु-भडारउ ॥   ८

*

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए
अट्ठतीसमो संधि-परिछेओ समत्तो ।

*

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

उणतालीसमो संधि

वड्ढु पट्टु घट्ठज्जुणहो वइवस-वयगुच्चरियइं छुट्टइं ।
दिवसए दुइज्जए सरहसइं पंडवकुरुव-वलइं अब्भिट्टइं ॥ १

[१]

पुच्छिउ सेणिएण परमेसरु एवं देव गउ पहिलउ वासरु
वीए दिवसे अक्खु जं होसइ तं णिसुणेवि महा-रिसि घोसइ
उत्तर-सेय वे-वि विणिवाइय कुरु रण-रहसें कहि-मि ण माइय
गय जरसंघहो पासु स-संदण पहु णिट्ठविय सुजेट्ठा-णंदण ४
अरुणु पयट्टु ताम अत्थवणहो पंडव दुम्मण गय णिय-भवणहो
वइयरु सुणेवि स-दुक्खउ रोवइ घरिणि विराडहो अप्पउ सोयइ
णलिणि-व हिम-दवेण संताविय हा हय विहि महु पुत्त ण दाविय
अहो णारायण पंडव-पक्खिय पइ-मि कुमार मरंत ण रक्खिय ८

घत्ता

भणइ जणद्दणु माए सुणि जाव जीवहो ढुक्कइ मरणउं ।
अमरेहि-भि परिरक्खियहो तावेहिं को-वि णाहि तहो सरणउं ॥ ९

[२]

एम-वि कलुणु रुवंति ण थक्कइ अणुपरिवाडिए णरवइ तक्कइ
अहो तव-तणय पइ-मि ण गवेसिय पुत्त महारा केत्तहे पेसिय
अहो अहो भीमसेण अहो अज्जुण अहो सच्चइ सिहंडि घट्ठज्जुण
अहो विराड अहो दुमय-णराहिव अहो अहो कासिराय अहो चेइव ४
अहो जमलहो कउरव-कुल-कालहो अहो अहिवण्णु-घुडुक्कय-वालहो
सव्वेहिं मिलिय ण रक्खिउ उत्तरु केण-वि काइ-मि दिण्णु ण उत्तरु
पभणइ धम्म-पुत्तु तहिं अवसरे सल्लहो सत्तारहमए वासरे
जइ मइं थत्ति ण किय जम-सासणे तो पइसरमि णिरुत्तु हुवासणे ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

भणइ सिहंडि पियामयहो जइ ण ठवमि सरीरु सर-संथरे ।
णवमए दिवसे णिसा-गमणे तो हउं झंप देमि वइसाणरे ।। ९

[३]

करेवि पइज्ज परिट्ठिउ राणउ पुच्छिउ मद्दि-पुत्तु बहु-जाणउ
कहि सहएव केम महिं जिज्जइ एवहिं को सेणावइ किज्जइ
तेण णवेप्पिणु कहिउ णरिंदहो कउरव-करि-कप्परण-मइंदहो
पट्टु णिबंधु देव धट्ठज्जुणे खयहो जंतु कुरु कुद्धए अज्जुणे ४
किउ अहिसेउ समप्पिउ रण-भरु कोंच-वूहु णिम्मविउ भयंकरु
कुरुवेहिं अवरु वूहु विरइज्जइ रयणिहे विरमि पयाणउं दिज्जइ
किय-कलयलइं समाहय-तूरइं उब्भिय-धयइ पडिच्छिय-सूरइं
जुज्झण-मणइं अणिट्ठिय-तिट्ठइं सामरिसइं रण-भूमि परिट्ठइं ८

घत्ता

अविरल-सर-धारा-हरइं हय-पडु-पडह-विजय-रव-भरियइं ।
पाउसे णव-घणउलइं जिह पंडव-कुरुव-वलइं उत्थरियइं ।। ९

[४]

हरि-खुर-खुण्ण-खोणि-रउ उट्ठिउ णाइं णिवारउ मज्झे परिट्ठिउ
धरहु तुरंगम रह ओसारहो करि अकुंसहो णराहिव धारहो
जइ महु तणिय वसुंधर चप्पहो तो अच्छहिं पाणेहिं समप्पहो
हउं कुलीणु हउं सव्वहं सामिउ जइ वट्टिउ तो केणायामिउ ४
वलि-णल-णहुस-दसाणण-राणा सिवि-दिलीव-मंधाय पहाणा
ओए-वि अवर-वि जे जे जुज्झिय ताहं ताहं मइं विक्कम वुज्झिय
को तव-सुउ को किर दुज्जोहणु वसुमइ कासु कवणु आओहणु
वरि अवहेरि करेवि पलट्टहो णं तो महु सयल-वि आवट्टहो ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

एम धरेवि ण सक्कियइं रण-रस-वसइं परोप्परु मिलियइं ।
वलइं बे-वि रय-रक्खसेण एक्कु-जे कवलु करेवि णं गिलियइं ॥ ९

[५]

रउ परिवड्ढिउ लग्गु णहंगणे णासिउ चक्खु-पसरु-समरंगणे
भड पडंति रह-चक्केहिं चप्पिय रह फुट्टंति गइंद-झडप्पिय
गय वइसरिय किवाणेहिं खंडिय वसुमइ एम सरीरेहिं मंडिय
तहि-मि रयंधयारे रहसुब्भड धवधवसंत हणंति महाभट ४
सिरइं पडंति णडंति कवंधइं रुहिरइं परियलंति जहिं रंधइं
थामे थामे ओणल्लइं छत्तइं पुंजीकयइं महागय-गत्तइं
थामे थामे महि कर-चरणंचिय थामे थामे वेयालइं णच्चिय
थामे थामे भल्लुय-फेक्कारइं दुज्जउ अज्जुणु णाइं णिवारइ ८

घत्ता

थामे थामे भीसावणिय दुत्तर रत्त-रंगिणि धावइ ।
विण्णि-वि वलइं गिलंतएण कालें जीह ललाविय णावइ ॥ ९

[६]

तहिं अवसरे पर-पवर-पुरंजउ स-सरु स-रहवरु स-धणु धणंजउ
दिट्ठि-मुट्ठि-संधाणु ण दावइ कुरुवहं पलय-कालु णं आवइ
रणे फेडंतु असेसइं वूहइं णं पंचाणणु वारण-जूहइं
केण-वि धरेवि ण सक्किउ एंतउ खय-दिणणाहु डाहु णं दिंतउ ४
काह-मि खुडइ खुरुप्पेहिं सीसइं मउड-पट्ट-मणि-कुंडल-मीसइं
काह-मि वच्छ दंत सर पेसइ काह-मि हय-गय-रह णीसेसइं
काह-मि करइ काय सय-खंडइ काह-मि हणइ छत्त-धय-दंडइं
काह-मि हणइ सरासण-जाणइं काह-मि सीसक्कइं तणु-ताणइं ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

विसमु धणंजउ विसमु रहु विसम सरासणि विसमु सरासणु
दिट्ठु असेसेहिं कउरवेहिं णं चउ आहिरण्णु जम-सासणु ॥ ९

[७]

तो स्वय-सूर-समप्पह-तेएं एंतु पडिच्छिउ णरु गंगेएं
विसहर-विसम-विसोवम-वाणेहिं सत्तुत्तर सत्तरि परिमाणेहिं
णवहिं जयद्दहेण वावल्लेहिं मद्दाहिवेण-वि णवेहिं जे भल्लेहिं
पंचहिं विसिहेहिं सउणिय मामें दसहिं विगण्णें णिग्गय-णामें ४
किवेण विद्धु पंचासहिं वाणेहिं दोणें पंचवीस परिमाणेहिं
दोणायणेण समाहेउ सट्ठिहिं कुरु-परमेसरेण चउसट्ठिहिं
आएहिं अवरेहि-भि सामंतेहिं छाइउ सरवर-सएहिं अणंतेहिं
छिण्ण भिण्ण विणिवारिय पत्थें णाइं कसाय महारिसि-सत्थें ८

घत्ता

सउणि-सल्ल-किव-कुरुव-पहु कुरु-गुरु-सुय-गंगेव-जयद्दह ।
चालिय अज्जुण-पाउसेण रिउ-अगाह-गंभीर-महादह ॥ २

[८]

एक्क-रहेण सरासण-हत्थें अमरिस-कुद्धएण रणे पत्थें
लाइय थरहरंत तहिं अवसरे पंच सिलीमुह कुरु-परमेसरे
पंचवीस णाराय पियामहे छह दूसासणे अट्ठ जयद्दहे
णव किवे णव विकण्णे दस सउवले वारह सल्ले चउद्दह विहवले ४
दो दोमुहे चयारि अत्तायणे सट्ठि दोणे सत्तरि दोणायणे
सो ण को-वि जो लयउ ण वाणेहिं परिह-मुसल-जम-दंड-पमाणेहिं
छिण्णइं रह-तुंडइं रह-चक्कइं कवय-धयायवत्त-सीसक्कइं
उर-सिर-कर-चरणोरु-पएसइं तोणा-धणु-वाहणइं असेसइं ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

सरवर-णहर-वियारियइं भय-विहलइं कंठ-ट्ठिय-जीयइं ।
हरिणइं हरिणाहिवहो जिम णट्ठइं पत्थहो कुरवाणीयइं ॥ ९

[९]

भग्गए णिय-बले कउरव-णाहें गरहिउ गंगा-सुउ असगाहें
अच्छहि ताय काइं वीसत्थउ णिरवसेसु जगु जिणेवि समत्थउ
किं पंडवेहिं समाणु णहु जुज्झहि अम्हइं वंचेवि कहिं तुहुं सुज्झहि
पहु-दुव्वयणेहिं वलिउ पियामहु णं विज्झइरिहे अहिमुहु हुयवहु ४
भिडिय वे-वि गंगेय-धणंजय विण्णि-वि जय-सिरि-गहण-समुज्जय
विण्णि-वि संतण-पंडु-सुहंकर विण्णि-वि तवसुय-कुरुवइ-किंकर
विण्णि-वि णं गिव्वाण-महागय विण्णि-वि ताल-पवंग-महाधय
विण्णि-वि जायरूवमय-सदण विण्णि-वि जण्हवि-जायवि-णंदण ८

घत्ता

पिहिय-दिसामुह तडि-चवल हय-पडु-पडह-पवड्ढिय-मलहर ।
सर-धाराहर-गुण-गहिर णहे उत्थरिय णाइं णव जलहर ॥ ९

[१०]

विक्कम-विणय-णयागम-जुत्तें जय-जयकारिउ पंडुहे पुत्तें
थाहि ताय रणु होउ सउण्णउ अज्जुणु अज्जु करइ पाहुण्णउ
तो संतणवें संतणु-जाएं लइय-सिलासिय-सर-संघाएं
दसहिं दसहिं पुणु दसहिं स-तीसहिं पुणु पडिवारउ णवहिं स-वीसहिं ४
तिहिं महु-मग्गणेहिं विचित्तेहिं णं परु दंसण-णाण-चरित्तेहिं
तो फग्गुणेण गुंज-पुंजक्खें विद्धु दहुत्तरेण सर-लक्खें
विहि-मि परोप्परु छाइउ वाणेहिं विण्णि-वि पोमाइय गिव्वाणेहिं

२.५ ज. फुट्टइ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विहि-मि परोप्परु वणियइं अंगइं विहि-मि परोप्परु हयइं रहंगइं ८
विहि-मि परोप्परु छिण्णइं चिंधइं विहि-मि अणेयइं कवयइं विद्धइं

घत्ता

विहि-मि कोंति-गंगासुयहं दिट्ठि-मुट्ठि-संधाणु ण थक्कइ ।
एक्कु-वि पउ-वि ण ओसरइ एक्कु-वि एक्कु जिणेवि ण सक्कइ ॥ १०

[११]

तिण्णि-वि हय-तुरंग हय-संदण संतण-पंडु-णराहिव-णंदण
एवं करंति महाहउ जावेंहि भिडिय दोण-धट्ठज्जुण तावेंहि
धय-धुरि आसत्थामहो वप्पें पाडिय एक्केक्केण खुरुप्पें
वाह चयारि-वि वाण-चउक्कें धट्ठज्जुणेण जमेण व ढुक्कें ४
णव-वि विसिह किवि-कंतहो पेसिय तेण-वि णिरवसेस णीसेसिय
मारणत्थु पुणु मुक्कु अणंतरु दुमय-सुएण करेवि सय-सक्करु
घित्त सत्ति पुणु घणे णं विज्जुल तइल(?) धोय-कलधोय-समुज्जल
स-वि दोहाइय छिण्णु सरासणु सारहि पाडिउ चूरिउ संदणु ८

घत्ता

लइय लउडि धट्ठज्जुणेण घत्तिय दोणायरियहो उप्परि ।
तेण-वि वंचिय असइ जिह णिवडिय दो-दलिकरेवि वसुंधरि ॥ ९

[१२]

जमल-णिवद्धाणिट्ठिय-तोणें वंचिउ लउडि-दंडु जं दोणें
दुमय-सुएण लयउ वसुणंदउ चल-चामरु चामीयर-दंडउ
खग्ग-लट्ठि किय दाहिण-करयले स-ससि स-विज्जु मेहु णं णहयले
धाइउ थाहि थाहि पभणंतउ असिवरेण सरवर वारंतउ ४
तहिं अवसरें हिडिंबि-जमगोयरु अंतरे थिउ घणु-हत्थु विओयरु
णिय-रहे णिमिउ धणंजय(?)-सालउ सत्तिहिं सरेहिं विद्धु किवि-पालउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेत्थु काले कुरुणाहें जोइउ सहुं गयवरेहिं कलिंगु पचोइउ
वेढिउ एक्कु अणेय-गइंदेहिं णं दिवसयरु महा-घण-विंदेहिं ८

घत्ता

मल्हण-सीलिय मय-विहल दुरुदुल्लिय णं किंचि विहावइ ।
रणमुहे भीमहो संमुहिय गय-घड ढुक्क विलासिणि णावइ ॥ ९

[१३]

धाइय दस सहास मायंगहं आसीविस-विसहर-विसमंगहं
गरुय-महागिरिवर-संकासहं पवल-वलाहय-लील-पगासहं
रक्खस-चरियहं जलणिहि-णायहं दंत-दित्ति-धवलिय-दिब्भोयहं
काय-कंति-कसणीकिय-गयणहं कूर-महाणण-दारुण-वयणहं ४
सिहरि-सिहर-सण्णिह-कुंभयलहं मय-सरि-सोत्त-सित्त-गंडयलहं
तहि-मि मत्त-मायंगेहि रुंभइ सो-वि मइंदु जेम पवियंभइ
पुणु-वि कलिंग-णाहु हक्कारिउ थाहि थाहि कहिं जाहि अमारिउ
आएहिं महु उवहासउ दिज्जइ कुविउ भीमु किं गएहिं धरिज्जइ ८

घत्ता

एक्कमेक्क कोक्कंत रणे वे-वि भिडंति भिडंणि ण जावेहिं ।
स-धणु स-संदणु सामरिसु सक्कदेउ थिउ अंतरे तावेहिं ॥ ९

[१४]

तेण भिडंतें सरेहिं वियारिय भीमहो तणा तुरंगम मारिय
छिण्णु महा-धउ पाडिउ धणुधरु तो सहसत्ति पलित्तु विओयरु
धाइउ झंप देवि अवणीयले भामेवि भीम गयासणि करयले
स-धउ स-सारहि चूरिउ संदणु णिउ जम-पहेण कलिंगहो णंदणु ४
तो सयमेव णराहिउ कुद्धउ णं केसरि गय-गंध-पलुद्धउ
सर पण्णारह मुक्क पयंत्तें छिण्ण विओयरेण असि-पत्तें

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवर चउद्दह तोमर पेसिय   ते-वि खणंतरेण णीसेसिय
भग्गु कलिंगु महा-गय-साहणु   भाणुवंतु पर थक्कु स-वाहणु   ८

घत्ता

तेण पचोइउ मत्त-गउ   भमरि-भमर-झंकार-सुहावहु ।
धाइउ भीमहो संमुहउ   सक्क-करे-रिउ(?) णं अइरावउ ॥   ९

[१५]

तो थिर-थोर-पलंब-भुयग्गलु   चम्म-रयण-परिपिहिय-उरत्थलु
मंडलग्ग-मंडिय-दाहिण-करु   धाइउ भीमसेणु जहिं गयवरु
तहो अणवरय-पल्लोट्ट-मयंधहो   चडेवि विसाण-जुयले गउ खंधहो
विण्णि-वि विविहाहरण-समुज्जल   विण्णि-वि परिभमंत-तडि-चंचल   ४
विण्णि-वि एक्कहो हत्थहो उप्परि   विण्णि-वि कमु मुवंति जिह केसरि
विण्णि-वि घाय घिवंति परोप्परु   विहि-मि णिणाएं वहिरिउ अंवरु
वे-वि सियारुण-फरेहिं अलंकिय   उअयत्थइरि व ससि-सूरंकिय
लद्धावसरें वग-संहरणें   दिण्णु घाउ णह-लंघण-करणें   ८

घत्ता

छिण्णु खंधु खंघेण सहुं   णिवडिउ सिरु सिर-वहणिहिं छूढउं ।
भिडिउ विओयरु गय-घडहं   पडिउ कवंधु कवंधारूढउ ॥   ९

[१६]

दुज्जय-जाउहाण-जम-गोयरु   हत्थि-हडहं ओवडिउ विओयरु
चलइ वलइ उल्ललइ णिसुंभइ   धावइ भमइ भमाडेवि रुंभइ
सो ण गइंदु जो ण दोहाइउ   सो णारोहु जो ण विणिवाइउ
तं ण विसाणु जं ण महि पाविउ   तं ण कुंभु जं दलेवि ण दाविउ   ४
सो ण हत्थु जो समरे ण खंडिउ   सो ण पाउ जं लुणेवि ण छंडिउं
सो ण तुरंगमु जो ण वियारिउ   सो ण णरिंदु जो ण वइसारउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सारहि-रहिय-महारह-चक्कइं   धणु-गुण-कवय-सीस-सीसक्कइं
चामर-चिंध-महाधय-छत्तइं   महियले पुंजीकियइं समत्तइं ८

घत्ता

भीम-जमहो जेवंताहो   कवण धरिणि त्रिण्णाणु पउंजइ ।
अच्छउ गय-घड-सालणउ   सेण्णु-त्रि एक्कु-त्रि कवलु ण पुज्जइ ॥ ९

[१७]

तो-वि कलिंगाहिवेण सुधीमहो   लाइय थरहरंत सर भीमहो
तेहिं ण पीडिउ पंडुहे णंदणु   ताव त्रिसोएं पाविउ संदणु
तहिं वलग्गु तव-तणय-सहोयरु   पुणु-वि कलिंगें विद्धु विओयरु
णवहिं सिलीमुहेहिं कलधोएहिं   आयस-फलेहिं महासिल-धोएहिं ४
कोंति-सुएण सत्त सर पेसिय   तेहिं रहंग-अक्ख णीसेसिय
सच्च-सुसव्वएव विहिं पवरेहिं   पाडिउ केउमंतु विहिं अवरेहिं
विहिं कलिंगु कह-कह व ण घाइउ   किंकर-णियरु अवरु उद्धाइउ
तेहिं महावलु लयउ अखत्तें   तेण-वि ते हय समरासत्तें ८

घत्ता

भीमें भीम-परक्कमेण   रहियहं सत्त-सयइं णिट्ठवियइं ।
मत्त-गयंदहं दस-सयइं   पेयाहिव-पट्टणु पट्ठवियइं ॥ ९

[१८]

जाम भीमु रणु रुंडेहिं अंचइ   ताम पत्तु धट्ठज्जुणु सच्चइ
तिण्णि-वि ते अग्गि-सम-देहा   तिण्णि-वि कलि-कयंत-जम-जेहा
तिण्णि-वि भिडिय गंपि गंगेयहो   पलय-दिवायर-दूसह-तेयहो
तिण्णि तिण्णि सर तिहिं-मि विसज्जिय   तेण-वि तिहिं तिहिं णव-वि पराज्जिय ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भीमहो हय हय संतणु-तोए॑   घोसिउ कलयलु कउरव-लोए॑
सत्ति विओयरेण परिपेसिय   स-वि सुर-सरि-सुएण णीसेसिय
लइय लउडि हरि-पीउसि-सेए॑   सारहि णिहउ ताम सइणेए॑

घत्ता

भीमु-वि भिडिउ कलिंग-वले   धट्ठज्जुणहो महारहे थाएवि ।
अइ-भुक्खालुउ कालु जिह   करि खायणहं लग्गु जगु खाएवि ॥ ८

[१९]

पक्खलु खंति जाम दप्पु-त्तुण   सच्चइ-भीमसेण-धट्ठज्जुण
तहिं अवसरे रण-रहसे ण माइय   आसत्थाम-सल्ल-किव धाइय
तिण्णि-वि तिहिं-मि पडिच्छिय एंता   अविरलु सरवर-साइउ देंता
तावेत्तहे-वि अणिट्ठिय-तोणहो   धाइउ दोवइ-णंदणु दोणहो ४
तो सुर-समहं अमाणुस-जोणिहिं   जाउ जुज्झु धट्ठज्जुण-दोणिहिं
वहिं-मि परोप्परु छाइउ बाणहिं   विण्णि-वि पोमाइय णिव्वाणेहिं
तहिं अवसरे अहिवण्णु पराइउ   विज्जउ णाइं घणंजउ आइउ
तिण्णि-वि लइय तेण णारायहिं   रुप्पिय-पुंखेहिं कंचण-काएहिं ८

घत्ता

सिणि-सुय-पिहिं-सुय-दुमय-सुय   तिण्णि-वि रणउहे रक्खिय बालें ।
किव-मद्दाहिव-गुरु-तणय   तिण्णि-वि कवल-कलिय णं कालें ॥ ९

[२०]

लाइय पंचतीस सर सल्लहो   किवहो दुवारहो अणिहय-मल्लहो
दस वच्छत्थले आसत्थामहो   धाइउ ताम पुत्तु महि-कामहो
भिडिय वे-वि परिवाहिय-संदण   णर-णंदण-दुज्जोहण-णंदण
लक्खणेण णव बाण विसज्जिय   पंचासेहिं णर-सुएण परज्जिय ४

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

लक्खेणेण वाणासणु पाडिउ कह-वि कह-वि तणु-ताणु ण ताडिउ
अवरु सरासणु लेवि कुमारें रिउ ओसारिउ विक्कम-सारें
वेढिउ णर-सुउ णरवर-विंदेहिं सीह-पोउ णं मत्त-गइंदेहिं
तहिं अवसरे गंडीव-विहत्थें णिय-सुउ उब्वेढाविउ पत्थें ॥ ८

घत्ता

ताम दिवायरु अत्थमिउ णाइं वे-वि चिरहो परियत्तइं ।
गलिय-सयं-भूसण-सयइं णवर-मिहुणइं णिसुढिय-गत्तइं ॥ ९

*

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभूएव-कए
उणतालीसमो इमो सग्गो ॥

*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चालीसमो संधि

पसरिय-कलयलइं   हय-तूरइं उक्खय-खग्गइं ।
तइयए दिवस-मुहे   कुरु-पंडुव-वलइं आलग्गइं ॥ १

[१]

मगहाहिउ पुच्छइ परम-रिसि   गउ दिवसु दुइज्जउ गलिय णिसि
कहि तइयए वासरे काइं किउ   विहिं सेण्णहं कवणु कवणु विजिउ
परमेसरु अक्खइ सेणियहो   विढविय-सम्मत्तहो खोणियहो
सुणु तइयए दिवसे भयावहेण   किउ गारुड-वूहु पियामहेण ४
सइं वयणे परिट्ठिउ दुव्विसहु   गले सिंघउ पुट्ठिहे कुरुव-पहु
विंदाणुविंद दाहिण-दिसए   कालोर-कुणीर वाम-विसए
पंडवेहि-मि अद्धइं दुहइउं   हय-गय-रह-णरवर-अब्भइउ
भीमज्जुण कोडिहिं विहि-मि थिय   अवसेस णराहिव गब्भु किय ८

घत्ता

वूहु रएविणु णिय-वलेहिं   कुरु-पंडण भिडिय रणंगणे ।
विविहेहिं विमाणेहिं (?)   वंदारय थिय गयणंगणे ॥ २

[२]

थिउ णहे स-पुरंदरु अमरयणु   णव-पाउसु जिह आलग्गु रणु
गज्जंत-मत्त-मायंग-घणु   मंडलिय-सरासण-इंदहणु
विप्फुरिय-खग्ग-विज्जुक्करिसु   सर-धारा-थोर-त्थंभ-वरिसु
वरिसंत-धूलि-कद्दमिय-णहु   णीसरिय-णिरंतर-णइ-णिवहु ४

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

अरुणद्धय-इंदगोव-छइउ   णीलंसुय-पट्टेहिं णीलइउ
धूय-धवल-कलावी-पंडुरिउ   रणु पाउस-कालहो अणुहरिउ
तहिं अवसरे एक्क-सहास-रहु   सइणेयहो धाइउ कुरुव-पहु
ते भिडिय परोप्परु वे-वि जण   णं केसरि अमरिस-कुइय-मण   ८

घत्ता

ताम वलुद्धुरेण   रण-रामा-लिंगण-कामें ।
अंतरे कुरुवइहो   रहु दिज्जइ सउणिय-मामें ॥   ९

[३]

तिलसेण-कणिट्ठें सउवलेण   तेण-वि रहु दिण्णु महा-वलेण
आभिट्ट वे-वि सिणि-णंदणहो   पडिभग्गु पसरु रिउ-संदणहो
हय हयवर सारहि णिद्दलिउ   गयणंगणे सच्चइ उल्ललिउ
णर-णंदण-संदण-वीढे थिउ   पडिवारउ समरारंभु किउ   ४
पेक्खंतहो तहो दुज्जोहणहो   छड्डविय तत्ति आओहणहो
एत्तहे-वि भिडिउ रणे ढुक्काहं   कुरुवाहिव-भीम-घुडुक्काहं
भेसाविउ पढमणिसायरेण   हउ णवहिं सरेहिं विओयरेण
मुच्छाविउ कह-व ण मारियउ   सूएण कह-व ओसारियउ   ८

घत्ता

तेत्तहे णवर णिउ   अगणिय-सुरिंद-जम-धणयहो ।
विण्णि-वि भिडिय जहिं   गंगेय-दोण-तव-तणयहो ॥   ९

[४]

णासंधिय-भीमाओहणेण   विण्णि-वि गरहिय दुज्जोहणेण
अहो पंडव-पक्खवाय-भरिय   दुवियड्ढ दुट्ठ दोणायरिय
सावेण सरेण वि जो दहहि   सो महि-सुयह-मि संक वहहि
ण सिंहडि ण धट्ठज्जुणु णिहउ   ण घुडुक्कउ णाहि अण्णु अजउ   ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णइ-णंदण एक्कु वि ण किउ पइं पर वार-वार वेहवहि मइं
हउं सोसमि पंडव-जल-उवहि हउं देमि स-सायर सयल महि
ण जुहिट्ठिलु ण विओयरु वहिउ ण-वि णरु णारायणेण सहिउ
अवरइं वि ण एक्कु-वि आहणहि सच्छंद-मरणु अप्पउं भणहि ८

घत्ता

हसिउ पियामहेण रणे जोहिउ केण धणंजउ ।
दाणव-पलय-करु महुसूयणु जासु सहेज्जउ ॥ ९

[५]

दुज्जोहण तो-वि ताह भिडमि गिरि-मत्थए असणि जेम पडमि
सर-सीरिउ करमि अराइ-वलु जिह अहि-विहिण्णु पायालयलु
कप्परमि कुंभि-कुंभ-त्थलइं कड्ढमि स-रुहिर-मुत्ताहलइं
तच्छमि रह-रहिय-रहंग-सय पाडमि चल चामर छत्त धय ४
स-तुरंग णराहिव णिट्ठवमि रुहिर-णइ-सहासइं उट्ठवमि
रण-वहु-सब्भाव-भाव-गयइं णच्चावमि भड-कवंध-सयइं
महि रुंड-णिरंतर दक्खवमि णर-भोयणु भूयहं चक्खवमि
पइसारमि सरवर वइरि-गणे जिह विसहर कोडर-पउर-वणे ८

घत्ता

एम भणेवि गउ पेक्खंतहो कुरुव-णरिंदहो ।
ढुक्कु जुहिट्ठिलहो जिह मत्त-गइंदु गइंदहो ॥९

[६]

पइसरिउ पियामहु पंडु-वले णं मंदरु खीर-समुद्द-जले
णं केसरि मत्त-गइंद-थडे णं सरहु मइंद-विंद-विसढे
णं खगवइ भीम-भुयंग-गणे णं वण-दवग्गि जर-वंस-वणे
पवियंभइ रुंभइ हत्थि-हड कप्परइ खुरप्पेहिं स-फर भड ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिद्दलइ रहंगइं रहिय-रह विद्दवइ महा-तुरंग-णिवह
छिंदइ धय-चिंधइं चामरइं सीसक्कइं कवयइं धणुहरइं
लहु करयलु खणु-वि ण वीसमइ णं पर-बले मइयवट्टु भमइ
एक्कु जे एक्कउहु एक्क-रहु परिसक्कइ णं कयंत-णिवहु ८

घत्ता

संकिय णिएवि रिउ तं पलय-भूय-अणुरूवउ ।
कहिं गइ कहो सरणु जगु सव्वु पियामहिभूयउ ॥ ९

[७]

तो दुद्दम दणु-तणु-घायणेण बोल्लाविउ णरु णारायणेण
अहो अज्जुण अज्जुण संदणहो आभिट्टु महा-णइ-णंदणहो
एहु केण धरिज्जइ पलय-रवि पइं मेल्लेवि अवरु समत्थु ण-वि
तो विप्फारिय-गंडीव-धणु उत्थरिउ णाइं णहे पलय-घणु ४
गंगेय-धणंजय अब्भिडिय णं इंद-पडिंद समावडिय
णं गोविय अमरिस-भोव-गय णं सुर-दुग्घोट्ट पलोट्ट-मय
णं सीह ललाविय-जीह-मुह णं सरहसु उद्धुसियंगरुह
कइ-ताल-महा-धय वे-वि जण णिय-सामिहे वसुमइ देण-मण ८

घत्ता

पत्थें तिहिं सरेहिं पलयग्गि-समप्पह-तेयहो ।
कुरुवइ-हियउ जिह धणु पाडिउ तहो गंगेयहो ॥ ९

[८]

धणु-खंडणे भुअण-भयावहेण पोमाइउ पुत्तु पियामहेण
पइं मुएवि चित्ते कहो आरहडि विण्णाणु विढत्तणु चारहडि
धणु अवरु लेवि सर पट्ठविय जउहिट्ठिल-बले बहु णिट्ठविय
हय गय णर णरवइ पवर-रह धय-छत्त-दंड-चामर-णिवह ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गयणंगणु छाइउ जाय णिसि दीसइ ण दिवायरु ण-वि य दिसि
ण धणंजउ ण धणु ण सर-णियरु ण जणद्दणु सिग्गिरि-चक्क-धरु
तो लइउ चक्कु गरुडासणेण जं खंडवे दिण्णु हुवासणेण ८

घत्ता

तं करयले धरेवि दारावइ-पुर-परिपालें ।
जोइस-चक्कु जिह परिभमइ भमाडिउ कालें ॥ ९

[९]

किउ करयले चक्कु जणद्दणेण गय भीमें धणु सिणि-णंदणेण
अवरेहि-मि अवरइं पहरणाइं दुव्वार-महारिउ-वारणाइं
केसवेण वुत्तु गंडीव-धरु जइ धरेवि ण सक्कहि समरु-भरु
तो ओसरु ओसरु संदणहो हउं भिडमि महा-णइ-णंदणहो ४
असिवरेण वियारमि वच्छयलु दस-दिसहिं विहंजमि कुरुव-बलु
विण्णासमि विक्कमु अप्पणउं फेडमि जम्महो जगे जंपणउं
गंगेय-दिवायरु अत्थमउ णारायण-चक्क-तिमिरु भमउ
विण्णवइ विओयरु पणय-सिरु आएसु भडारा अत्थि चिरु

घत्ता

हम्मइ देव रणे णउ पइं णउ मइं णउ पत्थें ।
एहु अट्ठमए दिणे सइं मरइ सिहंडिहे हत्थें ॥ ९

[१०]

गंगेएं पभणिउ महुमहणु पडि-किंकरेण सहुं कवणु रणु
जरसंधहो कुरुवइ आणकरु हउं तासु पियामहु भिच्चयरु
वड्डारउ अंतरु सुर-णरहं समसीसी का महु किंकरहं
जइ तुहुं जिउ तो मइं लद्धु जउ जइ हउं जिउ तो वहु अयसु तउ ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवड्डु कोउ जइ लइउ पइं तो पहरु पहरु मुए चक्कु सइं
तो दोमइ-देहाणज्जुणेण णारायणु पभणिउ अज्जुणेण
जइयहुं जे महाहउ आढविउ तइयहुं जे देव तुहुं विण्णविउ
अट्ठारह दिवस णिराउहेण जोएवउं रण-मुहे अणुरुहेण ८

घत्ता

एस चवंतएण करे धरेवि सउरि परिवत्तियउ ।
धीरउ होहि छुड्डु कहिं जाइ देव महु खत्तियउ ॥ ९

[११]

तो एम भणेवि वद्धामरिसु रण-भर-धुर-धोरिउ दुद्धरिसु
उत्थरिउ सरेहिं गंडीव-धरु णं धारासारेहि अंवुहरु
घणु वहइ अलाय-रहंग-छवि संधाणु ण दीसइ मोक्खु ण-वि
णिसुणिज्जइ जलयर-घोसु पर जले थले णहै दिसि-वहे भरिय सर ४
सारोहे अणारोहे वि दुरए सुण्णासणे सासवारे तुरए
रहे रहिए रहंग-धुरग्गे धए सिरे उरे करे चरणे वम्मे कवए
गंगेउ ण दीसइ ण-वि य रहु ण दिवायरु ण-वि महि ण-वि य णहु
णर-सर-वियणाउरु भग्ग-मणु अप्पंपरिहुवइ वइरि-गणु ८

घत्ता

कहिं संतण-तणउ कहिं कुरुवइ कहिं कुरु-साहणु ।
कुद्धउ जाहं रणे णरु सेय-तुरंगम-वाहणु ॥ ९

[१२]

पप्फुल्लिय-जंरण-कंजएण परिपूरिउ संखु धपंजएण
उप्पण्णु कोहु दुज्जोहणहो रक्खहो गंगेउ पत्थु हणहो
धाइउ दूसासणु सल्लु वलु सउवलु विहवलु अपमेय-वलु
भूरीसउ गुरु-सुउ दोणु किउ एक्कल्लउ अंज्जुणु वहु-वरिउ ४

वेढिज्जइ उव्वेढिज्जइ-वि णउ भज्जइ पर-वलु भंजइ-वि
चउ-पासिउ विंझइ विंधइ-वि घणु भमइ सरासणि संघइ-वि
पउरंदरि-वाणेहिं सव्व जिय हरिण व सीहेण णिरत्थ किय
णिप्पहरण स-व्वण भग्ग भड णउ णाय कहिं गय हत्थि-हड

घत्ता

भग्गइं णिय-वलइं अत्थमिउ दिवायरु णहयले ।
णर-णारायणहं जसु भमइ सइं भू-मंडले ॥ ९

*

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए चालीसमो सग्गो ॥

*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक्कचालीसमो संधि

रण-रामालिंगण-मणइं दणु-दप्पहरण-पहरण-वीयइं ।
दिवसे चउत्थए सरहसइं भिडियइं पंडव-कुरुवाणीयइं ॥ १

[१]

पुच्छिउ सेणिएण सो मुणिवरु एम देव गउ तइयउ वासरु
कहि जं दिवसे चउत्थए होसइ तं णिसुणेवि महारिसि घोसइ
णिसि पडिवण्ण णियत्तइं सेण्णइं अरुणुग्गमे कुरुखेत्तु पवण्णइं
भिडियइं समरिसइं समरंगणे रउ णिव्वडिउ चडिउ गयणंगणे ४
जायव-जरसंधायाणीयइं रय-रक्खसेण घसेवि णं पीयइं
रवि-मंडल-अब्भंतरे छुद्धउ गहण-काले णं गहेण णिरुद्धउ
कवणु पएसु तेण णउ ढक्किउ लोयावहि लंघणहं ण सक्किउ
पडिणियत्तु पडिपाविय-रिट्ठउ तेण णाइं रुहिर-णइ पइट्ठउ ८

घत्ता

तहिं तेहए संगाम-मुहे दुण्णिवार-वर-वइरि-पुरंजय ।
स-सरइं लेवि सरासणइं भिडिय वे-वि गंगेय-धणंजय ॥ ९

[२]

तहिं अवसरे भाणुवहे कंते संतण-तणयहो रक्ख करेतें
ताडिउ पंडु-पुत्तु छहिं वाणेहिं रुप्पिय-पुंखेहिं णाय-पवाणेहिं
छिण्णु वलुद्धरेण सेयासें णउ जाणिय गय कवेंण पासें
भूरीसवेण सत्त सर पेसिय ते-वि धणंजएण णीसेसिय ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मद्दाहिवेण महा-गय मुक्की ण सोदामणि ठाणहो चुक्की
कौंति-सुएण छिण्ण स-वि एंती णं खल-दुम्मइ दुक्खइं दिंती।
सत्ति पियामहेण आम्मेल्लिय खंडव-डामरेण णित्तेल्लिय
छिण्णणइं सव्वाउहइं णरिंदहं णाइं विसाणइं गयइं गइंदहं ८

घत्ता

एक्कु धणंजउ रिउ बहुय कउरव-संढ तो-वि रणे रुंभइ ।
हरिणइं हरिणाहिवहो जिह दूरवरेण-वि ढोउ ण लब्भइ ।। ९

[३]

एम जाम पवियंभइ अज्जुणु ताम तिगत्तएहिं धट्ठज्जुणु
वेढिउ एक्कु दसहिं सामंतेहिं चउ-दिसु हण-हण-कार करंतेहिं
दस-वि महा-रह दस-वि धणुद्धर दस-वि देव-दाणवहं-वि दुद्धर
दसह-मि दस सोवण्णइं छत्तइं दसह-मि दस चामरइं महंतइं ४
दसह-मि दस रसंति वाइत्तइं दसह-मि दस चिंधाइं विचित्तइं
दसह-मि दस-वि महा-धय ताडिय दसह-मि दस स-जीव धणु पाडिय
दसह-मि दस सारहि-वि णिवाइय दसह-मि पवर तुरंगम घाइय
दसह-मि खंडियाइं रह-चक्कइं दसह-मि हयइं कवय-सीसक्कइं ८

घत्ता

दसह-मि दस छिण्णइं सिरइं कुंडल-मउड-पट्ट-पजलंतइं ।
माणस-सरवरे पइसरेवि हंसे हवइं (?) णाइं सयवत्तइं ।। ९

[४]

ताम धणुद्धरेण मण-गमणें थाहि थाहि हक्कारिउ दमणें
मरु कयंत-दंतंतरे वट्टहि कहिं जालंधरु हणेवि पयट्टहि
दुमयहो णंदणु वलिउ स-मच्छरु णं अवलोयण-समए सणिच्छरु
भिडिय वे-वि णं जिण-मयरद्धय गंधवाह-धुय-धवल-महा-धय ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दोमइ-भायरेण तुरमाणें छिण्णु महा-घउ एक्के वाणें
अवरें किंकर मारिय थोडा अवरें सारहि अवरें घोडा
अवरें स-सरु सरासणु ताडिउ अवरें सिरु महि-मंडले पाडिउ
सुहड-कबंधु णिरारिउ भंडइ मुट्ठि-मोक्खु संघाणु ण छंडइ ८

घत्ता

रुंडु रणंगणे चिंतवइ जाउ सीसु असमाणिय-कज्जउ ।
छुड्डु वे-वाहउ होंतु महु अण्णु-वि तइयउ हियउ सहेज्जउ ॥ ९

[५]

विसम-रहेण विसम-रह-जुत्तें हक्कारिउ महाहिव-पुत्तें
रुप्परहहो लहुएण कुमारें केसरि-पोय-परक्कम-सारें
विणिवाइय-एयारह-राणा थाहि थाहि कहिं जाहि अयाणा
दसहिं सरेहिं विद्धु घट्ठज्जुणु तेण-वि सज्जीकरेवि धणुग्गुणु ४
भीम-भुवंगमोवम-काएहिं पंचाहिय-सत्तारि-णाराएहिं
पाडिउ आयवत्तु धउ धणुहरु सारहि रहु रहंगु हय चामरु
धाइउ सल्ल-सूणु असि-करयलु चम्म-रयण-छाइय-वच्छत्थलु
लइय लउडि घट्ठज्जुण-वीरें अविरल-पुलउब्भिण्ण-सरीरें ८

घत्ता

मत्थए पहउ गयासणिए दुमय-सुएण सिह डिहे भाएं ।
चूरिउ-सिरु स-सिरावरणु गिरिवर-सिहरु णाइं णिग्घाएं ॥ ९

[६]

ताम महाहवे अणिहय-मल्लें जण्णसेणि हक्कारिउ सल्लें
सुउ महु तणउ हणेवि कहिं गम्मइ विहिं समरंगणे एक्कु णिहम्मइ
एम भणेवि तिहिं सरेहिं समाहउ घट्ठज्जुणु मुच्छाणुवस गउ
चेयण लहेवि सरासणु ताडिउ र्णा महाहिव-हियवउ पाडिउ ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तहिं वग्गंते दारुणे संगरे लहु अहिवण्णु परिट्ठिउ अंतरे
तिहिं मग्गणेहिं विद्ध महाहिउ ताव पधाइउ कुरुव-णराहिउ
दूसासण-समाण दस राणा सल्लहो रक्ख करेवि पहाणा
अंतरे पइसारिय दस मलहर सर-धारेहिं वरिसंत-व जलहर
ताम विओयरेण ते रुद्धा सीहें हरिण-व संसए छुद्धा

घत्ता

णर-णंदणु पुट्ठिहिं करेवि भिडिउ भीमु दसह-मि सामंतहं ।
णावइ मज्झे परिब्भमइ मंदरु खीर-समुद्दावत्तहं ॥

[७]

तिहिं दूसासणेण तहिं अवसारे दुज्जोहणेण चउहिं थणंतरे
हउ दुमुहेण णवहिं णाराएहिं पलय-जलण-जाला-सच्छाएहिं
ताण-वि तेण वाण णीसेसिय पंचवीस एक्केक्कहो पेसिय
जमलेहिं ताम सल्लु आढत्तउ णं विहिं करेहिं महाकरि मत्तउ
लउडि-करहं एत्तहे-वि सुधीमहं रणु पारंभिउ कुरुवइ-भीमहं
तो जरसंधें कोव-पलित्तें दुज्जोहण-परिरक्ख-णिमित्तें
मागहु णाम णराहिउ चोइउ जमेण पयंडु दंडु णं ढोइउ

घत्ता

सत्तहिं सएहिं णराहिवेहिं मत्त-गइंदेहिं दसहिं सहासेहिं ।
धाइउ पाउसु कालु जिह भीमहो उत्थरंतु चउ-पासेहिं ॥

[८]

वलिउ विओयरु मत्त-गइंदहं णं खय-मारुउ जलहर-विंदहं
णं संकंदणु गिरि-संघायहं णं खगवइ आसीविस-णायहं
के-वि गयासणि घाएहिं घाइय के-वि अण्णण्ण-पहेण पधाइय
के-वि कयंत-महापुरे पाविय के-वि विहंगम जिह उड्डाविय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

के-वि स-कुंत-तोमर-णाराएहिं पलय-जलण-जाला-सच्छाएहिं
फेडिय गिरि-व सुराउह-घाएहिं × × ×
के-वि गइंद गइंदेहिं आहय णं णिवडिय उप्पाय-वलाहय
के-वि अराइ-णिवारण-भीमहो सिरु धुणंति ढुक्कंति ण भीमहो ८
दस-वि सहास एम विद्धंसिय तासिय पीसिय घसिय विणासिय

घत्ता

ताम सुहद्दा-णंदणेण मागहु पिहिउ महा-सर-जालें ।
तिक्ख-खुरुप्पें खुडिउ सिरु आरणालु सरे णाइं मरालें ॥ १०

[९]

दुज्जोहणेण अवरु वलु चोइउ तमिस-कसाएं जमेण-व जोइउ
जो जो ढुक्कइ तहो तहो पावइ कुद्धउ मयहं मयाहिउ णावइ
लउडि-पहारें णरवर-चक्कइं तिमि जिह मीण महण्णवे भक्खइ
जमल-जुहिट्ठिल-दोमइ-णंदण सिहि-सिहंडि-अहिमण्णु-ससंदण
भीमहो दस पय-रक्ख परिट्ठिय कुरु-कुल-पलय-णिमित्तु समुट्ठिय ४
जउ जउ भीमसेणु परिसक्कइ तउ तउ पर-वले को-वि ण थक्कइ
ताम पियामहेण हक्कारिउ वलु वलु तुहुं कहिं जाहि अ-मारिउ
तिण्णि-वि भिडिय महारउ उट्ठिउ सच्चइ अंतरे ताम परिट्ठिउ ८

घत्ता

दसहिं सरेहिं पियामहेण णवहिं अलंवुसेण उरे ताडिउ ।
णवहिं विद्धु भूरीसवेण तो-वि ण तासु मडप्फरु साडिउ ॥ ९

[१०]

सच्चइ पंडवेहिं परिवारिउ भीमें कुरुव-राउ हक्कारिउ
वलु खल खुद्द पिसुण कहिं गम्मइ पिड्डु ण होइ जं कवडें रम्मइ
विसु ण होइ जं भीमहो दिज्जइ घरु ण होइ जं सिहि लाइज्जइ
णउ पंचालि वाल कड्ढेवा एवहिं पाण परोप्परु लेवा ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुरुव-णराहिउ वलिउ स-मच्छरु मीणे परिट्ठिउ णाइं सणिच्छरु
विण्णि-वि स-सर-सरासण-हत्था विण्णि-वि रण-भव घरे वि समत्था
विण्णि-वि दिहि-कर णियय-कुडुंवहं विण्णि-वि पिय भाणुवइ-हिडिंवहं
विण्णि-वि पुत्त कोंति-गंधारिहिं वे-वि पसंसिय सुरवर-णारिहिं ८

घत्ता

वे-वि पंडु-धयरट्ठ-सुय वे-वि धुडुक्कय-लक्खण-पाला ।
सर-धारायर-दुव्विसह णं थिय पाउस-कालुण्हाला ॥ ९

[११]

तो धयरट्ठ-जेट्ठ-दायाएं णवहिं सरेहिं विद्धु कुरु-राएं
दसहिं विओयरेण दुज्जोहणु एम महंतु जाउ आओहणु
छिण्णु सरासणु कउरव-णाहहो आजाणुव-पलंव-वर-वाहहो
फणि-लंछणेण अवरु धणु लेप्पिणु विद्धु धणंजय-जेट्ठु धरेप्पिणु ४
तणु तणु-ताणु वाणु गउ भिंदेवि महिहे पइट्ठु सुट्ठु अहि छिंदेवि
तेण भीमु घुम्माविउ घाएं णं पायव-फलोहु दुव्वाएं
लइ लद्धो सि मित्त कहिं गम्मइ एउ अवसरु जहिं वइरि णिहम्मइ
एम भणंतु सत्तु-वलु धावइ णर-सुउ ताम ढुक्कु जमु णावइ ८

घत्ता

तेण सरेहिं अराइ-वलु लींहा-वद्धु धरिज्जइ दूरें ।
दूसह-किरण-भयंकरेण तिमिरु णाइं ओसारिउ सूरें ॥ ९

[१२]

चेयण-भाउ लहेवि सु-धीमें पंचवीस सर पेसिय भीमें
ओसारिय किव-कुरव-जयद्दह गंधारी-सुय ताम चउद्दह
धाइय कुंति-सुयहो रणे घोरहो मत्त करि-व केसरिहे किसोरहो
सयल-वि हेम-सरासण-धारा सयल-वि पणइ-मणोरह-गारा ४

सयल-वि रूवें वम्मह-जेहा सयल-वि कवयालंकिय-देहा
सयल-वि मणिमएहिं सीसक्केहिं सयल-वि कणयमएहिं रह-चक्केहिं
सयल-वि चिंधेहिं वहु-विह-वण्णेहिं आयव-वारणेहिं सोवण्णेहिं
सयल-वि णं खय-काले चोइय सयल-वि भीम-कयंतहो ढोइय

घत्ता

सयल-वि पंडुहे णंदणेण तिक्ख-खुरुप्पेहिं घाइय ।
पेक्खंतहो तहो दुज्जोहणहो पेयाहिव-पुर-पंथें लाइय ॥

[१३]

चोइउ ताम दंति भयदत्तें णं णव-जलहरु वासारत्तें
णं गिरि मंदरु सव्व-सुरेसें णं तम-पुंजु ढुक्कु गय-वेसें
गुलुगुलंतु गज्जंतु पधाइउ धम्मु सुआणुएण सर-छाइउ
पज्जोइसेण थणंतरे साडिउ मुच्छा-विहलु विओयरु पाडिउ
छुडु छुडु चेयण-भावहो ढुक्कउ अंतराले थिउ ताम घुडुक्कउ
विहि-वसेण रणे मरणहो चुक्कउ + + +
माया-गयवर ताम विणिम्मिय जे मय-वाहिणि-तोएं तिम्मिय
अज्जुणु पुंडरीउ अइरावणु संख-कुंद-पउमप्पह-वाहणु
भइमसेणि सहुं तेहिं गइंदेहिं दिट्ठु कयंतु व णरवर-विंदेहिं

घत्ता

अहिमुहु माया-गयवरहो पेल्लिउ वारणिंदु भययत्तें ।
दोण-पियामह-सल्ल-सल अंतराले थिय ताम पयत्तें ॥

[१४]

एम जाम जुज्झंत रणंगणे रवि अत्थमिउ ताम गयणंगणे
पसरु पवड्ढिउ जामिणि-तिमिरहो वलइं पयट्टइं णिय-णिय-सिमिरहो
गउ अत्थाणे परिट्ठिउ राणउ णिय-भायर-विओय-विद्दाणउ
भणइ भडारा पेक्खु पियामह देव-देव देविंद-समप्पह

कोउहल्लु किं अत्थि ण तुम्हहं वइरिहिं विजउ पराजउ अम्हहं
संतण-तणुरुहेण बोल्लिज्जइ आएहिं वयणेहिं हासउ दिज्जइ
माया-भायर-णंदणे माहवे पंडव सयइं जिणंति महाहवे
जणणि-सहोयर-सुए तित्थंकरे दुज्जय पंडु-पुत्त सइ संगरे ८
सच्चइ कामपालु जहिं पज्जुणु मच्छु सिहंडि दुमउ घट्ठज्जुणु

घत्ता

आए महाहवे दुव्विसह होंति पयंड-कंड-कोयंडेहिं ।
उत्थरंति णव जलय जिह जिणिय केण सयं भुव-दंडेहिं ॥ १०

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए इक्कतालीसमो सग्गो ॥

बायालीसमो संधि

वाइयइं विचित्त-वाइत्तइं गहियाउहइं स-कलयलइं ।
पंचमए दिवसे आभिट्टइं विण्णि-वि पंडव-कुरु-वलइं ॥१

[१]

परमेसरु णिम्मल-गुण-विहूइ सेणिएण पुच्छिउ इंदभूइ
गउ दिवसु चउत्थउ एवं देव पंचमए भिडेसइ कवणु केवं
तं णिसुणेवि मुणि-जण-मणहरेण सेणियहो कहिज्जइ गणहरेण
मेलवेवि चउव्विहु वल-समूहु विरइज्जइ दोणें मयर-वूहु ४
जमकरण-भयंकरु दुण्णिरिक्खु धय-छत्त-पडंत-दियंतरिक्खु
एत्तहे-वि दिण्ण मइ अज्जुणेण किउ सेण-वूहु धट्ठज्जुणेण
हय-पडह-भेरि-दडि-काहलाइं पडिलग्गइं पंडव कुरु-वलाइं
गंधव्व-पुरोवम-रहवराइं णव-जलहर-विब्भम-गयवराइं ८

घत्ता

वलग्ग-तुरंग-तरंगइं गह-णक्खत्त-समाउहइं ।
णं जगु सयरायरु खंतेण कालें कियइं विण्णि मुहइं ॥ ९

[२]

रउ उग्गउ हरि-खुर-भिज्जमाणु चलणाहउ को व ण मुवइ थाणु
धुय-अधुय-धुयाधुय-अवयवीसे अ-कुलीणउ को व ण चडइ सीसे
पुणु करिवर-कुंभत्थलेहिं थाइ लक्खिज्जइ सीह-किसोरु णाइं
धय-चामर-छत्तें चडिउ रेणु रह-वसहहो णं रोमंथ-फेणु ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तहिं तेहए रण-रए अइ-रउद्दे भड संचरंति मीण-व समुद्दे
पहरंति परोप्परु वद्ध-कोह जा उट्ठिय सोणिय-पाणि-ओह
णिवडियइं सिरइं सुहडहं हयाइं णं कमलिणि-णालहं पंकयाइं
अण्णेत्तहे णिवडिय वाहु-दंड णं भीम भुवंगम किय दु-खंड ८

घत्ता

णच्चइ कवंधु परितुट्ठउ जाउ दुवोल्लउ कहि-मि सिरु ।
वाहउ पहरंति रणंगणे छुडु छुडु हियवउ होउ थिरु ॥ ९

[३]

रण-भूमिहिं रुहिर-जलइं ण मंति कर-कम-कवंध कुणइं व तरंति
रह-चक्कइं ईसउ जुय-सराइं धय-चिंधइं छत्तइं चामराइं
तणु-ताणइं जाणइं वारणाइं सीसइं सीसक्कइं पहरणाइं
रउ पसमिउ पसरिउ सोणिओहु उप्पण्णु महण्णउ दिण्ण-सोहु ४
धय-छत्त-सिहर-संठिय-विहंग रुहिरइं पियंति परिओसियंग
तहिं काले मइंदु व हरिण-जूहु पइसरइ विओयरु मयर-वूहु
चूरंतु वलाइं अणिट्ठियाइं सिर-पक्ख-पुट्ठ-कंठट्ठियाइं
वाहिय-सवडम्मुह-संदणेण हक्कारिउ गंगा-णंदणेण ८

घत्ता

कहिं जाहि भीम लइ पहरणु वलु विण्णासहि एक्कु खणु ।
पेक्खंतु देव कुरु-पंडव पोत्त-पियामह होउ रणु ॥ ९

[४]

गंगेय-विओयर भिडिय वे-वि दडि-काहल-संख-मुइंग देवि
पट्ठविय परोप्परु णवर वाण विज्जुक्क-जलण-जाला-समाण
संवट्टोरु उक्काया सलाय(?) आसीविस-विसहर-विसम-काय
वावल्ल भल्ल ससि-खंड रूव कण्णय खुरुप्प णाराय सूव ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूई-वियाढ दुद्दंसणीय   वइहत्थिय णालिय अंजणीय
वर तीरिय तोमर वरच्छदंत   अवर-वि परिपेसिय थरहरंत
तेहए पडिवण्णए समर-काले   थिउ स-धणु धणंजउ अंतराले
सर-सएण समाहउ गंग-पुत्तु   गुरु कुरुव-णरिंदें एम वुत्तु ८
रिउ वूह-वारु विद्दलेवि आय   तुहुं काइं ण पहरहि अक्खु ताय

घत्ता

तो वुच्चइ दोणायरिएण   हउं इंदहो विमाणु मिलमि ।
पर अज्जुणु धरेवि ण सक्कमि   भीमु खणंतरु पडिखलमि ॥ १०

[५]

गउ एम भणेवि णिवद्ध-तोणु   किर भीमहो भिडइ ण भिडइ दोणु
तहिं काले अणुत्तम-संदणेण   हक्कारिउ माहवि-णंदणेण
वलु वलु अवहेरि करेवि कीसु   तुहुं गुरु-गुरु हउं तउ सीस-सीसु
णउ पइं लज्जावमि कहिउ तुज्झु   कुरु पंडव सुर पेक्खंतु जुज्झु ४
सो एम चवंतु महत्तरेण   वाहुवहं मज्झे ताडिउ सरेण
मुच्छा-विहलंघलिहूउ जाम   मद्दाहिव-गुरु-गंगेय ताम
तें भीमें धरिय समच्छरेण   णं तिण्णि काल संवच्छरेण
तेहि-मि समकंडिउ पंडु-पुत्तु   आरोडिउ करिहिं व सीहु सुत्तु ८

घत्ता

पंचाली-सुहद्दा-तणएहिं   छहि-मि णिरुद्धा तिण्णि जण ।
मघ-रोहिणि-उत्तरा-रिक्खहुं   णं गयउरिणितद्ध(?) घण ॥ ९

[६]

अण्णेत्तहे पाडेवि वलहो खंडि   गंगेयहो अहिमुहु थिउ सिहंडि
अवहेरि करेवि गउ सरिय-सूणु   णं केसरि-दंसणे ल्हसिउ थूणु
हक्कारिउ दोणें दुमय-पुत्तु   वलु वलु गुरु जइ रण-वसण-भुत्तु
तो कालकेय-तव-तालु-मारि   थिउ अंतरेण गंडीव-धारि ४

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

गंगेउ वलिउ घणु स-सरु लेवि पंडव-संतण आभिट्ट वे-वि
रणु जाउ भयंकरु दुण्णिरिक्खु सर-मंडव-मंडिय-अंतरिक्खु
सोडीरहं सिरइं समुच्छलंति णं फलइं ताल-विंतहं पडंति ७

घत्ता

कुरु-पंडव-वलइं विभिण्णइं वांणेहिं पत्थ-पियामहेहिं ।
रण-भूमि मुएवि पणट्ठइं दिस-विदिसिहिं पह-उप्पहेहिं ॥ ८

[७]

रणु घोरु जाउ पुव्वण्ह-काले थिउ विहि-मि विओयरु अंतराले
आभिट्ट पियामह-भीमसेण पोमाइय सक्कें स-रहसेण
स-कलिंगु स-साहणु कुरुव-राउ गंगेयहो रक्खणे मित्तु आउ
अणवरय-रइय-सर-मंडवेहिं भीमु-वि परिवारिउ पंडवेहिं ४
तहिं काले किरीडि कइंद-केउ पडिवारउ पडि-संगाम-हेउ
विप्फारिय-धणु उद्धसिय-गत्तु मुह-पवणाऊरिय-देवयत्तु
णिय-सीह-णाय-वहिरिय-णहद्धु तोणीरालंकिय-पच्छिमद्धु
आवीलिय-गोहंगुलिय-ताणु सय-सहसक्खोहणि-णिसिय-वाणु ८

घत्ता

सीमंतेवि सयलु-वि साहणु तहो कोमार-महा-वयहो ।
गंगेयहो भिडिउ धणंजउ जेम गइंदु महागयहो ॥ ९

[८]

रणु जाउ पियामह-अज्जुणाहं एत्तहे-वि दोण-धट्ठज्जुणाहं
एत्तहे-वि विओयर-सिंधवाहं सहएव-विसल्लहं जय-मणाहं
एत्तहे-वि सच्च-भूरीवाहं एत्तहे-वि दुमय-दोणायणाहं
एत्तहे-वि पचोइय-संदणाहं भाणुमइ-सुहद्दा-णंदणाहं ४

6. 7 b-J. मयगल मुत्ताहल विक्खरंति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एत्तहे-वि विहि-मि किव-चेइवाहं   एत्तहे-वि तव-सुय-मद्दाहिवाहं
एत्तहे-वि पधाइय अमरिसेण   पंचालि-सहोयर-चित्तसेण
एत्तहे-वि अलंबुस-भीमसेणि   जो सूरपुरारोहण-णिसेणि
आए-वि अवर-वि अब्भिट्ट एम   मुक्कंकुस मत्त गइंद जेम   ८

घत्ता

रण-वहु-परिणयण-णिमित्तेण   जायइं जुज्झइं भीसणइं ।
णं सिद्धि-समागम-मोहेण   लग्गाइं सव्वइं सासणइं ॥ ९

[९]

तहिं काले वलुद्धुरु जुज्झ-कामु   चउदसेहिं सहासेहिं सउणि मामु
पंडव-सेणामुहे भिडिउ जंपि   जं आइउ धाइउ तेण तं पि
ललक्क-महाहउ जाउ जाम   मज्झण्णहो दिणमणि ढुक्कु ताम
स-तुरंगम ण्हविय महा-गइंद   वीसमिय खणंतरु णर-वरिंद   ४
पारध्दु पडीवउ संपहारु   रउ उट्ठिउ जाव तमंधयारु
अहिमण्णु-घुडुक्कय-चेइयाण   सइणेएं सहुं घल्लंति वाण
गय-साहण भिडिय महा-रउद्द   णं मच्छवयारि-वि वर-समुद्द
सरि-सुयहो सिहंडि-विराड वे-वि   अवरह-मि अवर पडिलग्ग के-वि   ८

घत्ता

थिउ अग्गए मच्छु सिहंडिहिं   धाइउ भीमु पियामहहो ।
तिहिं सरेहिं विद्धु गंगेएण   कह-वि ण पडिउ महारहहो ॥ ९

[१०]

वण-वियण-विरोहिउ भीमसेणु   णं पडिगया-गंधें वर-करेणु
परिपेसिय सुरसरि-सुयहो सत्ति   णं जगहो पधाइय काल-रत्ति
तिल-तिल्ल-धोय-कलधोय-दंड   सु तरंगिणि-तणएं किय-दुखंड
अवरेण सरेण सुवण्ण-पट्टि   दोहाइय पंडव-चाव-लट्टि   ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तहिँ उभय-भीम-संगाम-काले सच्चइ सुपरिट्ठिउ अंतराले
सर-धोरणि मुक्क पियामहेण हय घाइय सारहि णिहय तेण
दस-सरेहिँ समाहउ गंग-पुत्तु सिणि-णंदणु मच्छाहिवेण वुत्तु
तेण-वि तिहिँ ताडिउ सायएहिँ जमदंड-परिह-सप्पाहएहि ८

घत्ता

किउ विरहु विराडु रणंगणे अज्जुणु ताम समावडिउ ।
पणवेप्पिणु गुरु-गंगेयहं आसत्थामहो अब्भिडिउ ॥ ९

[११]

वीभत्थु पलंब-महा-भुएण छहिँ सरेहिँ समाहउ गुरु-सुएण
धणु तहो-वि छिण्णु कइ-केयणेण लहु अवरु लेवि दोणायणेण
णाराय णउइ-वि पेसिय णरासु सत्तरि णारायण-रहवरासु
सेयासें तासु-वि कवउ छिण्णु परिरक्खिउ कह-वि ण हियउ भिण्णु ४
गुरु-णंदणु वंभणु भणेवि चत्तु दुज्जोहणु भीमहो ताम पत्तु
दस-दसहिँ णिसिद्धु सिला-सिएहिँ वर-रुप्पिय-पुंख-विहूसिएहिँ
अवरुप्परु विद्धु सरेहिँ तेहिँ सामरिसेहिँ पंडव-कउरवेहिँ
कुरु-कवय-मह-मणि-तेयवंतु उरे सर परिवेढिउ विप्फुरंतु ८
रेहइ रयणुज्जल-विग्गहेहिँ णं दिणमणि समउ महागहेहिँ

घत्ता

दुज्जोहण-भीम-पहारेहिँ वलइं वे-वि कंपावियइं ।
णउ जाणहुं कवणु जिणेसइ संसय-भावे चडावियइं ॥ १०

[१२]

एत्तहे-वि स-संदण सावलेव स-सरासण स-सरय ण किय-खेव
अहिमण्णुहो धाइय अमरिसेण पुरुमित्त-पियामह-चित्तसेण
णर-सुएण लेवि धणु कणय-पिट्ठु दस-सरेहिँ समाहउ धायरट्ठु
सत्तहिँ पुरुमित्तु सिलीमुहेहिँ सत्तरिहिँ पियामहु अहिमुहेहिँ ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ते तिण्णि-वि ताडिय जेत्तिएहिँ पडिरुद्धु तिहि-मि सो तेत्तिएहिँ
तणु-ताणु करेप्पिणु पढम-रेणु कह-कह-वि ण मारिउ चित्तसेणु
आढत्तु खयत्तें तेहिँ बालु परिभमइ तो-वि णं पलय-कालु
णं वण-दवग्गि रुक्खइं डहंतु लक्खणेण पडिच्छिउ वावरंतु ८

घत्ता

दुज्जोहण-अज्जुण-पुत्तहुं जाउ महाहउ दुव्विसहु ।
भीयइं कुरु-पंडव-सेण्णइं णहे तोसविउ सुर-णवहु ॥ ९

[१३]

णर-सुएण भुयंग-भयंकरेहिँ कुरुणंदणु ताडिउ छहिँ सरेहिँ
हय हय चउहि-मि अवरेण सूउ अवरेण कुमारु णिरत्थु हुउ
सहस-त्ति सत्ति पट्ठविय तेण स तिहाइय फग्गुण-णंदणेण
तहिँ कालेक्कवेण दियत्तणेण ओसारिउ कहि-मि हियत्तणेण ४
एत्तहे-वि तरंगिणि-सिणि-सुयाहुं अब्भिट्टु जुज्झु पहरण-भुयाहुं
विण्णि-वि दिव्वत्थइं वावरंति णं पलय-पओहर उत्थरंति
सच्चइहे ण लब्भइ अंतरालु धणु भमइ ण दीसइ वाण-जालु
णउ दिट्ठि-मुट्ठि-संधाणु थाणु थिउ सरि-सुउ णवरि अ-जुज्झमाणु ८

घत्ता

तहिँ अवसरे कुरुव-णरिंदेण पेसिय दस सहास रहहुं ।
किउ छाया-भंगु असेसहुं सच्चइ-सूरें रिउ-गहहुं ॥ ९

[१४]

जं भग्ग महा-रह जायवेण हक्कारिउ तो भूरीसवेण
आवडिय परोप्परु जिह गइंद जिह आमिस-लुद्ध महा-मइंद
सिणि-सूउ अगणिय-मग्गणेहिँ विद्धु णं मलय-महागिरि अहि-समिद्धु
झड सहेवि ण सक्किउ भिच्च-वग्गु विहडप्फडु णट्ठु समग्गु लग्गु ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तहिं अवसरे दसहिं स-संदणेहिं हक्कारिउ सच्चइ-णंदणेहिं
वलु वलु कहिं गम्मइ सोमयत्ति लइ पहरु पहरु जइ अत्थि सत्ति
तो एम भणेवि ढंकिउ सरेहिं णं मेरु-महागिरि जलहरेहिं
आयामेवि जूव-महा-गएण सर-जालु छिण्णु णिविसद्धएण ८

घत्ता

दसह-मि दस चावइं छिण्णइं दसह-मि चिंधइं ताडियइं ।
पेक्खंतहो पंडव-लोयहो दसह-मि सीसइं पाडियइं ॥ ९

[१५]

जं सिरइं कुमारहं पाडियाइं तल-तरुवर-फलइं व साडियाइं
ता कणय-महाहिव-केयणेण अगणिय-मग्गण-वण-वेयणेण
जायवेण जणद्दण-भायरेण भूरीसउ विद्धु अणायरेण
धउ धणुहरु छिण्णउं आयवत्तु स-तुरंगमु सारहि धरणि पत्तु ४
सच्चइ-वि महा-सर-जज्जरंगु णीसंदणु णिद्धणु णित्तुरंगु
असि-चम्माउहु धाइउ पसत्थु भूरीसवो-वि फर-खग्ग-हत्थु
दप्पुब्भड सुहड भिडंति जाम दुज्जोहण-भीमेहिं धरिय ताम
णिय-रहेहिं चडाविय पहर-विहुर वण-रुहिरुग्गारारुणिय-चिहुर ८

घत्ता

एत्तहे-वि पियामह-वाणेहिं पंडव-साहणु जज्जरिउ ।
जहिं विण्णि-वि णर-णारायण तहिं वियणाउरु पइसरिउ ॥ ९

[१६]

कुरु-कलयले विरसिए समर-तूरे अत्थइरि-सिहरे ढुक्कंते सूरे
गंडीव-सरासण-पहरणेण + + +
विमलुज्जल-मुह-मयलंछणेण रहु वाहिउ वारण-लंछणेण
गय-तुरयाणीयइं परिहरंतु रह-साहणे णिवडिउ जिह कयंतु ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दोहाइय कुव्वर णिहय सूय   छत्तइं धयइं दु-खंड हूय
सोवण्ण-रहंगइं कप्पियाइं   कुंडल व धरहे समप्पियाइं
केवि रहिय-रहिय णिय-किंकरेहिं   के-वि हय के-वि गय सहुँ रहवरेहिं
घडियंतरे संझागमण-काले   पइसरेवि महंतए भड-वमाले ८

घत्ता

अज्जुणेण सइं भुव-दंडेहिं   पंचवीस सहसइं रहहुं ।
पेक्खतहुं हयइं रणंगेण   कुरुवइ-दोण-पियामहहुं ॥ ९

*

इय रिट्ठणेमिचरिए   धवलइयासिय-सयंभुएव-कए ।
पंचम-दिवस-णिउज्झे   बायालीसमओ इमो सग्गो ॥

*

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

तेतालीसमो संधि

काहल-कुल-कोलाहलइं गय-तुरय-वरेण्णइं ।
लग्गइं छट्ठम-दिवस-मुहे कुरु-पंडव-सेण्णइं ॥ १

[१]

दुवई

अह सोऊण सिय-वाहण- चरियं कय-कोऊहल्लयं ।
तह सव्वायरेण णमिऊण जिणं मयणेक्क-मल्लयं ॥ १

पुच्छिउ सेणिएण परमेसरु जो तव-णाण-झाण-जोएसरु
छट्ठए दिवसे अक्खु जं होसइ गउतमु इंदभूइ-रिसि घोसइ
रहवर-णरवर-गय-तुरयायरु घट्ठज्जुणेण वूहु किउ मायरु
तहो सिरे अरिवर-पवर-पुरंजय स-वल परिट्ठिय दुमय-धणंजय ४
घट्ठज्जुण-मच्छाहिव पुट्ठिहे मद्दि-पुत्त थिय विण्णि-वि दिट्ठिहे
गले अहिमण्णु घुडुक्कउ सच्चइ भीमसेणु वयणत्थु पवच्चइ
चेइवि-चेइयाण विहिं पक्खेहिं कइकय-दोमय-तणय पय-रक्खेहिं
राउ स-साहणु पच्छिम-भाएं विरइउ एम दुमय-दायाएं ८

घत्ता

तं कुरु-खेत्तहो संमुहउं सरहसु संचल्लियउ ।
जुय-खय-काले समुद्दजलु वलु णावइ उत्थल्लियउ ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२]

दुवई

ताम मुयंग भेरि दडि झल्लरि कंवुय पडह वज्जिया ।
रण-णव-पाउसागमे कुरुव-णराहिव-मेह गज्जिया ॥ १
णिग्गय अगणिय-गरुयाओहण दुम्मुह-दोण-दोणि-दुज्जोहण
णिक्किव-किव कियवम्म धणुद्धर सल्ल-महल्ल-वल्ल-जालंधर
चित्तसेण-विससेण रणुज्जय दुम्मरिसण-दूसासण दुज्जय
कण्ण-विगण्ण-सुसेण-जयद्दह सोमयत्त-पुरुयत्त महारह ४
वल्हिय-कारिससिरि-महावल भूरीसव-कलिंग-सउवल (?)
उब्भिय गंधवहुद्धुय-धयवड महि मल्हंति पचोइय गय-घड
उहय करेवि य वियरिय हयवर वाहिय रह जिह जंगम गिरिवर

घत्ता

कुरुव-राउ कुरुखेत्तु गउ सहुं णिय-सामंतेहिं ।
अवलोइउ भीमज्जुणेहिं णं काल-कियंतेहिं ॥ ८

[३]

दुवई

रहवर-रहवराइं णर-णरवइ तुरयाओह-वरेण्णाइं ।
वूहइं णेवि देवि रण-तूरइं भिडियइं वे-वि सेण्णाइं ॥ १
भिडियइं विण्णि-वि समर-महाहवे रणवहु-गाढालिंगण-आहवे
हड्ड-रुंड-विच्छड्ड-णिरंतरे रुहिर-तरंगिणि-कद्दम-दुत्तरे
गय-मय-णइ-णिरुद्ध-रहवर-गणे सोणिय-धारारुणिय-णहंगणे
रह-रहंग-भर-भारिव-विसहरे करि-कण्णाणिल-चालिय-महिहरे ४
छत्त-संड-परिपिहिय-रवि-प्पह पहरण-जलण-झुलुक्किय-णव-गह
सिव-कवंध-णच्चण-पेक्खणहरु धीर-धुरंधरु कच्छि(?) रणभरु ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहिणव-सोणिय-पाणिय-जंजले(?) जंवुअ-छूहि-सिवासिव-संकुले
सरवर-णियर-भरिय-भुवणोयरे अगणिय-एक्कमेक्क-एक्कोयरे ॥ ८

घत्ता

ताम्व स-पहरणु पवर-रहु हय-तूरु स-कलयलु ।
लग्गु विओयरु कुरु-ववले णं विंझे दावाणलु ॥ ९

[४]

दुवई

भिंदेवि वूह-वारु पइसरइ विओयरु जाम चप्पेणं ।
ताम विरुद्धएण हक्कारिउ आसत्थाम-वप्पेणं ॥ १
वलु वलु पंडु-पुत्त हउं एत्तहे कालें चोइउ पइसहि केत्तहे
एवं भणेवि णवहिं णाराएहिं ताडिउ वज्ज-दंडु सच्छाएहिं
तेण-वि सारहि दोणहो केरउ णिहउ तुरंग-चउद्धय-पेरउ
किव-गंगेय ताम्व थिय अंतरे भीमहो मिलिउ पत्थु तहिं अंतरे ४
विहि-मि तेहिं ते वे-वि पराज्जिय गय हेट्ठामुह माण-विवज्जिय
भिडिउ धणंजउ णरवर-विंदहुं वलिउ विओयरु मत्त-गइंदहुं
ताम कुमार पधाइय अहिमुह दूसासण-दुम्मुह-मरिसण-दुह

घत्ता

विजय-विगण्ण-विविस्सइहिं पेसिय सर-जालेहिं ।
वेढिउ आएहिं अवरेहि-मि जिह सीहु सियालेहिं ॥ ८

[५]

दुवई

रवि व महा-घणेहिं केसरि-व करिहिं दणुहिं व पुरंदहो ।
वेढिउ कुरु-कुमारु वीरेहिं रणंगणे तिह विओयरो ॥ १
वंधहो धरहो लेहो लहु धावहो वलि-वोक्कउउ जेम्व सुंधावहो (?)
एक्कु भीमु रिउ-लक्खइं जोएवि पभणइ करि कारे-वल ढोएवि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सारहि एत्थु ताम तुहुं थक्कहि अरिवर-णियर ण वाहेवि सक्कहि
जाम्व करेमि कुमार-कडवंदणु ताम्व म चालहि एत्थहो संदणु ४
एव भणेवि आयामिय-धर-वलु धाइउ मरुअ-गयासणि-करयलु
णं जमु दंड-हत्थु आहिंडइ कुरव-कुमार-सहासइं पिंडइ
रहवर गयवरोह मुसुमूरिय वायस-सिवहं मणोरह पूरिय
जउ जउ पंडु-पुत्तु परिसक्कइ तउ तउ वलु मुहु णिएवि ण सक्कइ ८

घत्ता

भीमें भीम-भुयंगमेण जो तहिं संदट्ठउ ।
गय-विस-घाणिय-घाइयउ सो को-वि ण दिट्ठउ ॥ ९

[६]

दुवई

ताम्व सपिहिय-लोयणो पभणइ दुमय-सहोयरो ।
सारहि अक्खु अक्खु सब्भावें कहिं वट्टइ विओयरो ॥ १
सक्कायरिय-समेण सुधीमें हउं जीवमि जीवंते भीमें
अहिणव-पप्फुल्लिय-वर-वयणहुं उत्तरु कवणु देमि किं जमलहुं
जइ मुउ तो घायमि अप्पाणउं पेक्खमि केम जुहिट्ठिलु राणउ ।
उत्तर कवणु देमि किर कोंतिहे पंचालिहे विहलंघल होंतिहे ४
कंड-संड-गंडीव-विहत्थहो उत्तरु कवणु देमि किर पत्थहो
उत्तरु कवणु देमि गोविंदहो उत्तरु कवणु देमि सुहि-विंदहो
भणइ विसोउ होहि वीसत्थउ जीवइ भीमु गयासणि-हत्थउ
इहु कुमार-वल चूरइ लग्गउ जिह वंस-वणे पइट्ठु महग्गउ ८

घत्ता

चूरिय रहंग धय तुरय भड रण जेण पएसें ।
धट्ठज्जुण पइसरहि तुहुं तेण पएसें(?) ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[७]

दुवई

धाइउ जण्णसेणि कारे वल-पहर-पयार-साडणं
रहवर-गयवरासणं रण-ऋत्रय-पाडिय-पत्त-वाडणं ॥१
दिट्ठु भीमु भड-सयइं वहंतउ णं वण-दउ त्रण-तिणइं डहंतउ
तम-पडलइं हणंतु णं णिसि-गिलु णं णिय-कुलइं गिलंतु तिमिंगिलु
णं भंजंतु पहंजणु रुक्खइं णं खगवइ गसंतु फणि-लक्खइं ४
एक्कहिं मिलिय स-गय स-सरासण णं विण्णि-वि दुप्पवण-हुवासण
णिय-रहे दुमय-सुएण चडाविउ णं अणिलेण अणलु वड्ढाविउ
घट्ठजुणेण लइय रिउ बाणेहिं पगुणा सेस सेय-परिमाणेहिं
कुरुव-णराहिवेण वलु पेसिउ दोमइ-भायरेण णीसेसिउ ९

घत्ता

मोहिउ मोहणत्थु मुएवि सुर-विक्कम-सारें ।
णं आलिहेवि परिट्ठियउ णिप्पुरउ सिट्ठारें ॥ ९

[८]

दुवई

ताम्व महा रहाह विप्फारिय-चावह वद्ध-तोणहं
जायं दारुणं रणं विहि-मि परोप्परु दुमय-दोणहं
पलय-जलण-जालोलि-समाणेहिं आयस-त्रयण-वेहि-त्रर-वाणेहिं
सिल-सिद्धोएहिं रुप्पिय-पुंखेहिं कंक-गिद्ध-सुय-त्ररहिण-पंखेहिं
सायकुंभ-विंदुत्रिय-सरीरेहिं पउणेहिं दीहरेहिं पर-सीरेहिं
दोमइ-ताउ तेहिं तिहिं ताडिउ कह-त्र कह-त्र रहवरहो ण पाडिउ ४
विहलंघलिकरेवि गउ तेत्तहे भीमसेण-घट्ठज्जुण जेत्तहे
जेत्तहे कुरुव-सेण्णु वामोहिउ उम्मोहण-सरेण उम्मोहिउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ताम जुहिट्ठिलेण भय-वज्जिय   वारह णिय सामंत विसज्जिय
कइकय पंच पंच दोमइ-सुय   धट्ठज्जुण-सउभद्द महाभुय

घत्ता

वूहु रएप्पिणु दुव्विसहु   केत्तहे-वि ण माइय
सायरु भिंदेवि मच्छु जिह   वारह वि पधाइय ॥ ९

[९]

दुवई

वारह ते चउद्दहुद्धाइय   सूइ-मुहेण वूहेणं ।
धरेवि ण सक्किय ते समत्थेण-वि कउरव-वल-समुहेणं ॥ १

ताव विसोएं पाविउ रहवरु   लउडि-हत्थु तहिं चडिउ विओयरु
णं संहार-कालु कुरु-लोयहो   णं दिणयर-कर-णियरु सरोयहो
धाइउ जण्णसेणि सोणासहो   णिरुवम-धणु-विण्णाण-णिवासहो
भिडिय परोप्परु विप्फुरियाणण   आमिस-लुद्ध णाइं पंचाणण   ४
किवि-कंतेणं ताम तिहिं ताडिउ   धट्ठज्जुणहो सरासणु पाडिउ
पच्छए पच्छाइउ सर-जालें   विज्झु णाइं णव-पाउस-कालें
दुमय-सुएण अवरु धणु सज्जेवि   सरहस सर विमुक्क गलगज्जेवि
मग्गण-गणु अ-गणेवि स-तोणें   णमि-वाणासणु पाडिउ दोणें   ८

घत्ता

चउहिं सरेहिं तुरंगम   सारहि अवरेक्कें ।
थिउ अहिमण्णुहे तणए रहे   णं ससि सहुं अक्कें ॥ ९

[१०]

दुवई

सोण-तुरंगमेण दोणायरि   एण सरेहिं सीरियं ।
णिएवि वलं चलं णिएऊण   हिडिंव-सुवेण धीरियं ॥ १

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

भीमें कुरुव-राउ हक्कारिउ   धायरट्ठ कहिं जाहि अ-मारिउ
लग्गउ हउं अप्पणए पराहवे   पूरमि अज्जु पइज्ज महाहवे
विस-जउहर-केसग्गह-जूयइं   तुम्हहं दुप्परिणामीहूयइं
दुण्णय-दुमहो फलइं अणुहुंजहो   बंधु-कबंध-सयइं परिपुंजहो   ४
एम भणेवि जमकरण-समाणेहिं   आहय हय चउ-संखा-बाणेहिं
विहिं सारहि सामरगणे घइउ   छहिं णाराएहिं धउ दोहाइउ
पाडिउ फणि चामीयर-घडियउ   णाणाविह-मणि-रयणेहिं जडिउ
विहिं सण्णाहु णाहु वीसद्धेहिं   आमिस-वस-रस-रुहिर-पइद्धेहिं   ८

घत्ता

कुरुव-राउ मुच्छावियउ   कह-कह-वि ण मारिउ ।
किवेण चडावेवि णियय-रहे   केत्थु-वि ओसारिउ ॥   ९

[११]

दुवई

ताव जयद्दहेण रहु वाहिउ   जहिं णिवसइ विओयरो ।
कीयय-वग-हिडिंब-किम्मीर-   जडासुर-काल-गोयरो ॥   १

जाउ महाहउ हेइ-समिद्धहुं   कंचण-केसरि-सूयर-चिंधहुं
तहिं अवसरे पसरिय-अहिमण्णहो   अट्ठ कुमार भिडिय अहिमण्णहो
पंचहिं पंचहिं सरेहिं पडिच्छिय   तेहि-मि मग्गण मुक्क जहिच्छिय
तो णर-सुएण णियंतहो सेण्णहो   चउद्दह इसु पट्ठविय विगण्णहो   ४
हय हयवर सारहि विणिवाइउ   छिण्णु सरासणु धउ दोहाइउ
अवरेहिं वर-सरेहिं धुम्माविउ   कह-व कह-व जम-णयरु ण पाविउ
सत्त कुमार ताम तहो धाइय   णं दुव्वार वार संपाइय
दोमइ-णंदणेण सुयधम्में   दुम्मुहु वरिउ अमाणुस-कम्में   ८

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

घत्ता

सत्तहिं सरेहिं तुरय हय   सो-वि सत्तिए भिण्णउ ।
दिण्ण वसुंधर देवयहो   णावइ उच्छिण्णउ ॥ १०

दुवई

सुअसोमेण ताम   ओसारिउ आजाणुय-वाहेहिं ।
दिणयर-रह-तुरंग-खगराय-   पहंजण-जव-सणाहेहिं ॥ १
दोमइ-सुयहो ताम सुय कुंतिहे   पलय-पयंग-सम-प्पह-दित्तिहे
आमिस-लुद्धएण जिह सेणें   पाडिय चाव-लट्ठि जयसेणें
सो-वि रणंगणे समर-सणीएं   दुमय-सुया-सुएण धणु-वीएं
दसहिं सरेहिं विद्धु वच्छत्थले   मुच्छा-विहलु पडिउ महि-मंडले ४
जहिं पयंडु पंचालिहे णंदणु   तहिं दुक्कण्णें वाहिउ संदणु
पिहिउ सिलीमुहेहिं अ-पमाणेहिं   अण्णाणंध णाइं अण्णाणेहिं
वाण-जालु तं हणेवि सु-भीसणु   जिण्णु दुकण्णहो तणउं सरासणु
रहु जोत्तारु तुरंगम चिंधउं   सीस-ताणु तणु-ताणु-वि विद्धउं ८

घत्ता

थरहरंतु अवरेक्कु सरु   वच्छत्थले लाइउ ।
रेवा-वाहें जिह विंझु   दुकण्ण-कण्णु दोहाइउ ॥ ९

[१३]

दुवई

उड्डिर-कंड-मंडिय-   पयंड-कोयंड-वीयहो ।
भायर अवर अवर पडिधाइय   पंच-वि तिय अणीयहो ॥ १
दुम्महु सहुं दुम्मरिसणु दुज्जउ   उत्तमु सत्तु सत्तु सत्तुंजउ
पंच-वि एक्कहो भिडिय महाहवे   अमर-वरंगण-जय-सिरि-लाहवे
संदणएण संदाणिय-संदणे   तहिं पडिवण्णए भड-कडवंदणे
कइकय पंच परिट्ठिअ अंतरे   णं पंचेंदिय देहब्भंतरे ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ताम पियामहेण पहु धाइय तव-सुय-किंकर जम-पहे लाइय
तोमर-सएहिं तुरंगम ताडिय चूरिय रहवर गयवर पाडिय
ताम पहायरु गउ अत्थवणहो पंडव कउरव णिय-णिय भवणहो
के-वि देंति णिय-कंतहिं चिंधइं सायकुंभ-मणि-रयण-समिद्धइं ८

घत्ता

के-वि छुड्डु जे छुड्डु कड्ढियइं गय-मय-मल-लित्तइं ।
दइयहिं देंति सयं भुवेहिं मोत्तियइं विचित्तइं ॥ ९

*

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए तेतालीसमो इमो सग्गो ॥

*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउतालीसमो संधि

पडु-पडह-रवाइं किय-कलयलइं स-वाहणइं ।
आभिट्टइं वे-वि तव-सुय-कुरुवइ-साहणइं ॥ १

[१]

सेणिएण पपुच्छिउ परम-गुरु जें दट्ठु जम्म-जर-मरण-पुरु
गउ एम देव छट्ठउ दिवसु अत्थइरिहे मत्थए थिउ विवसु
सत्तमए दिवसे कहे केम कहिं को कासु भिडेसइ समर-मुहिं
अक्खइ गणहरु जं जेम थिउ गंगेएं मंडल-वूहु किउ ४
एत्तहे पवलेण वलुत्तणेण किउ वज्ज-वूहु धट्ठज्जुणेण
अरुणुग्गमे रहसुद्धाइयइं णिविसें कुरुखेत्तु पराइयइं
हय वज्जइं वड्ढिय-कलयलइं आभिट्टइं विण्णि-वि कुरु-वलइं
रउ उट्ठिउ सेण्णइं अक्कमइ पुणु पहरणग्गि पुणु रुहिर-णइ ८

घत्ता

मइलियइं रएण दड्ढइं हेइ-दवाणलेण ।
ण्हविउ ण्हाइयइं पच्छए रुहिर-महाजलेण ॥ ९

[२]

तहिं काले परोप्परु कर-कमइं आभिट्ट दोण-मच्छाहिवइ
विंधइ विराडु तिहिं सायएहिं दीहर-फणिंद-दीहायएहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवरेण सरासणु ताडियउ   अवरेक्कें चिंधउ पाडियउ
मच्छेण-वि दाविउ अवरु धणु   णव-जलहरेण णं इंदहणु   ४
तिहिं गुरु-गुरु चउ-सरेहिं हरि   धउ एक्के पंचहिं पवर-धुरि
अवरेक्कें चाव-लट्ठि पहय   बे-खंडइं होएवि धरणि गय
धणु अवरु लेवि दोणायरिउ   णं पलय महा-धणु उत्थरिउ
अट्ठहिं सरेहिं चउ तुरय हय   अवरेहिं तिहिं पाडिय सूय-धय   ८

घत्ता

पायत्थु विराडु संदणे संखहो तणए थिउ ।
कुरुवेहिं महियले देवेहिं कलयलु गयणे किउ ॥   ९

[३]

तो संख-विराडेहिं कुद्धएहिं   सामरिसेहिं जय-सिरि-लुद्धएहिं
एक्कहिं रहे विहि-मि परिट्ठिएहिं   गुरु धाइउ सरेहिं अणिट्ठिएहिं
दोणायरिएण-वि संखु हउ   उरु भिंदेवि वसुमइ बाणु गउ
वण-विणयणाउर सर-जज्जरिय   णं हरिहिं विण्णि करि ओसरिय   ४
तहिं काले वइरि-विणिवायणहो   धाइउ सिहंडि दोणायणहो
गुरु-सुउ तिहिं सरेहिं णिडाले हउ   पगलिउ ति-गंडु णं मत्त-गउ
णं मेरु ति-सिंगेहिं मंडियउ   तेण-वि तहो रहवरु खंडियउ
स-तुरंगमु चिंधउ पाडियउ   हउ सारहि धणुहरु ताडियउ   ८

घत्ता

असिवर-फर-हत्थु दुमयहो णंदणु उप्पइउ ।
तडि-चंदहं मज्झे णाइं लहु-घणु उत्थरिउ ॥   ९

[४]

गुरु-तणएं अमरिस-कुद्धएण   केसरि-लंगूल-महा-धएण
सर-जालें छाइउ दुमय-सुउ   असि-घाएं छिंदइ पवर-भुउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खगवइ-व भुयंग-कुलइं गसइ राहु-व दिणयर-किरणइं असइ
रवि-संदण-सण्णिह-संदणेण हय खग्ग-लट्ठि गुरु-णंदणेण ४
अण्णेत्तहे चम्म-रयणु तडिउ णं चंद-बिंदु महियले पडिउ
पासाय-सम-प्पहे सु-प्पवहे सिणि-सुएण चडाविउ णियय-रहे
तहिं तेहए काले समावडिउ सच्चइहे अलंबुसु अब्भिडिउ
मायत्थइं मेल्लेवि जायवहो णिसियरेण सरासणु छिण्णु तहो ८

घत्ता

रयणीयर-माय हुत्थि (?) हय पउरंदरेण ।
उग्गयंते णाइं णिसि णिट्ठविय दिवायरेण ॥ ९

[५]

जं सच्चइ जिणेवि ण सक्कियउ तं जाउहाणु आसंकियउ
णिय-पाण लएविणु कहि-मि गउ णं केसरि णहर-पहर-हयउ
तहिं काले मणोरम-रेह चडिय दुज्जोहण-धट्ठज्जुण भिडिय
तें सट्ठि-विसक्केहिं दुमय-सुउ उरे ताडिउ कह-व ण कह-व मुउ ४
परिचेयण लहेवि कमल-करहो धणु पाडिउ कुरु-परमेसरहो
धउ छिण्णु फणिंद-अलंकरिउ मणि-मोर-पडाया-परियरिउ
हय हयवर सारहि विद्दविउ पहु सत्तहिं सरेहिं अहिद्दविउ
असिवर-फर-करयलु धाइयउ तहिं अवसरे सउणि पराइयउ ८

घत्ता

रहु ढोइउ तेण ते-वि चडेप्पिणु कहि-मि गय ।
णं चंदाइच्च गह-मुह-मेल्लिय गीढ-भय ॥ ९

[६]

दुज्जोहणे गए अमरिसे चडिउ कियवम्मु विओयरे अब्भिडिउ
णं मत्त महा-गए मत्त गउ अवरोप्परु विहि-मि सरेहिं हउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हद्दिक्कु विरुद्धें पंडवेण परिपिहिउ सिलीमुह-मंडवेण
रहु खंडिउ पाडिय वर तुरय हय कवय सरासण सूय-धय ४
उप्पएवि परिट्ठिउ विसम-रहे पहे लग्गु पलायण पउण-पहे
भीमेण-वि जगडिउ कुरुव-बलु णं सीहें गयउलु मय-विहलु
विंदाणुविंद मच्छर-भरिय इरमंत-कुमारहो उत्थरिय
किय तेण-वि हय रह हय तुरय धण-वण-वियणाउर कहि-म गय ८

घत्ता

तहिं तेहए काले कुरुव-वरूहिणि-खय-करणे ।
जिहि रावण-राम भिडिय भइमि-भयवत्त रणे ॥ ९

[७]

मण-गमणोवाहिय-संदणेण कुरु-किंकरु भीमहो णंदणेण
परिपिहिउ पिसक्केहिं वहु-विहेहिं पउणायय-पण्णय-सत्तिहेहिं
ते सव्व करेप्पिणु णिप्पसर भयवत्तें चउदह मुक्क सर
सत्तरिहिं णिवारिउ णिसियरेण पुणु कुरव-णराहिव-किंकरेण ४
सो भइमसेणि हेलए जे जिउ वि-तुरंगु वि-सारहि वि-रहु किउ
पट्ठविय सत्ति रयणीयरेण णं सरिय समुद्दहो महिहरेण
स-वि एंति विहाविय तेण णहे वड्ढंतए तेहए समर-वहे
णं काल-कयंत समावडिय मद्दी-सुय मद्देसहो भिडिय ८

घत्ता

सारहि स-तुरंगु पाडेवि णउलु णिरत्थु किउ ।
जिह उड्डेवि सेणु रहे सहएवहो तणए थिउ ॥ ९

[८]

स..त्वें सल्लिउ सल्लु रणे णं दुमु दुव्वाएं भग्गु वणे
..सारेवि सारहि कहि-मि गउ मज्झण्णहो दिणमणि ढुक्कु तउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कड्ढिय-कोवंड-महाउहहो तव-णंदणु भिडिउ सुआउहहो
णव सर विमुक्क पिहिवीसरेण सत्तासुग कुरुवइ-किंकरेण ४
तणु-ताणु णरिंदहो कप्परिउ सोवण्ण-महामणि-विप्फुरिउ
स-कसाएं राएं तव-सुएण ताडिउ वराह-कण्णासुएण
पंडवेण विसज्जिउ वाण-गणु वण्णासा-तणयहो छिण्णु धणु ८

घत्ता

णिट्ठविय तुरंग पाडिउ सारहि छिण्णु धणु ।
अवरें उरु भिण्णु गउ तहिं जेत्तहिं कुरुव-पहु ॥ ९

[९]

एत्तहे किव-चेइयाण भिडिय अवरोप्परु सरेहिं समावडिय
अवरोप्परु चिंधइं ताडियइं अवरोप्परु छत्तइं पाडियइं
अवरोप्परु छिण्णइं धणुवरइं अवरोप्परु-वि लयइं चामरइं
अवरोप्परु रह-जोत्तार हय अवरोप्परु पाडिय वर तुरय ४
अवरोप्परु पाडिय कणय रह अवरोप्परु पाविय सर-णिवह
पउरुसइं विहि-मि परिवड्ढियइं फर लइय किवाणइं कड्ढियइं
परिभवणुप्पवणोरगणेहिं अप्फोडण-खेलण-लग्गणेहिं
केसरि-वर-रउरव-णीसणेहिं परिभमियइं करणेहिं भीसणेहिं ८

घत्ता

सम-घाएं वे-वि मुच्छ-विहलीहोवि थिय ।
णिय-रहेहिं थवेवि सउवल-पत्थेहिं कहि-मि णिय ॥ ९

[१०]

तो रण-रस-रहस-समोवडिय भूरीसव-धट्ठकेउ भिडिय
सर णउ-वि विसज्जिय चेइवेण णं भुवणहो किरण दिवायरेण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेण-वि सोराएं जुज्झु जिउ कह-कह-वि ण घाइउ वि-रहु किउ
अहिमण्णुहे ताम विरुद्ध-मण धाइय कुमार-वर तिण्णि जण ४
दुम्मरिसणु चित्तसेणु पवरु अवगण्णिय रिउ-वेयण अवरु
ते तिण्णि-वि तणु-ताणावरिय तिण्णि-वि कुंडलेहिं अलंकरिय
तिण्णि-वि सोवण्णेहिं रहवरेहिं विज्जिज्जमाण-वर-चामरेहिं
तिण्णि-वि तहिं छत्तेहिं पंडुरेहिं तिण्णि-वि तुरएहिं दप्पुद्धुरेहिं ८

घत्ता

ते पत्थ-सुएण कुरुवइ-भायर वि-रह किय ।
णं कुसुमसरेण तिण्णि-वि लोयालोय जिय ॥ ९

[११]

किर भीमहो खंभ महा-पिसुणे ण समाहय तेण तेण सिसुणे
गंगेएं ताम पडिक्खलिउ सउहद्दु स-रोसु ताम वलिउ
रणु जाउ महंत-महारहहुं दोण्ह-वि पुत्तरूय-पियामहहुं
कणियार-तालवर-केयणहुं दुवियत्तणु-ताणुब्भेयणहुं ४
तो समर-सहासेहिं दुज्जएण णिय-सारहि वुत्तु धणंजएण
रहु वाहि वाहि जहिं गंग-सुउ णग्गोह-पवर-पारोह-भुउ
दुज्जोहण-पेसिय-राणएहिं परिगरिउ तिगत्त-पहाणएहिं
णिसुणेवि तं संदणु दिण्णु तहिं सउहद्द-पियामह भिडिय जहिं ८

घत्ता

मण-गमण-रहेहिं उब्भिय-धएहिं धणुद्धरेहिं ।
सवडम्मुहु पत्थु धरिउ एंतु जालंधरेहिं ॥ ९

[१२]

सारवेहिं दिण्ण-वाइत्तएहिं वेढिउ वीभच्छु तिगत्तएहिं
णं वण-दउ वणहं समावडिउ णं गरुडु भुयंगहं अब्भिडिउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केसरि वर-करिहिं वियंभियउ आहउ रउद्दु पारंभियउ
छिंदइ धय छत्तइं चामरइं सीसक्कइं कवयइं धणुवरइं ४
आहरणइं वत्थइं सेहरइं रह-रहिय-रहंगइं-जुय-सरइं
धर-कुव्वर सारहि वर-तुरय कर-चरण-सिरइं भुय-दंड हय
कप्पियइं कुंभि-कुमत्थलइं सावक्खर-पक्खर-कंवलइं
णक्खत्तमाल-घंटा-जुयइं कर-कण्ण-दंत-गत्तइं अयइं ८

घत्ता

उवयरणेहिं एहिं सव्वेहिं समरु अलंकरिउ ।
लक्खिज्जइ णाइं जमहो सुअंतहो पत्थरिउ ॥ ९

[१३]

तो तहिं वत्तीसहिं रहवरेहिं गंधव्व-णयर-सुमणोहरेहिं
चामीयर-मंडण-मंडिएहिं सुरगिरि-सिहरेहिं-व हिंडिएहिं
णरु वेढिउ कोव-चलग्गएहिं णं केसरि मत्त-महा-गएहिं
वत्तीस वि-सट्ठिहिं सर-विहय विहुणंत-सरीरइं कहिं-मि गय ४
परिवारिउ अज्जुणु राणएहिं जायव-जण-पमुह-पहाणएहिं
परिहरेवि जयद्दह-कुरुव-पहु गंगेयहो भिडिउ सिहंडि-रहु
धणु पाडिउ दोमइ-भायरहो गिर णिग्गय पंडु-सुएसरहो
किर पइं मारेवउ गंग-सुउ समरंगणे णवर णिरत्थु हुउ ८

घत्ता

तं णिसुणेवि सिहंडि धाइउ गंगा-णंदणहो ।
थिउ अग्गए सल्लु मग्गु णिरुंधेवि संदणहो ॥ ९

J. after 8 b, reads मयइंद णाणा गयघडइं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१४]

परिखलिउ महा-रहु णिक्किवेण अग्गेउ मुक्कु मद्दाहिवेण
तो दुमय-सुएण वि दारुणेण जलणत्थु णिवारिउ वारुणेण
कुरु-वंस-निवद्ध-फलट्ठिलेण आयामिउ सल्लु जुहिट्ठिलेण
कीया-कुल-काल-कयंतएण किउ सिघउ वि-रहु विओयरेण ४
थिउ चित्तसेणु सवडम्मुहउ हय-रहवरु भग्गु परम्मुहउ
मद्दाहिउ जिणेवि स-संदणेण संतणउ विद्धु तव-णंदणेण
णाराउ खुरेण णिवारियउ रहु खंडिउ कह-व ण मारियउ
णउलेण णराहिउ कड्ढियउ कुरुवइ-परिओसु पवड्ढियउ ८

घत्ता

तहिं काले सिहंडि थिउ गंगेयहो सम्मुहउ ।
अवहेरि करेवि गउ रणे सो-वि परम्मुहउ ॥ ९

[१५]

घट्ठज्जुण-सच्चइ वे-वि जण णं जलण-पवण वण-डहण-मण
विण्णि-वि हणंति कुरु-साहणइं रह-तुरय-जोह-गय-वाहणइं
विंदाणु-विंद तहिं ताव थिय अवरोप्परु आहव-केलि किय
उच्छल्लिय चित्त दुज्जोहणहो विणिवारहो मारहो आहणहो ४
तं णिसुणेवि वाहिय-वाहणइं आभिट्ट पडीवा साहणइं
पडिवण्णु महाहउ दुव्विसहु हय-खुरहिं समुट्ठिउ रय-णिवहु
एत्तहे-वि दिवायरु अत्थमिउ तम-णियरु णिरंतरु परिभमिउ
पइसरेवि मज्झे अ-णिवारियइं रय-रयणेहिं णं ओसारियइं ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

णिय-सिमिरु गयाइं सुरवर-णियरें संसियइं ।
विक्कम-विज्जएहिं सुहड-सभा सइं भूसियइं ।। ९

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए चउतालीसमो सग्गो ।।

15. 4. j. चित्तवाय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचचालीसमो संधि

महण-मणोरहइं अवहत्थिय-रण-भय-जीवइं ।
अट्ठमे दिवसए भिडियइं कुरु-पंडवाणीयइं ॥ १

[१]

अवियल-जिणवर-भत्ति-साहें पुच्छिउ मह-रिसि मागहणाहें
गउ परमेसरु सत्तमु वासरु अट्ठमे को कहो भिडइ णरेसरु
अक्खइ इंदभूइ-विणिओएं विरइउ पवर-वूहु कुरु-लोएं
अग्गए थिउ भाईरहि-णंदणु पुणु गुरु सोण-तुरंगम-संदणु ४
पुणु भययत्तु गइंदारोहणु पुणु सयमेव राउ दुज्जोहणु
पुणु किव-पमुहेक्केक्क-पहाणा गय कुरुखेत्तु पराइय राणा
एत्तहे कुरुव-मडप्फरु-साडउ किउ धट्ठज्जुणेण संघाडउ
सच्चइ-भीम परिट्ठिय सिंगेहिं अवर णराहिव अवरेहिं अंगेहिं ८

घत्ता

भिडियइं साहणइं रोमंचुब्भिण्ण-सरीरइं ।
एक्कहिं लग्गाइं णं जण्हवि-जउणा-णीरइं ॥ ९

[२]

भिडियइं वलइं वे वि वहु-भंगेहिं पवण-जवण-मण-गमण-तुरंगेहिं
जंगम-गिरि-समेहिं रह-विंदेहिं घण-संकासेहिं मत्त-गइंदेहिं
जम-दूओवमेहिं पायालेहिं णहयल-सण्णिहेहिं करवालेहिं
दिणयर-चक्क-समप्पह-चक्केहिं विसहर-विसम-मुहेहिं पिसक्केहिं ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सक्क-सरासण-सम-कोयंडेहिं जम-दंडोवमेहिं गय-दंडेहिं
फर-रयणेहिं ससि-बिंब-समाणेहिं कंस-लोह-रुप्पिय-तणु-ताणेहिं
आएहिं अवरेहि-मि उवयरणेहिं विण्णि-वि वावरंति वावरणेहिं
तुरय-खुरहिं उच्छलिउ महा-रउ गउ सुरवरहं णाइं हक्कारउ ८

घत्ता

रण-रउ मइलणउं रुहिर-णइ मलिणि परिहीणी ।
किं अकुलीणहो अणुहरइ कया-वि कुलीणी ॥ ९

[३]

तहिं समरंगणे दूसह-तेएं पंडव-वलु जगडिउ गंगेएं
काहि-मि सीसइं खुडइ स-गीवइं हंसु स-णालइं जिह राजीवइं
काह-मि का-वि लील दरिसावइं सिरइं लेइ रुंडइं णच्चावइ
काह-मि पाण लेवि तणु वज्जइ सव्वस-हरणु ण कासु-वि छज्जइ ४
काह-मि वाहु सहंगुलि तक्खइ खगवइ पंच-फणाहिव भक्खइ
काह-मि पट्टु पायवहं पहावइ पाण-विहंगम-सयइं उड्डावइ
काह-मि हणइ पडाया-छत्तइं णं स-वलायावलिय सयवत्तइं
काह-मि पहरण-लक्खइं छिंदइ काह-मि देहावरणइं भिंदइ ८

घत्ता

रहु पट्टु गउ तुरउ जो जो सवडम्मुहु ढुक्कइ ।
सो सो सरि-सुयहो रण-मुहे जीवंतु ण चुक्कइ ॥ ९

[४]

ताम विओयरेण रहु चोइउ सारहि णाइं कियंतहो ढोइउ
विण्णि-वि भिडिय पियामह-पोत्ता विण्णि-वि णिय-णिय साहण-गोत्ता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विण्णि-वि वसह-खंध करि-कर-भुय विण्णि-वि रण-रस-रहस-वसंगय
विण्णि-वि कंचण-सीह-तलद्धय विण्णि-वि वावरंति दप्पुद्धय ४
बिहि-मि परोप्परु पिहिउ पिसक्केहिं विण्णि-वि पोमाइय सक्कक्केहिं
कह-व कह-व संतण-दायाएं भीमहो सारहि हउ णाराएं
णट्ठ तुरंगम रहवर लेप्पिणु सूयत्तणु सयमेव करेप्पिणु
विद्धु सुयासु सीसु तहो पाडिउ णं ताल-तरु-महा-फलु साडिउ ८

घत्ता

कुरुवइ सिरिण हउ पेक्खंतहो णरवर-चक्कहो ।
लइ तं एउ फलु विस-जलण-जूय-किंपक्कहो ॥ ९

[५]

हए कुमारे दुज्जोहण-भायरे हाहा-सद्दु जाउ कुरु-सायरे
ताम पधाइय सत्त सहोयर थाहि थाहि कहिं जाहि विओयर
भीमसेणु आरोडिउ सव्वेहिं णं वण-करि सवरेहिं स-गव्वेहिं
पढमु विसालचक्खु विणिवाइउ पुणु पंडिउ पुणु हउ अवरइउ ४
एक्केक्केण सरेण वियारिय तिण्णि-वि जम-पट्टणे पइसारिय
इयर कुमार चयारि-वि रोसिय वाण महोयरेण णव पेसिय
सत्तरि वहवासिएण पउंजिय णउ-वि णउ-वि अवरेहिं विसज्जिय
तहिं अवसरे परिकुविउ विओयरु तिहिं वाणेहिं विद्धविउ महोयरु ८

घत्ता

कुंडधारु दसहिं आइच्चकेउ वहवासिय ।
विण्णि-वि समर-मुहे एक्केक्क-सरेण विणासिय ॥ ९

[६]

णिएवि अवत्थ सुहड-संघायहो गउ दुज्जोहणु परम-विसायहो
मइं पावेण सयण माराविय गुरु-गंगेय-विउर लज्जाविय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुण्णय-दुमहो फलइं परिपक्कइं होंति णियाण-काले लल्लक्कइं
गंगा-णंदणेण साहारिउ वहुवेहिं वहुय-वार विणिवारिउ ४
ण किउ वयणु जिह कासु-वि केरउ तिहिं वलु चोयहि घरहि म सेरउ
पंडव दुण्णिवार मइं अक्खिउ पइं अण्णाणें कज्जु ण लक्खिउ
एवहिं धीरु होहि वरि जुज्झहि दीणालावेहिं कह-मि ण सुज्झहि
रण-धुर-धरेहिं परिट्ठिउ जावेहिं रिउ तिहिं मुहेहिं पराइउ तावेहिं ८

घत्ता

तुरय-महा-रहेहिं णर-णरवइ-पवर-गइंदेहिं ।
वेढिउ गंग-सुउ जिह दुमणि महा-घण-विंदेहिं ॥ ९

[७]

जं तिहिं मुहेहिं पधाइउ पर वलु धरिउ पियामहेण तं णिच्चलु
दोणु पधाइउ रणे दुप्पेच्छहं सोमय-सिंजय-कइकय-मच्छहं
जउ जउ थरहरंतु रहु पावइ तउ तउ रत्त-तरंगिणि-धावइ
कुंडल-मउड-महामणि-विमलइं खुडइ खुरुप्पेहिं णर-सिर-कमलइं ४
सर-किरणेहिं किरंतु परिसक्किउ दोण-दिवायरु धरेवि ण सक्किउ
तहिं अवसरे आरोसिय पंडव धाइय उद्ध-सुंड वेयंड व
ढुक्कु विओयरु मत्त-गइंदहं भिडिय णउल-सहएव तुरंगहं
णर णरवइ णरेण विणिवारिय आहवे छिण्ण भिण्ण लय मारिय ८

घत्ता

णासइ कुरुव-वलु णर-सर-समूह संताविउ ।
कुंजर-जूहु जिह हरि-णहर-पहर-कडुयाविउ ॥ ९

[८]

थक्क चयारि-वि णरवर-संदण किव-किववम्म-सउणि-गुरु-णंदण
तेहि-मि धीरिउ वलु णासंतउ भार-दुवारे सरणु पइसंतउ

भिडिय चयारि-वि पंडव-साहणे रह-गय-जोह-तुरंगम-वाहणे
जे णर-णाराएहिँ भग्गा वलेवि असेस ते-वि पडिलग्गा ४
तहिँ अवसरे इरवंतु पराइउ जो णरेण फणिणिहे उप्पाइउ
पवर तुरंगमेहिँ मण-णमणेहिँ गमणोहामिय-खगवइ-पवणेहिँ
जावण-आजाणेय-महीजेहिँ तित्तिरि-णइ-जवणज-कंवोजेहिँ
आएहिँ तुरएहिँ भिडिउ कुमारहं सउणि सहोयराहं गंधारहं ८

घत्ता

सुवलहो णंदणेहिँ वेढिउ इरवंतु पयंडेहिँ ।
अमरिस-कुइय-मणु पंचाणणु जिह वेयंडेहिँ ॥ ९

[९]

गय-गवक्ख पिसुणुज्जण-णामेहिँ सुग्र-सारी-समेहिँ छहिँ कामेहिँ
वेढिउ एक्कु धणंजय-णंदणु जाउ महंतु सुहड-कडवंदणु
अग्गए पच्छए उवहो-पासेहिँ पिहिउ विविह-णाराय-सहासेहिँ
तणु तणु-ताणु सरासणु ताडिउ छिण्णु छत्तु धउ चामरु पाडिउ ४
णिहय वाह जुत्तारु वियारिउ अज्जुण-णंदणु रणे अ-णिवारिउ
धाइउ फर-पिहिओरु स-असिवरु सउणि-सहोयरु णिउ जम-पुरवरु
पणय-सीसु तिण-दंतु णमंसेवि णवर एक्कु गउ पिसुणु पणासेवि
तो कुरु-णाहें वइरि-गयंकुसु पेसिउ आरिससिंगि अलंवुसु ८

घत्ता

रक्खसु रक्खस-धउ रक्खस-परिवारु धणुद्धरु ।
इरवंतहो भिडिउ मघवंतहो जिह दसकंधरु ॥ ९

[१०]

पवर-तुरंगेहिँ समरुद्धरिसेहिँ वीसहिँ सएहिँ महुत्तम-वरिसेहिँ
जहिँ इरवंतु महारहे चडियउ आरिससिंगि तेत्थु ओवडियउ

वीस-सयइं उप्पाएवि वाहहं णिरुवम-हेमाहरण-सणाहहं
जुज्झिय जाम जाय समसुत्ती रत्त-तरंगिणि तहिं जि णिउत्ती ४
सिक्किणि परि लिहंति अवरोप्परु भिडिय वे-वि रणु जाउ भयंकरु
णाइणि-णंदणेण धणु ताडिउ वइवस-महिस-सिंगु णं पाडिउ
जाउहाणु उप्पइउ णहंगणे मायत्थइं मेल्लंतु रणंगणे
छिण्णइं णर-सुएण लहु लक्खें वहुरूविणि परिचिंतिय रक्खें ८

घत्ता

रावण-विक्कमेण वहुरूविणि-विज्जावंतें ।
वहु-रूवइं कियइं णं णडेण रंगे पइसंतें ॥ ९

[११]

दस सउ सहसु लक्खु उप्पज्जइ रिउ-रूवहं परिमाणु ण णज्जइ
तहो पडिमाय रइय इरवंतें णाग-पासि णिम्मविय तुरंते
पेसिय सव्व-लोय-पलयंकर फुरिय-फणा-फुक्कार-भयंकर
कालिय-कालदट्ठ-वइरोडय तक्खय-संखचूड-कक्कोडय ४
संखपाल-धयरट्ठ-धणंजय आसीविस-दिट्ठीविस-दुज्जय
तेहिं णिसायर-धणु खज्जंतउ तट्ठु णट्ठु भयवे-विर-गत्तउ
झत्ति अलंवुसेण उप्पाइय भीसण गारुड-विज्ज पधाइय
अहि खायणहं लग्ग सव्वत्तेहिं णाय ण णाय आय गय केत्तहिं ८

घत्ता

ताम णिसायरेण सिरु पाडिउ इरवंतहो ।
णिवहं णियंताहं पेसिउ पाहुणउ कयंतहो ॥ ९

[१२]

तं भीसावणे भड-कडवंदणे हए इरवंते धणंजय-णंदणे
भेल्लिउ पंडव-सेण्णु अजेयहं आरिससिंगि-दोण-गंगेयहं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एत्थु-वि कुरुव-लोउ तिहिं भाएहिं   सच्चइ-भीम-दुमय-दायाएहिं
स-सर-सरासण करि-परिहच्छेहिं   णं मयरहरु भिण्णु तिहिं मच्छेहिं ४
तहिं अवसरे तव-तणय-विमुक्कउ   धाइउ गलगज्जंतु घुडुक्कउ
णं भुक्खालु कालु जग-भोयणु   चंदाइच्च-समप्पह-लोयणु
रस-वस-सोणिय-मास-समीहउ   विज्जुल-लोल-ललाविय-जीहउ
धूमकेउ-धूमप्पह-पुग्गलु   दीहर-परिह-व लंव-भुयग्गलु ८

घत्ता

चालिउ सिरेण णहु   चलणेहिं वसुंधर चालिय ।
कउरव कवलु जिह   भुक्खिएण जमेण णिहालिय ॥ ९

[१३]

दिट्ठु हिडिंव-पुत्तु कुरु-लोएं   मंदरु पत्तु णाइं खीरोएं
णं खगवइ उरगिंद-समूहें   णं पंचाणणु कुंजर-जूहें
णं अ-हिमयरु महा-तिमिरोहें   णं खय-पवणु मेह-संदोहें
णं दावाणलु जर-तरु-तंवें   णं वज्जाउहु गिरि-णिउरुंवें ४
विसम-सीलु मज्जाय-विमुक्कउ   पर-वलु गलणहं लग्गु घुडुक्कउ
मासइं वण्ण-विचित्तइं चक्खइ   णव दस वीस तीस भड भक्खइ
एक्कु-वि कवलु ण पुज्जइ घोडउ   कलेवउ व गइंदु-वि थोडउ
दूरवरेण जि कुरुवइ-केरउ   वलु णासणहं लग्गु विवरेरउ ८

घत्ता

जले थले दिसहिं णहे   असिवरे फरे उरे ढुक्कउ ।
रह-धुरे तुरए धए   कायर पेक्खंति घुडुक्कउ ॥ ९

[१४]

तं तेहउ णिएवि आओहणु   भिडइ ण भिडइ ताम दुज्जोहणु
तहिं अवसरे रहसूसलियंगें   उप्परि चोइय धउउ कलिंगें

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

दस सहास मय-मत्त गइंदहं हय-ढक्कहं पक्खर-पिहियंगहं
सिक्किणि परि लिहंतु णह-सीयरु गय-साहणे पइट्ठु रयणीयरु ४
के-वि करेहिं धरेवि भमाडिय केहि-मि के-वि पडंतेहिं पाडिय
कण्णेहिं के-वि लेवि जुज्झाविय काह-मि सम-सुत्ती दरिसाविय
के-वि पडंति भिण्ण-कुंभत्थल दूरुच्छलिय-धवल-मुत्ताहल
के-वि अ-वाइय घाइय भक्खिय चप्पिय चूरिय चूसिय चक्खिय ८

घत्ता

गय-घड धुणइ सिरु ओसरइ ण अप्पउं धीरइ ।
विमुहिय वेस जिह दाणेण-वि धरेवि ण तीरइ ॥ ९

[१५]

गय-घड तट्ठ णट्ठ विवरेरी णं णव-वहुय वियड्ढहो केरी
तो कुरु-णाहें वाहिउ संदणु तिण-समु मण्णेवि भीमहो णंदणु
घाइय अंग-रक्ख तहो केरा जे दुग्घोट्ट-थट्ट भंजेरा
विज्जुलजीहु पमाहि महंतउ अवरु महंतउ दुज्जववंतउ ४
एक्केक्केण लोह-णाराएं णिहय चयारि-वि कउरव-राएं
धाइउ भीमसेणि स-सरासणु णाइं कयंतु करंतु गवेसणु
छाइउ कुरुव-णराहिउ वाणेहिं आयस-वइणवेहिं अपमाणेहिं
पाय पडिच्छओ य मइ-गम्मिय कवड-दुरोयर-सरयण-णामिय ८

घत्ता

तो दुज्जोहणेण सर पंचवीस णिम्मोइय ।
कालें कुद्धएण णं स-विस भुयंगम चोइय ॥ ९

[१६]

कुरु-णाराय-घाय-कडुआविउ जाउहाणु संदेहि चडाविउ
उच्छलंत-वण-सोणिय-सीहरु णं संचारिम-धाउ महीहरु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेल्ल-धोय गिरि-सिहर-वियारणि मुक्क वलंति सत्ति रिउ-मारणि
उरसा एंति पडिच्छिय वेगें गउ जमसासणु सहुं मायंगे ४
विद्दु घुडुक्कउ कउरव-राएं वंचिउ वाणु भीम-दायाएं
ताम खयक्क-समप्पह-तेएं पेसिय सव्व-राय गंगेएं
रक्खहु कुरुव-णरिंदु णिरुत्तें णं तो णिहउ विओयर-पुत्तें
तो सहसत्ति पराइय राणा किवि-कुरु-पमुहेक्केक्क-पहाणा ८

घत्ता

वेढिउ रण-मुहे रयणीयरु बहु सामंतेहिं ।
केसरि एक्कु जणु णं हरिण-गणेहिं अणंतेहिं ॥ ९

[१७]

एक्कहिं मिलेवि णरिंद-सहासेहिं वद्धामरिसेहिं चउद्दु-मि पासेहिं
हम्मइ घण-पहरणेहिं घुडुक्कउ गोंदले झिंदुउ जिह पम्मुक्कउ
तेण-वि सोलह परिसंखाणेहिं रुप्प-पुंख-सिल-धोएहिं वाणेहिं
भूरीसवहो सरासणु ताडिउ देहावरणु सरीरहो पाडिउ ४
भीम-भुवंगोवमेण पिसक्कें वारिय किव-विगण्ण एक्केक्कें
दोण्ण वि वीसहिं सारहि घाइय पेयाहिव पुरवर-पहे लाइय
तिहिं वल्हिक्कु थणंतरे ताडिउ सल्लिउ सल्लु विहंघलु पाडिउ
किउ रणे वि-धणु विविंधु जयद्दहु अवरु-वि जो जो को-वि महा-रहु ८
सो सो सव्वु घुडुक्कए लग्गउ एक्कु अणंतहि तो-वि ण भग्गउ

घत्ता

णिसियरु णिय-रहहो उप्पएवि णहंगणे भेसइ ।
को मइं खद्धु ण-वि अहिउलइं-व गरुडु गवेसइ ॥ १०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१८]

मेल्लिउ सीह-णाउ णहे थाएवि पभणइ धम्म-पुत्तु उण्णाएवि
मइं परमेसरु अक्खेवउ भीम घुडुक्कउ पइं रक्खेवउ
णरु णारायणेण परिपालिउ भलउ रणंगणे केण णिहालिउ
मद्दु सिहंडि धट्ठज्जुणु सच्चइ तिण्णि-वि रक्खणु किं ण पहुच्चइ ४
कुरु-परमेसरेण मोक्कल्लिउ सरहसु भीमसेणु संचल्लिउ
णं फणि-भक्खणे गरुडु विअट्टउ मइणहो मंदरु णाइं पयट्टउ
अच्छउ ताम गयए पहरेवउ स-सरु सरासणु अवरु धरेवउ
कह-वि कह-वि जं एक्कहिं मिलियउ पर-बलु दिट्ठिए ज्जि णं गिलियउ ८

घत्ता

ताम घुडुक्कएण णिय-जणणु दिट्ठु समुहाणणु ।
मत्त-गइंद-थडे णं पइसंरतु पंचाणणु ॥ ९

[१९]

खत्तदेउ अहिमण्णु स-णीलउ तिह सउदित्ति मयाहिव-लीलउ
ते पय-रक्ख देवि चउ-पासेहिं छहिं पभिण्णु मायंग-सहासेहिं
अ-गणिय-रहेहिं तुरंगेहिं ढुक्कउ तेत्थु जेत्थु हइडिंबु घुडुक्कउ
जीउ महाहउ पेल्लिउ कुरु-वलु पंडव-सेण्णे समुट्ठिउ कलयलु ४
पेक्खेवि हीयमाणु आओहणु छाइउ रहवरेण दुज्जोहणु
भीमहो भिडिउ रणंगणे घोरहो मत्त-गइंदु व सीह-किसोरहो
ताव णिसायरेण रहु वाहिउ विहि-मि णराहिउ कह-व ण साहिउ
छव्वीसेहिं सरेहिं झड देंतउ दोणें विद्धु विओयरु एंतउ ८

घत्ता

तेण-वि दसहिं हउ कुरु-गुरु मुच्छ-विहलंघलु ।
णिवडिउ णियय-रहे इंद-महे णाइं आखंडलु ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२०]

छाइय कुरुव-राय-गुरु-णंदण मंदर-मेरु-समप्पह-संदण
भिडिय वे-वि तहिं मज्झिम-पत्थहो भीमहो भीम-गयासणि-हत्थहो
रहु परिहरिउ हिंडिवा-कंते गुरु-सुएण उरे विद्धु तुरंतें
तहिं अवसरे चंदंकिय-णामहो णीलु पधाइउ आसत्थामहो ४
रहु दोणायणेण तहो खंडिउ कहि-मि ण छाइउ मोहेवि छंडिउ
तं पेच्छेवि मज्जाय-विमुक्कउ पलय-कालु जिह आउ वुडुक्कउ
माया-वलेण तेण वलु मोहिउ सीहें हरिण-जूहु णं रोहिउ
विविहाहरणे अणेय-पसाहणे दिण्णइं तूरइं पंडव-साहणे ८

दिणमणि अत्थमिउ कुरु-पंडव-वलइं णियत्तइं ।
विण्णि-वि साहणइं रण-भूमि सइं भूसंतइं ॥ ९

*

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए पंचतालीसमो इमो सग्गो ॥

*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छायालीसमो संधि

गय अट्ठ दिणइं जुज्झंतहं तो-वि ण समियइं वाहणइं ।
रणे पंडव-कउरव-केराइं भिडियइं विण्णि-वि साहणइं ॥ १

[१]

मगहाहिउ पुच्छइ अक्खु देव अट्ठमउ दिवसु अइकंतु केवं
उप्परि पुणु होसइ कवणु जुज्झु परमेसरु पभणइ कहमि तुज्झु
सुणु अट्ठमए दिवसे महा-रहेण दुज्जोहणु वुत्तु पियामहेण
तुहुं कुरुवइ धरहि किरीडमालि हउं करमि कियंतोवम दुयालि ४

पर एक्कु मुएप्पिणु रणे सिहंडि ण गणमि जायव-पंडव स-पंडि
सोमय-सिंजय-पंचाल-मच्छ चेइय-सक्खइ-कय (?) कालि-कच्छ
पहु एत्तिय खत्तिय खयहो णेमि सायर-पेरंत धरित्ति देमि
परमेसरु णरवर-पुज्जणिज्जु उग्गमिय-महाउहु किय-पइज्जु ८

कुरु-पंडव-पणय-पयारविंदु णं सग्गहो णिवडिउ सुरवरिंदु
णीसरिउ स-साहणु दिण्ण-तूरु दुव्विसहु णाइं थिउ पलय-सूरु

घत्ता

दुण्णिमित्तइं ताम समुट्ठियइं सव्वइं असुहइं सिव रडइ ।
जंवुउ पइसरइ मज्झे वलहो छत्तेहिं गिद्ध-पंति चडइ ॥ ११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२]

णिसुणेविणु तूरहं तणउ सद्दु पंडवेहिँ वूहु किउ सव्व-भद्दु
रण-भूमि पइट्ठइं वलइं वे-वि पडिलग्गइं अणियहो अणिउ देवि
पवणद्धुय-चिंधइं फरहरंति णं कायर चित्तइ थरहरंति
हरिचंद-पुराइं व रह भमंति अब्भाइं व चक्कइं थरहरंति ४

दप्पुद्धुर सिंधुर सीयरंति णं घण संचारिम संचरंति
तुरमाण तुरंगम महि छिवंति णं णिरवसेसु महियलु पियंति
विज्जुलउ व असि-लट्ठिउ फुरंति कोवा इव चावइं कयरंति
मिहुणाइं व उहय-उलइं भिडंति अहिउलइं व सर-जालइं पडंति ८

घत्ता

हरि-खुर-खउरण-रउ उच्छलिउ आमिस-वस-रस-लालसहो ।
णं वलइं गिलंतहो उद्धुसिउ केस-भारु रण-रक्खसहो ॥ ९

[३]

वट्टंतए तेहए रण-रउद्दे रुहिर-णइ-सहासुट्ठिय-समुद्दे
अहिमण्णु पिसंग-तुरंगमेहिँ गंगा-तरंग-रंगिर-गमेहिँ
पइसइ एक्केण महा-रहेण सेण्णइं डहंतु सर-हुयवहेण
फेडंतु कियंतहो तणिय भुक्ख छिंदंतु णराहिव-पवर-रुक्ख ४

गुरु-गंधवहुद्धुय-धय-विहंग तोणा-कोडर-सरवर-भुवंग
जर-पंडुर-सिर-परिणय-फलोह लोयण-फुल्लंधुय-दिण्ण-सोह
थिर-थोर-पलंव-भुवोह-डाल णह-णियर-कुसुम-करयल-पवाल
उड्डाविय-रह-गय-तुरय-सेण णं तूल-रासि हय मारुएण ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

रणे एक्कहो अज्जुण-णंदणहो समुहु ण थक्कइ कुरुव-वलु ।
उत्थरइ वलइ पासेहिं भमइ णं मंदरहो समुद्द-जलु ॥ ९

[४]

तहिं काले कुरुव-परमेसरेण पट्ठविउ अलंवुसु मच्छरेण
तुहुं करहि कुमारहो माण-भंगु विद्धंसहि साहणु चाउरंगु
दप्पुद्धरु धाइउ जाउहाणु णं लग्गु वणंतरे चित्तभाणु
सेणा-मुहु जगडिउ णिरवसेसु समुहिंतु पडिच्छिउ रक्खसेसु ५

पंचहिं पंचालिहे णंदणेहिं विच्चाले पचोइय-संदणेहिं
समकंडिउ खंडिउ छत्त-दंडु धउ विद्धउ खुडिउ पडाय-संडु
पडिविंझें देहावरणु छिण्णु तणु भिंदेवि पुणु महिवट्टु भिण्णु
मुच्छ-विहलंघलु रहे णिसण्णु कह-कह-वि समुट्ठिउ लद्ध-सण्णु ८

हय हयवर सारहि स-धणु विद्धु एक्केकउ तिहिं तिहिं सरहिं विद्धु

घत्ता

किय पंच-वि वि-रह णिसायरेण धाइउ ताव सुहद्द-सुउ ।
साहेज्जउ दिंतउ पंडवहं णाइं पुरंदरु सग्ग-चुउ ॥ १०

[५]

मायामउ रक्खु वलप्पमेउ दिव्वत्थ-कुसलु हरि-भाइणेउ
विण्णि-वि पहरंति महाणुभाव आयस-णाराय सुवण्ण-चाव
सउहद्दें देवइ-सुय-सुएण सर पेसिय अट्ठ महा-भुएण
तेण वाहिणि वारिय स-रहसेण पुणु लक्खु विसज्जिउ रक्खसेण ५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अद्धवहे जे भड-कडवंदणेण सय-खंडइं किय णर-णंदणेण
पुणु णउ विहिं तहो तणु-ताणु छिण्णु वायरणु व बुहेहिं सरीरु भिण्णु
गउ मोहहो तो-वि ण जाउहाणु पडिवारउ विरइउ परम-थाणु
जग-मोहणु पेसिउ ताम सत्थु तिमि-अहि-मयरत्थें किउ णिरत्थु ८

घत्ता

ओसारिउ आरिससिंगि रणे किव-दोणायण-दोण जिय ।
जिह मत्त-गइंद मयाहिवेण पाराउट्टा सव्व किय ॥ ९

[६]

दुज्जोहणु पभणइ थाहि थाहि वलु वलु कहिं आरिससिंगि जाहि
हणु हणु अपसत्थु अपत्थु वालु आयहो आसण्णीहूउ कालु
मं भज्जहि भंजहि वइरि-विंदु तं णिसुणेवि वलिउ णिसायरिंदु
अप्पाइय-मायउ जाउ जाउ अहिवण्णु णिवारइ ताउ ताउ ४

हय चउ तुरंग विद्दविउ सूउ धउ पाडिउ वि-रहु णिरत्थु हूउ
गउ कहि-भि अलंवुसु पाण लेवि कुरु-सेण्णु-वि रणउहे पुट्ठि देवि
हक्कारिउ ताम पियामहेण सेयासें सेय-महा-रहेण
तवणीय-ताल-तरु-केयणेण दुव्वार-महा-रिउ-भेयणेण ८

घत्ता

णर-णंदण-संतण-णंदणेहिं सरेहिं परोप्परु छाइउ ।
णं पट्टु णिवद्धु जुहिट्ठिलहो अज्जुणु ताम पराइउ ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[७]

पंचहिं णाराएहिं गंग-पुत्तु विणिवारेवि रणे अहिमण्णु पत्तु
एत्तहिं किवेण जय-सिरि-समिद्धु सिणि-णंदणु णवहिं सरेहिं विद्धु
णव-णवहिं हणेविणु णराउ मुक्कु सो आसत्थामें णहे विलुक्कु
जं दिट्ठु वाणु वाणेण खलिउ किउ मेल्लेवि दोणायणहो चलिउ ४
जुजुहाण-दोणि आभिट्ट वे-वि सवडम्मुहु रहु रहवरहो देवि
सइणेयहो पाडिय चाव-लट्ठि धणु अवरु लेवि सर घिविय सट्ठि
मुच्छा-विहलंघलु दोण-पुत्तु धय-दंडु धरेप्पिणु थिउ मुहुत्तु
चेयणे लहेवि सिणि-सूणु विद्धु उरु भिंदेवि सरु धरणिहि णिसिद्धु ८

घत्ता

तो दोणायरिएं सु-कुद्धुए सच्चइ वीसहिं सरेहिं हउ ।
णिक्कंपु परिट्ठिउ मेरु जिह पडिवउ भिडिउण मुच्छ गउ ॥ ९

[८]

पडिवण्णए तहिं संगाम-काले वीभत्थु परिट्ठिउ अंतराले
गुरु-सीस परोप्परु भिडिय वे-वि गंडीव-पवर-धणुधरइं लेवि
सेयासें परिह-सम-प्पहेहिं दिणयर-कढोर-कर-दूसहेहिं
कम्मार-कम्म-परिमज्जिएहिं णिट्ठुर-भुय-अंत-विसज्जिएहिं ४
सत्तारह-वारह-मग्गणेहिं गुरु विद्धु णाइं दुमु अलि-गणेहिं
आरुट्ठु सुट्ठु मणे भूमि-देउ णर-सर विणिवारिय ण किउ खेउ
तहिं अवसरे पर-मइ-मोहणेण पेसिउ सुसम्मु दुज्जोहणेण
थिउ अंतरे दोण-धणंजयाहं आलाण-खंभु णं विहिं गयाहं ८

घत्ता

जे सर पट्ठविय तिगत्तेहिं ते विणिवारेवि अज्जुणेण ।
णं दुक्ख-विढत्ता अंत-गुण णासिय एक्कें अवगुणेण ॥ ९

[९]

तो पत्थें णिय-कुल-पायवेण अरि-तरु उड्डाविय वायवेण
दोणेण-वि पेसिउ महिहरत्थु कंपावणु पावणु किउ णिरत्थु
णर-कर-सर-सीरिउ थाण-भट्ठु जालंधर-साहणु कहि-मि णट्ठु
एत्तहे-वि जुहिट्ठिलु राणएहिं वेढिउ एक्केक्क-पहाणएहिं ४
विंदाणुविंद-किव-सउवलेहिं भूरीसव-सल्ल-विहव्वलेहिं
भयदत्त-सोमयत्ताहिवेहिं आएहिं अवरेहि-मि पत्थिवेहिं
एत्तहे-वि विओयरु वारणेहिं णं छाइउ विंझु महा-घणेहिं
रहु छंडेवि धाइउ भीमसेणु णं केसरि विणिवारिय-करेणु ८

घत्ता

किउ गयउलु गय-वलु गय-वलेण भीमें रहसाइट्ठिएण ।
उड्डाविउ जलहर-विंदु जिह पवणें मज्झे परिट्ठिएण ॥ ९

[१०]

तहिं तेहए काले पियामहेण ओवाहिय-पवर-महारहेण
पंडव-सामंत महंत जोह मायंग तुरंगम रहवरोह
धय कवय-छत्त-चामर-समिद्ध तिहिं तिहिं णाराएहिं सव्व विद्ध
तेहि-मि समरंगणे दुज्जएहिं मच्छाहिव-सोमय-सिंजएहिं ४
कइकय-पंचालेहिं पंडवेहिं अवरेहिं रइय-सर-मंडवेहिं
संतणउ विद्धु वहु-मच्छरेहिं घट्टज्जुणेण तिहिं तोमरेहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीसहिं सिहंडि-णाम-ग्गहेण मच्छेहिं दसहिं कय-विग्गहेण
सरि-सुएण वि तं सर-जालु भग्गु गुणु छिण्णु दुमय-धणु-कोडि-लग्गु ८

घत्ता

णिग्गुणु जे होवि वरि अच्छियउं णउ गुणेण वंकुडउं किउ ।
वाणासणु दुमयहो तणए करे एवं णाइं वोल्लंतु थिउ ॥ ९

[११]

धणु अवरु लेवि जुत्तारु विद्धु किउ वि-रहु पियामहु रणे णिसिद्धु
परिसक्किउ सयलेहिं कउरवेहिं पारद्धु महाहउ तंवेरम वर-तंवेरमासु
पहु पहुहे स-मच्छरु समुहु आउ संगरु अच्चंतु महंतु जाउ ४
छिज्जंति सिरइं भिज्जंति देह णिवडंति दंति णं पलय-मेह
हय कण्ण चमर कर दसण सारि णं पडिय महा-गिरि पायवारि
अण्णेत्तहे हयवर छिण्ण-गत्त णं धाउ-धराधर धरणि पत्त
अण्णइं रह-विंदइं ताडियाइं गंधव्व-पुरइं णं पाडियाइं ८

घत्ता

अण्णेत्तहे णिवडिउ सुहड-सिरु कंठाहरणहो मज्झे थिउ ।
लक्खिज्जइ णव-कंदोट्टु जिह विसहर-वेढावेढि-किउ ॥ ९

[१२]

महि मंडिय स-फरेहिं असिवरेहिं धय-छत्त-पडाया-चामरेहिं
तणु-ताणाहरणेहिं पहरणेहिं रह-जोह-तुरंगम-वाहणेहिं
रुहिर-णइ समुट्ठिय पिहुल-दीह णं ललइ कयंतहो तणिय जीह
जणु जंपइ सुट्ठु विरत्त-भाउ एउ एत्तिउ दुज्जोहणहो पाउ ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माराविय बंधव मित्त जेण णउ जाणहुं जासइ पहेण केण
पंडवहुं विजउ महिमड्ढ महासु जरसंध-कुरुहुं केवलु विणासु
तो परिपालिय-कुरु-जंगलेण पट्ठविउ तिगत्तउ सहुं वलेण
परिवेढिउ तेण किरीड-मालि सलहावलि जिह पेसिय सरालि ८

घत्ता

णरु णवहिं सारहि हरि सत्तरिहिं रणउहे विद्धु तिगत्तएण ।
आरोडिय केसरि विण्णि जण णाइं गइंदें मत्तएण ॥ ९

[१३]

जालंधरि वहुय किरीडि एक्कु पहरंतु परिट्ठिउ जिह अणेक्कु
गंडीउ भमइ णमलाय-चक्कु कोसावहिं परि दीसइ पिसक्कु
हय-गय-णर रण-रस-सीरियंग विवलाय रणंगणे दिण्ण भंग
को-वि णासइ पवर-तुरंगमेण को-वि रहेण को-वि तंवेरमेण ४
को-वि तेत्तहो होंतउ झंप देइ अप्पाणउं अप्पाणेण णेइ
उप्पण्णु कहो-वि जंघोरु भंगु ण चलंति चलण थरहरइ अंगु
संतणउ ताम सहुं वलेण पत्तु मं भज्जहो रणे रक्खहो तिगत्तु
एत्तहे-वि धणंजउ पंडवेहिं परिवारिउ किय-सर-मंडवेहिं ८

घत्ता

गउ गयहो तुरंगु तुरंगमहो रहु रहवरहो समावडिउ ।
णरु णरहो णरिंदु णरिंदहो सयलु स-मच्छरु अब्भिडिउ ॥ ९

[१४]

सिणि-सुएण ताम भड-भीयरेहिं कियवम्मु विद्धु पंचहिं सरेहिं
दुमएण दोणु तिहिं मग्गणेहिं सत्तहिं जोत्तारु सु-लक्खणेहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वल्हउ सत्तरिहिं विओयरेण सारहि स-तुरंगमु णिहउ तेण
तिहिं चित्तसेणु फग्गुणेण विद्ध सउहद्दें दुम्मुहु रणे णिसिद्धु ४
कलसद्धएण सर-दाणु दिण्णु दोमइ-जणेर-जोतारु भिण्णु
सच्चइहे ताम गंगा-सुएण आमेल्लिय सत्ति महा-भुएण
वंचेप्पिणु जिह खय-काल-रत्ति सिणि-सुएण विसज्जिय अवर सत्ति
विणिवारिय णवहिं पियामहेण थिउ तव-सुउ मज्झे महा-रहेण ८

घत्ता

कुरु-पंडु-बलहं जुज्झंताहं आहउ खणु-वि ण णिट्ठिगउ ।
मज्झत्थु होवि णं गयणयले पेक्खउ अरुणु परिट्ठियउ ॥ ९

[१५]

दूसासणु ताम मणोगमाहं धाइउ लक्खेण तुरंगमाहं
दस सहस अवर दुज्जोहणेण पेसिय परिरक्खण-कारणेण
हरि-खुरहिं समुट्ठिउ रय-णिहाउ संगामु परोप्परु घोरु जाउ
हय-साहणु जमल-जुहिट्ठिलेहिं विद्धंसिउ तिहि-मि महा-बलेहिं ४
आसंकिउ कुरुवइ णिय-मणेण पट्ठविउ सल्लु सहुं साहेणण
पडिलग्गु स-मच्छरु तिहि-मि ताहं मद्देय-सुयंगे-महा-धयाहं
पंचहिं जमलेहिं बाणेहिं विद्धु तव-सुएण दसहिं बाणेहिं णिसिद्धु
तेण-वि ते रवि-किरणायवेहिं हय तिण्णि-वि तिहिं तिहिं सायएहिं ८

घत्ता

गंगेएं ताम विरुद्धएण धणु विप्फारेवि धुणेवि कर ।
धणुज्जुण-भीम-जुहिट्ठिलाहं बारह बारह मुक्क सर ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१६]

तो तिण्णि-वि ताडिय जेत्तिएहिं पडिविद्धु तिहि-मि सो तेत्तिएहिं
सहएउ समरे सत्तहिं णिसिद्धु तेण-वि पडिवउ सत्तरिहिं विद्धु
तिहिं णउले तेण वारहहि छित्तु तहिं अवसरे दोणायरिउ पत्तु
सिणि-णंदण-भीम भयंकरेहिं विणिहय पंचहि पंचहिं सरेहिं ४

तेत्तिहिं सो तिहिं तिहिं सायएहिं जम-दंड-परिह-फणि-आयएहिं
तो तहिं भाईरहि-णंदणेण चउ-वाहोवाहिय-संदणेण
विहिं वाहेहिं एक्क-धणुद्धरेण जम-काल-कयंत-भयंकरेण
पेक्खतहं भीम-धणंजयाहं जायव-सिणि-सोमय-सिंजयाहं ८

घत्ता

पंचालहं मच्छहं कइकयहं उप्परे पाडिय वाण-सय ।
तुरय-दुरय-णर-पत्थिवहं सव्वहं चउद्दह सहस हय ॥ ९

[१७]

जं वलु णिट्ठविउ पियामहेण तं णरु वोल्लाविउ महुमहेण
किं सेरउ अच्छहि सव्वसाइ हणु साहणु जाम ण खयहो जाइ
पणवेप्पिणु अज्जुणु भणइ एवं सुहि-पियर-पियामह हणेवि देव
जं होसइ तेण ण किंचि कज्जु तुहुं तव-सुउ करिसहु वे-वि रज्जु ४

महु णरउ ण सक्कइ धरेवि को-वि तुम्हहं उवरोहें भिडमि तो-वि
अलसंतें पवर-पुरंजएण पाडिउ कोवंडु धणंजएण
पुणु वीयउ लइउ पियामहेण तमि छिण्णु खुरुप्पें दूसहेण
पुणु तइउ लइउ महा-गुणड्ढु तमि हयउ कलत्तु-व दुव्वियड्ढु ८

घत्ता

जं जं णइ-णंदणु करे धरइ तं तं अज्जुणु हणइ धणु ।
लग्गेप्पिणु फग्गुण-माहवहं कवणु ण पलयहो जाइ वणु ॥ ९

[१८]

णिम्मज्जइ धणु-गुण-सर-सयाहं ण-वि सरि-सुय सूयहं ण-वि हयाहं
पेक्खेप्पिणु अज्जुणु मंद-इच्छु सयमेव पधाइउ लच्छि-वच्छु
लइ हणेवि ण सक्कहि तुहुं णिरुत्तु हउं अप्पुणु मारमि गंग-पुत्तु
भुयदंड करेप्पिणु पहरणाइं कररुह-मुह-धारा-धारणाइं ४
णइ-णंदणु पभणइ एहि एहि लइ लइ णारायण घाय देहि
हेवाइउ अवरेहिं दाणवेहिं को करइ केलि सहुं माणवेहिं
जिह तुहुं तिह धाइउ परसुरामु परियाणिउ मइं तहो तणउ थामु
करे धरेवि धणंजउ भणइ एम मज्झत्थें भावें अच्छु देव ८

घत्ता

अट्ठारह दिवसइं महुमहण पइं होएवउ पेक्खएण ।
मारिज्जहि पुणु जरसंधु रणे पंडव-कुरुव-कुल-क्खएण ॥ ९

[१९]

कह-कह-व णियत्तिउ हरि णरेण लंबाविउ विंबु दिवायरेण
गंगेउ परिट्ठिउ दुण्णिरिक्खु णं खय-रवि-तवियंतरिउ रिक्खु
रण-रंगे इय सर-मंडवेहिं जोयणह-मि जाइ ण पंडवेहिं
तहिं काले वियंभिउ तिमिर-णियरु जोयारहं फेडिउ चक्खु-पसरु ४
पल्लट्टइ विण्णि-वि साहणाइं रुहिरोल्लिय-सल्लिय-वाहणाइं
ओहावण पत्थ-विओयराहं तव-तणय-जमल-दामोयराहं

उच्छउ परिवड्ढिउ कउरवाहं × × ×
गंगेउ पसंसिउ विजउ घुट्ठु कुरु-णाहु सढत्तीभूउ (?) सुट्ठु ८

घत्ता

लइ एवहिं अम्हहं सिद्ध महि चिंतिउ रण-रहसुद्धएहिं ।
कुरुवइ-घरे तूरइं तूरिएहिं अप्फालियइं सइं भुएहिं ॥ ९

*

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए छायालीसमो संधि-परिच्छेओ समत्तो ॥

*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्तचालीसमो संधि

जो पलय-हेउ उप्पण्णउ सो पेक्खंतहो महुमहहो ।
जिह केसरि मत्त-गइंदहो भिडिउ सिहंडि पियामहो ॥ १

[१]

तो पंडवेहिं मंतु मंतिज्जइ सरि-सुउ केम देव जोहिज्जइ
णव वासर सब्भावें जुज्झिउ जिह सायरहो पमाणु ण वुज्झिउ
वे-वि मच्छ-पंचाल-वरेण्णइं भग्गइं सोमय-सिंजय-सेण्णइं
भणइ जणद्दणु अवसरु सारमि दइ आएसु महाहवे पहरमि ४
अच्छउ भीमु पत्थु सहुं जमलेहिं अंचमि रण-महि णर-सिर-कमलेहिं
सहुं गंगेएं सहुं जरसंधे मारमि कुरुव सव्व णिविसद्धें
अह जुज्जणहं ण देहि णराहिव तो करि वयणु महारउ पत्थिव
गम्मउ तासु पासु सरि-पुत्तहो लब्भइ तहिं जे सव्वु जं चिंतहो ८

घत्ता

केवलिहि आसि जं भासियउं तं सो हियए समुव्वहइ ।
छुडु पुच्छहो चरण णवेप्पिणु तुम्हहं णिरवसेसु कहइ ॥ ९

[२]

हरिउवएसें दूसह-तेयहो पंडव मंदिरु गय गंगेयहो
चरणु णवेप्पिणु पभणइ राणउ सप्पु व दंडाहउ विद्दाणउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहो कोमार-महाव्वय-धारा अम्हहुं ण किय परत्ति भडारा
विस-जउहर-केसग्गह-जूवइं सव्वइं विहिवसेण अणुहूवइं ४
तेरह वरिसइं समए वद्धा मग्गिय पंच गाम णउ लद्धा
पइं अ-पसण्णएण परमेसर अम्हहुं वणु पडिवउ ण वसुंधर
जो तुहुं दिवे दिवे जय-कारेव्वउ सो समरंगणे किह पहरेव्वउ
भणइ पियामहु णीसंदेहें कल्लए करमि चयारि सणेहें ८

घत्ता

णिय-हियउं परम-जिणिंदहो णिरुवम-गुण-गण-मंडियहो ।
कुरुवइं सीसु महि तुम्हहुं जीविउ देमि सिहंडियहो ॥ ९

[३]

एव्वं भणेवि पेसिय गंगेएं गय पंडव उवलद्धें भेएं
ताम सिहंडि तेत्थु गलगज्जइ णं जम-पडहु भयंकरु वज्जइ
अच्छउ धम्म-पुत्तु स-विओयरु अच्छउ सव्वसाइ दामोयरु
अच्छउ मच्छु दुमउ धट्ठज्जुणु अच्छउ हलहरु सच्चइ पज्जुणु ४
हउं जि पहुच्चमि तहो गंगेयहो गह-कल्लोलु जेम रवि-तेयहो
सीह-किसोरु जेम मयंगहो जेम खगाहिउ पवर-भुयंगहो
पइसइ जइ-वि सरणु वंभाणहो जइ-वि सुरिंदहो अमर-समाणहो
मरइ तो-वि महु परइ पियामहु जइ ण सिद्धु तो पइसमि हुयवहु ८

घत्ता

तहिं अवसरे भणइ धणंजउ पहु ण देंति जे संदणहो ।
ते मारमि हउं एक्कल्लउ छुडु भिडु तुहुं णइ-णंदणहो ॥९

[४]

लइ लइ दिव्व वाण महु केरा जे संगाम-काले पर-पेरा
राहा-वेहु जेहिं परियारिउ खंडवे जेहिं हुवासणु वारिउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तालुय-वम्म जेहिं विणिवारिय काल-कंज-दणु जेहिं वियारिय
जेहिं णियत्तिउ कुरुम-वंदिग्गहु जेहिं वियंभिउ उत्तर-गोग्गहु
रिउ णव दिवस जेहिं विणिभिण्णा ते णरेण तहो सयल-वि दिण्णा
तेण-वि लइय पत्थु जय-कारेवि जिह कयंतु थिउ घणु विप्फारेवि
कह वि कह-वि णिसि गमिय पयत्तें वासवि आस पसाहिय मित्तें
गय कुरुखेत्तु रणंगणु मंडिउ उट्ठिय धूलि सव्वु उग्गमंडिउ

घत्ता

पहरण-सिहि-जाला-मालउ रयहो मज्झे पवट्टतियउ ।
दीसंति महा-घण-डंवरेहिं णं विज्जुलउ फुरंतियउ ॥ ९

[५]

गय-मय-तुरय-फेण-पासेएहिं रय-णिहिं समिय तिहि-मि रणे एएहिं
अवर चउत्थें णर-रुहिरोहें अरुण-समुद्द-समप्पह-सोहें
ताम भीम-जम-सच्चइ-वाणेहिं आसुरु वूहु भिण्णु सु-पमाणेहिं
णिय-वलु भज्जमाणु अवलोएवि सुरसरि-णंदणेण रहु चोएवि
पंडव-वूहु भिण्णु पइसारिउ पाण लेवि दस-दसहिं पधाइउ
सोमय-सिंजय-मच्छ-पहाणा सयल-वि राय जाम विद्दाणा
तो गंभीस देवि पंडव-वले दुमय-सुएण विद्धु वच्छ-त्थले
पत्थए थाहि थाहि पच्चारिउ दुक्करु रण-मुहे जाहि अ-मारिउ
पहरु पहरु जइ गंगा-जायउ तुहु सोहउ सिहंडि-जमु आयउ

घत्ता

आउच्छहि कउरव-साहणु कज्जइं करहि करेवाइं ।
मइं तुज्झु कणंत-कणंताहो अंगइं सरेहिं भरेवाइं ॥ १०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[६]

एम भणेवि महा-धणु-धारउ पंचहिँ सरेहिँ विद्धु पडिवारउ
गय णिरत्थ अद्धवहे परज्जिय णं कुरुवइ-सम्माण-विवज्जिय
पभणइ पत्थु समुण्णय-माणा मइं पच्चारिय सयल-वि राणा
अहो किव कण्ण कलिंग जयद्दह चित्तसेण सल्लह सल दुम्मह
दोण दोणि मंद्दाहिव सउवल सोमयत्त भयवत्त विहब्बल
जो सक्कइ महु कंडा-कंडिहे सो रहवरु पडिखलउ सिहंडिहे
एहु सो जण्णसेणि परिसक्कइ रक्खउ गंग-पुत्तु जो सक्कइ
एम भणेवि अणिज्जिय-वाहणु धरिउ धणंजएण कुरु-साहणु

घत्ता

रेल्लंतु छत्त-धय-चिंधइं धाइय णर-णारायण-धुणि ।
रिउ णासेवि गय गंडीवहो जहिँ ण सुणिज्जइ कहि-मि झुणि ॥

[७]

णिएवि भयंकरु भड-कडवंदणु दुज्जोहणेण वुत्तु णइ-णंदणु
अहो परमेसर गो-विस-कंधर समर-महा-भड-दुधर-धुरंधर
णर-णारायण-णियर-भिज्जंतउ पेक्खु महारउ वलु भज्जंतउ
भणइ पियामहु किं आदण्णउ अच्छहि महु भुय-दंड-णिसण्णउ
जुज्झमि रणे रण-रामासत्तउ विजउ पराजउ दइवायत्तउ
दिवे दिवे दस-दस-सहस णरिंदहुं मारमि पेक्खंतहं अमरिंदहुं
हणमि ण जइ तो आण तुम्हारी पुत्तोत्तडिय पइज्ज महारी
एम भणेवि भिडिउ पंचालहं णं दुप्पवणु महा-घण-जालहं

घत्ता

तो पट्ठविय महाणइ-तोएण थरहरंत णाराय-सय ।
एक्केक-णरिंद-पहाणा दुमय-सेण्ण दस सहस हय ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[८]

हय दस सहस मत्त-मायंगहं मय-परिमल-मेलाविय-भिंगहं
दस तुरयहं दस स-रहहं विसालहं चूरिय विण्णि लक्ख पायालहं
तो बारह सामंत पधाइय णं खय-रवि आयासहो आइय
णिवडिउ चेइयाणु रणे तेत्तहे चित्तसेण-थाणंतरु जेत्तहे ४
कियवम्महो विरुद्धु घट्टज्जुणु ईसासणहो महाहवे अज्जुणु
भूरीसवहो भीमु उवढुक्कउ दुम्मुह-साहणे भिडिउ घुडुक्कउ
वरिउ सुदरिसणु उत्तर-कंतें किउ सहएवें विक्कमवंतें
दुमय-विराड दोण-दायाएं दोणायरिउ पडिच्छिउ राएं ८

घत्ता

धाइउ सिहंडि गंगेयहो णउलु विगण्णहो ओवडिउ ।
रहु रहहो देवि सिणि-णंदणु आरिससिंगिहे अब्भिडिउ ॥ ९

[९]

एवं दलइं जुज्झइं परिलग्गइं केहि-मि काह-मि चिंधइं भग्गइं
केहि-मि काह-मि चावइं छिण्णइं केहि-मि काह-मि कवयइं भिण्णइं
केहि-मि काह-मि वणियइं गत्तइं केहि-मि काह-मि खुडियइं छत्तइं
केहि-मि काह-मि रहवर ताडिय केहि-मि काह-मि सारहि पाडिय ४
केहि-मि काह-मि णिहय तुरंगम छिण्ण-ढंक गय धरणि अयंगम
तहिं अवसरे धाइउ दूसासणु करे विप्फारेवि स-सरु सरासणु
विद्धु सिलीमुहेहिं तिहिं अज्जुणु जायव-ण्णाहु पहउ वीसहिं पुणु
पंडव-वर-गंडीव-विहत्थें सर-सएण पच्छाइउ पत्थें ८

घत्ता

जुयराएं णरहो णिडालयले णिक्खय सर पंचग्गि-णिह ।
णिच्चलु णिक्कंपु धणंजउ पंच-सिंगु थिउ मेरु जिह ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१०]

तो कोवग्गि पवड्ढिउ पत्थहो पाडिउ धणु दूसासण-हत्थहो
अवरु सरासणु लेवि तुरंतें पंचवीस इसु मुक्क फुरंतें
तेण-वि तहो सर-जालु विसज्जिउ दुज्जोहण-अणुएण परज्जिउ
अज्जुणेण विणिभिण्णु थणंतरे णिउ गंगेयहो पासु खणंतरे
वड्ढइ तावेत्तहे-वि भयंकरु सच्चइ-आरिससिंगिहिं संगरु
नवहिं नवहिं णाराएहिं ताडिउ एक्कमेक्कु कह-कह-वि ण पाडिउ
थिउ भययत्तु मज्झे तहिं अवसरे वि-धणु वि-सत्ति जाउ णिविसंतरे
पेसिय कउरव कउरव-राएं ते-वि परज्जिय माहवि-जाएं

घत्ता

भूरीसउ णव-णव वाणेहिं ताडिउ ताव विओयरेण ।
थिर-थेरेहिं धार मुवंतेहिं णाइं महीहरु जलहरेण ॥

[११]

भूरीसवेण समाहउ एक्कें जरढाइच्च-समेण पिसक्कें
वंचेवि भीमें सो-जि विसज्जिउ सोमयत्ति सहसत्ति परज्जिउ
ताम पत्त एयारह राणा णिय-णिय जुज्झइं मुएवि पहाणा
चित्तसेण-भययत्त-विगण्णेहिं दसहिं दसहिं हउ थूणा-कण्णेहिं
किव-दुम्मरिसण-सिंधव-राएहिं विद्ध तिहिं जि तेत्तोहिं णाराएहिं
सल्लें णवहिं तिहिं जे कियवम्में वीसहिं दुम्मुहेण दढ-वम्में
विहिं विंदाणुविंद-णामाणेहिं विज्झइ पंचहि पंचहिं वाणेहिं
तेण-वि तिहिं तिहिं हणेवि महारह भग्ग णरिंदउत्त एयारह

घत्ता

साहारिय आसात्थामेण मं भज्जहो एक्कहो जणहो
लए लेहु लेहु जइ इच्छहु महि देणहु दुज्जोहणहो ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१२]

गुरु-सुय-वयणेहिं वलिय पहाणा भीमें सव्व पडिच्छिय राणा
किव-कियवम्म-सल्ल हक्कारिय पंचहिं पंचहिं सरेहिं णिवारिय
अट्ठहिं उरसि विद्धु कियवम्मउ णवहिं जयद्दहु किउ णिद्धम्मउ
हउ विंदाणुविंदु छहिं थाएहिं दुम्मरिसणु वीसहिं णाराएहिं
सव्वेहिं तिण्णि तिण्णि सर पेसिय तिहिं तिहिं तोमरेहिं णीसेसिय
झत्ति सत्ति भययत्तें मेल्लिय सएण णउत्तरेण स-वि मेल्लिय
तोमरु सिंधवेण गुणे लाइउ लेवि खुरुप्पु सो-वि दोहाइउ
जो जो जं जं पहरणु घत्तइ तहो तहो तं तं भीमु विहत्तइ

घत्ता

तहिं अवसरे धय-धूमाउलु सर-जालोलि-विराइउ ।
कुरु-साहण-वणइं डहंतउ अज्जुण-हुयवहु आइउ ॥

[१३]

एक्कहिं मिलिय किरीडि-विओयर णं कंपवण पवण-वइसांणर
चक्क-रक्ख थिय विण्णि सिहंडिहे ढुक्क महाहवे कंडाकंडिहे
जो जो को-वि भिडइ आरुट्ठउ तहिं अवसरे रण-रामासत्तउ
पेसिउ दुज्जोहणेण तिगत्तउ × ×
जाहि जाहि परिरक्खु पियामहु थंभेवि धरहि धणंजय-आउहु
तेण-वि किउ आएसु णरिंदहो भिडिउ गंपि गंडीव-मइंदहो
किव-सुसम्म-मद्दाहिव दूसह दुम्मरिस-भययत्त-जयद्दह
सत्त-वि तिहिं तिहिं सरेहिं वियारिय अवर-वि फग्गुणेण हक्कारिय

घत्ता

लइ ढुक्कहो सव्व मिलेप्पिणु पत्थु धरिज्जइ जेत्तिएहिं ।
महु कल्लेवडउ करंतहो कवलु ण पुज्जइ एत्तिएहिं ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१४]

तो सयलेहि-मि णरिंदेहिं थक्केहिं   पंचहिं पंचहिं विद्धु पिसक्केहिं
हसमाणें णव-पवर-रहत्थें   भिंदेवि भिंदेवि घत्तिय पत्थें
मद्दाहिवेण णिहउ पुणु सत्तहिं   तव-सुउ तिहिं णारायणु पंचहिं
णव णाराय विओयरे लाइय   तिण्णि ताव सामंत पराइय
कलसद्धय-जयसेण-जयद्दह   णाइं घणागमे खुहिय महा-दह
पर-वल-पाण-महाघण-थेणें   अट्ठहिं सरेहिं विद्धु जयसेणें
पंचाणण-चिंधेण सुधीमें   पंचासेहिं णिवारिय भीमें
खंडिउ रहु जुत्तारु वियारिउ   हय हयवर कह-कह-वि ण मारिउ

घत्ता

तहिं अवसरे दोणापरिएण   पंचसट्ठि सर पट्ठविय ।
ते भीमें णवहिं स-सट्ठियहिं   अहि-व खगिंदें णिट्ठविय ॥

[१५]

ताव णरें णवहिं णाराएहिं   विद्धु तिगत्त-गत्तु तिहिं थाएहिं
जायइं जुज्झइं भडहं विचित्तइं   सरि-सुय-रक्खण-हणण-णिमित्तइं
सल्ल-जुहिट्ठिल-कोसल-पंडिहिं   दुमय-दोण-गंगेय-सिहंडिहिं
सव्वसाइ-भययत्त-णरिंदहं   भीमु पधाइउ मत्त-गइंदहं
आसत्थामु वरिउ जुजुहाणें   पउरउ धट्ठकेउ-णामाणें
दुज्जोहणु अहिमण्णु-कुमारें   सिंधउ मच्छें विक्कम-सारें
अवरेहिं अवर तुरंग तुरंगेहिं   रह रहवरेहिं मयंग मयंगेहिं

घत्ता

चल-वहल-धूलि-अंधारए   वलइं परोप्परु ढुक्कियइं ।
छत्त-धय-चामर-चिंधइं   पहरण-जलण-झुलुक्कियइं ॥

[१६]

सल्ल-जुहिट्ठिल भिडिय परोप्परु संपहारु पडिवण्णु भयंकरु
कोसल-पंडिहिँ तिह रणु किज्जइ जिह विहिं एक्कु-वि जिणइ ण जिज्जइ
दुमय-दोण पहरंति पिसक्केहिँ साहुक्कारिय णरवर-चक्केहिँ
जण्णसेण-गंगेय समच्छर वावरंति परिओसिय-अच्छर
रणु भययत्त-किरीडिहे जेहउं दुक्करु रावण-रामहुं तेहउं
गय-घड भीमहो भएण णिलुक्कइ जिह णव-वहु णव-वरहो ण ढुक्कइ
सच्चइ-आसत्थामहुं संगरु जाउ घोरु परिओसिय-सुरवरु
पउरव-धट्ठकेउ समरंगणे खग्ग-फरावसेस थिय तक्खणे ८

घत्ता

असि-घाएहिँ हणेवि परोप्परु मुच्छ पराइय बे-वि जण।
णं जुय-खय-काल-पहावेण णिवडिय महियले विज्जु-घण ॥ ९

[१७]

धट्ठकेउ जमलेहिँ परिवारिउ पउरवु कउरवेहिँ ओसारिउ
कुरु-णरिंद-अहिमण्णु-कुमारहं जाउ महाहउ विक्कम-सारहं
सुइरु करेवि घोरु कडवंदणु छहिँ छहिँ सरेहिँ विद्धु णर-णंदणु
छित्त सत्ति देवइ-सुय-जाएं छिण्ण खुरुप्पें कउरव-राएं ४
स-सर-सरासण-कर-परिहच्छहं रणु एत्तहे-वि जयद्दह-मच्छहं
एत्तहे सुट्ठु रुट्ठु धट्ठज्जुणु कड्ढिय सर विप्फारिउ धणु गुणु
अंतराले थिउ णिरुवम-चरियहं दुमय-णराहिव-दोणायरियहं
एत्तहे सरि-सुरण पहरंते पंडव-साहणे पलउ करंतें ८

घत्ता

सामंत-सत्थु विणिवाएवि जिणेवि अणज्जुण वइरि-सय।
दह दह रह-तुरय-गइंदहं भडहं चउद्दह सहस हय ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१८]

पंडव-लोउ सव्वु आदण्णउ   वट्टइ धम्म-पुत्तु उच्छण्णउ
संतणु पलउ करंतु ण थक्कइ   अ-वलु सिहंडि जिणेवि ण सक्कइ
तो धट्ठज्जुणेण णिब्भच्छिउ   भणु एत्तडिय वार कहिं अच्छिउ
अज्ज-वि सरेहिं ण छिज्जइ संदणु   अज्ज-वि जीवइ गंगा-णंदणु
अज्ज-वि कउरव-वलु मंभीसइ   अज्ज-वि फरहरंतु धउ दीसइ
अज्ज-वि तणु-तणुताणु ण फेडइ   अज्ज-वि धुरिउ तुरंगम खेडइ
अज्ज-वि सामिउ हियइ विसूरइ   अज्ज-वि परम जयास ण पूरइ
तं णिसुणेवि सिहंडि आरुट्ठउ   मत्त-महा-गइंदु णं दुट्ठउ

घत्ता

सर पेसिय दुमयहो पुत्तेण   रिउ-वह-कम्म-कियायरेण ।
णं मलयहं सोसण-सीलेण   दूसह किरण दिवायरेण ॥

[१९]

जे पट्ठविय दुमय-दायाएं   ते सर छिण्ण सव्व जुयराएं
रहवर छत्त दंड धय तोडिय   हय गय णर णरिंद बहु पाडिय
सो-वि धणजएण विणिवारिउ   कउरव-लोउ सव्वु पच्चारिउ
जाणिय-णिरवसेस-धणुवेयहो   सिहि व सिहंडि ढुक्कु गंगेयहो
संतण-तणुरुहेण दुलक्खें   दसहिं सएहिं सहासें लक्खें
घण-जालेण व मग्गण-जालें   छाइउ जण्णसेणि असरालें
पर-वलु णिरवसेसु ओवग्गइ   एक्कु-वि सरु ण सिहंडिहे लग्गइ
धम्म-पुत्तु जहिं तहिं जउ धम्महो   णाहि विणासु पुराइय-कम्महो

घत्ता

अ-पमाणइं वज्ज-समाणइं   महिहर-सिहर-वियारणइं ।
जसु मणुसहो दइउ सहेज्जउ   किं करंति तहो पहरणइं ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२०]

तिहिं सिलीमुहेहिं रिउ छाइय रहियहं पंच सहस विणिवाइय
भणइ जुहिट्ठिलु अहो वय-धारा वरि मारहि अम्हइं जि भडारा
पय-पूरणेहिं काइं जीयंतेहिं दुक्खहं भायणेहिं सुह-चत्तेहिं
बारह वरिसइं वसिय वणंतरे वरिसु विराडहो केरए पुरवरे ४
मग्गिय पंच गाम णउ दिण्णा सुहिय-भाव-कारणे णिव्विण्णा
धम्म-पुत्तु करुणामय-सिंचिउ अण्णु-वि कुरुव-णराहिउ किंचिउ
सेवा-धम्म-सुहहं णिव्विण्णउ थिउ जीवेवए णिद्दाखिण्णउ
सिरु सामिहे महि पंडव-रायहो पाण सिहंडि-वाण-संघायहो ८

घत्ता

मणु सासय-पुर-परिपालहो एम चयारि-वि देवाइं ।
आराहण-गंगा-संगमे अंगइं मइं चित्तवाइं ।। ९

[२१]

जं केवलिहिं आसि आइट्ठउ तं गंगेयहो हियए पइट्ठउ
अवसु सिहंडिहे सरेहिं मरेवउ एवमि एवमि वरि पहरेवउ
मं बोल्लेसइ को-वि अ-विणीयउ जिह णइ-णंदणु पाणहं भीयउ
एम भणेवि ओवडिउ पडीवउ कुरु-कुल-भवणुज्जोयण-दीवउ ४
जे सर घिवइ तरंगिणि-णंदणु ते लग्गंति परहो णं चंदणु
जे पट्ठवइ सिहंडि सिलीमुह ते णिवडंति णाइं वज्जाउह
दसहिं पियामहु दसहिं सरासणु सारहि दसहिं दसहिं तल-लंछणु
बीयउं तीयउं एम चउत्थउं पुणु पंचमउं छिण्णु पुणु छट्ठउं ८

घत्ता

धणु जं जं लेइ पियामहु तं तं छिंदइ दुमय-सुउ ।
मग्गणहं असेसु वि दिंतउ महियले णिद्धणु कोण हुउ ।। ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२२]

थिउ णिद्धम्मु धम्मु चिंतंतु-वि विरहावत्थु पत्तु वयवंतु-वि
देहावरणु भिण्णु सहुं देहें णं महिहरु णउ पाउस-मेहें
घित्त सत्ति सहसत्ति पउंजिय स-वि पंचहिं सरेहिं पविहंजिय
सत्तिउ विण्णि अणेयइं चावइं दुमय-सुएण कियइं अ-पयावइं ४
वे-वारउ तुरंग सर-ताडिय सारहि विण्णि विण्णि रह पाडिय
थिउ रेहउ कड्ढंतु महीयले हक्कारंति देव-रिसि णहयले
आउ आउ रणु मुएवि महारह वंभुत्तरु पइसरहि पियामह
पइं कोमार-वंभ-वउ चिण्णउं णिय-धणु दीणाणाहहं दिण्णउं ८

घत्ता

तहिं काले सिहंडिहे वाणेहिं अहिणव-वण्ण-स-धाउएहिं ।
णइ-णंदणु भिण्णु णिरंतरु सद्द-धम्मु जिह वाउएहिं ॥ ९

[२३]

तो-वि ण कंपिउ गंगा-णंदणु अ-धउ अ-सारहि अ-धणु अ-संदणु
करे करवालु करेप्पिणु णिम्मलु चम्म-रयणु उरे धरेवि समुज्जलु
धाइउ पलयाइच्च-समप्पहु सर-किरणेहिं णिवारिउ दूसहु
दुमय-सुएण ताम सय-चंदउ छिण्णु स-मंडलग्गु वसुणंदउ ४
भिण्णु णउत्तरेण सय-धाएं पुणु-वि खुरुप्प-सएण स-माएं
तो पंडवेहिं मिलिउ अखत्तं सोमय-सिंजय-वलेण समत्तें
णं अंवुहरुण माइउ धारेहिं पाडिउ दिणमणि णाइं पहारेहिं
पेच्छावहि सर उर पडिलग्गा अलि जिह कुसुम-पायव-वलग्गा ८

घत्ता

कुरु-साहणु भग्गु असेसु पुणु गयणे दिवायरु अत्थमिउ ।
धवलंतु सयं भुवणंतरु जसु पंडवहं परिब्भमिउ ॥ ९

*

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभूएव-कए सत्तचालीसमो इमो सग्गो ॥

*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठचालीसमो संधि

सरेहिं णिरंतरु पूरियउ गंगा-णंदणु धरणि ण पावइ
झत्ति पडंतउ णहयलहो किरणेहिं धरिउ दिवायरु णावइ ॥१

[१]

जं पडिउ पियामहु कुरुव-वीरु सायर-गंभीरु गिरिंद-धीरु
पलयग्गि-पयंग-समुग्ग-तेउ तं रहवरु वाहेवि पवण-वेउ
दूसासणु भीम-भएण णट्ठु णं तक्खणे तक्खय-णाय-तट्ठु
णं हरिणु-व हरिणाहिवहो चुक्कु णं गहवइ गह-मुह-गाह-मुक्कु ४
कुरु-गुरुहे णिवेइय तेण वत्त लइ ताय पियामह-कह समत्त
तं वयणु सुणेविणु भग्ग-घोणु ओणल्लु महारह-सिहरे दोणु
स-सरासण हत्थहो पडिय वाण परिरक्खिय मुच्छए कह-वि पाण
किउ कम्मु सिहंडिए रणे रउद्दउ रवि पाडिउ सोसहो णिउ समुद्दउ
पल्लट्टिउ जगु मारिउ कयंतु लइ एवहिं चुक्कइ को जियंतु ८

घत्ता

वज्ज-खंभे जहिं होंति घुण जहिं अमर-वि मारिय मरंति ।
वइरु करेवि सहुं पंडवेहिं तहिं अम्हारिस काइं करंति ॥ ९

[२]

पंडव-कुरु संगरु पयट्टु तेत्थु संतणु सर-सयणे णिवण्णु जेत्थु
जल-धारा-घोरणि-वरिय-देहु वरिसंतु णिहालिउ णाइं मेहु

वेढेवि णिगूढ-पय-जंगमेहि णं चंदणु रुद्धु भुयंगमेहिं
अरहट्ट-तुंबु णं अर-वरेहिं तं सो-जि णिरंतरु सरवरेहिं
सव्वंगिय-पसरिय-वेयणेण कह-कह-वि समागय-चेयणेण
कुरु पंडव वयण-विमद्दणेण वोल्लाविय गंगा-णंदणेण
जइ ढुक्कइं विण्णि-वि साहणाइं तो छंडहो पहरण-वाहणाइं
रणु मुएवि परोप्परु करहो णेहु घोसहो अ-मारि परमत्थु एहु

घत्ता

जुज्झतहं दस-वि दिवस गय तो-वि महाहउ णाहि समत्तु।
ण्हवण-पुज्ज-महिमइं करहो को जाणइ किर जीविउ कत्तु ॥

[३]

जो मुउ सो मुउ किर कवणु दोसु दुज्जोहण भीम मुअंतु रोसु
धट्ठज्जुण-दोण म कलि करंतु कण्णज्जुण मच्छरु परिहरंतु
तं णिसुणेवि सव्वेहिं पत्थिवेहिं पंचाल-पंडु-मच्छाहिवेहिं
कुरु-जायव-सोमय-सिंजएहिं अवरेहि-मि पवर-पुरंजएहिं
पडिवण्णु वयणु णइ-णंदणासु ओहत्थाहणु (?) ढुक्कु पासु
एक्कत्तहे जायव णिरवसेस अण्णेत्तहे मागह थिय असेस
एक्कत्तहे पंडव मिलिय सव्व अण्णेत्तहे कउरव गलिय-गव्व

घत्ता

णिएवि पियामहु सर-सयणे वाह-भरंत-णयण विद्दाणा।
कुरु-कुल-गयण-खंभु गउ धाह मुवाविय सयल-वि राणा ॥

[४]

कुरु-पंडव-जायव-मागहेस सम्माणिय णरवइ णिरवसेस
के-वि पिय-हिय-वयणासीस देवि कर-कमल-परिमरिसेण के-वि
के-वि सिरेण के-वि महि-मंडलेण के-वि दाण-पवरिसेण विरलेण
जं आयउ पुव्व-कमेण दव्वु तं दीणाणाहहं दिण्णु सव्वु ४
परिपूरिय पणइहिं परम तित्ति आहार-सरीरहं किय णिवित्ति
विहिं थूण-कण्णेहिं मग्गणेण उवहाणउं किज्जइ फग्गुणेण
तहिं अवसरे आय विसुद्ध-वंस वे हंस महा-रिसि परम-हंस
अइ–घोर-वीर-तव-तत्त-देह परमेट्ठि-पाय-पंकय-दुरेह ८

घत्ता

जीव-दया-वर गयण-गइ वागीसर जर-मरण-वियारा ।
पज्जुण्ण-विणिम्मियहिं फलिह-सिलहे उवविट्ठ भडारा ॥ ९

[५]

पोमाइउ सरि-सुउ जइवरेहिं अच्चंत-मउय-महुरक्खरेहिं
पइं मुएवि पियामह कवणु वीरु जगे अण्णहो कहो एवड्डु धीरु
को सुएवि समत्थु (?) सर-सयणे को अच्छइ महिण छिवंतु गयणे
तं वयणु सुणेविणु सच्च-संधु दुद्धर-वय-भर-धुर-दिण्ण-संधु ४
णइ-णंदणु पभणइ सर-विदिण्णु मइं एण सरीरें तउ ण चिण्णु
गुरु-पंच-महावय-भरु ण वूढु अच्छिउ वामोहण-णियले छूढु
इह-लोइउ एक्कु वि सउ ण लद्धु कक्कडउ वणिय-णंदणिहिं खद्धु
लइ एवहिं तुम्ह पइट्ठु सरणु संपज्जइ जेण समाहि-मरणु ८

घत्ता

पुणु वि पियामहु विण्णवइ मयरकेउ-सर-णियर-णिवारा ।
चउ-विह-फल-संपत्तिकरि लइ आराहण कहहिं भडारा ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[६]

तो कहइ महारिसि णवेवि सिद्ध चउरंगाराहण फल-समिद्ध
आराहण रयण-त्तय-विसुद्धि आराहउ अण्णु ण का-वि बुद्धि
तव-दंसण-णाण-चरित्त-वग्गु सो आराहेवउ एक्कु लग्गु
आराहण-लयहे समुज्जलाइं सग्गापवग्ग-सोक्खइं फलाइं ४
सम्मत्त-चरित्ताराहणेण चउ-विह आराहण दु-विह तेण
उवसमियइ खाइउ उहय-सिद्धु सम्मत्तु ति-विहु आगमेण सिद्धु
जो तिण्णि-वि आराहेवि समत्थ सम्मत्ताराहण सा पसत्थ
चारित्तु पाव-किरियहे णिवित्ति तव-दंसण-णाण-पहाण-वित्ति ८

घत्ता

णाणु वि आराहिय वोहयरु तउ मलहरु णयण-णियत्ति
चरणें पुणु आराहिएण आराहियइं असेसइं होंति ॥ ९

[७]

चारित्तु णिरुज्जउ किं करेइ ससिबिंबु व णिप्पहु दिहि ण देइ
संतउ वि ण सक्कइ हणेवि कम्मु णिद्दालस-भावें खवइ जम्मु
आराहण-विहिं पावइ ण जेट्ठ चारित्ते करेवी तेण चिट्ठ
सोहइ चरित्तु जिह उज्जमेण तव-चरणु तेम सहुं संजमेण ४
संजम-परिहीणहो तउ णिरत्थु उण्हालए महिहर-मत्थुयत्थु
तरु-मूले घणागमे जोगु लेउ सीयालए वाहिर-सयणु देउ
भक्खउ रवि-किरणइं पियउ वाउ उब्भिय-भुय एक्कंगुट्ठे थाउ
पंचग्गि णिसेवउ खवउ देहु अण्णाण-किलेसु असेसु एहु ८

घत्ता

संजम-विरहिउ तव-चरणु सोहइ ण देह जइ-वि वहु-माणउं ।
करि जिह ण्हाएवि विमल-जले धूलिए पडिलिंपइ अप्पाणउं ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[८]

सत्तारह मरणइं भासियाइं संखेवेण पंच पयासियाइं
पहिलाउं पंडिय-पंडियक्खु जो मरइ तेण तहो परम-मोक्खु
बीयउं महरिसिहिं तवेण चिण्णु तं पंडिय-मरणु ति-भेय-भिण्णु
पाओय-मरणु इंगिणिय-मरणु चउ-विह आहार-णिवित्ति-करणु ४
मुउ तेण पमत्तइं करेवि आउ चउ-ठाणिणि उवसम-सेढि जाउ
तइयउं सिसु-पंडिउ णामधेउ पंचम-गुण-थाणु गिहत्थ-हेउ
गुण-थाणु चउत्थु चउत्थएण मरणेण बाल-णामुत्थएण
पंचमउं बाल-बालाहिहाणु जो मरइ तेण तहो पढमु थाणु ८

घत्ता

पंचहं मज्झे पसंसियइं तिण्णि तिलोय-दुक्ख-परिहरणइं ।
पढम-दुइज्ज-तइज्जाइं केवलि-साहु-गिहत्थहं मरणइं ॥ ९

[९]

जो लेप्पिणु दुक्करु दुरुवएसु परिहरइ जिणागमु णिरवसेसु
गणहर-विचिण्णु दस-पुव्व-सुत्तु पत्तेक्क-बुद्ध केवलि-पवुत्तु
अत्तागम-परम-पयत्थ-चत्तु आसंक-कंख-विदिगिच्छ-वंतु
जपइ पर-दिट्ठि पसंस लेवि अणु-दियहु पराय-अणोवसेहि ४
मायावि अणुज्जउ पयइ-खुद्दु सो मिच्छा-दिट्ठि महा-रउद्दु
छद्दव्व पंच गुरु णव पयत्थ सद्दहिय जेहिं ते दंसणत्थ
उवसमियउं खाइउ उहय-सुद्धु सम्मत्तु ति-विहु दिढु जेहिं लद्धु
ते सम्माइट्ठि ण का-वि भंति पुव्वक्खिय-गुण-ठाणेहिं ठंति ८

घत्ता

जं तइलोय-महग्घयरु दिणयर-कोडि-समुज्जल-गत्तउं ।
तं सम्मत्त-महा-रयणु जसु घरे तेण ण काइं विढत्तउं ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१०]

आयण्णउ पोत्था-वायणाइं मलु धरउ चरउ चंदायणाइं
सेवउ तरु-मूलइं पिउ-वणाइं वाहिर-सयणइं अत्तावणाइं
विसहउ बावीस परीसहाइं इंदियइं परज्जउ दूसहाइं ४
सम्मत्त-विहूणइं दिहि ण दिंति णक्खत्ताइं किं तमु खयहो णिंति
तउ संजमु णियमु चरित्तु णाणु दय-धम्मु सच्चु सज्झाउ झाणु
गुत्ति-त्तउ पंच महाव्वयाइं अणुवय-गुणवय-सिक्खावयाइं
आयइं अवरइ-मि अणुट्ठियाइं सव्वइं सम्मत्ते परिट्ठियाइं
जिह सायरे सव्वइं सरि-मुहाइं जिह सासय-पुरे सासय-सुहाइं ८

घत्ता

सव्वहो पुरहो पउलि जिह जिह पायवहो मूलु अहिटाणउं ।
जिह चूडामणि मणि-गणहं तिह सव्वहं सम्मत्तु पहाणउं ॥ ९

[११]

सम्मत्ताराहण होइ एम चारित्ताराहण कहमि जेम
तहिं भत्त-पइण्णउ दुइ-पयारु स-वियारउ चालीसाहियारु
अ-वियारउ तेत्थु णिरुद्ध पवरु तववंतु परम-सद्धाइं अवरु
स-वियारहो तहिँ पढमाहियारि परिचाउ करेवउ देह-हारि ४
कर-चरण-सवण-लोयण-विणासे दुक्कालागमणे वण-प्पवासे
वय-भंग-पयारए वंधु-वग्गे वुड्ढत्तणे घोरे महोवसग्गे
दुव्विसह-वाहि-अब्भंतराले अवरे-वि अणिट्ठे अरिट्ठ-काले
अवहत्थिय-देह-महाभरेण सण्णासु करेवउ जइवरेण ८

घत्ता

लोउ अ-चेलिम पडिलिहणु तणु-वियार-वोसिरणु करेव्वउं ।
बंभचेरु चिंधउं धरेवि अवरु चउव्विह-चरणु चरेव्वउं ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१२]

दुक्कणिया-पमुह-दयावरेण सिरे लोउ करेवउ जइवरेण
परिहाणु चएवउ तवसिएण णिग्गंथ-मोक्ख-मग्गासिएण
पडिलिहणु करेवउ कमल-मत्तु कर-चरण-अट्ठ-कत्तरि-णिमित्तु
परिचाउ करेवउ मज्जणाहं उव्वट्टण-मलणब्भंजणाहं
ण्हाणंजण-धूव-विलेवणाहं णह-छेय-दियावलि-धोवणाहं
तो पावेवि दइयं वरिय दिक्ख सिक्खेवी पुणु णिरवज्ज सिक्ख
सुय-केवलि-गणहरएव-दिट्ठ पत्तेक्क-बुद्ध-दस-पुव्वि-सिट्ठ
ण पडिज्जइ णयर-समुद्दिजाए थाइज्जइ थाइए परम-थाए

घत्ता

सिक्खेवी सिक्ख महा-तवेण विणउ करेवउ जो जिण-भासिउ ।
काइउ वाइउ माणसिउ दंसण-णाण-चरित्त-तवासिउ ॥

[१३]

जसु विणउ तासु दंसणु पहाणु जसु विणउ तासु वित्थरइ णाणु
जसु विणउ तासु चारित्तु थाइ जसु विणउ तासु तवचरणु भाइ
विणएण विढप्पइ परम धम्मु विणएण सुमाणुसु देह-रम्मु
विणएण रिद्धि विणएण सोक्खु विणएण सग्गु विणएण मोक्खु
लब्भइ विणएण समाहि-मरणु ण समाहि मुएवि परु परम-सरणु
मणु तुरउ धरेवउ दमेवि तेम वय-दावणु मुएवि ण जाइ जेम
मण-मत्त-महा-गउ विसम-सीलु सुर-णर-फणिंद-विद्दवण-लीलु
कड्ढेवउ णाणंकुसेण तेम ण मुयइ सज्झायालाणु जेम

घत्ता

सलिलहो मज्झे मयंकु जिह णिय-मणु धरेवि ण सक्कइ कोइ ।
जेण समाहि-मरणु लइउ सो पर मोक्खहो भायणु होइ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१४]

ण समाहि अभव्वहुं णरवरासु सावयहं होइ जिम जइवरासु
सो जइवरु जो अणियय-विहारि अणुगामिउ(?) केवल-चरण-चारि
तरु-वाहिर-रयणत्तावणेहिं पुर-णयर-खेड-पट्टण-वणेहि
थंडिलेहिं मसाणेहिं गिरि गुहेहिं कव्वड-मडंव-दोणामुहेहिं ४
परभागम-लोयणु भमइ भिक्खु कउहंवरु पावरिअंतरिक्खु
वसुमइ-पत्थरणु भुवोवहाणु तिण-कणय-कोडि अरि-सुहि-समाणु
इह जम्मणु इह णिक्खमणु णाणु णिव्वाण-णिवाणइं वंदमाणु
सद्दिट्ठि-दिढत्तण-भावणाउ अच्छण्णु खेत्तु परिमग्गणाउ ८

घत्ता

आयइं पंच महाफलइं पक्कइं पंथ-महा-दुम-डालें ।
जइ-वि मणेण विभावियइं लहइ महारिसि विहरण-कालें ॥ ९

[१५]

विहरेप्पिणु सव्व-दयावरेण परिणाउ करेवउ जइवरेण
दुप्पालइं परिपालियइं वयइं णिप्पण्णइं सीस-पसीस-सयइं
सिद्धंत-समुद्दहो दिट्ठु पारु वरि एवंहिं मुयमि सरीर-भारु
मुह-कुहरे जाम णउ खलइ वाय थिर जाम जाणु-जंघोरु-पाय ४
दढ कढिण जाम भुव-दंड बे-वि कर-मुहहो दिंति जा कवलु लेवि
जावण्ण-वि भज्जइ जरए पुट्ठि ण वलग्गइ मत्थए जाम दिट्ठि
जावण्ण-वि गीवा-अंगु होइ जावण्ण-वि विहडइ संधि को-वि
दुब्भिक्ख-डमर-दुत्थइं ण जाम वरि भत्त-पइण्णउं करमि ताम ८

घत्ता

सल्लेहण-भावंतएण सुद्धु परिणामु करेवउ ।
मुएवि कमंडलु पडिलिहणु दु-विहु परिग्गहु परिहरिएवउ ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१६]

दस सुद्धिउ णव पविवेअ जासु सल्लेहण काले समाहि तासु
रयण-त्तय-विणयावास-सुद्धि संथारालोयण-उवहि-सुद्धि
वइणइय-सपाणाहार-सुद्धि जसु जायइ तासु समाहि सिद्धि
देहेंदिय-उवहि-कसाय-चाउ संथारासण-भोयण-विराउ
दव्वासिय भावासिय विवेय सु करेवा मरण-मणेण एय
चडिएवी गुण-सोवाण-पंति जहिं उत्तम सत्त समारुहंति
जा सासय-पुरहो णिसेणिभूय गय जाए महारिसि सुप्पहूय
जा गुण-संपत्तिहे परम-हेउ पर सिद्धेहिं जाणिउ जाहे छेउ

घत्ता

भाव-णिसेणि समारुहेवि संघाहिवेण समउ वोलेवउ ।
जिह सहुं केण-वि पत्थिवेण पढम-थाणे जणे मोणु लएवउ ॥

[१७]

भावणउ पंच भावेवि आउ संकिट्ठउ पंच मुएवि ताउ
गुणियाउहु राय-कुमारु जेम कज्ज-खमु महा-रिसि होइ तेम
तव-भावण-भाविउ जसु सरीरु सण्णास-काले सो परम-धीरु
सुय-भावण-भाविउ देहु जासु तउ दंसणु णाणु चरित्तु तासु
जो सत्त-भावणा-भावियंगु उवसग्गे-वि तहो ण कयावि भंगु
एकत्त-भावणा-भावियंगु सो केण-इ सहुं ण करेइ संगु
दिहि-भाव-भावियावयव जासु स-धराधर-धीरिम होइ तासु
इय पंच-भावणा-भावियंगु सल्लेहण-कालहो को ण जोग्गु

घत्ता

तउ अणसणु अवमोयरिउ रस-परिचाउ वित्ति-परिमाणु ।
काय-किलेस-समाणउं छव्विहु वहि-सण्णास-विहाणु ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१८]

अणसणु दु-पयारु तव-पहाणु कालावहि आमरणावसाणु
अवमोयरि-तवु बत्तीस-गासु ऊणूणु सित्थु जावेक्क-गासु
अह पुरिसहो साहिय जाम तीस महिलहे-वि कवल जा अट्ठवीस
रस-चाउ करेवउ जइवरेण जसु कारणु सासय-पुरवरेण ४
भुंजेवउ भत्त दिणेक्क-कालु स-वसाणु स-पाणिउ सारणालु
वि-त्तइ वि-सप्पि वि-लवणु-विसुद्ध अ-चिक्किहिल्लु अ-महिउ अ-दुद्ध
णउ सक्कर गुलु तव-राउ खंडु स-सरीरे करेवउ एम दंडु
सवणच्छि-फरिस-घाणिंदियाइं जीहिंदिए जिए सव्वइं जियाइं ८

घत्ता

एण जिणागम-भासिएण जो संचरइ महा-रिसि-मग्गे ।
हत्थ-गेज्झु तहो मोक्ख-फलु कारणु कवणु वराएं सग्गें ॥ ९

[१९]

पइसंतें चरिया-गोयरेण परिसंख करेवी जइवरेण
भुंजेवउ पत्तें एरिसेण जइएण धरिज्जइ सुपुरिसेण
विहरेवउ एम अवग्गहेहिं णिय-जीहाणाइं(?) णिग्गहेहिं
गय-पडियागय-गोमुत्तएहिं भामरि-संवुक्कावत्तणेहिं ८
परिवज्जिय-गोउर-तोरणेहिं मासिक्क-सित्थ-कय-पारणेहिं
भिक्ख-परिगणणाणुक्कमेहिं पुप्फोवहार-परिहोवमेहिं
इय एक्क-वित्ति परिसंख जासु कर-गेज्झइं सव्वइं सुहइं तासु
पुणु कालु गमेवउ जइवरेण णिय-काय-किलेसें दुक्करेण ८

घत्ता

अणुसूरिय-पडिसूरिएहिं उद्ध-तिरिय-सूरिएहिं भमेवउ ।
पडिमा-जोय-चउम्मुहेहिं इंदिय-सव्व-णिरोहु करेवउ ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२०]

समचरण-एक्क-चरणाइएहिं वीरासणद्ध-वीरासणेहिं
णिद्दोयलीण-गय-सोंडिएहिं गो-सयणु-त्ताणुग्गुंडिएहिं
अज्झोवयास-णिसि-जग्गणेहिं पलियंकणद्ध-पलियंकणेहिं
गोदोहण-कुक्कुड-विब्भमेहिं उद्दंड-वायमडओवमेहिं ४
छट्ठट्ठम-दसम-दुवारसेहिं आहार-विसेसेहिं णीरसेहिं
किउ दुक्करु काय-किलेसु जेण संसार-महण्णउ तिण्णु तेण
णिवसेवउ अवरु विचित्त-थामे तरु-कोडरे णिज्जणे सुण्ण-गामे
उज्जाणे मसाणे गुहंतराले गिरि-सिहरे सिलायले वेल्लि-जाले ८

घत्ता

वाहिर-तवे आराहिएण अब्भंतर-तवो-वि आराहिउ ।
होइ णरिंद सइं भुवेहिं सव्वु कसाय-राय-गणु साहिउ ॥ ९

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए अट्ठचालीसमो इमो सग्गो ॥

उणपण्णासमो संधि

गंगेयहो हंस-महा-रिसि इंदभूइ मगहेसरहो ।
आराहण कहइ पयत्तेण जिह समाहि भव्वहो णरहो ॥१
गंगेयह चारण-रिसिणा बारह सुत्ताइं अक्खियइं ।
मल-हरणइं मोक्खहो कारणइं तेण जि णिय-मणे लक्खियइं ॥२

[१]

मारहु लिंगु सिक्ख विण्णासिय सहुं विणएण समाहि पयासिय
सहुं अणियय-विहारु परिणामें उवहि-परिग्गह-वज्जण-णामें
भाव-णिसेणि पंच-विह भावण अब्भितर बाहिर सल्लेहण
बारह पगरणाइं महि सिट्ठइं जाइं पंच-परमेट्ठिहिं दिट्ठइं 4
अक्खमि-दिस पगरणु तेरहमउ णिरवसेसु सीसा-परियाभिउ
सुद्धायारु महा-गुणवंतउ अविसम-सीलु दया-दम-वंतउ
एलाइरिउ परिट्ठविएवउ संघाहिवेण संघु पत्थेवउ
देह-भारु हउं वहेवि ण सक्कमि णिवडइ जेत्थु तेत्थु परिसक्कमि 8

घत्ता

जगु भक्खिउ सायरु सोसिउ तो-वि ण पावहो जाय दिहि ।
कंचुवउ जेम अहि मेल्लइ मुयमि तेम तणु दुक्ख-णिहि ॥ ९

[२]

सल्लेहण-विहाणु मणे भावेवि गणहो खमेवि गणु सयलु खमावेवि
संघाहिवेण महा-गुणवंते अणु-सिक्खवण करेवी जंते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संजम-णीसारेहि अवहत्थेहिं संगु ण किज्जइ सहुं पासत्थेहि
केण वि सहुं विवाउ ण करेवउ मण-करि णाणंकुसेण धरेवउ ४
णियम-गणु चक्खु जेम रक्खेवउ परु अप्पाणु समाणु करेवउ
परिहरिएवउ लोयहं सावणु णह-छेयणु दसणावलि-धोवणु
अंजणु पाय-रक्खु तणु-ताणउं धुप्पि-समलणुव्वत्तण-ण्हाणउं
दंसणु णाणु चरित्तु धरेव्वउ संजमत्थु तव-चरणु चरेव्वउ ८

घत्ता

पालेवा पंच महा-वयइं पंचेंदियइं दमेवाइं ।
जीहोयर-कर-कम-गुज्झइं आयइं अंकुसिएवाइं ॥ ९

[३]

देव-भत्ति गुरु-भत्ति करेवी चेइ-भत्ति सुय-भत्ति करेवी
अभय-दाणु छज्जीवहं देवउं विसय-कसाय-सेण्णु भंजेव्वउं
महिला-संगु सुट्ठु विरुवारउ दुक्किय-कम्म-णिबंधण-गारउ
सो सप्पुरिसु जुवइ जो छंडइ जाहे पहावें जोणिहिं हिंडइ ४
जइ ण णारि णारित्तणु सारइ तो सव्वहो विमोक्खु को वारइ
सो णरु तित्थयरत्तणु पावइ सोलह कारणाइं जो भावइ
मूल-गुणट्ठवीस पालेवा स-परीसह उवसग्ग सहेवा
साहम्मिय-वच्छल्ल करेवी एव एह अणुसट्ठि लएवी ८

घत्ता

संघाहिउ एलायरियहो सव्व समप्पेवि णीसरइ ।
अपरिग्गहु मोह-विवज्जिउ पर-गण-चरिए पइसरइ ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[४]

तहि मि खेत्ते परिमग्गण किज्जइ संघाहिवहो पासु ढुक्किज्जइ
आयाराइ-अट्ठ-गुण गणिया आचेलक्क-पमुह दह भणिया
बारह तव छावास-विसुद्धा गुण छत्तीस ओए अविरुद्धा
जसु सो परमायरिउ पगासिउ तं विण्णवइ णवेवि सण्णासिउ ४
केत्तिउ कु कलेवरु परिवड्ढमि तुम्हहं पाय-मूले परिछड्डमि
भणइ महा-रिसि तुहुं जगे धण्णउ जसु वइरग्ग-भाउ उप्पण्णउ
मरण-मणोरहु दूरुवराइय लइ आराहण वीर-वडाइय
धीरउ होहि जाम जत्तारेहिं आलोयमि सहुं णिय-परिवारेहिं ८

घत्ता

परिचिंतेवि सीसायरिएहिं णिउणत्तणेण णिरिक्खियउं ।
कस-ताव-छेय तिहिं भंगिहि जहिं दीणारु परिक्खियउं ॥ ९

[५]

दिवस-वार-णक्खत्त-मुहुत्तेहिं होरा-कड्ढण-दिव्व-णिमित्तेहिं
देस-णरिंद-साहु-गण-सत्थेहिं आएहिं अवरेहि-मि सुह-अत्थेहिं
संघाहिवेण संघु पुच्छेवउ तेण-वि खवग-भारु इच्छेवउ
एक्कु णिविट्ठु दव्वु सत्थारए थिउ भावंतु अवरु तहिं वारए ४
आगमे तइयउ खवगु णिसिद्धउ धूमारहि थाणु सुपसिद्धउ
भणइ म ा-रिसि आगम-लोयणु दिक्खहे लग्गेवि करि आलोयणु
कंटउ डहइ पाए जिह भग्गउ तिह कलंकु जो हियवए लग्गउ
सो कड्ढणहं तीरइ हत्थें परिफिट्टइ आलोयण-सत्थें ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

जइ ण गयइं कह-व पमाएण सल्लइं हियवए लग्गाइं ।
तो भव-चउरासी-लक्खेहिं दुहइं देंति आवग्गाइं ॥ ९

[६]

माया-मिच्छा-भाव-णियाणइं तिण्णि-वि सल्लइं सल्ल-समाणइं
जेण ण फेडियाइं अवलोएवि तहो दुहु दिंति अचत्थए ढोएवि
अहि जिह णीसारिज्जइ गेहहो दुपरिअल्लु सल्लु तिह देहहो
सयल काल दुच्चरिएं भरियउ तद्दिवसावहि सो पव्वइयउ ४
तहो सामण्णालोयण जुज्जइ अवरहो पाइ विहाइउ वज्जइ
तहि पर सक्खि पुव्व-छम्मत्थहो अप्प सक्खि केवलि कियत्थहोहि
स-वि सुपसत्थ-पएसे करेवी संधाहिवेण मणेण धरेवी
उत्तर-मुहेण अहव पुव्वासे अह जिणबिंबहो समुहब्भासे ८

घत्ता

दस-दोस-विवज्जिउ खवगेण आलोएवउ णिय-चरिउ ।
तहो पायच्छित्तु-वि देवउ आयरिएण जिणायरिउ ॥ ९

[७]

दसविहु दोसु जिणागमे सिट्ठउं आयण्णिउ अणुमण्णिउ दिट्ठउं
बायरु सुहुमु छण्णु सद्दत्थिउ वहु-गुरु-वालवुद्धि-पासत्थिउ
इय दस दोस जेण णालोइय अप्पाणहो भवित्ति ते ढोइय
णइरवणालिभंगोधावण (?) मंदुल-हत्थिसाल-करणावण ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णडणच्चण वणि-गायण-वायण अण्ण-वि अण्ण-भाव-उप्पायण
जहिं वसंति तहिं वसहि ण किज्जइ सवि अणेय दढ वियड लइज्जइ
इल-सिल-फलिह-तिणहिं संथारउ होइ चउ-व्विहु णिव्वुइ-गारउ
पुव्वुत्तर-सिरु सेस-दिसा-मुहु अजरामर-पुर-परम-सुहारुहु ८

घत्ता

णिज्जावउ एक्कु विरुद्धउ जइ ण काइं तो दुइ सवण ।
उत्तम-सण्णासे णिउंजहो अट्ठाहिय चालीस जण ॥ ९

[८]

चउ परिचर चउ धम्म-कहुज्जय चउ आहार पाणि चउ संजुय
तं रक्खंति वंधु चउ सवणय अ-विदिगिंछ चउ काइं वाणय
चउ जग्गिर चउ खवग णिहाला चउ दउवारिय चउ सह-पाला
अवर चयारि चेइय-परिवारा अवर चयारि विवाइ-णिवारा ४
एवं चयारि चयारि णिउंजहो जेम विद्धि तिम पाणि पउंजहो
दव्व-पयासण-खमण-खमावण पच्चक्खाणउं अणु सिक्खावण
खवगहो संघाहिवेण करीवी मिच्छा भावण परिहरिएवी
वरि विसु वरि विसहरु वरि हुयवहु वरि उवसग्गु सहिउ अइ-दूसहु ८
णउ पच्छाइउ मिच्छा-भावें भव-कोडिहि-मि ण मुच्चहिं पावें*

---

* Extra in j.: पढम दुइज्ज जंति कम्मक्खए केवल-णाणु होइ तिहिं पक्खए
जो भागाविय जोगि चडप्पइ मोक्खु अपाइ-विओय [illegible]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

मिच्छत्त-महा-विस-पायउ हणु सम्मत्त-कुढारएण ।
पंचेंदिय-चोर जिणेप्पिणु पहेण जाहि सुह-गारएण ॥ १०

[९]

कहमि मोक्खु जइ जाएवि सक्कहि अद्ध-वहे जे जाहिं ण-वि थक्कहि
पण्णारह पमाय विहाडावहिं अप्पमत्त-गुण-ठाण विहावहिं
णिच्चलु धम्मु झाणु सुविणिग्गमे चडहि अपुव्व-करणु सुक्कुग्गमे
कम्मबंध-छत्तीस-विणासें चडु अणेवि त्तिथाणु(?) परिओसें ४
वायर-मोह-पगइ विहडावहिं सुहुम-संपरायत्तणु पावहिं
जइ णिम्मूलु मोह-तरु हम्मइ खीण-कसाय-थाणु तो गम्मइ
मोक्खु अघाइँ-विओए विढप्पइ × × ×

घत्ता

जम्माडइ-भय-परिहीणेण विसय-चोर-विणिवारएण ।
जइ सक्कहि तो जाइज्जइ तेण पहेण वड्डारएण ॥ ९

[१०]

एक्कइं एक्केक्कइं सु-गवेसहि अवरइं एक्केक्कइं परिसेसहि
एक्कइं विण्णि विण्णि उद्धारहि अवरइं विण्णि विण्णि विणिवारहि
एक्कइं तिण्णि तिण्णि अणुमण्णहि अवरइं तिण्णि तिण्णि अवगण्णहि
एक्कहिं चउहुं चउहुं दिढु होज्जहि अवरहं चउहुं चउहुं णासेज्जहि ४
एक्कइं पंच पंच परिपालहि एक्कइं छह छह रक्ख करिज्जहि
अवरहं छहं छहं णाउं म लेज्जहि एक्कइं सत्त सत्त परियच्छहि
अवरइं सत्त सत्त णि ब्भच्छहि एक्कइं अट्ठ अट्ठ पडिच्छहि
अवरइं अट्ठ अट्ठ पडिवज्जहि × × × ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक्कहिं णव णव लइ सुपसिद्धइं   अवरइं णव णव मुए अ-पसिद्धइं
एक्कइं दस दस अणुदिणु झायहिं   अवरइं दस दस दूरि पमायहिं

घत्ता

एयारह बारह तेरह   चउदह एक्कइं आयरहि ।
एयारह बारह तेरह   चउदह अवरइं परिहरहि ॥ १०

[११]

एम लेवि अणुसिट्ठि पयत्तें   संथारत्थें उत्तम-सत्तें
तिविहु करेवउ पच्चक्खाणउं   पर-बाहिरउ करेप्पि अप्पाणउं
तमिसु मणोहरु पच्छ-सुयंधउ   विविह-महाघण-दव्व-समिद्धउ
अमिय-रसोवमु मुहहो सुहावउ   दाह-णिवारणु चित्तें ण्हावउ ४
एत्थ-वि जइ ण होइ आसासणु   तो उवणेहु णितूह उववासणु
लेउ विमद्दणु सेउ करेवउ   पवण-पित्त-कफ-दोसु हरेवउ
जइ एम-वि ण होइ सुह-सेवउ   संघाहिवेण तो-वि ण मुएवउ
लहइ समाहि जेण तं किज्जइ   अह मंतेवि तणु-ताणउं दिज्जइ ८

घत्ता

उवसग्ग-परीसह-साहणु   किज्जइ जेण परम्मुहउं ।
संथारणेण मरंतेण   कवउ लहेवउ साउहउं ॥ ९

[१२]

एम तेण तणु-ताणु लएवउ   संघाहिवेण खवउ धीरेवउ
सुंदरु पवरु गोत्तु णिय-णामउं   परिहरि कम्मु कुमाणुसियामउं
जिह रिसि-गणहो मज्झे गलगज्जिउ   तिह करि महसु मलण-विवज्जिउ
मोक्ख-महादुम-फलइं विचित्तइं   लइ परिपक्कइं पुणु पविहत्ताइं ४

देवेहिं सग्ग-मग्ग सोहालिय उग्घाडिय पओलि जा तालिय
बद्धइं तोरणाइं छड दिण्णइं मोत्तिय-रंगावलिउ पइण्णउं
गरुव-महोच्छउ सुरवर-विंदहो वद्धावणउं घणंगणे इंदहो
भाव-णिसेणि चडेप्पिणु जोयहो मं अप्पाणउं घंघले ढोयहो ८

घत्ता

चउ-गइ संसारे भमंतहो दुक्खइं कह-मि तुहाराइं ।
जइ एक्कइं विहि मेल्लावेवि ते मेरुहे गरुयाराइं ॥

[१३]

तिहुयणु खद्धु तो-वि अ-सइत्तउ पीयइं सायर-सयइं ण तित्तउ
कामिउ जगु असेसु कामंते महियलो (?) कोडि दद्धु दब्भंते
जइयहो इंदु होइ उप्पणउ पच्छए चवण-काले आदण्णउ
कहिं कप्पद्दुम कहिं दीसेसहिं अइरावणु दूरीहोएसइ ४
हा अंतेउर णयण-मणोहर मत्त-महागय-कुंभ-पओहर
पडिवउ गब्भवासे वसिएव्वउ पडिवउ जणणिहे थण्णु पिएव्वउ
एवं रुवंतु थंतु विच्छायउ मणुय-गइहे उप्पणु वरायउ
तहि-मि अणेयइं दुक्खइं पत्तउ रस-वस-वीसढ-सोणिए-मत्तउ ८

घत्ता

दस मास वसिउ उवरंतरे कह-व किलेसें णीसरिउ ।
अच्छिउ णिब्जासु पियंतउ तं किं एवहिं वीसरिउ ॥ ९

[१४]

इह वि अणेय वार उप्पण्णउ जाइ-जरा-मरणेहिं आदण्णउ
इट्ठ-विओय-सोय-संतत्तउ दुक्ख-किलेस असेसइं पत्तउ
चोर-वइर-महि-महिला-भंडणु वाहाकर-चरणंगुल खंडणु
जीहा-छेउ णयण-उप्पाडणु णासा-णासणु वयण-विहोडणु ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिर-विच्छेउ कुढाराफाडणु देह-वियारणु गीवा-मोडणु
कण्ण-कोल-णह-सूइ-पवेसणु णासा-लुणणु भुवंगम-भेसणु
स-सिहि-सरीर-वाहि गय-पेलणु विस-विसमासणु मंडल-मेल्लणु
वेढावेढणु भूमि-णिहम्मणु एउ-वि अवरु-वि घोरु णिहम्मणु ८

घत्ता

दुक्कम्म-वसेण भवंतएण पइं अणुहूयइं जेत्तियइं ।
अ-पमाणइं मेरु-समाणइं दुक्खइं अक्खमि केत्तियइं ॥ ९

[१५]

जइयहुं हत्थि होवि मय-मत्तउ वारि-णिबंधणे दुक्खइं पत्ताउं
जइयहुं हरिणु होवि उप्पण्णउ णट्ठु णियामिसेण आदण्णउ
वाहेहिं वागुर-पासउ मंडेवि विद्धविओसि खुरुप्पेहिं खंडेवि
जइयहु भमरु होवि अल्लंतउं कमलब्भंतरि आवइ पत्ताउ ४
जइयहुं मच्छु होवि गले लग्गउ पउलिउ तलियउ मरण-वसंगउ
जइयहुं सलहु होवि आसत्तउ पडेवि पईवए जीविअ-चत्तउ
जइयहुं रोसहु होवि निबद्धउ दिसउ नियंतु विहंगेहिं खद्धउ
जइयहुं सारमेउ किमि-कप्पिउ जइयहुं करहु महा-भर-चप्पिउ ८
जइयहुं दट्ठु-पहेडा मूसउ डिंडीशेरगु पंजर-पूसउ

घत्ता

ओयइं अवरइ-मि अणेयाइं तिरिय-गइहे सवडम्मुहेण ।
अणुहूयइं दुक्ख-सहासइं पइं जिणवयण-परम्मुहेण ॥ ९

[१६]

जइयहुं णरय-मज्झे उप्पण्णउ णारइयाउहु घाएहिं छिण्णउ
ताडिउ पांडिउ छिण्णउ भिण्णउ चूरिउ हुणिउ दिसा-बलि दिण्णउ
हूलिउ दलिउ मलिउ कंदंतउ पउलिउ तलिउ गिलिउ वेवंतउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जेत्तहे णासइ तेत्तहे हम्मइ जगु जे पलित्तउ केत्तहे गम्मइ ४
असि-पत्त-वणु पत्तु पासिणगउ तहि-मि पडंतेहि पत्तेहिं छिण्णउ
पुणु वइतरणि पइट्ठु तिसाइउ तित्थु-वि तंबा-कलयलु पाविउ
सामरि-तरुवरु अवरुंडाविउ एम महंती आवइ पाविउ ८

घत्ता

तं तेत्तिउ दुक्खु सहेप्पिणु एवहिं कायरु काइं तुहुं ।
णिय-कर-पल्लवे लग्गउ लेवि ण सक्कहि परम-सुहु ॥ ९

[१७]

गुरु-वयणेहिं साहु उवसंतउ थिउ मज्झत्थु होवि दमवंतउ
जीविय-मरणाउह्-सिरिखंडइं अरि-सुहि-धूलि-धण्ण-विस-खंडइं
तिण-कंचणइं कच्च-माणिक्कइं ओयइं अवरइं सव्वइं एक्कइं
सव्व खमंतु जीव महु भायहो मइं मि खमिउ छज्जीव-निकायहो ४
विसय णिवारिय इंदिय-गामहो इंदिय ढोइय सासय-थामहो
एक्कीभावु करेप्पिणु सव्वहं दिन्नु चित्तु आलंबण-दव्वहं
आलंबणइ-मि होंति अणेयइं तिहुयणु भरेवि थियइं अ-पमेयइं

घत्ता

जं वलु सो भाउ हणेव्वउ साणुपेक्खु जिव-चिंतणउं ।
णिक्कंपु झाणु झाएवउं सासणु एहु जिणहो तणउं ॥ ९

[१८]

जिणु एक्कग्ग-चित्तु झायंतहो सोवकरणु सावय-वउ लेंतहो
लेसउ तिण्णि होंति परिणामें तेइय-पउमिय सुक्किल णामें
भावण-विंतर-जोइस-धामेहिं होइ अणिट्ठ-तेय तिहि थामेहि
मज्झिम सउहम्मीसाणिरेहिं उत्ताम सणकुमार-माहिंदेहिं ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेत्थु जे सत्तहिं पच्छडवग्गेहिं पउम कणिट्ठ-मज्झ-छहिं सग्गेहिं
उत्तम-त्रिहि-सयार-सहसारेहिं सुक्कहम तेहिं जे सुह-सारेहिं
तेरह-चउदहेहिं मज्झुत्तम होंति अ-लेस सिद्ध लोगुत्तम
पाण मुअइ जो जेहिं सिलेसेहिं सो उप्पज्जइ तेहि जि देसेहिं ८

घत्ता

चउविह-आराहण-रुक्खहो तिविह-रसइं सुह-परिमलइं ।
लग्गइं गंगाणंदण एयइं सग्ग-मोक्ख-सोक्ख फलइं ॥९

[१९]

तेरह पगरणाइं पढमुत्ताइं आयइं सत्तावीस पुणु सुत्ताइं
कहियइं अमर-तरंगिणि-णंदण संघ-खमावण अणु सिक्खावण
पर-गण-चरिय-खेत्त-परिमग्गण सुत्थिय-परमायरिओलग्गण
उवसंपय-परिक्ख-पडिलेहण आउच्छा-पडिपुच्छालोयण
दोसक्खावणु सइं संथारउ णिज्जावउ भव-भय-खय-गारउ
हाणि-पगासण पचक्खावण खमण खमावण पडिसिक्खावण
सरणु कवउ सम्मत्ताण झाणउं लेस महाफलु सव्वु पहाणउं

घत्ता

आयइं चालीस-वि सुत्ताइं पढइ सुणइ जो सद्दहइ ।
सो दुक्खहं मुहु ण णिहालइ धुउ अजरामर-पउ लहइ ॥ ८

[२०]

भणइ पियामहु अहो वय-धारा तुम्हहं कहिं उप्पत्ति भडारा
हंस-महारिसि कहइ अणंतरु चारु चिराणउं णियय-भवंतरु
अम्हइं बे-वि हंस चिरु गंगहिं घाइय केण-वि कारणे अंगहिं
तहिं गय जहिं महरिसि तरु-कोडरे णिवडिय घुम्ममाण चलणंतरे ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंच णमोक्कारेहिं रिउ-मद्दण वाणारिसिहिं णराहिव-णंदण
विजय-महाएविहिं उप्पण्णा जाईसर पावज्ज पवण्णा
घोर-वीर-तव-रिद्धि-पहावें आइय कहिउ धम्मु सब्भावें
तो पंडवेहिं परम-कारुण्णेहिं संव-वलाहणिरुद्ध-पज्जुण्णेहिं ८

घत्ता

पणिवेप्पिणु णवहि-मि वुच्चइ एह पइज्ज महंतरिय ।
तव-लच्छि सइं भुंजेसइ जइ संगामहो उव्वरिय ।। ९

*

इयरिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए ।
सरि-सुय-सण्णास-विहिए मरणं वम्होत्तर-सग्ग-गमणं एउणपण्णासमो सग्गो
।। गंगेय-पव्वं समत्तं ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्णासमो संधि

विणिवाइए णइ-णंदणे भड-कवंदणे गुरुहो अणिट्ठिय-तोणहो ।
दुज्जोहणेण सहत्थें विक्कम-पत्थे वद्धु पट्टु रणे दोणहो ॥१

[१]

गय णिसि विहाणु रवि उग्गमिउ घोसिय अमारि पडहउ भमिउ
णिरवज्जय जय-परिपुज्जणिय वहुलट्ठमि मग्गसिरहो तणिय
कल्लहंतहं एत्तिय दिवस गय एवहिं अवलंवहो जीव दय
अज्जोणउ वासरु परिहरहो गंगेयहो परिरक्खणु करहो ४
पायारु परिह लहु णिम्मवहो साहणइं चयारि-वि कम्मवहो
उब्भहो पड-मंडव तोरणइं परिसेसहो पहरण-पहरणइं
जं जेम वुत्तु तं तेवं किउ णिज्झाणु णिराउहु सिविरु थिउ
कुरु पंडव जायव मिलिय तहिं सर-सयणे तरंगिणि-तणउ जहिं ८

घत्ता

अहो अहो रज्ज-मयंधहो जदु-जरसंधहो पंडव-कुरुव-णरिंदहो ।
मं ढुक्कहो संगामहो भणइ पियामहु सरणु जाहु गोविंदहो ॥

[२]

णिय-वंधव-सयणहो खउ करेवि गइ कवण लहेसहो रणे मरेवि
णिम्मंसहो कारणे गोक्खुरहो मा सारमेय जिह विप्फुरहो
वोलावेवि णरवर सहस सय णउ काइ-मि पच्छए पिट्ठि-वि गय
णउ पडिसुइ-पमुहहं कुलहरहं णउ रुद्द-जिणिंद-चक्केसरहं ४
णउ णव-वल-णव-णारायणहं णउ णल-णहुसहं वलि-रावणहं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णलकुबर-थेर-सक्कंदणहं वसुहद्ध देहि पिहि-णंदणहं
दुज्जोहण किज्जइ संधि लहु सो कवणु मणुसु जो भिडइ महु
जिहिं णिज्जिउ हउ-मि सिहंडिएण तं किं संगामें मंडिएण ८

घत्ता

एवं भणेवि णिव्विण्णउ सुट्ठु विसण्णउ मुच्छ-विहलु स-वेयणु ।
विरह-वसंगय-वत्तउ महिलासत्तउ सव्वु होइ णिच्चेयणु ॥ ९

[३]

भाईरहि-णंदणु मुच्छ गउ णं लक्खणु रावण-सत्ति-हउ
दूरुज्झिय-विक्कम-चारहडि हा ताय भणंत मुवंत-रडि
कुरु पंडव जायव मागहिय धाइय-भिंगार-वारि-सहिय
तो संतणु लद्ध-सण्णु चवइ जलु पियमि दिव्वु जइ संभवइ ४
जं चंदाइच्चेहिं छित्तु णवि जहिं भिडिय ण पवण-विहंगम वि
सुंदरु सुयंधु सीयलु विमलु तो पत्थहो वियसिउ मुह-कमलु
गंडीउ चडाविउ लइउ सरु णं थिउ सिदाउहु अंवुहरु
वारुणेण विणिम्मिउ विमलु जलु गंगेएं वंकिउ मुह-कमलु ८

घत्ता

दिणयर-कर-परिचड्डिउ एउ मइं च्छिउ णिरुवमु अवरु णिएवउ ।
मोक्ख-पुरिहे जं पिज्जइ कहो-वि ण दिज्जइ तं सुहु सलिलु पिएवउ ॥

[४]

णग्गोह-रोह-पारोह-भुउ सरि-सुएण पसंसिउ पंडु-सुउ
महि-महिहर-महिरुह-दारणइं कहो अण्णहो दिव्वइं पहरणइं
वम्हत्थ-सउम-दइयआयरइं कउवेरग-सुर-पउरंदरइं
सामुद्द-पउम-वइरोयणइं णारायणत्थ-तइलोयणइं ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हउ आसण-वायव-वारणइं आयइं अवरइ-मि सु-दारुणइं
दुज्जोहण दुज्जउ णरु समरे वसुहद्धु देवि वरि संधि करे
पंडवेहिं समउ कज्जेण विणु केत्तिउ कलहिज्जइ रत्ति-दिणु
स-कलत्तु सपुत्तु स-बंधु-जणु मं खयहो जाहि आढवेवि रणु ८

घत्ता

वुच्चइ कउरव-णाहें कोव-सणाहें अज्जु संधि ण पयट्टइ ।
परए परुप्परु हम्मइ रण-पिडु रम्मइ समहो कालु को वट्टइ ॥ ९

[५]

जयकारु करेप्पिणु संतणहो गउ कुरुवइ णियय-णिहेलणहो
तो भणइ जुहिट्ठिलु ताय सुणे दुज्जोहण-बुद्धि-पमाणु मुणे
विसु ढोइउ जउहरे दिण्णु सिहि कवडक्खेहिं दरिसिय जूय-विहि
पुणु किउ दोवइ-केस-ग्गहणु वण-वसणु अणंतरु गो-ग्गहणु ४
ण धरद्धु लद्धु पारद्धु लहु दस दिवस कलहु किउ दुव्विसहु
भणु अज्ज-वि वुत्तउं जइ करइ तो तव-सुउ मच्छरु परिहरइ
रणु भट्टु जाउ दुक्खागरउं जइ महइ संधि तो सागरउं
जयकारु करेप्पिणु णीसरिउ भीमज्जुण-जमलालंकरिउ ८

घत्ता

तहिं अवसरे गउ थामहो पुणु-वि पियामहु वलिय दिट्ठि विवरेरी ।
विरह-विसंठुल-चित्ती जोव्वणइत्ती ऊढ व वुड्ढहो केरी ॥९

[६]

तहिं काले पराइउ सूर-सुउ केऊरंगय-गारविय-भुउ
सो चरणु णवेप्पिणु विण्णवइ हउं अंगराउ अंगाहिवइ
कोमार-बंभ-वय-धाराहं उम्माहिउ पयहं तुहाराहं
णइ-णंदणु पभणइ कोंति-सुय तउ भायर पंडु-पुत्त लहुय ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सहुं कवण तेहिं संगाम किय तउ तणिय पिहिवि तउ तणिय सिय
तउ आयवत्तु तउ वइसणउं तउ वेज्जउ चामर वइसणउं
तउ पंडव कउरव आण-कर परिपालहि अप्पणु स-धर धर
मं करहो परोप्परु गोत्त-खउ रवि-णंदणु पभणइ कहमि तउ ८

घत्ता

तेत्तियहो पसायहो पहु-अणुरायहो एहु काइं महु जुज्जइ ।
सामिसाल-अणुहुत्ती जिह कुलउत्ती केम ताय महि भुज्जइ ॥ ९

[७]

जाणमि जिह कुंतिहे जेट्ठ-सुउ जाणमि जिह धम्मपुत्तु लहुउ
जाणमि जिह मेरउ वइसणउं जाणमि जिह रज्जु महुत्तणउं
चामीयर-चामर-वासणउं सेयायवत्तु जिह अत्तणउं
जाणमि कुरु पंडव आण-कर जाणमि असेस महु तणिय धर ४
जाणमि सुहु सुर-गिरि-जैत्तडउं महु ताहं वि विहडइ एत्तडउं
जं किउ मय-वार माण-मलणु जं जउहरे देवाविउ जलणु
जं कवड-जूवि महि अवहरिय जं जण्णसेणि वालेहिं धरिय
जं वसणु णिहालिउ लइउ धणु एक्कु-वि ण दिण्णु जं गामहणु ८

घत्ता

पुणु पुणु गंगेयहो दूसह-तेयहो चरण णवेप्पिणु घोसइ ।
संधि समउ दुव्वियड्ढेहिं पंडव-संढेहिं हुय ण होइ ण होसइ ॥ ९

[८]

एत्थंतरे पभणइ गंग-सुउ णाराय-णियर-कप्परिय-भुउ
मइं एण णियत्तें कहिउ तउ किर बंधु-जणहो मा होउ खउ
अच्छउ कुरु-पंडव-चिंतणउं महु वट्टइ कारणु अप्पणउं
पणवेप्पिणु गउ रवि-तणउ तहिं णिय-मंदिरे कुरुव-णरिंदु जहिं ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेणावइ लब्भइ जाम णहु ता णाह णिवज्झउ पट्टु महु
कइकेउहो वइरि–पुरंजयहो हउं रण–मुहे भिडेवि धणंजयहो
सहएवहो णउलहो तव-सुयहो भीमहो भुवंग-विब्भम-भुयहो
पंचह-मि पंच रह णिट्ठवमि पंच-वि जम-लोयहो पट्ठवमि ८

घत्ता

जइ मइं कहव ण इच्छहि कालु पडिच्छहि तो रण-भर-धुर-धारा ।
जिम्व दोणहो जिम्व सल्लहो अ-णिहय-मल्लहो करि अहिसेउ भडारा ॥९

[९]

विहसेप्पिणु कुरुव-राउ भणइ गंगेयहो पच्छए जो हणइ
जिम्व गुरु जिम्व तुहुं जिम मद्दवइ सेणावइ अवरु ण संभवइ
वोल्लाविउ दोणु अहिट्ठविउ अउदुंवरे पीढे परिट्ठविउ
कंचण-कलसेहिं अहिसेउ किउ रण-धुरहो धुरंधरु होवि थिउ ४
दुज्जोहणु पभणइ कोव-भरे जिह सक्कहि तिह तव-तणउ धरे
रहसुब्भडु हास-तोस-भरिउ पुणु-पणु पभणइ दोणायरिउ
कहि कह-व भडारा कज्ज-गइ जें हणमि ण देहि णराहिवइ
मंछुडु समरंगणे सो अखउ णीसरिय वाय मुहे तेण तउ ८

घत्ता

वुच्चइ कउरव-राएं कह व पमाएं तहो विणासु जइ किज्जइ ।
तो गंडीव-धणुद्धरु सुरह-मि दुद्धरु अज्जुणु केण धरिज्जइ ॥९

[१०]

जइ खुडिउ णरिंदहो सिर-कमलु तो ण-वि हउं ण-वि तुहुं ण-वि पवलु
कज्जेण तेण तं परिहरहि जइ सक्कहि जीव-गाहु धरहि
किवि-कंतु णवर मच्छर-भरिउ जइ कह-व ण पत्थें अंतरिउ
तो धरमि जुहिट्ठिलु भंति ण-वि रक्खंति जइ-वि अमरासुर-वि ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वंमाणु माणु सब्भाणु जमु सहसक्खु तियक्खु-वि णिरु विसमु
एय-वि अवर-हि रक्खंतु फुडु कइ-केयणु एक्कु म होउ छुडु
चर-पुरिसेहि वइरि-विमद्दणहो णिय एह वत्त तव-णंदणहो
तेण-वि हक्कारेवि वुत्तु णरु पइं परए धरेवउ समर-भरु ८

घत्ता

वट्टइ गुरु सेणावइ जमु जिह पावइ सव्वहं पलउ करेसइ ।
अज्जुण पइं दूरत्थें समर-समत्थें जीव-गाहु मइं लेसइ ॥ ९

[११]

तो रएवि करंजलि पणय-सिरु कइ-केयणु पभणइ गहिर-गिरु
जइ अंबरे दिणमणि उग्गमइ जइ जोइस-चक्कु ण परिभमइ
जइ चलइ मेरु ण चलइ पवणु रवि णिप्पहु णिद्धणु वइसवणु
जइ सीयलु सिहि पज्जलइ जलु जइ एक्कहिं महियलु गयणयलु ४
जइ णिट्ठइ कालु दइउ मरइ तो मइं जियंते गुरु पइं धरइ
जहिं जमल-विओयर पवर-भुय जहिं दोमइ-णंदण दुमय-सुय
जहिं सच्चइ रण-भर-उव्वहणु सयमेव पासे जहिं महुमहणु
सोमय-सिंजय-पंचाल जहिं आसंकहि णरवइ काइं तहिं ८

घत्ता

सच्चु दोणु चउ-पत्थउ मवेवि समत्थउ जहिं रासिउ तहिं जुज्जइ ।
एहु तिहिं पत्थेहिं ऊणउ गण्ण-विहूणउं तुम्हहुं तेण ण पुज्जइ ॥९

[१२]

सा केम-वि केम-वि गमिय णिसि ता अरुणालंकिय पुव्व-दिसि
संजमियइं विविहइं वाहणइं सण्णद्धइं विण्णि-वि साहणइं
णिक्खोह भरिय रहे पहरणइं भुव-सोह-चडाविय वारणइं
वाइत्तइं चित्तइं वज्जियइं णं जलहर-विंदइं गज्जियइं ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रण-रहसें कहि-मि ण माइयइं जल-थलइं णाइं उद्धाइयइं
दोणें तो सयड-वूहु कियउ सुरवरह-मि दुप्परियल्लु थिउ
तं णिएवि जाउ भउ अज्जुणहो आएसु दिण्णु घट्ठज्जुणहो
तो तेण-वि कंबु-वूहु रइउ धय-दंड-संड-मंडव-छइउ ८

घत्ता

किय वूहइं हय-तूरइं पगइए कूरइं गंधवहुद्धुय-चिंघइं ।
जलहि-जलइं णिमज्जायइं ×× भिडियइं अग्गिम-खंधइं ॥९

[१३]

कण्णज्जुण्ण वूहाणणिहिं थिय कुरु-पंडवे पक्खय पक्ख किय
एक्कत्तहे एयारह गणिउ अण्णेत्तहे सत्तक्खोहणिउ
एक्कत्तहे कउरव बहु-सयण अण्णेत्तहे पंडव पंच जण
एक्कत्तहो चक्करयणु पहणु अण्णेत्तहे अप्पुणु महुमहणु ४
एक्कहिं णिय-पुण्णइं णिट्ठियइं अवरहिं सुणिमित्तइं उट्ठियइं
एक्कहिं वलंति सच्छाउहाइं अवरहिं पुण्णइं सव दुम्मुहाइं
एक्कहिं सिव असिवइं आयरइ अवरहिं जयसिरि पेसणु करइं
एक्कहिं वयणइं विच्छायाइं अवरहिं सुच्छायइं जायाइं ८

घत्ता

जइ ण पडंतु पियामहु सुरह-मि दुम्महु दारुणु करेवि महा-रणु ।
तो पंडव-कुररायहं हरिस-विसायहं होंतु ण एक्कु-वि कारणु ॥९

[१४]

तो ढुक्क महागय गयवरहं णं सजल जलय णव-जलहरहं
तोरविय तुरंग तुरंगमहं णं पवर विहंग विहंगमहं
भड भडहं परोप्परु आवडिय णं गहेहिं महा-गह अब्भिडिय
एक्कत्तहे वहुएहिं एक्क जणु वेढिज्जइ मेहेहिं जिह तवणु ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अण्णेत्तहे एक्कें वहुय जिय पत्तणेण व जलहर खयहो णिय
अण्णेत्तहे खंघहो सिरु पडइ अण्णेत्तहे भड-कवंधु नडइ
अण्णेत्तहे रण-रउ उच्छलइ अण्णेत्तहे सोणिय-णइ चलइ

घत्ता

गुंदल-तउमुल-दंदइं पविरल-मंदइं (?) विसम-दुसज्झइं जुज्झइं ।
पंडव-कुरुवहं जायइं घत्तिय-घायइं सुर-गणियह-मि दुगेज्झइं ॥ ८

[१५]

तो हरिणहं हरि व समावडिउ पंचालहं कलस-केउ भिडिउ
णाराएहिं सीरिउ वइरि-वलु णं दिणयर-किरणेहिं तम-पडलु
णं महियलु रुद्धु भुयंगवेहिं णं णहयलु सलह-विहंगमेहिं
गुरु जिणेवि ण सक्किउ पत्थिवेहिं सोमय-सिंजय-मच्छाहिवेहिं ४
तो जमल-विओयर-णरवइहिं धट्ठज्जुण-अज्जुण-सच्चइहिं
अवरेहि-मि भडेहिं अहिद्दविउ कह कह-वि ण सव्वेहिं विद्दविउ
तो सरहसु धाइउ कुरुव-वलु किउ कलयलु भेरी-रव-मुहलु
रणु जाउ परोप्परु दुव्विसहु ओवाहिय-हय-गय-रह-णिवहु ८

घत्ता

पेक्खेवि पंडव-कउरव रण-मुहे रउरव वल-नारायल-सच्चइ ।
भिसिय-कमंडल-धारउ सरहसु णारउ धुणेवि सइं भुव णच्चइ ॥ ९

*

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए
पण्णासमो संधि-परिच्छेओ समत्तो ॥

✽

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक्कपण्णासमो संधि

अहिसिंचिए कलस-द्धए पट्टे णिबद्धए रण-रसियइं किय-कलयलइं ।
णिसि-णिग्गमे आलग्गइं उग्गय-खग्गइं पंडव-कुरुवराय-बलइं ॥१॥

[१]

रवि-उग्गमे कुरु-खेत्त पयट्टइं पंडल-कुरुव-बलइं अब्भिट्टइं
हय-तूरइं वड्ढिय-उच्छाहइं गहियाउह-परिट्ठिय-सण्णाहइं
गिरिवर-गरुय-महारह-विंदइं खय-जलहर-रव-रडिय-गइंदइं
सिंधु-तरंग-तुरंग-तरंगइं दूसह-दिणयर-फुरिय-रहंगइं 4
विसहर-विसम-सिलीमुह-जालइं विज्जु-विलासुज्जल-करवालइं
कुलगिरि-सिंग-गरुय-गय-दंडइं जम-भउहा-भंगुर-कोवंडइं
पलय-समुद्द-रउद्द-णिणायइं पय-भय-भग्ग-भुयंगम-रायइं
मउड-पहोहामिय-रवि-किरणइं पहरण-जलण-तिडिक्किय-गयणइं 8

घत्ता

रह-गय-घडहिं भिडंतेहिं भडहिं भिडंतेहि रउ रंगंतु रणंगणहे
दस-दिसि-वहेहिं पधाइउ कहि-मि ण माइउ अयसु णाइं दुज्जोहणहो ॥१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२]

पहिलउ पाय-लग्गु रउ धावइ पंडव-कुरुव-णिवारउ णावइ
अहो तव-सुय-दुज्जोहण-रायहो वुत्तउ किण्ण करहो महु आयहो
काइं अकारणे कलहु पउंजहो अद्धें अद्धु वसुंधर भुंजहो
मं पहरहो णं धरइ कडच्छए सीस-वलग्गु होइ पुणु पच्छए
ण गणइ वलइ रणंगणु छायइ रुट्ठउ जमहो णाइं धाहावइ
जो जो ढुक्कइ तं तं खाएवि हसइ व छत्त-धयग्गेहिं थाएवि
भमइ व गयण-मग्गे णिव्वडियउ कासु ण उत्तमंगे हउं चडिउ
तहिं उग्गउ रयणियरु णिरंतरु दंति-दंत-णिहसग्गि अणंतरु

घत्ता

वहल-फुलिंगब्भ इयउ सहसुद्धइयउ जालोलिउ भय-गारियउ।
णहु वहु-भाएहिं ठंतिहिं कुरु-वलु खंतिहिं जीहउ जमेण पसारियउ ॥९

[३]

एम समुच्छलियउ सिहि-जालउ पुणु सोणिय-धारउ सुसरालउ
तेहिं असेसु दिसा-मुहु सित्तउ थिउ णहु णाइं कुसुंभए घित्तउ
अवरउ परियत्तउ गयणग्गहो णं घुसिणोलिउ णह-सिरि-अंगहो
जाय महारण-भूमि भयंकर सोणिय-पाणिय-पवह-णिरंतर
पसमिउ रउ उल्हविय-हुयासइं उट्ठियइं रुहिर-णइ-सहासइं
रहवर-गयवरोह ण पहाविय तुरय तरंत तरंत वहाविय
मिलियउ ताउ जाउ अइ-दुत्तरु पारावारु अपारु भयंकर
हय-गय-णर-णरिंद-कंकालिहिं णिविड-णिवद्ध-पालि-जंवालहिं

घत्ता

तहिं तेहए रण-सायरे णरवर-जलयरे सोणिय-ण्हाण-कियायरइं।
चडेवि महागय-गत्तेहिं रह-धय-छत्तेहिं झंपउ देंति णं सायरइं ॥९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[४]

तहिं रण-मुहे रुहिरोह-णिरंतरे पहुसमीवे(?) कुरुखेत्तब्भंतरे
हेसिय-गय-गज्जिय-वर-वाहणे भिडिउ पत्थु संसत्तग-साहणे
हम्मइ एक्कु अणंतेहिं जोहेहिं सो-वि पधाइउ सर-घारोहेहिं
सारहि रहु वाहंतु ण थक्कइ मंदरु महणे णाइं परिसक्कइ ४
रहवरु गयवरु तुरउ ण चुक्कइ वइरिहिं पलय-कालु णं ढुक्कइ
णर-कर-पारिहत्थि अणियंता महुमह-सुह-दंसणु अलहंता
णहे जूरंति असेसवि-सुरवर वरुण-पवण-वइसवण-पुरंदर
अण्णेत्तहे सुर-कामिणि सत्थहो कलहु पवड्ढिउ कारणे पत्थहो ८

घत्ता

हले हले ओसरु ओसरु तुज्झ ण अवसरु पेल्लहि गहेण णाइं गहिय।
सुरगणियह-मि ण लुब्भइ एहु कहिं लब्भइ जसु रण-वहुय जे वल्लहिय ॥९

[५]

जाम वोल्ल सुर-सुंदरि-सत्थहो ताव तिगत्त भिडिउ रणे पत्थहो
दोणें दुमउ विद्ध वीसद्धेहिं वाणेहिं कंक-पक्खिउणद्धेहिं
किव-कुरुवइ-तव-सुय-पय-सेवहं रणु पडिलग्गु सउणि-सहएवहं
वे-वि वि-हय-धय वि-रह णिरत्था वे-वि पधाइय लउडि-विहत्था ४
विहि-मि परोप्परु चूरिय घाएहिं विण्णि-वि ओसारिय साहाएहिं
भीमें भीम-भुवंग-समाणेहिं विद्धु विविंझइ वीसहिं वाणेहिं
तेण-वि धउ स-सरासणु पाडिउ पुणु लउडेहिं परोप्परु ताडिउ
भीमें गयए गयासणि चूरिय णं कुरुवइहे विजयास ण पूरिय ८

घत्ता

तो धयरट्ठहो णंदणु छंडेवि संदणु खग्ग-फराउहु वावरइ।
फणिवइ-कुम्भ-भयंकरु णं गिरि मंदरु मज्झे समुद्दहो संचरइ ॥९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[६]

मद्दाहिवेण णउलु हक्कारिउ   वि-कवउ वि-धणु वि-रहु विणिवारिउ
गउतमु धट्ठकेउ दप्पुद्धुरु   विण्णि-वि भिडिय णाइं सुर-सिंधुर
किउ सत्तरिहिं विद्धु वच्छत्थले   पाडिउ छत्तु सरेहिं तिहिं मत्थले
अण्णेत्तहे विप्फारिय-धम्महं   जाउ जुज्झु सच्चइ-कियवम्महं
अण्णेत्तहे सिहंडि-भूरीसव   भिडिय णाइं दसकंधर-वासव
चेयणाइ-अणुविंदण्णेत्तहे   अण्णेत्तहे विराड-चंपावइ
अण्णेत्तहे हइडिंबालंवुस   उद्ध-सुंड दिक्करि-व णिरंकुस
अण्णेत्तहे सुसम्म-सुसहावइं   लक्खण-खत्तएव अण्णेत्तहि

घत्ता

एम परोप्परु जुज्झइं   कियइं अउज्झइं   छिण्ण-छत्त-धय-चामरइं ।
हय-सारहि-रह-तुरयइं   कप्पिय-कवयइं   तोसाविय-सव्वामरइं ॥६

[७]

तो सक्कंदण-णंदण-णंदणु   पवर-तुरंगोवाहिय-संदणु
भिडिउ समच्छरु पउरव-रायहो   णं दवग्गि तिण-वेणु-णिहायहो
जाउ जुज्झु परिवड्ढिय-मण्णुहुं   विहिं तेणहिं(?) मण्णु-अहिमण्णुहुं
विण्णि-वि वावरंति रणे वाणेहिं   विण्णि-वि छाइय अमर-विमणेहिं
विण्णि-वि पंडव-कउरव-पक्खिय   विण्णि-वि सुर-सुंदरिहिं कडक्खिय
विण्णि-वि अच्छरच्छि-विच्छोहेहिं   सुललिय-धवलिय-धवल-जसोहेहिं
विहि-मि पयंड-रवेहिं जगु वहिरिउ   विहि-मि स-साहुक्कारउ पहरिउ
विहिमि- सरेहिं सण्णाहु जज्जरियउ   थणइं वसुंधर-तणु णं वरियउ

घत्ता

णर-सुय-पउरव-राएहिं   वर-णाराएहिं   छाइउ णहु अंतरिउ रवि ।
जलु थलु विवरु दियंतरु   जाउ दुसंचरु   दिवसु ण णावइ रयणि णवि ॥७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[८]

तो सयमण्णु-सुयहो धणु पाडिउ छिण्णु छत्तु धउ चिंधु विहाडिउ
तेण-वि सारहि सत्तहिं बाणेहिं विद्धु णिसिद्धु फणिंद-समाणेहिं
णर-सुएण णाराउ विसज्जिउ सो कियवम्में वलि व विहंजिउ
केसव-सस-सुएण धणु छंडिउ लइउ किवाणु महाकरु मंडिउ ४
भोयहो समरे मडप्फरु भंजेवि सीह-किसोरु पत्तु ओरंजेवि
सारहि स-रहु पलोट्टिउ घाएं पउरउ पहउ कंठे असिघाएं
रहवरे पडिउ पुत्तु सयमण्णुहे सिरे सुर-कुसुम-वरिसु अहिमण्णुहो ८
तेण पडंते पडिउ अपारउ वंधव-जणहो दुक्खु वइडारउ

घत्ता

पंडव-पहु परिओसिउ कलयलु घोसिउ तूरइं वले देवावियइं।
पउरवराय-विओएं कउरव-लोएं मुह-कमलइं मउलावियइं ॥९

[९]

पउरउ जं समरंगणे धाइउ करेवि जयास जयद्दहु धाइउ
धरिउ सीहु णं सीह-किसोरें वलु अहिमण्णु देहि रहु ओरें
होउ अमंगलु विहुणिय-हत्थहो अज्जु विद्धि खत्तहो जिव पत्थहो
मुक्कल-केस पहय-वच्छत्थल उत्तर रुवइ अज्जु जिव दूसल ४
पइं जिएण जिउ वच्छाओहणु मइं जिएण णिज्जिउ दुज्जोहणु
वुच्चइ सव्वसाइ-दायाएं कुरु-खेत्तहे ण भग्ग महु ताएं
राहावेहे सय वर-मंडवे दोमइ-करे लग्गंतए पंडवे
तुम्हइं सव्व काइं ण परज्जियं थिय विच्छाय मडप्फर-वज्जिय ८
किण्ण णियत्तिय सुर-बंदिग्गहे किं णोहामिय उत्तर-गोग्गहे

घत्ता

तुहु-मि जयद्दह गज्जहि संढ ण लज्जहि कउरव-राएं भावियउ।
दोमइ-हरेण सुधीमें संभरु भीमें कवण अवत्थ ण पावियउ ॥१०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१०]

तं णिसुणेवि पक्खुहिउ जयद्दहु णं णव-मेहागमणे मयद्दहु
धाइउ रहु मुएवि समुहाणणु सीह-किसोरहो णं पंचाणणु
बिण्णि-वि वावरंति फर-खग्गेहिँ विविहब्भंतर-बाहिर-मग्गेहिँ
तो णर-णदणेण णिप्पसरें कह-व कह-व रणे लद्धावसरें ४
भग्गु खग्गु तहो सिंधव-राय हो छप्पयाइं ओसारिय-धायहो
ताम दिण्णु रहु अंतरे सल्लें सत्ति विसज्जिय अणिहय-मल्लें
लेवि सुहद्दा-सुएण महंतिए धाइउ सारहि ताए जे सत्तिए
सल्लु-वि सल्लिउ मुच्छ पयाणिउ संदणु कइंमि तुरंगेहिँ ताणिउ ८

घत्ता

ताम वइरि-जम-गोयरु भणइ विओयरु सारहि अंतरे पइसरमि ।
वाहि वाहि रहु तेत्तहे णर-सुउ जेत्तहे सल्लु सु-सुल्लु जेम करमि ॥ ९

[११]

तो सहसत्ति सइत्ती-भूएं वाहिउ रहवरु रण-मुहे सूएं
आहय हय वाणालि-पहारें धर थरहरइ विओयरु-भारें
रहु कडयडइ रहंगु ण चल्लइ स-धर धरित्ति णिरारिउ हल्लइ
तडयडंत तुट्टंतेहिँ उरएहिँ कह-व कह-व रहु कड्ढिउ तुरएहिँ ४
धाइउ झंप देवि महि-मंडले सारहि रहु आणेज्जहि पच्छले
जिह भुक्खिउ कयंतु ण चिरावइ कुरु-कुल-कवलहो जीह ललावइ
जो जो ढुक्कइ तं तं घाएवि अज्जुण-तणयहो अग्गए थाएवि
भीमु भयंकरु लउडि भमाडइ असणि णाइं रिउ-मत्थए पाडइ ८

घत्ता

तहिँ अवसरे मद्देसरु लउडि-भयंकरु धाइउ भीमहो संमुहउ ।
उब्भिय-करहो करिंदहो सभमर-विंदहो उद्ध-सोंडु णं मत्त-गउ ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१२]

विण्णि-वि लउडि-दंड-दारुण-कर   वे-वि जुहिट्ठिल-कुरुवइ-किंकर
विण्णि-वि भिडिय भीम-महाहिव   णं विण्णि-वि सणक्ख हरिणाहिव
णं विण्णि-वि स-संग कुल-पायव   णं विण्णि-वि स-दाढ अट्ठावय
णं विण्णि-वि स-खंभ वर-वारण   णं वण-महिस सिरोरुह-पहरण ४
विण्णि-वि वावरंति सम-घाएहिं   वे-वि पडंति थंति णिय-वाएहिं
विहि-मि भमंतेहिं भमइ वसुंधर   थंतिहिं थाइ स-सयल स-सायर
विण्णि-वि चित्तभाणु-सरिस-प्पह   विण्णि-वि घोर-घाय-घट्टिय-णह
स-मिहुणइं पेक्खंति पसत्थइं   जुज्झइं पंडव-कुरुवेहिं पत्तइं ८

घत्ता

महाहिवइ-विओयर वे-वि समच्छर लउडिहिं कणय-समुज्जलेहिं ।
विप्फुरंति समरंगणे णाइं णहंगणे पलय-मेह णं विज्जुलेहिं ॥ ९

[१३]

गय अट्ठट्ठ पयइं पडिवाइय   णं जम-दूय परोप्परु धाइय
दिण्ण घाय सिर-उर-कर-चरणेहिं   विविहब्भंतर-वाहिय-करणेहिं
तुट्टेवि गयउ गयउ गय-सारउ   लइयउ विहि-मि वेण्णि पुणु अवरउ
भार-सयहो कालायस-घडियउ   उप्परि जायरूव-संजडियउ ४
सव्व-महग्घर-पण-संपुण्णउ   विप्फुरंति णं विसहर-कण्णउ
किंकिणि-घंटा-जाल-वमालिउ   चंदण-लित्तउ कुसुमोमालिउ
गंध-धूव-अहिवासण-पत्तउ   मत्तहत्थि-मय-मइलिय-गत्तउ
सयल-काल णच्चियउ कवंधउ   रुहिरामिस-वस-वीसढ-गंधउ ८

घत्ता

उहय-णराहिव-मल्लेहिं पंडव-सल्लेहिं लइउ ताउ महा-गयउ ।
मोहण-थंभण-लीलउ मारण-सीलउ णाइं रउद्दउ देवयउ ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१४]

तेहिं गएहिं परुप्परु धाइउ संसउ विहि-मि वलहं उप्पाइउ
घाए घाए थरहरइ वसुंधर घाए घाए डोल्लंति महीहर
घाए घाए उट्ठंति फुलिंगइं होंति दिसा-मुहाइं सिहि-पिंगइं
घाए घाए वहु-मरगय-टिक्कइं उच्छलंति मोत्तिय-माणिक्कइं
घाए घाए कल-किंकिणि-जालउ उच्छलंति उच्छलिय-वमालउ
घाए घाए तुट्टइं सीसक्कइं घाए घाए भूवइ-ल्लक्कइं
घाए घाए दलियइं तणु-ताणइं घाए घाए रुहिरइं अ-पमाणइं
घाए घाए घुम्मंति सरीरइं घाए घाए चित्तइं गिरि-धीरइं
घाए घाए सुरवरहं णियंतहं णिट्ठियाइं कुसमाइं-घिवंतहं

घत्ता

गरुय-घाय-विहलंघल वे-वि महावल पडिय महीयले मुच्छ गय ।
दिट्ठा सुर-विंदेहिं कुरुव-णरिंदेहिं गिरि व पुरंदर-कुलिस-हय ॥१०

[१५]

महाहिवइ-अमाणुस-गम्में णिय-वलु पइसारिउ कियवम्में
एत्तहे वइरि हणंतु विओयरु ऊट्ठिउ जाउहाणु जम-गोयरु
तो कामिणि जण-मण-थण-थेणहं जाउ जुज्झु णाउलि-विससेणहं
रवि-सुय-तणएं दस सर पेसिय णउलहो णंदणेण णीसेसिय
अवरेहिं दसहिं थणंतरे ताडिउ धणुवरु छिण्णु महा-धउ पाडिउ
आसत्थामु ताम थिउ अंतरे धाइय पंडु-पुत्त तहिं अवसरे
सोमय-सिंजय-कइकय-राणा अवर-वि पहु एक्केक्क-पहाणा
एत्तहे रहवर-तुरय-वरेण्णइं धाइयाइं दुज्जोहण-सेण्णइं

धत्ता

पंडव-कुरुवाणीयहं विक्कम-वीयहं जाउ महाहउ दुव्विसहु ।
णहयले अणक्कारिउ सुर-परिवारिउ आउ णिहालउ अमर-पहु ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[६]

तहिं अवसरे अणिवाइय तोणें कुरुव-राउ वोल्लाविउ दोणें
अज्जु जुहिट्ठिलु धरमि सहत्थें जइ कयाइ अंतरिउ ण पत्थें ।
एम भणेवि तें णयणाणंदणु पंडु-वलहो ओवाहिउ संदणु
पवरुत्तुंग-सिहरु सय-कंदरु णं मयरहरहो ढोइउ मंदरु ४
कर-पहराहय-हय उद्धाइय अग्गिम-भाय णहंगणे लाइय
रहु परिसक्कइ जेत्तहे जेत्तहे रुंड-णिरंतरु तेत्तहे तेत्तहे
अग्गए गुरु कयंतु जिह पावइ पच्छए रुहिर-पवाहिणि धावइ

घत्ता

दोण-दिवायरु पत्तउ सरवर-तत्तउ पंडव-साहणु परिभवइ ।
अज्जुण-तरु-परिचत्तउं पाणक्कंतउं कवण छाहि जहिं वीससइ ॥ ८

[७]

तो तव-सुएण चउव्विह-वाहणु भग्गु असेसु-वि कउरव-साहणु
वलि मंभीस देवि कलसद्धउ लग्गु महीहरे णं धूमद्धउ
पहु वारहेहिं सरेहिं समाहउ छिण्णु जीउ धणु-लट्ठि-सणाहउ
ताम कुमार जुवंधर धाइय विण्णि-वि विहिं भल्लेहिं विणिवाइय ४
दसहिं सिहंडि णउलु तिहिं ताडिउ पंचहिं सच्चइ कह-वि ण पाडिउ
सत्तहिं मद्दि-पुत्र लहुयारउं सो ण को-वि जो ण हउ ति-वारउ
वग्घंदंतु वर-वग्घ-परक्कमु सीहसेणु सीहोवम-विक्कमु
विण्णि-वि चक्क-रक्ख तव-तेयहो खुडिय-सीस पेसिय जमलोयहो ८

घत्ता

तोणा-जुयल-अणिट्ठिउ चाउ-सइट्ठिउ अतुल-परक्कमु पवर-कर ।
पक्कल-हय-रह-दुज्जउ साउ-सहिज्जउ सो जिणंतु रणे दोण-सर ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१८]

तो णिवद्ध-जमलक्खय-तोणें पंडव-घइणि परज्जिय दोणें
पर एक्कलउ थिउ तव-णंदणु कुरु-गुरु जउ तउ वाहिय-संदणु
जाउ महाहउ णिरुवम-चरियहं विहिं-मि जुहिट्ठिल-दोणायरिहं
णं रामण-रामहुं रण-लोलहुं णं गयवरहुं गिल्ल-गल्लोलहु ४
णं सद्दूलहं आमिस-लुद्धहं णं केसरिहिं परोप्परु कुद्धहं
णं विसहरहं विसम-फुक्कारहं णं गोविसहं मुक्क-ढेक्कारहं
छुडु छुडु हय हय भार-दुवाएं छुडु छुडु सूउ पलोट्टिउ पाएं
छुडु छुडु तव-सुउ णिप्पहु सारिउ छुडु छुडु चिहुरहं हत्थु पसारिउ ८

घत्ता

लेइ ण लेइ झडप्पेवि × × × अज्जुणु ताम समावडिउ ।
दोणायरिय-कयंतहो णं जेमंतहो पढमु कवलु हत्थहो पडिउ ॥ ९

[१९]

अंतरे रहु वाहेहिं असरालें भरेवि दिसामुह सरवर-जालें
पूरिउ देवयत्तु सेयासें पंचयण्णु रउ लच्छि-णिवासें
एक्कीभूउ णिणाउ भयंकरु गउ वंभंडु णाइं सय-सक्करु
णर-करे परियंभिउ गंडीवें खय-जलहरेण व गज्जिउ जीवें ४
फुरइ रहद्धए कंचण-वाणरु णं गिरि-सिहरे लग्गु वइसाणरु
एक्कु-वि णर-सर-णियरु भयंकरु अण्णु-वि रण-रउ रयणि-भयंकरु
काइ-मि तेहिं ण णिहालिउ दोणें रहु परियत्तिउ पच्छिम-घोणे
णिय-णिय-सिमिरहं वलइं पयट्टइं णं खय-जलणिहि-जलइं विसट्टइं ८

घत्ता

गरहिउ गुरु कुरु-णाहे भग्गुच्छाहें तुहुं मइं ताय वियक्कियउ ।
अच्छउ वसुह जिणेवी महु सिय देवी राउ-वि घरेवि ण सक्कियउ ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२०]

पभणइ कलसकेउ अहो राणा	कुरु-परमेसर पुहइ-पहाणा ।
गरहहि तुहुं मइं ताय वियक्किउ	अज्जुणु केण-वि धरेवि ण सक्किउ ॥
णं वे-भाय करेवि अप्पाणउं	रिउ पहरइ परिरक्खइ राणउं
मइ-मि महाहवे सरेहिं णिरुंभइ	एउ सव्वु गोविंदु वियंभइ	४
धरउ को-वि छुडु अज्जु-वि अज्जुणु	धम्मपुत्तु महु जाइ कहिं पुणु
गुरु वयणावसाणे रणे दुद्धर	गह-अणुरूव भूव जालंधर
णं उम्मेट्ठ दुट्ठ वर कुंजर	णं पंचाणण णहर-भयंकर
णं जलणिहि मज्जाय-विवज्जिय	णं खय-काले मेह गलगज्जिय	८

घत्ता

जिव महुमहण-धणंजय	वइरि-पुरंजय	परए सयंभुव-वलेण हय ।
जिव सतुरंग-सगयवर	स-धय स-रहवर	अम्हहिं पउरव-पहेण गय ॥९

✻

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव
कए एक्कवण्णासमो इमो सग्गो ॥

✻

Jain Education International	For Private & Personal Use Only	www.jainelibrary.org

बावण्णासमो संधि

पडिवालिय-सूरइं आहय-तूरइं वाहेवि रहवर-वाहणइं ।
भिडियइं महि-कारणे वे-वि महारणे पंडव-कउरव-साहणइं ॥ १

[१]

तव-णंदणु परिरक्खिउ णरेण गुरु गरहिउ कुरु-परमेसरेण
तहिं अवसरे दप्पुप्पेहडेहिं जयलच्छि-सुरंगण-लेहडेहिं
सहुं णरेण समिच्छिय-विग्गहेहिं सामिय-सम्माण-परिग्गहेहिं
हरिणाइ-समुत्तर-संगिएहिं अणुदिणु रण-रामालिंगिएहिं
घिप्पंतेहिं कुसवसणंकिएहिं कंसिय-तणु-ताणालंकिएहिं
मालव-हिरण्ण-पुरवासिएहिं गोवेहिं णारायण-पेसिएहिं
सिवि-तुंडिए रण-रस-पच्छलेहिं दरएहिं कुणीरेहिं मेहुलेहिं
जालंधर-मच्छ-तिगत्तएहिं वोल्लाविउ पहु संसत्तएहिं

घत्ता

कुरु-खेत्तहो वाहिरे घोर-रणाइरे जइ तं अज्जुणु णउ धरहुं ।
तो कुरुवइ कल्लए दुप्परियल्लए अम्हइं हुयवहे पइसरहुं ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२]

तो करेवि पइज्ज णराहिवेहिं रण-रहस-सललिएहिं पत्थिवेहिं
हक्कारिउ अज्जुणु अद्ध-रत्ति जइ कह व परिट्ठिउ णियय-खेत्ति
तो अम्हहिं सव्वेहिं कहिउ तुज्झु कुरु-खेत्तहो वाहिरे देहि झुज्झु
जं णरवर-विंदेहिं एम वुत्तु वोल्लाविउ पत्थें धम्मपुत्तु ४
किं णिहुयउ अच्छमि सं ढु जेम भड-वोक्क ण सक्कमि सहेवि देव
तव-णंदणु पभणइ अखय-तोणु तिह करि जिह मइं पावइ ण दोणु
तो भुवणुच्छलिय-महा-गुणेण विण्णविउ जुहिट्ठिलु अज्जुणेण
धट्ठज्जुणु सच्चइ भीमु जाम को पहु पइं हत्थे छिवइ ताम ८

घत्ता

हउं भिडमि तिगत्तहं एम चवंतहं गय णिसि दिणमणि वित्थरिउ ।
णह-सिरिए णहत्थहं तवसुय-पत्थहं णं अहिसेय-कलसु धरिउ ॥ ९

[३]

णिसि-णिग्गमे वड्ढिय-कलयलाइं आलग्गइं पंडव-कुरु-वलाइं
गय-मयणइं णिग्गम-दुग्गमाइं हय-फेणोवड्ढिय-कद्दमाइं
रह-भारक्कंत-वसुंधराइं जय-सिरि-वहु-लइय-सयंवराइं
पहरण-रण-पहरण-पेसियाइं दुज्जय-जयलच्छि-गवेसियाइं ४
पर-वारण-वारण-वारणाइं दप्पुब्भड भड-संधारणाइं
धय-छत्त-छित्त-रवि-मंडलाइं असि-किरणोहामिय-विज्जुलाइं
धणु-सोहा-जिय-इंदाउहाइं रय-रक्खस-गिलिय-दिसा-मुहाइं
रुहिर-णइ-रउद्द-महारणाइं करि-दसण-कसुग्गय-हुयवहाइं ८

घत्ता

तहिं तेहए दारुणे रण-रुहिरारुणे वाहिय-रहइं धणुद्धरइं ।
गंडीव-भयंकरु खंडव-डामरु भिडिउ पत्थु जालंधरहं ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[४]

तहिं अवसरे वुच्चइ महुमहेण लज्जिज्जइ पत्थ पराहवेण
जाणहि जि महारहे थवेवि आउ कह-कहव ण दोणें धरिउ राउ
पइं विणु भुवदंड-भयंकराहं को अंकुसु मोडइ गुरु-सराहं
पयरक्खु विओयरु जइ-वि थाइ गय-घडहं विरुज्झइ सीहु णाइं ४
पयरक्ख णरिंदहो जमल जे-वि मद्दाहिव-सउणिहिं धरिय ते-वि
अहिमण्णु मइंद-किसोरु णाइं जेत्तहिं जे कुमार तेत्तहिं जि थाइ
सोमय-सिंजय-पंचाल जे-वि कुरु-गुरु सक्कंति ण धरेवि ते-वि ८

घत्ता

रइयंजलि-हत्थें वुच्चइ पत्थें वित्थारिय-जस-मंडवहं ।
हरि तुहुं जहिं जमलउ णय-पय-कमलउ कवणु दुक्खु तहिं पंडवहं ॥९

[५]

संसिऊण वसुएव-णंदणं धुरि अणुट्ठिओ वाहि संदणं
करमि जाण(?) सस्सीरियं वलं खर-खुरुप्प-कप्पिय-उरत्थलं
हय-हयं वियारिय-महागयं मोडियायवत्तं वलुद्धयं
भग्ग-संदणं णोल्ल-णरवरं रुहिर-मंस-वस-तित्त-णिसियरं ४
वाहिओ धुराहिवेण रहवरो चडुल-चक्क-चिक्कार-दुद्धरो
रय-णिहाय-कय-मेह-डंवरो देवयत्त-रव-वहिरियंवरो
पंचयण्ण-णिग्घोस-भीसणो पलय-मेह-मयरहर-णीसणो
कोंत-तोय-तणु-तेय-तेइओ गरुड-पवण-मण-वेय-वेइओ ८

घत्ता

धए कंचण-वाणरु पासे महीहरु रहवरे णरु करे स-सरु धणु ।
रण-रामासत्तेहिं दिट्ठ तिगत्तेहिं णाइं णवल्लउ जमकरणु ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[६]

तो जालंधर स-सर-धणुद्धर
रहसुद्धाइय कहिं मि ण माइय
भरिय-दियंतर दलिय-वसुंधर
हय-हडि-काहल पसरिय-कलयल ४
उक्खय-पहरण चोइय-वारण
किय-कडवंदण वाहिय-संदण
जय-सिरि-संगम मुक्क-तुरंगम ८
अतुल-परक्कम केसरि-विक्कम
तेहिं चलंतेहिं खोणि खणंतेहिं
रउ उद्धाइउ जगे जि ण माइउ

घत्ता

जल-थल-आगासइं अमर-सहासइं सव्वइं धूलिए मइलियइं ।
पर अतुल-पयावइं विमल-सहावइं चित्तइं भडहं ण मइलियइं ॥ ११

[७]

तो णरु णिरुद्धु जालंधरेहिं णं दुद्दिणे दिणमणि जलहरेहिं
णं केसरि मत्त-महा-गएहिं णं चंदण-पायउ पण्णएहिं
एक्कल्लउ अज्जुणु वलु अणंतु वावरइ तो-वि तिण-समु गणंतु
विप्फुरइ विज्जु जिह चाव-लट्ठि दस वीस तीस पंचास सट्ठि ४
सउ सहसु लक्खु अप्परिपमाण पसरंति चउद्दिसु णवर वाण
सव्वेहिं अखत्ते लइउ पत्थु सव्वेहि-मि विसज्जिउ सव्वु अत्थु
धड सव्व-जंत-पाहाणविट्ठि लक्खिज्जइ जउ जउ रमइ दिट्ठि
सो पहरण-णिवहु कइद्धएण विणिवारिउ वेहाविद्धएण ८

घत्ता

गंडीव-विहत्थें खंडिय पत्थें सोलह सहस महासरहं ।
पडियइं खुडियद्धइं खग्गइं खद्धइं णाइं सरीरइं विसहरहं ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[८]

संसत्त-सेण्णु अणज्जुणेण किउ पाराउट्ठउ अज्जुणेण
तहिं अवसरे भायर पंच थक्क णं सग्गहो णिवडिय पंच सक्क
णं पंच परिट्ठिय लोयवाल णं जम-कलि-पलय-कयंत-काल
पंचहि-मि पूरिय पंच संख पंचहि-मि विसज्जिय सर असंख ४
पंचहि-मि महारह समुह दिण्ण पंचहि-मि धणंजय वाण छिण्ण
दस दसहिं सरेहिं पंचहि-मि विद्धु कह-कह-वि ण पाडिउ पवय-चिंधु
इसु णरेण सुवाहुहे तीस छिण्ण पुणु चाव-लट्ठि दस दिसिहिं दिण्ण
रहु सुरहहो किउ सय-खंड-खंडु विद्दलिउ(?) सुसम्महो छत्त-दंडु ८
तणु-ताणु सुवम्महो तणउ भिण्णु सु-धणुद्धर-सिरु भल्लेण छिण्णु

घत्ता

भडु पडेवि ण इच्छइ सीसु पडिच्छइ जइ पडिवारउ थाइ थिरु ।
तो णिय-वले भग्गए सामिहे अग्गए धत्तमि वइरिहे तणउ सिरु ॥९

[९]

तहो रणभर-पवर-धुरंधरासु जं लइयउ सीसु धणुद्धरासु
तं णिय-वलु परिलंविय-किवाणु धीरविउ सुसम्में भज्जमाणु
संभरहो सु ताइं गलगज्जियाइं संभरहो कुलइं मल-वज्जियाइं
संभरहो भडत्तणु साहिमाणु संभरहो सामि-संमाण-दाणु ४
संभरहो पइज्जउ दुक्कराउ गय काइं भणेसहो कुरुव-राउ
वहुएहिं हणेवउ एक्कु जेत्थु को पाण-भयहो अवगासु तेत्थु
तं णिसुणेवि वलिय णरिंद के-वि णिय-णामइं पवरइं संभरेवि
णारायण-वलइं पधाइयाइं जल-थल-आयासइं छाइयाइं ८

घत्ता

पहरण-पब्भारें रय-अंधारें रहु ण दिट्ठु ण तुरंग हय ।
मरणु चिंतिउ सव्वेहिं भडेहिं स-गव्वेहिं णर-णारायण कहि-मि गय ॥९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१०]

किउ कलयलु तूरइं हयइं तेहिं रण-रसिएहिं कुरुवइ-किंकरेहिं
मुउ मंछुडु महुसूयणु स-पत्थु संसए वलग्गु गिव्वाण-सत्थु
तो दुद्दम-दणु-तणु-घायणेण वोल्लाविउ णरु णारायणेण
अहो अज्जुण सुर-गिरि-गरुअ-धीर खंडव-डामर एक्कल्ल-वीर ४
किं छिण्णु महारहु खुडिय चक्क किं पहर-विहुर-रह-तुरय थक्क
किं णिट्ठिय तोणहो कंड-संड किं पडिय तुहारा वाहु-दंड
किं चंडु चंडु गंडीउ भग्गु कज्जेण जेण संसय-वलग्गु
हरि णरेण वुत्तु थिरु थाहि देव रिउ मारमि सीहु सियाल जेम ८

घत्ता

तो एम भणेप्पिणु सर-सय लेप्पिणु तालुय-वम्म-विमद्दणेण ।
णर-णियरु णिवारिउ णं ओसारिउ कोंकण-उवहि जणद्दणेण ॥ ९

[११]

सर घिवइ चउद्दिसु सव्वसाइ थिउ किरणहं मज्झे पयंगु णाइं
णाराय ण विणु दुज्जोहणेण वामोहिय अच्छें मोहणेण
जालंधरु रुद्धु णिरुद्धणेण संसत्तग थंभिय थंभणेण
उड्डविय तिगत्ता वायवेण जिय सूरसेण सूरायवेण ४
कालेय कुलीर कुणिंद भग्ग पच्छल मेहल उप्पहेहिं लग्ग
गंधार मगह मद्दासिया-वि मालव-हिरण्णपुर-वासिया-वि
जायव जोहेया जवण जट्ट आहीर कीर खस टक्क भोट्ट
कासेय उसीणर तामलित्त तोक्खार तिउर अवर-वि विचित्त ८

घत्ता

दुद्दम दुलक्खेहिं णरवर-लक्खेहिं जे रणमुहे ण पराज्जिय ।
ते एक्कें पत्थें किय धणु-हत्थें सयल मडप्फर-वज्जिय ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१२]

ओसारु देवि थिउ वइरि-वलु   णं जंवुदीवहो उवहि-जलु
णं रवियर-णियरहो तम-पडलु   संघाणु वाणु धणु भुय-जमलु
लक्खिज्जइ णरहो ण वावरणे   पर हय गय भड णिवडंति रणे
सो ण-वि णरु सो ण-वि मत्त-गउ   सो ण-वि तुरंगु सो ण-वि धयउ ४
सो ण-वि णरु ण-वि करु ण-वि चरणु   तं ण-वि सदेहु देहावरणु
तं णाउहु णायवत्तु धरिउ   जं अज्जुण-सरेहिं ण जज्जरिउ
कुरु-कलयलु ताम समुच्छलिउ   जिह पंडव भग्ग भीमु वलिउ
जिह दोण महा-धणु उत्थरिउ   जिह केण-वि धम्म-पुत्तु धरिउ ८

घत्ता

तं रउ उण्णाएवि   पर-वलु खाएवि   पत्थें णिय-मज्जायएण ।
पुणु कउरव जोइय   णिय-मुहे ढोइय   कालें णाइ अ-घाइएण ॥ ९

[१३]

तो तव-सुय वेहाविद्धएण   सोणासें कलस-महाधएण
अवगण्णिवि पंडव-भड-समूहु   गरुयारउ गारुडु रइउ वूहु
सइं मुहे दुज्जोहणु उत्तमंगे   कि-वि वामए कि-वि पयाहिणंगे
कि-वि पुट्ठिहिं कि-वि पक्खंतरेहिं   कुरु-पत्थिव थिय थाणंतरेहिं ४
तं वूहु रएप्पिणु अप्पमेउ   तव-तणयहो धाइउ कलस-केउ
एत्तहे-वि पचोइय-अज्जुणेण   पडिवूहु रइउ धट्ठज्जुणेण
धीरविउ जुहिट्ठिलु जिय-वरेण   को छिवइ भडारा किंकरेण
मइं जीवमाणे पारावयासें   कंचण-कलसद्धय-कुल-विणासें ८

घत्ता

णिय सामिउ धीरेवि   तुरय समारेवि   दुमय-पुत्तु रहवरे चडिउ ।
मेहउल-विहंजणु   पलय-पहंजणु   णं णहे दोणहो अब्भिडिउ ॥९

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

[१४]

धट्ठज्जुणु णिएवि समुग्ग-तेउ थिउ उम्मण-दुम्मणु कलसकेउ
उत्थरेवि ण सक्कइ वइरि-सत्थे ण सरासणु संठइ वाम-हत्थे
किर अच्छइ संसय-भावे छुद्धु दुम्मुहेण ताम पंचालु रुद्धु
पडिलग्ग परोप्परु समर-सोंड णं मत्त गइंद समुद्ध-सुंड ४
साहणइ-मि वड्ढिय-मच्छराइं भिडियइं परिओसिय-अच्छराइं
खग्गग्गि-झुलुक्किय-दिसिवहाइं सोणिय-समुद्द-लंघिय-णहाइं
पव्हाविय-चामर-छत्त-धय णच्चाविय-सुहड-कबंध-सय
वइसारिय-हयवर-गयवराइं पुंजीकय-कंचण-रहवराइं ८

घत्ता

तहिं तेहए रण-मुहे फुरिय-महाउहे भिडिउ दोणु तव-णंदणहो ।
लइ लइउ जुहिट्ठिलु परिपालिय-उलु भउ उप्पण्णु जणद्दणहो ॥ ९

(१५)

पंडु-णंदण-बलं पबल-हय-दल-बलं
वणिय-मायंगयं धुणिय-सीसक्कयं
भग्ग-पाइक्कयं लग्ग-पारक्कयं
घित्त-सर-जालयं गलिय-करवालयं ४
सुढिय-भुय-दंडयं पडिय-कोवंडयं
दंति-दंतुक्खयं छिण्ण-णस-कक्खयं
णट्ठ-मुह-रालयं लद्ध-मुह-घाययं
दोणि-दोहाइयं कह-वि ण-वि घाइयं ८
चत्त-सण्णाहयं दोण-वाणाहयं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सल्ल-सर-सल्लिय· कुरुव-पहु-पेल्लिय·
कण्ण-कडुयाविय· सउणि-संताविय·
भमइ भय-चंचलं सरण-मण-चंचलं १२
सुहड-झड-झप्पिय· तुरय-गय-चप्पिय·

घत्ता

छुड्डु छुड्डु दोणें अक्खय-तोणें पंडव-णाहु णिरत्थु किउ ।
पय-रक्ख-वियारिय वाह-पसारिय सच्चइ अंतरे ताम थिउ ॥ १४

(१६)

सो सच्चइ तहिं जो मच्छ-वंसु उत्तम-धणु उत्तम-रायहंसु
गुरु पंचहिं वाणेहिं तेण विद्धु इंदियहि महा-रिसि जिह णिसिद्धु
जुत्तारु पिसक्केहिं दसहिं भिण्णु धणु पाडिउ दसहिं धयग्गु छिण्णु
वाणासणु गुरु-करे अवरु लग्गु कोदंडु-वि परहो दसेहिं भग्गु ४
तेण-वि अवसरेण सरासणेण तिउणेण विद्धु मग्गण-गणेण
दियवरेण महाधणु तहो विहत्तु कह-कह-वि ण सच्चइ मएणु पत्तु
तहिं अवसरे रोस-वसारुणक्ख धरविउइ (?) जुहिट्ठिल-चक्करक्ख
पहरिय सर-सएण सएण वे-वि एक्केक्कें भल्लें णिहय ते-वि ८

घत्ता

छिण्णइं भूमीसइं सुहडहं सीसइं पडियइं सोणिय-चच्चियइं ।
णिय-सामिहे ढोएवि णिरिणइं होएवि णाइं कवंधइं णच्चियइं ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(१७)

तहिँ काले सयाणीयंकणेण परिहिय-रणवहु-णव-कंकणेण
संघाणे थाणे किय-आयरेण गुरु-विद्ध विराडहो भायरेण
छहिँ सरेहिँ भुवंगम-भीसणेहिँ णव-जलय-वलाहय-णिसणेहिँ
छ-वि छिण्ण सिलीमुह दियवरेण पुणु थूणा-कण्णे सर-सएण ४
सिरु खुडिउ मरालें कमलु जेवं थिय सोमय-सिंजय णिरुत्तलेव
ओहामिय कइकेय-जमल-राय पंचाल मच्छ विच्छाय जाय
गुरु-वाणेहिँ वूहइं फोडियाइं धय-चामर-छत्तइं मोडियाइं
वइसारिय हय गय वणिय जोह चउदिसिहिँ वहाविय सोणिओह ८

घत्ता

समसुत्ती पाडेवि णइ णिव्वाडेवि काल-ववत्थिय-जोह-णिह ।
रुहिरामिस-सित्तउ रस-वस-लित्तउ हिंडइ दोणु कयंतु जिह ॥ ९

(१८)

तहिँ काले परिट्ठिउ साहिमाणु जुहमण्णु जयद्दरु चेइयाणु
सच्चइ धट्ठज्जुणु धट्ठकेउ पंचालु सिहंडि समुग्ग-तेउ
वसुदाणु सुदक्खिणु उत्तमोज्जु खणे खत्तधम्मु जगे जणिय-चोज्जु
आढत्तु अक्खत्तें तेहिँ ताउ ण सहिज्जइ केण-वि ते-वि घाउ ४
भूमीसहं सीसइं खुडइ दोणु कमलायर-कमलइं णाइं दोणु
एक्केक्कउ भीसणु वाणु लेवि वसुदाणि-जयद्दर णिहय वे-वि
उरयडे पंचहिँ पंचालु भिण्णु सिरु खेमिहे णवहिँ सरेहिँ छिण्णु
हउ वीस चउक्के खत्तधम्मु वारहहिँ सिहंडिहे तणउ वम्मु ८

घत्ता

तीसहिँ सिणि-णंदणु किउ णीसंदणु उत्तमोज्जु-वीसहिँ सरेहिँ ।
जुहमण्णु असक्केहिँ पहउ पिसक्केहिँ णं चउसट्ठिहिँ विसहरेहिँ ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(१९)

तहिं अवसरे णयणाणंदणेण गंधव्व-णयर-सम-संदणेण
पउमावइ-दोणाओहणेण रविपुत्तु वुत्तु दुज्जोहणेण
गुरु पेक्खु पेक्खु रणे वावरंतु णं स-घणु महा-घणु उत्थरंतु
सोमय-सिंजय-कइकइ कहंतु णं वणदउ तिण-तरुवर डहंतु ४
णं हरि करि जमउरे पट्ठवंतु णं पवणु पओहर णिट्ठवंतु
णं इंदु गिरिंदहं असणि दिंतु णं गरुडु भुयंगम खयहो णिंतु
एक्कल्लउ वट्टइ पवणु जाम किं तेण धरिज्जइ समरे ताम
दुज्जोहण-वयण-विरामे कण्णु पभणइ चामीयर-णियर-वण्णु ८

घत्ता

णिय-कुल-णह-णेसर महि-परमेसर खद्धउ कउरव-सेण्णु रणे ।
एक्कहिं पडिलग्गए भीमे अभग्गए दोणें को-वि ण भग्गु रणे ॥ ९

(२०)

किं धरिउ विओयरु वावरंतु गय-घाएहिं गयवरु जज्जरंतु
अहिमण्णु घुडुक्कउ दुमउ पंडि धट्ठज्जुणु सिणिणंदणु सिहंडि
पडिरक्खु णियय-गुरु कुरु-वरेण्णु पीडिज्जइ जाम ण कुरुव-सेण्णु
तं णिसुणेवि हय-गय-रहवरेहिं रक्खिउ कलस-द्धउ कुरु-णरेहिं ४
पंडवहिं-मि परिमिउ भीमसेणु णं पवर-गिरिंदेहिं सुर-करेणु
णं णहयर-णाहु विहंगमेहिं णं सेसु असेस-भुवंगमेहिं
परिरक्खिउ रहवरु कुञ्वरत्थु स-जडासुर-वग-जगडण-समत्थु
वेरुलिय-महाहिव-धय-सणाहु जुय-जोत्तिय-रीरी-वण्ण-वाहु ८

घत्ता

सो भीमु समच्छरु तोसिय-अच्छरु भामिय-गरुय-गयाउहउ ।
कहिं जाहि जियंतउ एम भणंतउ धाइउ दोणहो संमुहउ ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(२१)

तव-णंदण-संदण-संगएहिं घवलंग-णील-वालाहएहिं
धट्ठज्जुणु धाइउ मणंगमेहिं पारावय-वण्ण-तुरंगमेहिं
वाहेहिं सिहंडि पउम-प्पहेहिं सुअसम्मउ सिहि-गल-सच्छहेहिं
अरुणेहिं जुहमण्णु सेउत्तमोज्जु इंदाउह-वण्णेहिं कोंतिहोज्जु ४
सच्चइ कलहोय-समुज्जलेहिं अहिमण्णु पिसंगेहिं चंचलेहिं
पडिविंझु परिट्ठिउ गंपि पुरउ जरजीव-जीव वस-कण्ण-तुरउ
सत्तहि-मि पराइउ साहिमाणु कउसेय-सवण्णेहिं चेइयाणु
अवरेहिं अवर-णाणाविहेहिं मंजिट्ठ-कीर-चंचुय-णिहेहिं ८

घत्ता

तं पेक्खेवि पर-वलु पसरिय-कलयलु वंधव-सयण-विरोहणेण ।
सइं भुएहिं विओयरु रिउ-जम-गोयरु आयामिउ दुज्जोहणेण ॥ ९

*

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए ।
बावण्णासमो इमो परिसग्गो समत्तो ॥

*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिवण्णासमो संधि

दुज्जोहण-भीमहं   भीयर-भीमहं   जाउ महाहउ दुव्विसहु ।
अविरल मिणमाणेहि(?)   अवर विमाणेहिं   णं छवाहिउ(?) गयण-वहु ॥१

[१]

वसुमइ-कामधेणु-संदोहण   णिब्भय भिडिय भीम-दुज्जोहण
दुम्मरिसेण ताव हक्कारिउ   वलु पंडव कहिं जाहि अमारिउ
कियवम्मेण वरिउ सिणि-णंदणु   खत्तधम्मु सेंधवेण स-संदणु
पेक्खंतहो कउरव-संघायहो   धउ धणु छिण्णु जयद्दह रायहो   ४
तहिं अवसरे ओवाहिय-संदण   भिडिय वे-वि धयरट्ठहो णंदण
कह-वि जुजुच्छु कडय-सण्णाहउ   स-सिरउ हय सुवाहुहे वाहउ
तो कर-करिसिय-स-सर-सरासण   विण्णि-वि भिडिय णउल-दूसासण
सल्ल-जुहिट्ठिल भिडिय परोप्परु   जाउ विहिं-मि संगामु भयंकरु   ८

घत्ता

भुयइंद-पमाणेहिं   पंचहिं वाणेहिं   विद्धु राउ मद्दाहिवेंणे ।
चउसट्ठिहिं ताडिउ   कह-वि ण पाडिउ   सल्लु-वि पंडव-पत्थिवेण ॥ १

[२]

तव-सुय-कुरुवराय-पाइक्कहं   रणु पडिलग्गु दुमय-वल्हिक्कहं
उब्भड-सुहड-मडप्फर-साडहो   भिडिय विंद-अणुविंद विराडहो
खेमवित्ति विमएण धरिज्जइ   चेइउ अवट्ठेण वरिज्जइ
विद्धखेमु गउतमेण णिवारिउ   धट्ठज्जुणेण दोणु हक्कारिउ   ४
अंगाहिवहो सिहंडि विरुज्झइ   गुरु-सुएण पडिविंझु णिरुज्झइ
अंगय-उत्तिमोज्ज ओवडिया   दुम्मुह-पुरुजि परोप्परु भिडिया
धाइउ सोमयत्तु मणिवंतहो   दूसासण-सुउ उत्तर-कंतहो
अक्खुइ सुय-कित्तिहे उवढुक्कउ   आरिसिंगिहे भिडिउ घुडुक्कउ   ८

घत्ता

विहिं विहिं सामंतहं   उण्णइवंतहं   एम भयंकरु जाउ रणु ।
दीसइ रुहिरोल्लिउ   णं पप्फुल्लिउ   फग्गुणे रत्तासोय-वणु ॥ १

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

[३]

तो रण-रहसें कह-मि ण माइउ हणु भणंतु दुज्जोहणु धाइउ
मत्त-गइंदेहिं रिउ जगडाविय भिण्णइं जूहइं धड विहडाविय
णच्चाविय कवंध बहु-भंगेहिं रंगाविय रह-रहिय रहंगेहिं
गय मयगल रुलंति मत्थिक्केहिं हय हय रहिय रहिय पाइक्केहिं ४
वियलिय-पहरणे चूरिय-वाहणे तहिं भज्जंतए पंडव-साहणे
मंभीसंतु सुहड स-मडक्कउ जमु जिह एक्कु भीमु पर थक्कउ
णं मयगलु दुवालि लेवारिउ णं सुत्तउ मइंदु वेयारिउ
णं अजलंतु जलणु संधुक्किउ णं खय-काल-दंडु उक्कुक्किउ ८

घत्ता

रायजण-मज्झे समरे असज्झे इह-पर-लोय-विरोहणहो ।
वोल्लाविउ सारहि रहवरु सारहि छत्तइं जहिं दुज्जोहणहो ॥ ९

[४]

रहवरु वाहि वाहि लहु तेत्तहे गय-घड णिविड परट्ठिय जेत्तहे
तं णिसुणेवि सारहि उच्छाहिउ अरिय-विमद्दणु संदणु वाहिउ
भीम-महा-भर-वहणासक्कइं रहु पक्खलइ चलंति ण चक्कइं
णिय मुहरंगेहि पवर तुरंगम खुडिय-पक्ख किय णाइं विहंगम ४
धाइउ झंप मुएवि धुरग्गले सारहि रहु आणिज्जइ पच्छले
हउं जि महारहु चलण जे चक्कइं जाइ वहंतइं कह-मि ण थक्कइं
रोसु जि सारहि हियउ जे चिंधउ जं गुरु-गय-घड-गंध-पइद्धउ
लउडि जि रह-धुर हत्थ जे घोडा जे दप्पुब्भड-सुहड-णिहोडा ८

घत्ता

णिय-देहु जे रहवरु करेवि विओयरु धाइउ स-घणु स-पावरणु ।
णं हत्थि-हडोहहं कउरव-जोहहं ढुक्कीहूवउ जमकरणु ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[५]

तो दुज्जोहण-णयणाणंदणे किय-दप्पुब्भड-भड-कडवंदणे
विविहाहरणेहिं विचित्त-पसाहणे वियरइ भीमु महागय-साहणे
कालायस-घडिएहिं अपमाणे के-वि महा-करि चूरिय वाहणे
काइ-मि णीणिय पच्छिम-भाएहिं चूरिय के-वि भुयग्गल-घाएहिं ४
काह-मि वलइं धाइ पडिलग्गइं काह-मि करि-सिरि खंधे वलग्गइं
काह-मि झंप देइ कुंभोयरि कड्ढइ मोत्तियाइं जिह केसरि
के-वि गयासणि घाएहिं घाइय के-वि किवाणें जम-पहे लाइय
एक्कें भीमें गयवर लक्खइं कियइं रणंगणे सूडिय-पक्खइं ८

घत्ता

लक्ख-वि आवट्टइ महिहे पयट्टइ घाए घाए पवणंगयहो ।
णं करेहिं मलेप्पिणु कवलु करेप्पिणु देइ कयंतु महागयहो ॥ ९

[६]

तो तहिं विओयरेण आहउ करी-करेण
मोडियं रहु कड-त्ति चूरियं सिरं तड-त्ति
मोत्तिया समुच्छलंति तारया-छवी वहंति
अंवरे वरंगणाहिं णच्चियं सुरंगणाहिं ४
अण्णओ णिलग्गएण भग्गओ गओ गएण
आहओ हओ हएण पाडिओ धओ धएण
चूरिओ रहो रहेण आउहो वराउहेण
लेवि वद्ध-मच्छरेण घाइओ णरो णरेण ८

घत्ता

को-वि करि आहयणहो घित्तउ गयणहो एंतु समाहउ गयवरेण ।
णव पाउस-डंवरे कत्तिय-अंवरे णं णव-जलहरु जलहरेण ॥९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[७]

तो दुज्जोहण-वाहिणि-वाहणु भीमें भग्गु महागय-साहणु
धाइउ कुरुव-राउ तहिं अवसरे कुइयउ कयंतु णाइं खय-वासरे
विद्ध विओयरु उरे णाराएं कह-वि कह-वि महि पत्तु ण घाएं
एक्कें भल्ले कुरुवइ ताडिउ अवरें स-धणु महा-धउ पाडिउ ४
चंपाहिवइ चडेप्पिणु कुंजरे थिउ दुज्जोहण-भीमहुं अंतरे
कण्ण-विओयर भिडिय महाबल कुंती-सुव कुरु-पंडव-वच्छल
रहवरु पाविउ ताम विसोएं दिट्ठु असेसें णरवर-लोएं
णं केसरिहिं महीहरु दुज्जउ णं दइवहो ववसाउ साहेज्जउ ८

घत्ता

रहु सारहि पावइ वंधउ आवइ मण-गयणुत्तम-घोडएहिं ।
जय-लच्छि विढप्पइ पर-वलु कंपइ एउ ण पुण्णेहिं थोडएहिं ॥ ९

(८)

ते महि-कारणे रणे पहरंते अवसरु लहेवि हिडिंवा-कंतें
कण्ण-महाकरि-मत्थउं दारिउ पच्छिम-भाएं सरु णीसारिउ
तहो आइच्च-सुयहो पेक्खंतहो सिरु आरोहहो खुडिउ रसंतहो
लहु जुत्तारें पाविउ संदणु तहिं आरूढु दिवायर-णंदणु ४
धाइउ पंडु-पुत्तु बहु-वाणेहिं तेण-वि सो अणेय-परिमाणेहिं
विहि-मि परोप्परु छिण्णइं चावइं सरवर-जालइं कियइं अभावइं
भीमें भीम गयासणि भामिय भडहं भवित्ति णाइं संकामिय
भुक्खिएण जगु कवलु करंतें जीह ललाविय णाइं कयंतें ८

घत्ता

धुर-धरण-महाइउ सारहि घाइउ हय तुरंग रहु जज्जरिउ ।
भीमहो गय-घाएं दइव-विहाएं अंगराउ पर उव्वरिउ ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[९]

तो तंडविय-कण्णु उब्भिय-करु दाण-महाणइ-उक्खय-वण-तरु
मय-परिमल-मेलाविय-छप्पयगणु सीयर-धारा-सिंचिय-सुरयणु
पायवीढ-कंपाविय-महियलु कुंभ-मंडलुच्चाइय णहयलु
पुक्खर-छित्त-दिवायर-संदणु दंत-धाय-घोलिय-संकंदणु ४
चरण-चार-चूरिय-अहि-चुंभलु पुच्छ-धाय-धाइय-पच्छिम-वलु
सो भयवत्तें चोइउ चंदिरु रहु सतुरंगमु णिउ जम-मंदिरु
सारहि करणु देवि थिउ दूरें लइउ भीमु कालें णं कूरें ८

घत्ता

पवणंगय-गयवर हा(?) चउपयवर भिडिय परोप्परु वे वि जण ।
गयणंगण छंडेवि थिय महि मंडेवि णं संचारिम पलय-घण ॥ ९

[१०]

एक्कु विओयरु तिण्णि रणुज्जय सुरवर-समर-सहासेहिं दुज्जय
वज्जंकुस-भयवत्त-महागय णव-णाव-णाग-सहस-बल-संगय
तिण्णि-वि एक्कु णाइं करि होएवि अप्पाणेण जि अप्पउ चोएवि
धाइउ मयगलु मच्छर-भरियउ भीम-भुयग्गल-वेढें धरियउ ४
सो-वि महागय लील-विलंविउ सुरवहु-णयण-भमर-परिचुंविउ
वाहु-विसाणु पयाउ-महाकरु घाय-दाणु पवणंगय-गयवरु
वेज्झउ देइ ओसरइ ण छप्पइ(?) खणे पडिमाणे थाइ खणे पच्छए
भमइ चउद्दिसु मत्त-गइंदहो विज्जु-पुंजु णं जलहर-विंदहो ८

घत्ता

चउ-चरणब्भंतरे छुडु खणंतरे वियरइ भीमु ण वीसमइ ।
जगु उप्परि देप्पिणु आयामेप्पिणु णावइ कुम्मु परिब्भमइ ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[११]

वेढिउ कंधु करेण करिंदे णं गिरि-मंदरु महणे फणिंदे
कह-वि कह-वि ल्हिक्कवियउ अप्पउ कहि-मि ण दिट्ठु जेम परमप्पउ
पुणु पइट्ठु चउ-चरणब्भंतरे पडिउ सरेवि थक्कु दूरंतरे
गउ गउ भीमसेणु उच्छण्णउ पंडव-लोउ सव्वु आदण्णउ ४
ताम जुहिट्ठिलेण लेवाविउ मत्त-महागएहिं खेयाविउ
रहवर-पवर-तुरय-पाइक्केहिं तरु-पाहाण सिलेहिं स-सिलिक्केहिं
जो भयवत्तु वइरि मंवारइ अंकुसेण पहरणइं णिवारइ
जो जो ढुक्कइ तहो तहो पावइ पाडिय गय णिय गय चूरावइ ८

घत्ता

उल्ललइ पयट्टइ चलइ विसट्टइ खलइ णियत्तइं पंडु-बलु ।
एक्कें भयवत्तें भमइ भमंतें मंदर-हउं णं उवहि-जलु ॥ ९

[१२]

ताम दसण्णएण करि चोइउ णं णिय-दंडु कयंतें ढोइउ
के-वि महागय भिडिय परोप्परु जाउ महाहउ तोसिय-सुरवरु
दंत-घाय-कर-घाय-विलासेहिं पुच्छ-घाय-कम-घाय-सहासेहिं
सत्तहिं तोमरेहिं भयवत्तें पेसिउ जम-सासणु खण-मेत्तें ४
पुणु-वि जुहिट्ठिलेण वेढाविउ केवल-रहवरेहिं वड्ढाविउ
सच्चए भिडिउ भयत्तए मयगले पंचहिं सरेहिं विद्धु कुंभत्थले
घुम्ममाणु पडिवारउ चोइउ धाइउ णाइं जमेण अवलोइउ
थिउ ओसरेवि जिणेवि ण सक्किउ वारणु पहरण-लक्खेहिं ढक्किउ ८
जेत्तहे जेत्तहे रणे परिसक्कइ तेत्तहे तेत्तहे के-वि ण थक्कइ

घत्ता

तहिं काले विओयरु स-सरु-धणुद्धरु धाइउ अण्णे रहवरेण ।
तो सव्वि विवेररा भीमहो केरा भग्ग तुरंगम गयवरेण ॥१०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१३]

तहिं पमाणे परिवड्ढिय-गव्वउ　　धाइउ हणु भणंतु रुइपव्वउ
एक्कें तोमरेण भयवत्तें　　जम-पट्टणे पट्ठविउ पयत्तें
तो स-रहसु भय-पसर-विमुक्कउ　　चेइयाणु अहिमण्णु बुडुक्कउ
धट्ठकेउ धट्ठज्जुणु धाइउ　　पंडि सिहंडि जुजुच्छु-पराइउ　　४
पंच पुत्त पंचालिहे केरा　　ओए-वि अवर-वि वि अहिअ हणेरा
ताम जुजुच्छुहे सारहि धाइउ　　रहे अहिमण्णु-हिंडिवय-घाइउ
दस-दस सर एक्केक्कें पउंजइ　　चेइयाणु चउसट्ठि विसज्जइ
जं अवरेहि-मि लइउ अखत्तें　　तहिं तहिं सव्वु विद्धु भयवत्तें　　८

घत्ता

ओसरइ स-वाहणु　　पंडव-साहणु　　णिम्मज्जायहो कुंजरहो ।
अवलोयणे थक्कहो　　णासइ एक्कहो　　जगु जिह पलय-सणिच्छरहो ॥९

[१४]

णिसुणेवि रह-गय-तुरय-वरेण्णहं　　कलयलु पंडव-कउरव-सेण्णहं
रण-रउ अवरु भयंकरु पेक्खेवि　　आउ किरीडि कवंधइं लक्खेवि
जालंधर-रण-भोयणु भुंजेवि　　जे उव्वरिय ताहं सुर जुंजेवि
पच्छए लग्गु समुक्खय-पहरण　　संसत्तग तिगत्त णारायण　　४
चउदह दह चालीस पणासइं　　तिहि-मि गणहं चउसट्ठि सहासइं
अवरहं केण संख पुणु वुज्झिय　　जे सहुं अज्जुणेण रणे जुज्झिय
मरु-मालव-हिरण्णपुर-वासिय　　मेहल-तामलित्त-णिवासिय
पच्छल-कामरूव-कंभीरा　　दलय-चिलाय-कुणिंद-कुणीरा　　८

घत्ता

एक्केक्क-पहाणा　　अवर-वि राणा　　अणुधाइय एक्कहो जणहो ।
दीहर-दाढालहो　　णहर-करालहो　　हरिण जेम पंचाणणहो ॥　　९

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

[१५]

एक्कु पत्थु रिउ-सेण्णु अणंतउ धाइउ हणु-हणु-कार करंतउ
लइउ धणंजएण अण्णण्णेहिं तीरिय-तोमर-थूणा-कण्णेहिं
सेल्ल-वराय-कण्ण-णाराएहिं कण्णिय-वइहत्थिय-संघाएहिं
छिण्णाइं उब्भड-भिउडी-भीसइं कंधर-कर-चरणंगुलि-सीसइं ४
तहिं पमाण-अइमाणुस-गम्मे हक्कारिउ वीहच्छु सुहम्में
पहरु पहरु जइ पंडुहे णंदणु पहरु पहरु जइ सालु जणद्दणु
पहरु पहरु जइ भीमहो भायरु पहरु पहरु जइ तव-सुय-किंकरु
पहरु पहरु जइ कुल्लु पणियारहि पहरु पहरु जइ जसु वित्थारहि ८

घत्ता

तं णिसुणेवि पत्थें समर-समत्थें पाडिउ सत्तहिं सरेहिं धउ ।
विहिं छिण्णु सरासणु छहिं सुय-णंदणु भाइ सुसम्महो तणउ हउ ॥ ९

[१६]

ताम सुसम्में सत्ति विसज्जिय तहिं वारह कण्णेहिं परज्जिय
ताडिउ तोमरेहिं णारायणु तासु-वि पत्थें किउ विणिवारणु
कउर-वलोएं धरेवि ण सक्किउ तो सारोहु महा-करि हक्किउ
तव-णरिंद पडिलग्ग परोप्परु जाउ रणंगणु सुट्ठु भयंकरु ४
विण्णि-वि वावरंति णाराएहिं णं जलहर धारा-संघाएहिं
मग्गण मग्गणेहिं विणिभिंदइ णरु णाराय-सहासेहिं छिंदइ
हत्थि व हत्थि-हडउ रणे गज्जइ सव्वहु एक्कु मडप्फरु भंजइ
ताम धणंजएण सु-विसेसें रहु परियत्तेवि वाम-पएसें ८

घत्ता

सहसा सोवण्णें थूणा-कण्णें लोयण-महुयरु सवण-हु...
णर-णियर-णिरोहहो हत्थारोहहो पाडिउ पत्थें सिर...गो ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१७]

हत्थारोहे समरे समत्तें ताडिउ वासुएवु भययत्तें
एक्के तोमरेण वच्छत्थले खाएवि फणि पइट्ठरसायले
तहिं अवसरे आरुट्ठु कइद्धउ झत्ति पलित्तु णाइं धूमद्धउ
तिहिं कलहोय-विहूसिय-वाणेहिं आसीविस-विसहर-परिमाणेहिं
छिण्णु छत्तु धय-दंडु सरासणु वर-चामीयर-चामर-वासणु
कप्पिउ देहावरणु गइंदहो घण-पडलु व ओसरिउ गिरिंदहो
तो भययत्तें भुअण-भयंकर पेसिय णरहो चउद्दह तोमर
कुइउ विजउ भय-पसर-विमुक्कउ तिहिं तिहिं सरेहिं छिण्णु एक्केक्कउ

घत्ता

पडिसत्ति विसज्जिय णरेण परज्जिय घंटा-चामर-गारविय ।
मित्तोवम-वाणेहिं गुण-संधाणेहिं असइ णाइं विणिवारिय ॥ ९,

[१८]

उप्परिहरेहिं सत्ति जा ढुक्की खंडइं तिण्णि करेवि सा मुक्की
दसहिं णरिंदु विद्ध पडिवारउ तोमर घिवइ सो-वि सयवारउ
वंचइ णरु णारायणु ढुक्कउ सुर चवंति विहिं एक्कु ण चुक्कउ
तो स-कंड-गंडीव-विहत्थें पाडिय चाव-लट्ठि रणे पत्थें
पुणु सत्तरिहिं सप्प-लल्लक्केहिं सव्वइं धम्मइं हयइं पिसक्केहिं
तो णारायणत्थु भययत्ते पेसिउ पज्जलमाणु पयत्तें
णरए दाणवेण जं दिण्णउं वायरणेण व जे जगु भिण्णउं
अज्जुणु पुट्ठिहे ठवेवि तुरंतें कुसुम-दामु जिह लइउ अणंतें

घत्ता

एक्केक्क-जस-भायण णर-णारायण चडिय वे-वि विहिं रहवरेहिं ।
दीहर-दा[मिस-लुद्धा] अमरिस-कुद्धा विण्णि सीह विहिं गिरिवरेहिं ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१९]

धाइउ अरि-करि ताम सगव्वउ पायचारि णं अंजण-पव्वउ
तंबिर-णयण-जुवलु मुक्कंकुसु धारासार-वरिसु णं पाउसु
कुद्धु मयंधु वलुद्धरु धावइ पत्थहो लोय-णाहु जाणावइ
लइ लइ लय उरहत्थिय वाणेहिं(?) णं तो वे-वि चत्त णिय-पाणेहिं
जं उवएसु दिण्णु सर-वासें किउ वइसाह-थाणु सेयासें
पढमंगुलिहिं विद्धु पुणु पुक्खरे पुणु गंडूसे सोत्ते सोत्तंतरे
हत्थ-पएसए-वि चउवीस-वि वयण-पएस भिण्ण वत्तीस-वि

घत्ता

सव्वहं सविसेसहं हत्थि पएसहं धायालीसइं चउ-सयइं ।
कुसुमंजलि हत्थें सुरवर-सत्थें दिट्ठइं झत्ति समाहयइं ॥ ९

[२०]

सव्व पएस भिण्ण मायंगहो जलइ व धाउ-महीहर-संगहो
रुहिरइं णीसरंति चउ-पासिहिं गिरि व विहूसिउ फुल्ल-पलासेहिं
णिवडिउ मुच्छा-विहलु विसाणेहिं को जीवइ संतेहि-मि दाणेहिं
आयामेप्पिणु सव्व-पयत्तें जंघारुएहिं धरिउ भयवत्तें
ताम धणंजएण स-गइंदहो उहय-करंकुस-धरहो णरिंदहो
छिण्णु णिडाल-वट्टु सहुं सीसें कुंडल-मउड-महामणि-भीसें
उत्तमंगु उच्छलिउ कवंधहो पडिउ कवंधु महाकरि-खंधहो
करिवरु धरह धणुप्परि सीसहो पेक्खंतहो कुरु-णरहो असेसहो

घत्ता

सरहसेहिं सहासेहिं अमर-सहासेहिं णर-रण-सरहस वद्धुएहिं ।
भुवणुब्भरुहुल्लइं सुरतरु-फुल्लइं घित्तइं णरहो सइं भूएहिं ॥ ९

*

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभूएव-कए तिवण्णासमो सग्गो ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउवण्णासमो संधि

भयवत्तेण समरे समत्थेण ओसारिज्जइ कुरुव-वलु ।
सर-सिहउ मुअंतेण दोमइ-कंतेण णं वडवग्गिए उवहि-जलु ॥

[१]

हक्कारिउ विहि-मि समच्छरेहिँ गंधारिहे सउणि-सहोयरेहिँ
जवणासोवाहिय-संदणेहिँ अइ-सुवलेहिँ सुवलहो णंदणेहिँ
सामिय-सम्माण-रणुज्जएहिँ विसयावल-णामेहिँ दुज्जएहिँ
वलु कु-पुरिस पंडव संढ-भाव भयवत्तु वहेवि कहिँ जाहि पाव ४
दुव्वयण-सिलीमुह-विद्धएण सेयासें वेहाविद्धएण
धवलायव-वारण रह-रहंग धय-धणुवर-सारहि-वर-तुरंग
णिण्णासिय एक्कें अज्जुणेण वहु अवगुण णाइं महा-गुणेण
भज्जंतहो विसउ व विसउ पत्तु रहे अवलहो थाएवि पडिणियत्तु ८

घत्ता

सइं अग्गए भायरु पच्छए ओलि णिवद्ध पधाइय ।
किय-थाणेण एक्कें वाणेण विण्णि-वि पत्थें घाइय ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२]

जं णिहय सहोयर फग्गुणेण सुर भुवणुच्छलिय-महा-गुणेण
तं धाइउ सउवलु हणु भणंतु बहु-माया-रूवइं दक्खवंतु
णइ सायर आसुर अमराइं कापिंजल गारुड भामराइं
धाइउ बारह सइं भुअंगमाइं कारेणव णव तुरंगमाइं ४
आयइं अवरइ-मि विणिम्मियाइं णर सरवण-सोणिय-तिम्मियाइं
णासेप्पिणु कहि-मि गयाइं ताइं मग्गण-हत्थि णिरत्थइं दिंति काइं
पेक्खंतहं किव-चंपाहिवाहं अवरह-मि असेसहं पत्थिवाहं
गउ पाण लएप्पिणु सउणि-मामु दुज्जोहण-दोणहं तणउ थामु ८

घत्ता

चडुलंगेहि जवण-तुरंगेहिं पत्थहो अग्गए वावरइ ।
णह-छित्तउ लाला-लित्तउ हरिणु मइंदहो णावइ ॥ ९

[३]

णरु धरेवि ण सक्किउ दुद्धरेहिं णारायण-गण-जालंधरेहिं
भयवत्त-समप्पह-पत्थिवेहिं विसयावल-सउणि-णराहिवेहिं
भंजंतु असेसइं बलइं जाइ लंवेरम-जूहइं सीहु णाइं
णं जलहर-जालं पलय-वाउ णं पण्णय-कुलहं विहंग-राउ ४
णं सिहरि-समूहइं कुलिस-दंडु णं कमल-वणइं गउ गिल्ल-गंडु
ण धरिज्जइ दारुण-वारणेहिं × ×
ण धरिज्जइ पवर-तुरंगमेहिं ण धरिज्जइ रहेहिं पुरोवमेहिं
ण धरिज्जइ कुरुव-णराहिवेहिं ण धरिज्जइ अवरेहिं पत्थिवेहिं ८

घत्ता

स-जणद्दणु पंडुहे णंदणु सव्व-लोय-भय-गारउ ।
स-सणिच्छरु वड्ढिय-मच्छरु वियरइ जिह अंगारउ ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[४]

कुरुखेत्तहो भाए दक्खिणेण महुसूयण-संदणे सक्खिणेण
रिउ-साहणु जगडिउ अज्जुणेण णं गिरि-तरु-तिण-वणु फग्गुणेण
तहिं कालि विओयरु धम्म-पुत्तु धट्ठज्जुणु सच्चइ खेम-पुत्तु
ते पंच-वि दोणहो भिडिय जोह णं इंदिय रिसिहिं णिरुद्ध-कोह ४
परिसक्कइ जउ जउ कालकेउ धट्ठज्जणु तउ तउ हरइ तेउ
सुमरेप्पिणु लक्खा-सरण-डाहु स-दुरोयरु दोमइ-केस-गाहु
तो भीमु-भुवंगम-विसम-सीलु हक्कारिउ गुरु-णंदणेण लीलु
तिहिं भल्लेहिं धउ धणु छत्त-दंडु रहु अवरेहिं किउ सय-खंड-खंडु ८

घत्ता

असि-फर-करु भिडिउ भयंकरु धाइउ सव्वायामेण ।
मउडुज्जलु सीसु स-कुंडलु पाडिउ आसत्थामेण ॥ ९

[५]

तो तवसुय-पत्थ-सहोयरेण सट्ठिहिं तोमरेहिं विओयरेण
वाल्हिक्कहो पाडिउ आयवत्तु धउ चामर धणुवरु गुणु विहत्तु
छव्वीसहिं दोणें भीमु विद्धु अंगाहिवेण छहिं छहिं णिसिद्धु
छहिं कुरुवें सत्तहिं कुरु-सुएण भीमेण-वि भीम-महाभुएण ४
पंचासहिं छाइउ कलस-केउ तिहिं मलिउ कण्णहो तणउं तेउ
वारहहिं णिवारिउ कुरुवराउ गुरु-णंदणु अट्ठहिं विहलु जाउ
सहुं पुत्तेहिं हरिसिउ जण्णसेणु परिरक्खहो केम-वि भीमसेणु
तो रण-भर-धुर-धारण-सुएण दस किंकर पेसिय तव-सुएण ८

घत्ता

जमल दुइ जण णर-सुय छज्जण सच्चइ भइमि विणिच्छिय ।
सर-लक्खेहिं अमुणिय-संखेहिं दोणें दस-वि पडिच्छिय ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[६]

तो णरवइ अट्ठ महाणुभाव संगाम-सएहिं णिग्गय-पयाव
किव-कण्ण-जयद्दह-कुरु-णरिंद कुरु-तणय-सल्ल-विंदाणुविंद
पहरण-कर कवयावरिय-गत्त दोणहो परिरक्खणे मित्त पत्त
एत्तहे-वि धणंजउ धणु-सहाउ जगडेवि जालंधर-वलइं आउ ४
सर-किरणेहिं सोसेवि कुरु-समुद्दु लक्खिज्जइ रवि व महा-रउद्दु
अप्पंपरिहूया धायरट्ठ णिय-पाण लएप्पिणु रणे पणट्ठ
अह कुरुव-णराहिव-परम-मित्त वलु दिणमणि-णंदण करे परित्त
णिय-सेण्णहो तो मंभीस देवि वरु स-सरु सरासणु करे करेवि ८

घत्ता

धणु-हत्थहो धाइउ पत्थहो कज्जल-सामल-देहहो ।
अइ चंचलु कणय-समुज्जलु विज्जु-पुंजु जिह मेहहो ॥ ९

[७]

कण्णज्जुण रणे पडिवण्ण घोरे कर-चरण-सिरालण-पाण-चोरे
सच्चइ-विपास-विओयरेहिं रवि-तणउ विद्धु तिहिं तिहिं सरेहिं
तेण-वि वर-वइरि-विणासणाइं छिण्णइं तिहिं तिण्णि सरासणाइं
सत्तिउ तिहिं तिण्णि विसज्जियाउ कण्णेण-वि णवहिं परज्जियाउ ४
पत्थहो विणिवारिउ वाण-जुयलु ण णिहालिउ केण-वि अंतरालु
एत्तहे-वि रणंगणे दुज्जएहिं वेविस-विपास-सत्तुंजएहिं
आदत्तुं अक्खरों सव्वसाइ णरु एक्कु वियंभइ लक्खु णाइं
तिहिं वेविसु हउं वीसहिं विपासु छहिं खुडिउ सीसु सत्तुंजयासु ८

घत्ता

वहु-मच्छरु ताम विओयरु झंप देवि ओवडियउ ।
पण्णारह हणेवि महारह पडिवउ रहवरे चडियउ ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[८]

तो कण्णहो भाइ महाणुभाव रवि-राहा-सुय णिग्गय-पयाव
मारेप्पिणु भीमें परिणिसिद्धु चंपाहिउ चउदह-सरेहिं विद्धु
तहिं अवसरे पवर-वलुत्तमेण सेणाहिवेण घट्ठज्जुणेण
णिय-रहहो महीयले झंप देवि तडि-रवि-पहु असि फर-रयणु लेवि
ससिधम्मउ णइसहु वहदखत्तु तिण्णि-वि पट्ठविय कयंत-जत्तु
धणु लेवि तिसत्ति-सरेहिं कण्णु चउपासिउ सलहेहिं गिरि व छण्णु
चउसट्ठिहिं सिणिणंदणेण विद्धु तिहिं उर-भुय हय(?) विहिं णिसिद्धु
परिरक्खिउ सव्वेहिं कउरवेहिं पत्थु वि स-णरिंदेहिं पंडवेहिं

घत्ता

तहिं अवसरे णिवडियए वासरे ढुक्क भाणु अत्थवणहो ।
णिसि-धुत्तिए असइ पहुत्तिए धरिउ णाइं णिय-भवणहो ॥

[९]

अत्थमिए पयंगे स-वाहणाइं विण्णि-वि कुरु-पंडव-साहणाइं
भड-कडवंदण-णिप्पह-मुहाइं पल्लट्टइं सिमिरहो संमुहाइं
मिहुणाइं व पुट्ठि परम्मुहाइं मिहुणाइं व चेट्ठ-विवज्जियाइं
मिहुणाइं व वहुरय-रंजियाइं मिहुणाइं व पसरिय-वेयणाइं
मिहुणाइं व णिच्चुक्कंघलाइं मिहुणाइं व पहर-विसंठुलाइं
मिहुणाइं व पाविय-चेयणाइं मिहुणाइं व पसरिय-वेयणाइं
मिहुणाइं व पच्छए णीसराइं मिहुणाइं व जज्जरिओसराइं
मिहुणाइं व पहरण-खेइयाइं मिहुणाइं व लाइय-णहयलाइं
मिहुणाइं व अइ-पासेइयाइं मिहुणाइं व णिट्ठिय-सर-सयाइं

घत्ता

दिण-णिग्गमे रयणि-समागमे उप्परि गयणाहोयहो ।
तमु धाइउ कहिमि ण माइउ दुज्जसु णं कुरु-लोयहो ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१०]

चंदुग्गमे सुहि-सउणंधिवेण गुरु गरहिउ कुरुव-णराहिवेण
केत्तिउ वोल्लिज्जइ ताय तुज्झु सब्भाव-विहीणउ करहि जुज्झु
णउ फिट्टइ पंडव-पक्खवाउ सुविणे-वि ण चिंतिउ को-वि दाउ
जहिं तूसहि तो देव-वि अदेव तव-सुउ ण लइज्जइ अवसु केवं ४
तो गुरु-मुह-कुहरुच्छलिय वाय मा दुण्णय-पायउ फलउ राय
विस-जउहर-जूय-कयग्गहेहिं वण-वसण-मच्छविहि-गोग्गहेहिं
परिपक्कहो गयउ अणाय-रुक्खु सो अवसें एवहिं देइ दुक्खु
सरि-सुय-पमुहहं एयारिसाहं एह जे अवत्थ अम्हारिसाहं ८

घत्ता

णरु जेत्तहे सइं हरि तेत्तहे जहिं हरि तहिं महि जिज्जइ ।
विहिं आएहिं समर-सहाएहिं तव-सुउ केम लइज्जइ ॥ ९

[११]

णेयारु जाहं सइं लोयणाहुं पंडव मारंतहुं कवणु गाहु
एत्तडउ णराहिव करमि तो-वि जइ सक्कइ अज्जुणु धरेवि को-वि
तो परए समुट्ठमि चक्क-वूहु जहिं खयहो जाइ णरवर-समूहु
पइं णाहि करेप्पिणु कुरु-णरिंदु पहिलउ जे थवेवा दुहइंदु ४
वारह वारह गय रक्ख देवि हय तीस तीस रहे रहे धरेवि
हए हए पय-रक्खहं सट्ठि सट्ठि जे समर-सएहिं ण दिंति पट्ठि
फरे फरे धाणुक्कहं णव णव-वि पच्छाउहु जे चलंति पउ-वि
थिउ एण पयारें अरउ एक्कु उप्पज्जइ अरय-सएण चक्कु ८

घत्ता

तं तेहउ सुर-गिरि जेहउ चक्क-वूहु पारंभइ ।
जिम णर-सुउ अिम भीमहो सुउ विहि-मि सक्कु जिवं लब्भइ ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१२]

णीसारु ण जाणइ पत्थ-पुत्तु आवट्टइ आहवे सो णिरुत्तु
तहं पासि विओयरु कह-व थाइ तियसिहि मि तो-वि धरणहो णजाइ
परिकुविउ जयद्दहु णिसुणि ताय हउं धरमि चयारि-वि पंडु-जाय
अत्थमइ जाम अ-हिमयर-चक्कु छुडु अज्जुणु पासि ण होइ एक्कु ४
गलगज्जिउ ताम तिगत्तएहिं णर-सर-सय-सल्लिय गत्तएहिं
अहिणव-णिवद्ध-वण-पट्टएहिं रण-व[illegible]-परिगणहं पयट्टएहिं
अम्हिहि-मि धरेवउ परइ सत्थु तं रण-भरु कड्ढेवि को समत्थु
अइकंते दिवसें जेत्तिय-ज्जे एहिं परिवारा तेत्तिय-ज्जे ८

घत्ता

पच्चेल्लिउ सव्वेहिं वोल्लिउ जाएवि पत्थहो अग्गए ।
जहिं ढुक्कहि तो णउ चुक्कहि रहे धए धणुहे अ-भग्गए ॥ ९

[१३]

पडिवालिउ णउ उट्ठंतु सूरु देवाविउ वले संगाम-तूरु
कुरु-खेत्तु पगच्छिउ कुरुव-राउ थिउ रण महि मंडेवि साणुराउ
तो दोणें विरइउ चक्कवूहु णियमिउ हय-गय-रह-भड-समूहु
एत्तहे-वि जुहिट्ठिलु सहुं वलेण हय-तूरे पसरिय-कलयलेण ४
अ-हिमयरुग्गमे कुरु-खेत्त ढुक्कु णं जलणिहि णिय-मज्जाय-चुक्कु
एत्थु-वि पर-वइरि-पुरंजएण पभणिय सामंत धणंजएण
तुम्हइं रक्खेज्जहो एक्कमेक्कु किउ दोणें दुप्परियल्लु चक्कु
अहो वग-हिडिंव-किम्मीर-सीम तुहुं वालु पयत्तें रक्खु भीम ८

घत्ता

अप्पाहेवि रहवरु वाहेवि जय-सिरि-रामासत्तउ ।
ओरालेवि धणु अप्फालेवि अज्जुणु भिडिउ तिगत्तहुं ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१४]

एत्तहे-वि समुट्ठिय-कलयलाइं दणु-दारण-पहरण-करयलाइं
भिडियइं परिओसिय-अच्छराइं कुरु-पंडव-वलइं स-मच्छराइं
अवहत्थिय-मरण-महा-भयाइं दुप्पवण-पपेल्लिय-धय-सयाइं
सोवण्ण-रहंग-महारहाइं अणुदियहोहामिय-भाग्हाइं ४
दिट्ठु णिएवि स-दोणउ चक्क-वूहु चिंताविउ पंडव-भड-समूहु
विच्छाय-वयणु थिउ धम्मु-पुत्तु णर-णंदणु संदणु धरेवि वुत्तु
तिह करि जिह वंधव जसु लहंति जिह णर-णारायण णउ हसंति

घत्ता

गय मारेवि गुरु ओसारेवि पइसरु वूहहो वारेण ।
तुहुं अग्गए अम्हइं पच्छए जुज्झहुं एण पयारेण ॥ ८

[१५]

तं बयणु सुणेवि भणइ कुमारु हउ भिंदमि वूहहो तणउं वारु
अज्जुणहो पसाएं गुणिउ चक्कु णीसारु ण जाणमि णवर एक्कु
तो वुत्तु हिडिंवा-पिययमेण मइं भीमें भीम-परक्कमेण
सहएवें णउलें तव-सुएण सइणेएं सुर-करि-कर-भुएण ४
वहु-सोमय-सिंजय-कइकएहिं पंचाल-विराड-घुडुक्कुएहिं
तुहुं रणे रक्खेवउ एत्तिएहिं ओएहिं अवरेहि-मि खत्तिएहिं
तुम्हहं आएसें करमि एउ तो पभणइ भद्दिय-भाइणेउ
आवग्गिय मड्डि तउ ताय देमि ओसारमि गुरु कुरु खयहो णेमि ८

घत्ता

णिच्चिंतउ होहि सइत्तउ मंड महा-सिरि आणमि ।
घट्ठज्जुणु अच्छउ अज्जुणु भारहु हउं जे समाणमि ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(१६)

मोक्कल्लिउ धम्माणंदणेण णं कुलिस-दंडु सक्कंदणेण
पय-रक्ख करेविणु के-वि के-वि अप्पुणु-वि चलिउ आसीस देवि
परिवड्ढिढउ वलु जसवंतु होहि विद्धंसहि दुद्धर वर विरोहि
जय ताय भणेवि पयट्टु वालु णं कउरव-रायहो पलय-कालु ४
ण णिहालिउ जिह्व तव-णंदणेण उद्धाइउ एक्कें संदणेण
गुरु-गंधवहुद्धुय-धयवडेण णाणाविह-पहरण-संकडेण
खर-खुर-खय-खोणि-तुरंगमेण तडयड-तुट्टंत-भुयंगमेण
डोल्लाविय-समहि-महीहरेण जव-झाल-झलाविय-सायरेण ८

घत्ता

ओधाविय झत्ति चडाविय चाव-लट्ठि णिय-करयलेण ।
णं खुद्दहुं कुरुहुं रउद्दहुं वंक भउंह किय कालेण ॥ ९

(१७)

गउ पयइं वीस किउ संपहारु णं वरिसइ घणु अणवरय-धारु
णं पलय-पहायरु किरण-घोरु णं धुय-केसरु केसरि-किसोरु
दीहर-णाराएहिं लइय जोह स-तुरंगम रहवर गयवरोह
साहारुण वंधइ चक्क-वूहु णं रुद्धु मइंदें हरिण-जूहु ४
तं णिएवि जणद्दण-भाइणेउ पहरंतु रणंगणे अप्पमेउ
णिय-मणे परिओसिउ कलसइंधु णं णव-चंदुग्गमे लवणसिंधु
णिय-णंदणु णिंदिउ वलेवि दोणि तुम्हारेसु पइसइ किण्ण खोणि
सिक्खिज्जइ धणु ता एण जेवं तोसाविय रण-मुहे जेण देव ८

घत्ता

सरु लेप्पिणु ताय णवेप्पिणु गुरु पच्चारिउ वालेण ।
जिमु ओसरु जिम्व रणे उत्थरु सुमरिउ जुय-खय-कालेण ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(१८)

तं वयणु सुणेविणु कुइउ दोणु   सरु मेल्लेवि वोज्झे जेम सोणु
एक्कहो सउहद्दें पंच दिण्ण   आयरिएं पंच-वि दसहिं छिण्ण
दस वीसहिं वालें कुद्धएण   वीस-वि तीसहिं कलसद्धएण
अहिमण्णें पुणु अ-परिप्पमाण   कित्ति-कंतोवरि पट्ठविय वाण ४
ओसारिउ मुएवि गुरु बूह-वारु   कुरु खयहे णेंतु पइसइ कुमारु
ण णिवारेवि सक्किउ णरवरेहिं   ण तुरंगेहिं रहवर-गयवरेहिं
जोत्तारें णर-सुउ वुत्तु एम   लइ वेल्लि वहंती थक्क देव
ण णरिंदु ण भीमु ण जमल के-वि   ण धुड्डुक्कउ पत्तु ण अवरु को-वि ८

घत्ता

रहु वालमि किय पडिवालमि बग-हिडिंव-जम-गोयरु ।
गय-हत्थउ समर-समत्थउ पावइ जाम विओयरु ॥ ९

[१९]

तं वयणु सुणेवि रोसिय-मणेण   णिय-सूउ वुत्तु णर-णंदणेण
थक्कउ थक्कउ सय-वार वेल्लि   रहु जाउ तुरंगम मेल्लि मेल्लि
किर कउरव संदहं कवणु गण्णु   किं सीहहो कवणु सहाउ अण्णु
जइयहुं वर-वइरि-पुरंजएण   किउ राहावेहु धणंजएण ४
जइयहुं जिउ खंडवे अमर-राउ   जइयहुं विणियत्तिउ कुरुव-राउ
जइयहुं तव-तालुय-कालकेय   स-णिवायकवच कप्पिय अणेय
जइयहुं जिउ गोग्गहे भड-णिहाउ   तइयहुं तहिं तायहो को सहाउ
छुडु होंतु सहेज्जा बाहु-दंड   कुरु किं करंति सुट्ठु-वि पयंड ८

घत्ता

रहु चोयहि वालेवि म जोयहि अच्छउ भीमु स-भायरु ।
छुडु खंडउ होउ तरंडउ काइं करइ रिउ-सायरु ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(२०)

सहुं णिय जोत्तारें चवइ जाम आढत्तु खत्तु परिहरेवि ताम
चउ-पासिउ वेढिउ कुरुवरेहिं वहु-तुरएहिं दुरएहिं रहवरहिं
एक्कल्लउ एक्क-रहेण वालु परिसक्कइ ढुक्कइ णाइं कालु
पवियंभइ रुभइ भड-समूहु गउ फोडाफोडि करंतु बूहु ४
संचरइ समच्छरु जेत्थु जेत्थु समसुत्ती णिवडइ तेत्थु तेत्थु
ण धरिज्जइ मत्त-महा-गएहिं रहवरेहिं ण पवणुद्धय-धएहिं
ण तुरंग-सहासेहिं चंचलेहिं ण णरेहिं वलक्खेहि पच्चलेहिं
ण किवाणेहिं वाणेहिं हय-फरेहिं ण मुसुंढि-कणय-गय-मोग्गरेहिं ८
सव्वइं तिण-समइं गणंतु जाइ जगडंतु गरुडु अहि-कुलइं णाइं

घत्ता

कुरु-साहणु रह-गय-वाहणु वालहो मुहि आवट्टइ ।
जेवंतहो णाइं कयंतहो कवल-परंपर वट्टइ ॥ ९

(२१)

तो सयल-सत्तु-संखोहणेण णिय-करि चोइउ दुज्जोहणेण
णं पवर महीहरु पज्झरंतु णं काल-मेहु सीयर मुवंतु
मरु संढ विहंदल-तणय थाहि सवडम्मुहु संदणु वाहि वाहि
आवद्धु जुज्झु कुरियाणणाहं गंधारि-सुहद्दा-णंदणाहं ४
तो कुरु-णरिंदें मुक्कु चक्कु णर-सुएण वियारिउ तहिं जे वक्कु
आमेल्लइ पहरणु अवरु जाम अइ ढुक्कीहूउ कुमारु ताम
ओवाहिउ करि-सिरि मंडलग्गु वे भाय करेप्पिणु महिहे लग्गु ८

घत्ता

मय-कसणेण मोत्तिय-दसणेण अलि-मुहलिय-धारग्गेण ।
णउ वुज्झइ अज्ज-वि जुज्झहि हसिउ राउ णं खग्गेण ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(२२)

रणे दुज्जउ णिहउ महा-गइंदु पच्चालिउ वालें कुरु-णरिंदु
जाजाहि ण वाहमि मंडलग्गु तउ भीमु करेसइ मउड-भंगु
तो दोणें दोच्छिय सयल राय परिरक्खहो कुरुव णरिंदु छाय
ण गिलिज्जइ ससि व गहेण जाम गहियाउह ढुक्कीहोह ताम ४
तो सरहसु धाइउ कुरुव-सेण्णु परिवेढिउ संदणु साहिवण्णु
असहाउ तो-वि वावरइ वालु णं माणुस-वेसु करेवि कालु
हेलए जि भग्ग सयल-वि णरिंद णं सीहें मत्त महा-गइंद
अणुलग्गोवाहिय-संदणेण पच्चारिय अज्जुण-णंदणेण ८

घत्ता

मं भज्जहो सुरहं ण लज्जहो वलहो कुलक्कमु रक्खहो ।
लइ जुज्झहो पुणु कहिं सुज्झहो पुट्ठि देवि पडिवक्खहो ॥ ९

(२३)

तो खत्तिय रहवर गयवरोह पल्लट्ट समच्छर सयल जोह
दूसहेण णवहिं वाणेहि णिसिद्धु दूसासणेण वारहेहिं विद्धु
कियवम्में सत्तहिं तिहिं किवेण विहिं राएं छेहिं मदाहिवेण
अट्ठहिः णाराएहिं विहिवलेण पंचहिं गुरु-सुएण महा-वलेण ४
दोणें सत्तारह-मग्गणेहिं णं णव-तरु छाइउ अलि-गणेहिं
दस-दसहिं विविझइ-दुग्मुहेहिं अवरेहि-ति अवर-सिलीमुहेहिं
ते सयल-वि दूसह-संदणेण विहिं तिहिं तच्छिय णर णंदणेण
अग्गेसरु धायउ विद्धु कण्णु उरु भिंदेवि सरु महियलि पवण्णु ८

घत्ता

मुहु वंकेयि गउ आसंकेवि पेक्खंतहो कुरुसेण्णहो ।
अज्जुण-फलु दुक्खु जे केवलु सव्वहो अपउ ण कण्णहो ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(२४)

जं भीम-भुयंगम-दीहरेण विणिभिण्णु कण्णु णर-सुय-सरेण
धाइउ सुसेणु तहिं विसम-हेइ सुपईहर-लोयणु कुंड-भेइ
समकंडिउ तिहि-मि स-मच्छरेहिं रवि-सुएण पंचवीसहिं सरेहिं
पंचहिं जायवेण स-संदणेण वीसहिं आयरियहो णंदणेण ४
वालेण विहिं विहिं सरेहिं विद्ध कह-कह-व ण धाइय छहिं णिसिद्ध
मुच्छाविउ सल्लु विसल्लु थक्कु तासु-वि परिपेसिउ वहु पिसक्कु
कलहोय-पुंखु पेहुण-समिद्धु महाहिव-भायरु कंठे-विद्धु
सिरु खुडिउ कुमारें कमलु जेम तोसाविय णहयले सयल देव ८

घत्ता

पफुल्लइ सुरतरु-फुल्लइं परिह-पमाण-पयंडेहिं ।
पमुक्कइ उप्परे मुक्कइ लेवि सइं भुय-दंडेहिं ॥ ९

*

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए
चउवण्णासमो इमो सग्गो ॥

*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचवण्णासमो संधि

णर-णंदणु   वाहिय-संदणु   वूहहो मज्झे पइट्ठु किह ।
धुय-केसरु   णहर-भयंकरु   गय-घड फोडेवि सीहु जिह ॥ १

(१)

एक्क-रहहो तव-तणयाइट्ठहो   चक्क-वूहे णर-सुयहो पइट्ठहो
जे सम उत्थरंति णरु वाणेहिं   ते दूरहो जि विमुक्का पाणेहिं
जे ढुक्कंति दंति रणे वालहो   ते णिवडंति थंति मुहे कालहो
जे भिडंति तुरमाण तुरंगम   छिण्ण-टंक ते होंहिं अयंगम ४
जे लग्गंति अखत्त रहवर   तेहय होंति पक्ख णं गिरिवर
जे धावंति तेहिं पडिधावइ   सीह-किसोरु गयहं जिह पावइ
कलयलु जेत्थु तेत्थु पारक्कए   फुरइ व विज्जु-पुंजु अत्थक्कए
वलु आवट्टइ फुट्टइ धावइ   जलु मंदरहो भमंतउ णावइ ८

घत्ता

रहु वालहो   रणे असरालहो   जय-सिरि-रामालिंगियहो ।
रिउ चूरइ   कवलु ण पूरइ   णाइं कियंतहो भुक्खियहो ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(२)

पभणइ दोणु सोण-हय-संदणु कुरुवइ पेक्खु धणंजय-णंदणु
जउ जउ दिट्ठि देइ वहु-मच्छरु तउ तउ पीडइ णाइं सणिच्छरु
जउ जउ घिवइ घोरु वाणासणि तउ तउ पडइ णाइं वज्जासणि
जउ जउ हय-गय-घडह वियट्टइं तउ तउ सोणिय-णिवहु णिवट्टइ ४
जउ जउ रह परिसक्कइ वालहो तउ तउ धव पुज्जइ णं कालहो
जउ जउ करइ कुरुहुं अवलोयणु तउ तउ भूय-विहंगहुं भोयणु
तो दुज्जोहणु अक्खइ अण्णहं सल्ल-किवहं दूसासण-कण्णहं
दोणु समत्थु वि समरे ण जुज्झइ गुण-परिरक्ख कुमारु ण वुज्झइ ८

घत्ता

जइ सक्कहो तो परिसक्कहो महु वुत्तउ एत्तिउ करहो ।
जिम धायहो जम-पहे लायहो जिम रिउ जीव-गाहु धरहो ॥ ९

(३)

तं णिसुणेवि णिय-कुल-णासणहो उप्पण्णु रोसु दूसासणहो
अच्छउ मद्दाहिउ कण्णु किउ हउं एक्कु रणंगणे धरमि रिउ
पेसिय भुअणुब्भड भीम भडा सहुं तेहिं मयालस हत्थि-हडा
जिह कामिणि तिह स-पसाहणिय जिह कामिणि तिह थोर-त्थणिय ४
जिह कामिणि तिह गंधुक्कडिय जिह कामिणि तिह दप्पुब्भडिय
जिह कामिणि तिह मय-भिंभलिय जिह कामिणि तिह मल्हण-चलिय
जिह कामिणि तिहं वहु-रय-भरिय जिह कामिणि तिह वहु-रय-चरिय
जिह कामिणि तिह पच्छइय-णह जिह कामिणि तिह मय-मलिय-रह ८
जिह कामिणि तिह जुज्झण-मणिय जिह कामिणि तिह मुच्छावणिय

घत्ता

सा गय-घड रण रहसुब्भड सुर-वहु-णयणाणंदणेण ।
भण-भामिणि जिह वर-कामिणि वणे विमुक्क णर-णंदणेण ॥ १०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[४]

परिभग्ग रणंगणे गरुय-णाय स-परक्कम विक्कम कह-मि णाय
तहिं अवसरे दूसासणु पलित्तु णं परिणय-विस-तरु संपलित्तु
अहो सल्ल-कण्ण-किव-धायरट्ठ कलहोय-वण्ण वण-धायरट्ठ
उहु राय-वाल कालाहिमण्णु दुज्जउ णामेण किलाहिकमण्णु ४
धयरट्ठ-णरिंदूसासणेण मइं जइ ण भग्गु दूसासणेण
विसमेण सुट्ठु दूसासणेण तो पहेण जामि दूसासणेण
जोत्तारु वुत्तु रहु वाहि वाहि फेडिज्जइ णरवर-पवर-वाहि
तो एम भणेवि उत्थरिउ तासु जें णरवर-विंदहं जणिउ तासु ८

घत्ता

चल-संदणु अज्जुण-णंदणु आयामिउ दूसासणेण ।
वर-वंसउ भड-विद्धंसउ जिह विंझइरि हुवासणेण ॥ ९

(५)

ते णरवर-जच्चंध-गंधारि-पुत्तेण कोवाणलुज्जाल-माला-पलित्तेण
रयणायरेणेव मज्जाय-मुक्केण कूर-गहेणेव णिय-थाम-चुक्केण
पेयाहिवेणेव अच्चंत-कुद्धेण पंचाणणेणेव गय-गंध-लुद्धेण
हर-णंदणेणेव वर-मोर-चिंधेण पच्चारिओ पत्थ-पुत्तो विरुद्धेण ४
ओसरु पराहुत्तु किं संपहारेण जज्जाहि मा मरहि महु दिट्ठि-पहारेण
तो भणइ णर-णंदणो किं पलावेण जाणिज्जए तेय-पूरो पयावेण
एवं भणंतस्स किर कवण भड-लीह सय-खंड-खंडाइं किं ण गय तउ जीह
गोग्गहेण गंगेय-मरणेण णउ लज्ज तं तुहु-मि पावेसि खल खुद्द णो गज्ज ८

घत्ता

मय-मत्तहो तुज्झु अ-पत्तहो तेण ण फाडमि वच्छयलु ।
परमत्थेण भीमु सहत्थेण दिसहिं घिवेसइ रुहिर-जलु ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[६]

भिडिय वे-वि तो तहिं रणंगणे　　दिण्ण देव-दुंदुहि णहंगणे
थरहरंत वाहिय-महारहा　　सुरवहू-कडक्खिय(?)-विग्गहा
करयरंत कड्ढिय-सरासणा　　एक्कमेक्क-पट्ठविय-मग्गणा
खय-सिहि-व्व जालोलिय-दूसहा　　पलय-भाणु भा-भासुर-प्पहा　　४
दिस-गय-व्व ओरालि-भीसणा　　केसरि-व्व वड्ढंत-णीसणा
रामरामणोवम-धणुद्धरा　　जलहर-व्व वरिसिय-णिरंतरा
वाण-भारि-भूरेण भारियं　　णहयलं तमेणंधयारियं
पाडियं धणु मोडिओ धओ　　पडिभडो कुमारेण विद्धओ　　८

घत्ता

वावण्णेहिं　सरेहिं सुवण्णेहिं　दूसासणु थण-वट्टे हउ ।
मउ साडेविं　कउरव पाडेवि　पुणु अग्गए अहिमण्णु गउ ॥　९

[७]

जं जुयराउ महावइ पाविउ　　दुज्जोहणेण कण्णु वोल्लाविउ
पेक्खु पेक्खु दूसासणु जंतउ　　खंधावारु सव्वु भज्जंतउ
पहु-पेरिउ चंपाहिउ धाइउ　　णर-णंदणु णाराएहिं धाइउ
तरुण-तरणि णं जलहर-जालें　　तेहत्तरिहिं विद्धु पुणु वालें　　४
जो जो अंतरे तं तं भिंदेवि　　स-सर-सरासण-लट्ठिउ छिंदेवि
पत्तु दिवायर-णंदण-संदणु　　तहि-मि महंतु करेवि कडवंदणु
सोवकरणु रहु खंडिउ कण्णहो　　णट्ठु णियंतहो कउरव-सेण्णहो
ताम सुकेसें वाहिउ संदणु　　दसहिं सरेहिं विद्धु णर-णंदणु　　८

घत्ता

सउहद्देण　सुहड-विमद्देण　कुंडल-मंडिय-गंडयलु ।
राहेयहो　रवि-सम-तेयहो　खुडिउ खुरुप्पें सिर-कमलु ॥　९

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

[८]

णिहउ सुकण्णु कण्णु ओसारिउ कउरव-लोउ सव्वु पच्चारिउ
हउं एक्क-रहु सुहद्दा-णंदणु लइ ढुक्कहो किज्जउ कडवंदणु
कलेवरउ व अकाले करंतहो कवलच्छेउ म हवउ कयंतहो ४
एम भणंतु हणंतु पयट्टइ अग्गि व खड-लक्कडहं बियट्टइ
गयवर-रुहिर-णइउ उद्धावहिं सुहड-कवंध-सयइं णच्चावहिं
तहिं अवसरे हय-गय-रह-वाहणु धाइउ दोणहो पंडव-साहणु
दुण्णय-दुज्जस-सलिल-महद्दहु वूह-वारे थिउ ताम जयद्दहु
दिण्णु तेण पइसारु ण आयहो स-जमल-भीम-जुहिट्ठिल-रायहो ८

घत्ता

वलवंतेण दूसल-कंतेण पंडव-लोउ समुत्थरिउ ।
सु-रउद्देण पुव्व-समुद्देण गंगा-वाहु णाइं धरिउ ॥ ९

[९]

पुच्छिउ सेणिएण तहिं अवसरे इंदभूइ रिसि-विउल-महीहरे
चंडुद्दंड-सुंड वेयंड-व दूसल-धवेण धरिय किह पंडव
कहइ महा-रिसि अखलिय-धीरहो गणहरु वड्ढमाण-जिण-वीरहो
सोहाहिवहो धीय रिउ-मद्दहो जइयहुं गउ परिणयहुं जयद्दहो ४
दोमइ विणु पंडवेहिं णिहालिय मंड भवित्ति-वि णाइं संचालिय
पुणेवि विओयरेण कुढे खेडिउ सिंघव-णाहु धारेवि पच्चेडिउ
वंधव-सयण-सहास-पलज्जिउ गउ केत्तहे-वि मडप्फर-वज्जिउ
किर तउ लेइ ण लेइं वणंतरे दइवी वाणि समुट्ठिय अंवरे ८

घत्ता

किं दुम्मणु विसहि तवोवणु एत्थु-वि वज्जिय-माण-धण ।
समराजिरे वूहहो वाहिरे पंडव धरेवि चयारि जण ॥ ९

[१०]

वासरु एक्कु धरिज्जइ आहउ   तहिँ पक्खालहिँ सव्वु पराहउ
तेण पहावें सयलु स-वाहणु   धरेवि परिट्ठिउ पंडव-साहणु
सुरगिरि-समेण रहेण पयंडें   वाराहेण महा-धय-दंडें
सिंधवेहिँ तुरएहिँ तुरंतेहिँ   सिल-धोएहिँ पहरणेहिँ फुरंतेहिँ   ४
जेण कुमारु पइट्ठु पएसें   तं परिपूरिउ बलेण असेसें
दसहिँ विराडु विद्धु ण पहुच्चइ   अट्ठहिँ भीमसेणु तिहिँ सच्चइ
धट्ठज्जुणु णिरुद्धु तिहिँ वीसेहिँ   पंचहिँ दुमउ सिहंडिउ तीसेहिँ
पंचहिँ पंचहिँ पंच-वि कइकय   तिहिँ तिहिँ दोमइ-तणय समाहय   ८

घत्ता

तव-णंदणु स-धउ स-संदणु   सत्तरि सरेहिँ समाहयउ ।
अब्भइयहो दूसल-दइयहो   देवेहिँ साहुक्कारु किउ ॥   ९

[११]

तो तव-सुएण सल्ल-पडिमल्लें   छिण्णु सरासणु एक्कें भल्लें
अवर लेवि धणु-लट्ठि महागुण   दसहिँ दसहिँ हय पंडु अणज्जुण
तिहिँ तिहिँ अवर असेस-वि राणा   रणउहे किय ओखंडिय-माणा
भीमें भीम-परक्कम-सारें   छिण्णु सरासणु भल्ल-पहारें   ४
अवरें आयवत्तु धउ अवरें   दूसल-वल्लहेण लद्ध-वरें
अहिणव-धणु-हत्थेण सुधीमहो   सोवकरणु रहु खंडिउ भीमहो
करणु देवि तव-तणय-सहोयरु   सच्चइ-संदणे चडिउ विओयरु
जे णर-सुएण छिण्ण करि-अवयव   तेहिँ ण मग्गु लद्धु गय पंडव   ८

घत्ता

एत्थंतरे वूह-ब्भंतरे   जहिँ पवणो-वि ण पइसरइ ।
हय-मल्लउ तहिँ एक्कल्लउ   बालु अलीढए संचरइ ॥   ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१२]

सरहसु ताव विसाइ पधाइउ   सट्ठिहिं सरेहिं रणंगणु छाइउ
तो रणे अमरिसु वड्ढिउ वालहो   एक्कें सरेण छुद्धु मुहे कालहो
विससेणहो सारहि-वि णिवाइउ   छिण्णु सरासणु धउ दोहाइउ
तो सत्तमेण सत्तु हक्कारिउ   सो-वि कयंत-णयरे पइसारिउ ४
सल्लहो णंदणेण भज्जहो   रुप्प-रहेण महारहु वाहिउ
एक्कहो काइं रणंगणे अवगाहिउ   किं पंचहं भूयहं-वि ण लज्जहो
एम भणेवि तिहिं सरेहिं समाहउ   णर-णंदणेण विछिण्णउ वाहउ
जम-जीहोवमेण लल्लक्कें   सिरु तोडिउ तइएण पिसक्कें ८

घत्ता

जो पहरइ तं पडिपहरइ   रणमुहे पउ-वि ण ओसरइ ।
धणु ण धरइ जो करु पसरइ   विहुरे-वि तिण्णि ण वीसरइ ॥ ९

[१३]

जं विणिवाइउ सल्लहो णंदणु   मित्त-सरण रुद्ध रिउ-संदणु
एक्कु कुमारु अणेक्केहिं हम्मइ   तो-वि तेहिं अवसाणु ण गम्मइ
तं वरु दिण्णए णिरुवम-छायए   वामोहिउ गंधव्वए मायए
वलि वोक्कड रणे दुग्गहे दिण्णा   पंच-वरिस सइयार-व छिण्णा ४
जो जो ढुक्कइ तं तं मारइ   णाइं कियंतु जे जगु संघारइ
सिरेहिं कवंधेहिं णरेहिं तुरंगेहिं   कर-चरणंगुलिहिं अगोवंगेहिं
खवसेहिं सीसक्केहिं तणु-ताणेहिं   कुसुमल-वट्टि-वद्ध-पल्लाणेहिं
चामर-पक्खर-गुड-पावरणेहिं   कुंडल-कडय-किरीडाहरणेहिं ८

घत्ता

गय-गत्तेहिं रह-धय-छत्तेहिं   सव्वेहिं धरणि अलंकरिय ।
सोवंतहो णाइं कयंतहो   सेज्ज कुमारें पत्थरिय ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१४]

जो जो को-वि ढुक्कु पारक्कउ तिहिँ तिहिँ सरेहिँ भिण्णु एक्केक्कउ
लक्खण-पमुहहँ विक्कम-सारहं णिहय चउद्दह सहस कुमारहँ
स-मउड-सिर-पट्टहँ भालयलहँ मणि-कुंडल-मंडिय-गंडयलहँ
कंठालंकिय-कंठ-सणाहहँ कंकण-केऊरुज्जल-बाहुहँ ४
मेहल-वलयाणद्ध-णियंबहँ किंकिणि-मुहल-नाल-पालंबहं
पंडुर-चामर-पंडुर-छत्तहँ धरिय-फरहँ कड्ढिय-असि-पत्तहँ
आजाणेय-तुरय-रहवंतहँ विविह-पडाय-विविह-वायत्तहं
ताम-महासिएण कियंतहो णावि जाउ भोयणे वइसंतहो ८

घत्ता

हय वालेण सरवर-जालेण सहस चउद्दह खत्तियहँ ।
गउ आयहँ गण्णु विसायहँ णाह विहँजमि केत्तियहँ ॥ ९

(१५)

वासव-सुय-सुएण महि-कारणे जं णिट्ठविय कुमार महा-रणे
तं विद्दाणउ थिउ कुरु-साहणु मुक्क-महाउहु फुसिय-पसाहणु
णिच्चल-णयणु णिरुज्जम-गत्तउ सव्वाहरण-सोह-परिचत्तउ
पुत्त-विओएं रोवइ राणउ सुहड-मडप्फर-भग्गु चिराणउ ४
हा हा देहि वाय महु लक्खण पइं विणु थिय भाणुवइ अ-लक्खण
पइं विणु कुरुव-लोउ आदण्णउ पइं विणु सोम-वंसु उच्छण्णउ
पइं विणु जय-सिरि अण्णहँ ढुक्की पइं विणु महु जस-वल्लरि सुक्की
पइं विणु सुहड-ढक्क कसु वज्जइ पइं विणु राय-लच्छि कसु छज्जइ ८

घत्ता

पहु जूरइ आस ण पूरइ गउ उच्छिण्णउं कुरुव-वलु ।
जो मुच्चइ सो ण पहुच्चइ हय-विहि मइं सहु कवणु छलु ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(१६)

अविरल-वाहइं वाह-सणाहें कलुणु रुवंतें कउरव-णाहें
पेसिय णव सामंत पधाइय जाहं कित्ति जगे कहि-मि ण माइय
कच्छु कलिंगु णिसाउ महब्बलु दोणु दोणि किउ कण्णु कहब्बलु
णवमउ जायव-वंसिउ राणउ कियवम्मउ णामेण पहाणउ ४
कुरुवइ-पाय-सरोरुह-भिंगें अंतरे गय-घड दिण्ण कलिंगें
मत्त मयालस पउ पउ देंती धुत्ति-व धरिय कुमारें एंती
धुत्ति-व दिट्ठि जाम फुडु मारइ धुत्ति-व दूरहो हत्थ पसारइ
धुत्ति-व दंत-पंति दरिसावइ धुत्ति-व लद्धु ण पसंगहो आवइ ८

घत्ता

सुणिहालइ सिरु संचालइ ढुक्कइ परिओसरइ किह ।
कर अप्पइ हियउ ण अप्पइ वाहहो गय-घड धुत्ति जिह ॥ ९

[१७]

तओ कलिंग-कुंजरा पधाइया स-मच्छरा
किउद्ध-सुंड-भीसणा विमुक्क-घोर-णीसणा
चलंत-कण्ण-चामरा गलंत-दाण-णिज्झरा
अणेय-घंट-राइया तमाल-गेज्ज-राइया ४
महण्णव-व्व मत्तया गिरि-व्व पज्झरंतया
फणि-व्व कूर-लीलया खल-व्व वंक-सीलया
णिसायर-व्व दुट्ठया रस-व्व यारि (?) पुट्ठया
कुमार-मग्गणाहया महीयलं गया गया
गएहिं अंचियं रणं वियंभयावयारणंतर ८

घत्ता

णव णायहं दस सय रायहं अट्ठ सहासइं रहहं ।
किउ वालेण एक्कें तालेण कल्लेवउ व णिसायरहं ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१८]

भग्गु कलिंगु कच्छु विणिवाइउ गुरु पंचासेहिं वाणेहिं छाइउ
सट्ठिहिं किउ असीहिं कियवम्मउ वर-कण्णिएण कण्णु किउ णिम्मउ
दोणि-विहव्वल तीसहिं तीसहिं विद्ध णिसाउ रणंगणे वीसहिं
किवहो तुरंगम सारहि घाइय दस सर पुणु-वि उरत्थले लाइय ४
सत्तारहेहिं विद्धु विदारउ किउ वइवस-पुरवरे पइसारउ
पंचवीस गुरु-सुएण विसज्जिय तेण-वि मोत्तियएहिं परज्जिय
दोणायणेण सट्ठि सर मेल्लिय तेहत्तरिहिं कुमारे मेल्लिय
आयरिएण एक्कसर-गण्णें बत्तीसहिं अणुविसइ कण्णें ८
पंचहिं विहवलेण दढ-वम्में दसहिं किवेण दसहिं कियवम्में
ते सयल-वि किय कलयल-सद्दें दसहिं दसहिं णिज्जिय सउहद्दें

घत्ता

वहु मारेवि वहु ओसारेवि वाणें रणु परियंचियउ ।
सुणरिंदहं मत्त-गइंदहं दसहिं सहासहिं अंचियउ ।। ११

[१९]

सव्व भग्ग पर थक्कु विहव्वलु णं मयगलहो पधाइउ मयगलु
उरे कण्णिएण विद्धु णर-णंदणु तेण-वि तहो विद्धं सिउ संदणु
णिहय तुरंगम सहु जोत्तारें छिण्ण सरासण-लट्ठि कुमारें
फर-करवाल-भयंकर-करयलु आहव-कुसलु पधाइउ कोसलु ४
किउ वे-भाय खणंतरे वालें पडिउ महीयले सहुं करवालें
हउ कण्णिएण कण्णु कण्णंतरे पुणु पंचासहिं सरेहिं खणंतरे
तेण-वि तेत्तिएहिं णर-णंदणु णर-सुएण चंपाहिव-संदणु ७

घत्ता

मगहेसहो पत्त-विसेसहो अम्हकेउ णामेण सुउ ।
सो वालहो जिह सिहि-जालहो उप्परे पडेवि पयंगु मुउ ।। ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२०]

तहिं अवसरे दूसासण-पुत्तें अक्खय-णाम-गहण-संजुत्तें
दसहिं सरेहिं सुहद्दा-णंदणु हउ स-तुरंगु स-सूउ स-संदणु
सत्तहिं पडिणिसिद्धु सउहद्दें हसिउ स-मच्छरु कह-कह-सद्दें
जणणु तुहारउ गउ महु भज्जेवि को तुहुं जेण एहि गलगज्जेवि ४
एम भणेवि हउ सव्वायामें सो सम-कंडिउ आसत्थामें
तहो भुय-डाल-करालहो वालहो केण-वि छुद्धु णाइं मुहे कालहो
धाइउ चंदकेउ चंदुग्गउ मोहणु वक्खवेउ सत्तुंजउ
एक्केक्केण सरेण वियारिय पंच-वि जम-पट्टणे पइसारिय ८

घत्ता

तिहिं दूसलु तिहिं सहुं तिहिं सलु तिहिं गुरु-सुय-धणु खयहो णिउ ।
तिहिं सउवलु तिहिं कुरु-वलु पाराउट्टउ सव्वु किउ ॥ ९

[२१]

तो तवणिज्ज-पुंज-सम-वण्णें दोणायरिउ पपुच्छिउ कण्णें
ताय ताय हउं एण कुमारें पीडिउ देसु जेम गहयारें
दूसासणु गुरु आवइ पाविउ लक्खणु णिहउ राउ रोवाविउ
कोसल-पमुहेक्केक्क-पहाणा को जाणइ केत्तिय मुय राणा ४
केण-वि दुद्दम-देहु ण दुम्मइ कहि उवएसु जेण विहि हम्मइ
एण मरंतें मरइ कइद्धउ पत्थें मरंते मरइ गरुडद्धउ
तं णिसुणेवि समुण्णय-घोणें चंपाहिवहो कहिज्जइ दोणें
जइ गुणु हणइ कोवि तो हम्मइ रण-पिड्डु अण्णें एउ ण रम्मइ ८

धत्ता

पर जुज्झइ एक्कु ण वुज्झइ एहु वालु वालत्तणेण ।
धणु पालइ गुणु ण णिहालइ जिह कुसामि किवणत्तणेण ॥ १०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(२२)

दिव्वु कवउ अजेउ वहु विक्कमु × × ×
सव्व-कुसलु सुमरंति वियक्खणु णव रणु जाणइ गुण परिक्खणु
कलयलु करहु देहु वायराइं धिवहो पवर-पहरणइं विचित्तइं
चक्कइं चक्क-रक्ख हय ताडहो सारहि सिंधु सरासणु पाडहो ४
जिह सिक्खक्खविउ तेम किउ कण्णें घोसिउ कलयलु कउरव-सेण्णें
तूरइं देवि समुत्तुय-माणहो × × ×
पेक्खंतहो कुरु-खंधावारहो चक्क-रक्ख हय किवेण कुमारहो
दुज्जोहणेण तुरंगम धाइय कण्णें जीव-लट्ठि दोहाइय ८

घत्ता

रहु अण्णेण सारहि अण्णेण धउ अण्णेण सय-खंडु किउ ।
असि फर-करु जिह विज्जाहरु करणु देवि आयासे थिउ ॥ ९

[२३]

तउ किरीडि-णंदणेण अराइ-भग्ग-मंदणेण
णहंगणाणुलग्गओ खगो व्व खंधे लग्गओ
खयाणिलाणु-वेयओ दिवायरुग्ग-तेयओ
विरल्लियच्छि-भीसणे विमुक्क-सीह-णीसणे ४
करम्मि दाहिणिल्लए फणिंद-दीहरिल्लए
सिला-सिओ किवाणओ कयारि-रत्त-पाणओ
कयंत-दंत-सच्छहो खयग्गि-जाल-दूसहो
भुयंग-भोय-भीयरो विमुक्क-मुक्क-सीयरो ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तमंधयार-णासणो रविंद-दित्ति-तासणो
करिंद-कुंभ-दारुणो तुरंग-भंग-कारणो
णरिंद-दप्प-साडणो रिवूह-संग-झाडणो
फरो करम्मि अण्णए सिहामणि-व्व पण्णए १२

घत्ता

चलु वालउ रणे असरालउ उप्परि णिवडिउ कुरु-णरहो ।
जल-दुग्गमे णव-मेहागमे विज्जु-पुंजु जिह महिहरहो ॥ १३

[२४]

णिवडंतु कुमारु स-खग्ग-वम्मु हउ सव्वेहिं मेल्लेवि खत्त-धम्मु
पहरंतु दलंतु महा-गइंद भंजंतु असेस-वि णरवरिंद
मोडंतु दंडु तोडंतु धयइं वे-भाय करंतु तुरंग-सयइं
परिसक्कइ थक्कइ वलइ धाइ सो को-वि ण जो तहो समुहु थाइ ४
हय दोणें मुट्ठि-महा-सरेण फरु चंपापुर-परमेसरेण
रवि-तणयायरिएहिं मुएवि खत्तु जं समरे स-वारणु असि-विहत्तु
तं देवेहिं धिद्धिक्कारु दिण्णु आयहो जीविउ अप्पणउं छिण्णु
धट्ठज्जुणे अज्जुणे जीवमाणे गुरु-कण्णहं सुंदरु कउ णियाणे ८

घत्ता

भुय-डालहो णिवडिउ वालहो सोह ण देइ किवाणु किह ।
दो-धारउ णिप्पडियारउ णट्ठ-वंसु कु-कलत्तु जिह ॥ ९

[२५]

दप्पु भड-भड-कडवंदणहो पहरंतहो अज्जुण-णंदणहो
दुद्दम-णरिंद-दुप्पहरणइं णिट्ठियइं अणेयइं पहरणइं
वलु सयलु तो-वि आयामियउ अरि-वासणु अरि उग्गामियउ ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रेहइ रहंगु करयले गहिउ णं जोइस-चक्कु मेरु-सहिउ
णं घरिउ अणंतें धरणियलु परिभमइ भमंतें गयणयलु
तो कहइ दोणु दुज्जोहणहो कलयलु घोसहो तूरइं हणहो
जें सुरवर-कर-कर-पवर-भुउ णिय-थाणहो चुक्कइ पत्थ-सुउ
जइ कइयहं विसज्जिउ अरि-पवलु तो सव्वु समप्पइ कुरुव-वलु ८

घत्ता

पहु तोसिउ कलयलु घोसिउ छुहिउ थाणु बालहो चलहो ।
अरि ताडिउ छिंदेवि पाडिउ हियउ णाइं पंडव-वलहो ॥ ९

[२६]

चक्क-खंडु थिउ वालहो करयले अट्ठमि-चंद-विंदु णं णहयले
गयउ अद्ध अद्धुव्वरिउज्जलु णं अत्थइरि-काले रवि-मंडलु
तं णिएवि णर-णंदणु कुद्धउ णं केसरि करि-आमिस-लुद्धउ
भुयए भमाडिवि घत्तिउ वाले णं खय-काल-चक्कु खय-काले ४
धाइउ घरहर घोसु करंतउ णं जम-मुहु कुरु कवलु करंतउ
छिंदइ सुहडहं सिरइं स-णीवइं हंसु स-णालइं जिह राजीवइं
करिवर-कुंभ-थलइं विहत्तइं रह-तुरंग णिघट्टेवि घत्तइं
जउ जउ भमइ रहंगु भयंकरु तउ तउ रणु णर-रुंड-णिरंतरु ८

घत्ता

तो दोणेण वुत्तु स-तोणेण चक्क-खंडु लहु आहणहो ।
जववंतेण एम भमंतेण खउ म होउ कुरु-साहणहो ॥ ९

[२७]

तोमरेहिं वियारिउ चक्क-खंडु लहु लेवि कुमारें लउडि-दंडु
रहे आसत्थामहो दिण्णु घाउ विणिवाइउ सारहि हय-सहाउ
गुरु-णंदणु थिउ ओसरेवि दूरे गयणंगणे परिलंवंत-सूरे
सउवलहो सहोयरु कंवुकेउ तं पमुहु करेप्पिणु कणय-केउ ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिट्ठविय सत्त-सत्तरि णरिंद हय सत्त महारह दस गइंद
दूसासण-णंदणु ताम एक्कु गय-घाए चूरेवि एक्कमेक्कु
विहलंघलु रुहिरालित्त-गत्त दोच्छिउ पत्थंगरुहेण सत्तु ८

घत्ता

चंपावइ फेणेण भावइ तउ चारहडि विचित्त लिय।
किं आयए छत्तहो छायए महु मुह-छाय जे अग्गलिय ॥ ९

(२८)

रवि-सुएण सयमेव पराणिउ वर-कप्पूर-करंविउ पाणिउ
ससहर-सत्थहेण भिंगारें तं ण समिच्छिउ पिएवि कुमारें
फुट्टउ जीह जाउ सय-सयकरु सत्तु-सलिलु किं कह-वि सुहंकरु
जाहिं पाव जइ पावइ अज्जुणु तो एवहिं जि होइ कण्णज्जुणु ४
उत्तम-पुरिसहो एउ ण लक्खणु अज्जु तुहारउ दिट्ठु भडत्तणु
दीणहो काणीणहो अकुलीणहो एउ कम्मु पर होइ णिहीणहो
जीउ ण छिण्णु छिण्णु पइं णिय-पगुणु विसहिउ केण स-माहउ फग्गुणु
जइ मइं समरे ण णिहउ सहत्थें तं किर तुहुं मारेवउ पत्थें

घत्ता

पइं आणिउ पियमि ण पाणिउ जं जइ-वि सुयंधउ सीयलउ।
एउ थोवउ अवरु पिएवउ सग्ग-महासरे मोक्कलउ ॥ ९

[२९]

सउहद्देण एम चवंतएण सो सुमरिउ देउ मरंतएण
जो सव्वहं देवहं अग्गलउ तइलोक्क-सिहरे जसु थावलउ
जें अट्ठ-वि कमइं णिज्जियइं जें पंचेंदियइं परज्जियइं
जं धरेवि महा-रिसि मोक्खु गय जसु तणए धम्मे थिय जीव-दय ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जें णासिउ जाइ-जरा-मरणु जो सव्वहो तिहुयणहो जे सरणु
जो वहइ णिरंजण परम छवि जसु सोउ विओउ विणासु ण-वि
जो णइव णउंस णइवउ तिय ण पयट्टइ एक्क-वि जासु किय
जो णिक्कलु सतु पराहिपरु वंभाणु वुद्धु अरहंतु परु ८
णारायणु दिणयरु वइसवगु सिउ वरुणु हुवासणु ससि-पवणु
जो होउ सु होउ थुणंतु थिउ एक्कंते करेप्पिणु कालु किउ

घत्ता

लउ वंधेवि जइ अवसंधेवि सयल-सुरासुर-साराहो ।
किय-वंदगु गउ णर-णंदणु पासु सयंभु-भडाराहो ॥ ११

*

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुव-कए
अहिवण्णु-सग्गावरोहणं पंचावण्णासमो इमो सग्गो ॥

*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छप्पण्णमो संधि

रणउहे उत्तर-कंतेण णिवडियइं तिण्णि णिवडंतेण ।
दारुणु दुक्खु सुहद्दहे सुक्खु सुमइ(?) मरणु जयद्दहे ॥१

[१]

पिहु-णंदण-णंदणु समर-हउ णं दिणमणि दिण-पहराहिहउ
णं सायर-सोउ समावडिउ णं सग्गहो सुर-कुमारु पडिउ
कुरु-बले उब्भियइं महा-धयइं किउ कलयलु तूरइं आहयइं
दुज्जोहण-दोणहं विजउ हुउ उच्छलिय वत्त अहिमण्णु मुउ ४
जो जहिं णिसुणइ सो तहिं रुवइ उक्कंठुलु गरुय धाह मुअइ
सउहद्दु महंतहो दुम्मइहे किह सीसु ण फुट्टदु पयावइहे
कहिं तणिय सुहद्दहे अज्जु दिहिं उक्खइय चक्खु दक्खवेवि णिहि
पिहु-सुयहं पलोट्टिय माण-सिह ण जाणहुं होसइ कुरुहुं किह ८

घत्ता

इत्तिउ सउरि सहेज्जउ विक्कम-धणु स-धणु धणंजउ ।
लग्गइ कुढे णिय तोयहो कउ जीविउ कउरव-लोयहो ॥ ९

[२]

जं पत्थ-पुत्तु गउ धरणियलु तं कुरुवेहिं पेल्लिउ पंडु-बलु
सयमेव जुहिट्ठिलु धीर-मइ भज्जंति-वि वाहिणि धीरवइ
अम्हेहिं जीणेवउं एउ रणु कउरवहं पराइउ धुउ मरणु
तहिं काले तमंधयारु भमिउ अहिमण्णु जेवं रवि अत्थमिउ ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहिमण्णु जेम अहियइं भिडिउ   अहिमण्णु जेम पहरेहिं पडिउ
णिय-णिय-मंदिरहं स-वाहणइं   सहसत्ति णियत्तइं साहणइं
सर-णियर-भरिय-वच्छत्थलइं   अरि-दलिय-कुंभि-कुंभ-त्थलइं
कणयइरि-सम-प्पह-संदणहो   आसंक जाय तव-णंदणहो   ८

घत्ता

मंछुडु वालु समत्तउ   कुरु-कलयलु तेण महंतउ ।
स-सर-सरासण-हत्थहो   मुहु केम णिहालिउ पत्थहो ॥   ९

[३]

किह लग्गु कुमारु पराहवहो   किह वयणु णिहालिउ माहवहो
वसुदेवहो किह किह देवइहे   उत्तरहे सुहद्दहे दोवइहे
तहिं अवसरे सारहि सर-भरिउ   कह-कह-वि किलेसें णीसरिउ
वित्तंतु असेसु तेण कहिउ   परिसक्किउ जिह कुमार-सहिउ   ४
जिह कुरु-गुरुवइ राहेउ गउ   जिह सल्लेहिं सल्लिउ सल्लु गउ
जिह भग्गु माणु दूसासणहो   जिह णिउ सुकण्णु जम-सासणहो
जिह स-कुरुव कुरुव-कुमार जिय   जिह रह गय कूडागार किय
जिह विहवलु विहयलु घाइयउ   जिह कण्णें गुणु दोहाइयउ   ८

घता

कहिउ कइंतरु एत्तिउ   णरवइ परियाणाभि जेत्तिउ ।
उप्परि जं परिसक्किउ   तं मइं जोवणहं ण सक्किउ ॥   ९

[४]

पहु पभणइ णिसुणि सुमित्त तुहुं   एक्कसि दक्खवहि कुमार-मुहु
गउ सारहि मग्गें संदणहो   रणु दक्खवंतु तव-णंदणहो
कत्थ-वि करि-कुंभइं खंडियइं   उववसिणइं जेमण-छंडियइं
कत्थइ छत्तइं महि ढुकाइं   कालेण व थालइं मुक्काइं   ४

2. After 5a extra in J. : तिम सूरतेउ तमु उहडिउ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कत्थइ स-मुयइं मउ-सिर-सयाइं णं थियइं सणालइं पंकयाइं
कत्थइ पडियइं धय-चिंधाइं कत्थइ णच्चियइं कबंधाइं
कत्थ-वि सिव मडहो समावडिय णं दोसइ कामिणि उरे चडिय
कत्थइ वेयालहं कलकलउं सिरु तुज्झु कबंधु महुत्तणउं ८

घत्ता

दिट्ठु बालु सर-भरिउ णं जलहर-धारिहिं धरिउ ।
दीहर-णिद्दए भुत्तउ जगु गिलेवि णाइं जमु सुत्तउ ॥ ९

[५]

तं णिएवि णराहिउ मुच्छ गउ णं णिवडिउ गिरि कुलिसाहिहउ
कह-कह-वि णरिंदेहिं उट्ठविउ णं मंदरु सुरेहिं परिट्ठविउ
हा पुत्त सुहद्दहे देहि दिहि पइं णितु ण णिट्ठु अणिट्ठु विहि
महु एक्कसि दावहि मुह-कमलु धीरवहि रुवंतउ पंडु-बलु ४
तउ अंगइं सुट्ठु सु-कोमलइं धर धरेवि किण्ण गय सय-दलइं
हय रण-बहु पइ-मि ण जोइयउ सुरवहुहुं सहत्थें ढोइयउ
तुहुं महियले एक्कु पुत्तु णरहो पइं विणु ण धुरंधरु रण-भरहो
पइं जणिउ दुक्खु सव्वहो जयहो किं जीवइ अज्जु धणंजयहो ८

घत्ता

राए रुवंते स-वाहणे सो को-वि ण पंडव-साहणे ।
सय-सय-वार कुरुक्किय धाहडिय जेण णउ मुक्किय ॥ ९

[६]

गय एम रुवंतहो ताम णिसि तहिं अवसरे णारउ देव-रिसि
कत्थहो-वि परायउ सिग्घ-गइ संबोहिउ तेण णराहिवइ
किं रुवहि जेम सामण्णु णरु कहो परियणु पुत्तु कलत्तु घरु
कहो धणु हिरण्णु कहो तणउ धणु कहो तणिय पिहिवि कहो तणउ रणु ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जज्जरियउ जरए सरीरु खवइ विसहरु कंचुवउ जेम मुवइ
जिउ अहिणव-देहें संचरइ णडु जिह अण्णण्ण वेस करइ
लब्भइ अण्णण्ण भवंतरइं जिह पयहिं पयहिं गामंतरइं
रवि-उवयत्थवणइं जेत्तियइं जगे जम्मण-मरणइं तेत्तियइं ८

घत्ता

जीवहो णिलउ ण णावइ गउ जम्म-सयहो णउ आवइ ।
जसु दरिसणु जेण ण जुज्जइ तहो काइं जुहिट्ठिल रुज्जइ ॥ ९

[७]

अइ-दूसह-दुक्ख-परंपरहं चउरासी-लक्ख-भवंतरहं
भवे भवे एक्केक्क-वार-हुयहं चउरासी लक्ख तो-वि मुयहं
केत्तियहं करेसहि परम-दुहु केत्तियहं रुवेसहि राय तुहुं
केत्तियइं गणेसहि सज्जणइं अद्धुवइं असारइं असरणइं ४
अद्धुवइं धण्ण-धण-जोव्वणइं अद्धुवइं रयण-मणि-कंचणइं
अद्धुवइं छत्त-धय-चामरइं ण सरीरइं काहं-वि थावरइं
आहंडल-लक्खइं णिवडियइं वंमाण-सहासइं विवडियइं
सव्वहो उप्पत्ति जरा मरणु सव्वहो ण को-वि अब्भुद्धरणु ८

घत्ता

सव्वु जीउ एकल्लउ रइ वंधइ अण्णहं भल्लउ ।
स-किय-फलइं अणुहुंजइ तहुं काइं णराहिव रुज्जइ ॥ ९

[८]

पंचमिय महा-गइ-गमण-मणु तइलोक्क-णिवासिउ असुह-तणु
आसव-संवर-णिज्जर-रहिउ वर-धम्म-वोहि-अपरिग्गहिउ
तणु-मेत्तउ सुहुमु समुद्ध-गइ धुउ कत्तउ भुत्तउ णाणवइ
पुव्वज्जिय कम्म-वंध लहइ पुणु गब्भावत्थ समुव्वहइ ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उप्पज्जइ वाल-कील करइ सोलह संवच्छर परिहरइ
दिवसेहिं जुवाण-भावे चडइ जर दुक्कइ णिहणु समावडइ
जो जीव-सरीर-विओय-खणु समयंतरालु तं किर मरणु

घत्ता

जीवेइ जीउ तें वुच्चइ जइ सव्वावत्थेहिं मुच्चइ ।
तो सिद्धत्त णुपावइ एव-मि णरु एहउ भावइ ॥ ८

[९]

तं णिसुणेवि धम्म-पुत्तु चवइ जइ जीवहो मरणु ण संभवइ
तो तिहुवणु को उवसंघरइ हंतारु कवणु जीविउ हरइ
णउ चुक्कइ को-वि अखंडियउ णउ सु-कइ कु-कइ णउ पंडियउ
णउ तवसि ण विप्पु ण वाणियउ णउ खत्तिउ जो जगि जाणियउ ४
ण थणद्धउ ण-वि जुवाणु हुउ सव्वहु-मि एक्कु सो दियहडउ
तो भिसिय-कमंडल-धारएण आढत्तु कहंतरु णारएण
जइयहुं सिट्ठारें सिज्जि पय णिक्खोभ-करेवि जगे विद्धि सय
उप्पाइय तइयहु तेण तिय णामेण मिच्चु खय-काल-किय ८
कसणंगिणि तंबिर-लोयणिय रत्तंबर-धर फुरियाणणिय
दंडाउह-पाणि समुट्ठविय लहु दाहिण दिसए परिट्ठविय
तहे पडिवलु दुद्दमु देह-दमु स-कसाउ स-वाहि कियंतु जमु

घत्ता

तेहि-मि णिम्मिउ मरणउ तिहुवण-उवसंघरणउं ।
एक्कहो विहिं तिहिं ढुक्कइ संधाए को-वि ण चुक्कइ ॥ १२

[१०]

अवरेक्कहं सासण-पावण-वि कालेण पडंति सुरासुर-वि
कालेण विणासु पुरंदरहो कालेण सोसु रयणायरहो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कालेण पियामह-लक्ख गय कालेण चविय गह वसु रिसय
कालेण सम-त्थलु होइ गिरि कालेण विणासइ काल-सिरि ४
कालेण गिलिय बलि-णहुस-णल दसकंधर-कुंभयण्ण पवल
कालेण भरह-दसरह-पलय लवणंकुस-लक्खण-राम गय
कालेण जुयक्खउ संभवइ तित्थंकर कुलयर चक्कवइ
णव वासुएव बलएव णव पाविय कालेण अणेय भव ८

घत्ता

मरण महा-विस-डंसेण किय-तिहुयण-भवण-णिवासेण ।
वित्थारिय-सव्वंगेण को खद्धु ण काल-भुयगेण ॥ ९

[११]

कालेण सुवण्ण-दीवि-पहउ पासेउ वि जासु सुवण्णमउ
कालेण सु होंतु वि खयहो णिउ कंचणमउ जणवउ जेण जिउ
जसु णाणा-वण्ण-समुज्जलइं धण-दिंति सुवण्णमयइं जलइं
जहिं दद्दुर कच्छव कक्कडय झस मयरोहार सुवण्णमय ४
कालेण अंगु अंगाहिवइ णउ णावइ पाविउ कवण गइ
जो देइ गिरिंद-सम-प्पहहं दस लक्ख सुवण्ण महारहहं
मणि-भरियहं गयवर-जोत्तियहं वहु-दीणाणाहहं सोत्तियहं
कालेण खद्धु णामेण सिवि परिपालिय जेण सव्व पिहिवि ८

घत्ता

भोयणे जेण पवाहिय घिय-सिसिर-खीर-वालाहिय ।
पियणहं को-वि ण इच्छइ धणु देइ ण दाणु पडिच्छइ ॥ ९

[१२]

मंधाउ सो-वि कालेण मुउ जुअणासहो जो सयमेव हुउ
पारद्धि गयहो तिसियहो गहणे दहि-चच्चिउ पल्लव-छण्णु खणे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जल-भरिउ कलसु वासवेण किउ   जुअणासहो अग्गए सण्णिमिउ
तासु-वि तं तोउ पियंताहो   उप्पण्णु गब्भु कंदंताहो   ४
फोडाविउ जढरु पुरंदरेण   पुक्कारिउ बालें सुंदरेण
जणु भासइ वासइ काइं किर   मं धासइ णिग्गय सक्क-गिर
मंधाउ णामु तहो तेण किउ   सुरवइ-अंगुट्ठए अमिउ थिउ
तं पावेवि पावेवि वड्ढविउ   बारहमए दिवसे रज्जे ठविउ   ८

घत्ता

जसु सामण्णु विढत्तउ   चोरारि-मारि-परिचत्तउ ।
पालिउ जो सुर-पालेण   कंदंतु सो-वि णिउ कालेण ॥   ९

[१३]

कालेण दिलीवि गवेसियउ   आहंडलु जेण विसेसियउ
सुर-गायण जसु गायंति सरे   पेक्खणयहं तेरह सहस घरे
कालेण भईरहि खयहो णिउ   जण्हविहे जणणु जो जणेण किउ
कालेण जयाइ-वि कड्ढियउ   सहसक्खहो जो समवड्ढियउ   ४
दस-वरिस-सयइं णिय-णंदणहो   जर देवि पुरुहे सुर-मद्दणहो
किउ रज्जु जुवाणें होंतएण   इंदहो अद्धासणे ठंतएण
कालेण णिलिउ णिव्वाण-णिहु   बइणहो णंदणु णामेण पिहु
जो सुरहिए-वि अब्भत्थियउ   जिह वत्तहो तिय करि पत्थियउ   ८

घत्ता

लइउ तेण वाणासणु   दइ वसुमइ करि पेसणु ।
ताए-वि सिरेण पडिच्छिउ   दुहियत्तणु अवरु समिच्छिउ ॥   ९

[१४]

तिह अंबरीसु ससिबिंदु णउ   तिह परिसरामु हरि रामु गउ
तिह भरहु तेम अवर वि बहुय   कें कज्जें गोयहि धम्म-सुय
तहिं काले जुहिट्ठिलु उवसमिउ   आवासहो कह-वि कह-वि गमिउ

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

गउ णारउ केत्थु-वि सिग्घ-गइ थिउ दुम्मणु सिमिरे णराहिवइ ४
मेल्लइ पल्लाणु को-वि हयहो को-वि मुहवडु देइ महा-गयहो
णिड्डवइ को-वि पहरण-णिवहु रह-सालहिं केण-वि मुक्कु रहु
केण-वि सण्णाहु समोवरिउ सप्पेण व कंचुउ परिहरिउ
कड्ढिज्जइ सरु कासु-वि उरहो को-वि देइ पयाणउ जमपुरहो ८

घत्ता

को-वि धवलु मुत्ताहलु रुहिरारुणु गय-मय-सामलु ।
देइ सयंभुव-दंडेण दइयहे अणुराएं वड्डेण ॥ ९

*

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए छप्पण्णमो इमो सग्गो ॥

⊕

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्तावण्णमो संधि

तहिं काले किरीडि जिणेवि सेण्ण जालंधरहं ।
गउ सरहसु पासु तव-सुय-जमल-विओयरहं ॥ १

[१]

अत्थइरि-सिहरु दिवसयरे गए पडिवण्णए णव-संझा-समए
कइ-केउ चंड-गंडीव-धरु संसत्तग जिणेवि पयट्टु णरु
सिय-वाहोवाहिय-पवर-रहु जमलीकिय-जायव-पिय-पणहु
संजमियातुल-तोणा-जुयलु कल-कोइल-किंकिणि-रव-मुहलु ४
दुणिमित्तइं ताम समुट्ठियइं गिद्धइं धय-दंडे परिट्ठियइं
सिव असिव-सहासइं आयरइ जर-पायवे वायसु करयरइ
कालाहि कुहिणि छिदंतु गउ खरु वामउ हरिणु वि दाहिणउ
थद्धइं णस-जालइं जायाइं अंगइं फुरंति वि-च्छायाइं ८

घत्ता

अहिमण्णु समत्तु सउण-सहासेहिं रावियउ ।
साहुद्धउ करेवि दुमेहिं णाइं धाहावियउ ॥ ९

[२]

णिय-सिमिरु दिट्ठु अ-सुहावणउं उक्कंठुलु उम्माहावणउं
पवहंति पारिट्ठिय-सेण्ण-धुणि ण सुणिज्जइ वीणा-वेणु-झुणि
णउ गायण-वायण-लउ वि हउ अहिमण्णु ण ढुक्कइ सम्मुहउ
जणु णासइ सव्वु परम्मुहउ णउ कलयलु ण-वि जय-पडह-रउ ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेयालिय मागह सूय णवि		अट्ठोत्तरु णउ वावण्ण कवि
सुट्टु जोइउ पत्थें माहवहो		परमेसर णिग्गमे आहवहो
दु-णिमित्तइं जाइं णियच्छियइं		मइं तहिं जे ताइं परियच्छियइं
जिम धरिउ रणंगणे धम्म-सुउ		जिम चक्क-वूहे अहिमण्णु मुउ	८

घत्ता

वलु दीसइ सव्वु-इ	इय दीसंति सहोयर-वि ।
पर आयहं मज्झे	दीसइ एक्कु कुमारु णवि ॥	९

[३]

चाणूर-कंस-विणिवायणहो		घरु दुक्खवंतु णारायणहो
गउ पासु पत्थु तव-णंदणहो		ओइण्णु णिराउहु संदणहो
वोल्लाविउ धम्म-पुत्तु णरेण		कठ-क्खल-महुरक्खर-सरेण
दीसंति असेस-वि सुहि-पवर		महु पुत्तु ण दीसइ एक्कु पर	४
किय-समरे परम्मुहु कहिमि हुउ		किय चक्क-वूहु पइसरेवि मुउ
तो कहइ जुहिट्ठिलु अज्जुणहो		अलि-सिहि-गल-गवलाणज्जुणहो
आएसें सो महु तणेण गउ		छहिं जणेहिं अखत्तें मिलेवि हउ
गुरु-गुरु-सुय-भोयाहिव-किवेहिं		मद्दाहिव-कण्णेहि णिक्किवेहि	८

घत्ता

अम्हइ-मि असेस	एक्कें धरिय जयद्दहेण ।
जिह तियस-गइंद	वालाहिएण महद्दहेण ॥	९

[४]

तं णिसुणेवि अज्जुणु मुच्छ गउ		णं णिवडिउ गिरि कुलिसाहिहउ
महुमहेण पयत्ते उट्ठविउ		णं मंदरु महणे परिट्ठविउ
किं तुज्झु जे एक्कहो दुल्लहउ		महु घई पुणु काइं ण वल्लहउ
अवसरु ण होइ रोवेवाहो		करि चित्त परए पहरेवाहो	४

उम्मत्तउ होवि मुहुत्तु थिउ   धणु वाम-हत्थे सरु इयरे किउ
अवगण्णेवि हरि-उक्कोइयइं   पुणु मुहइं णरिंदहं जोइयइं
अहो अहो सुहि-संढहो णिग्गुणहो   सच्चइ-सिहंडि-धट्ठज्जुणहो
एक्केण-वि बालु ण रक्खियउ   तुम्हेहिं सव्वेहिं उप्पेक्खियउ   ८

घत्ता

थिय णिम्मुह होवि को जाणइ कहो धिवइ सरु ।
मं बोल्लउ को-वि मारइ गहिलीहूउ णरु ॥   ९

[५]

आसंकिय णरवइ णिहुय थिय   आलेहिय लेप्पिम णाइ किय
तो पत्थें भीमु णिहालियउ   महु णंदणु पइ-मि ण पालियउ
सो वहुहिं णिरुम्भइ एक्कु जणु   तुहुं णिय-घरु एहि अलद्ध-वणु
पच्चेल्लिउ जसु वलिवंड चिरु   सो केम जयद्दहु थक्कु थिरु   ४
तव-णंदणु कहइ सहोयरहो   णउ अज्जुण दोसु विओयरहो
तें रुंधउ मा सामण्णु गणे   धू पइ-मि परज्जइ आहयणे
एत्तडेण चुक्कु जं होंतु ण-वि   जिह सोमय-सिंजय-कइकय-वि
सर-धारें वरिसिउ मेहु जिह   तें महु-वि भग्ग आहमाण-सिह   ८

घत्ता

नर आइय ताम   कहिउ कण्ह-तव-सुय-णरहं ।
चिंतणहं ण जाइ   जा वट्टइ अवत्थ परहं ॥   ९

[६]

घरे घरे वण्णिज्जइ पत्थ-सुउ   घरे घरे रुज्जइ जो को-वि मुउ
सउ मारिउ कुरुवइ-णंदणहं   सहसट्ठु णिसुम्भिय संदणहं
णव-सयइं गइंदहं मत्ताहं   दस-सयइं पहुहुं पहरंताहं
पायालहं चउदह सहस मय   सहुं विहवलेण दस सहस हय   ४

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

परिवेढिउ छहि-मि महा-रहेहिं   जिह वालउ वालु महा-गएहिं
समरंगणे कण्णें छिण्णु गुणु   अण्णेहिं अण्णु णिट्ठविउ पुणु
जिह खग्ग-रहंगें जुज्झियउ   तहिं परिसंखाणु ण वुज्झियउ
दूसासण-पुत्तहो अब्भिडिउ   सम-घाएहिं धरणि-पट्टे पडिउ   ८

घत्ता

वहु सुयहो सुणेवि पडिमुच्छिउ गंडीव-धरु ।
णिवडिउ सहसत्ति दुप्पवणक्खउ जेम तरु ॥   ९

[७]

मुच्छा-विहलंघलु हूउ णरु   अण्णहिं धणु अण्णहिं पडिउ सरु
तुडि-वडणें चेयण-भाउ गउ   उट्ठिउ णिय-सुय-सोयाहियउ
गुण-संभरणेण विमुक्क रडि   कहो अण्णहो एही चारहडि
को समर-महाभर-धुर धरइ   भड-थड-कडमद्दणु को करइ   ४
साहारहि हउं उम्माहियउ   सय-वार भीमु अप्पाहियउ
पउ एक्कु-वि णवर ण चल्लियउ   एक्कल्लउ तुहुं मोक्कल्लियउ
पूरंतु मणोरह तव-सुयहो   आएसु दिण्णु जें महु सुयहो
णउ जाणइ वूहहो णिग्गमणु   किं रुवहि णिवारइ महुमहणु   ८

घत्ता

कुरु-णाहु ण रुण्णु पुत्त-सयहो गुण-सुमरणेण ।
तुहुं रोवहि काइं एक्कहो पुत्तहो कारणेण ॥   ९

[८]

सयरेण ण रुण्णउं कौंति-सुय   जसु सट्ठि सहस णंदणहं सुय
भणु केण रुण्णु संगामे हय   खर-दूसण चउद्दह सहस मय
तव-सुयहो भग्ग जें माण-सिह   सो जियइ रुवहि तुहुं रंड जिह
तं वयणु सुणेवि दामोयरहो   मुहु जोइउ जेट्ठ-सहोयरहो   ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जो तुम्हहं माण-भंगु करइ तं मारमि जइ-वि कण्हु धरइ
चुक्कइ आयरिउ गुरुत्तणेण गुरु-णंदणु गुरु-पुत्तत्तणेण
किउ बंभणु कियवम्मउ सयणु तहो मरणु ण इच्छइ महुमहणु
मारेवउ मद्दाहिवइ पइं वासरे चउत्थे रवि-तणउ मइं ८

घत्ता

जइ कल्लए राय सीसु ण खुडमि जयद्दहहो ।
तो उप्परि झंप देमि वलंतहो हुयवहहो ॥ ९

[९]

सिरु तोडमि परए जयद्दहहो पुरे पइसइ जइ-वि पियामहहो
जा सामि-मित्त-गुरु-दोहाहं जा इह-पर-लोय-विरोहाहं
जा रिसि-गो-बंभण-घायणहं जा जीव-दुक्ख-उप्पायणहं
जा माय-वप्प-आकोसणहं जा पंच-महावय-णासणहं ४
जा पावहं दुक्किय-गाराहं जा णिय धणु देंत-णिवाराहं
जा पसु-पंचुंवर-भक्खणहं जा मंस-सुरा-महु-चक्खणहं
जा पर-धण-पर-तिय-हिंसणहं जा देव-भोग-विद्धंसणहं
जा कित्तण-पडिमा-भंजणहं जा मिट्ठ-भक्ख-पविहंजणहं ८

घत्ता

सा महु गइ होउ जइ णं जयद्दहु णिट्ठवमि ।
अत्थंतए सूरे कल्लए जम-पुरे पट्ठवमि ॥ ९

[१०]

जं पत्थें घोर पइज्ज किय तं रण-दिक्खहं सामंत थिय
लहु पंचयण्णु दामोयरेण आऊरिउ देवयत्तु वरेण
लल्लक्क-सद्दु एक्कहिं मिलिउ णं जगु गिलेवि जमु किलिगिलिउ
किउ कलयलु हय पडु-पडह-दडि णं महिहर-मत्थए पडिय तडि ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तहिँ अवसरे वड्ढिय-विग्गहहो चर-पुरिसेहिँ कहिउ जयद्दहहो
किं अच्छहि आइय धुउ मरणु जसु भावइ तासु जाहि सरणु
वइसवणहो पवणहो हुयवयहो मयरहरहो हरहो पियामहहो
खंधहो अ-हिमयरहो हिमयरहो सुक्कहो सुर-गुरुहे सणिच्छरहो ८
सहसक्खहो धरणहो तक्खयहो लइ ढुक्कउ तो-वि कुलक्खयहो

घत्ता

परिरक्ख करेइ जइ-वि अणंतु अणंत-बलु ।
तोडेसइ पत्थु तो-वि तुहारउ सिर-कमलु ॥ ९

[११]

तं णिसुणेवि विद्ध-खत्तणउ चल-णयण-जुयलु वुण्णाणउ
कह-कह-वि ण मोहावत्थ गउ भय-जलण-जाल-मालाभिहउ
परिचिंतिउ ढुक्कु मज्झु मरणु कहो अक्खमि कासु जामि सरणु
साहारु ण बंधइ मूढ-मइ गउ तउ जउ कुरुव-णराहिवइ ४
लइ जामि तवोवणु होमि मुणि जहिँ कहि-मि ण सुम्मइ पत्थ-झुणि
देव-मि अदेव जसु समर-मुहे तहो णिग्गय वय वयणंवुरुहे
सा णिप्फल होइ कया-वि ण-वि आयामइ देव-वि दाणव-वि
सुर खंडवे गो-ग्गहे कुरुव जिय वंदि-ग्गहे तुज्झु परित्त किय ८
सब्भावें कुरुवइ भणमि पइं को रक्खइ तुम्हहं मज्झे मइं

घत्ता

जिम णिय-घरु जामि घोर-वीरु जिम तउ करमि ।
अज्जुणे जीवंते धुउ जीवंतु ण उव्वरमि ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१२]

तो भणइ दोणु करि चारहडि अवलंबहि वित्ति समारहडि
अजरामरु को-वि ण एत्थु जए तो वरि पहरिउ संगर-समए
ण पलायणु सोहइ खत्तियहं सिरु उज्झइ कारणे एत्तियहं
जिम सामिहे जिम सरणाइयहो जिम मित्तहो जिम अण्णाइयहो ४
जीवग्गह-जय-मरणेहिं भडहो तिहिं गइहिं सुद्धि जस-लेहडहो
जय-लच्छि जएण समावडइ प्राणेण सुरंगण करे चडइ
छ महारह सूई-वूहे जहिं पइं रक्खमि को पइसरइ तहिं
कल्लए पयंगु जामत्थमइ मांहि अम्महं ताह-मि सग्ग-गइ ८

घत्ता

तो सिंधव-णाहु चित्तु पडित्थिरु करेवि थिउ।
जिम मारिउ पत्थु जिम तें महु सिर-छेउ किउ ॥ ९

[१३]

जं किय परिरक्ख जयद्दहहो तं चरेहिं णिवेइउ महुमहहो
हरि होसइ-जणवए जंपणउं किय पत्थु डहेसइ अप्पणउं
णउ पइजारुहणहो णिव्वहणु को सक्कइ पइसेवि गुरु-गहणु
जहिं दोणि दोणु किउ कण्णु सलु महाहिउ भूरीसउ पवलु ४
जहिं चित्तसेणु विससेणु सहुं दूसासणु दुम्महु दुव्विसहु
दुज्जोहणु सउणि विगण्णु जहिं भणु वइरि णिहण्णइ केम तहिं
मुहु कण्हें णरहो णियच्छियउ चर-चरिउ एउ परियच्छियउ
पइं पत्थ कियइं अइ-वोल्लियइं सुरवरह-मि चित्तइं डोल्लियइं ८

घत्ता

असि-जाला-मालहो धय-धूमहो रिउ-हुयवहहो।
पइसेप्पिणु तेत्थु को सिरु खुडइ जयद्दहहो ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१४]

तो पत्थहो वियसिउ मुह-कमलु   णिव्वण्णहि केत्तिउ कुरुव-बलु
किं राहा-वेहु ण दिट्ठु पइं   वंदि-ग्गह-गो-ग्गहे तुलिउ मइं
रक्खंतु महा-रह अट्ठ-रह   लइरह(?) रक्खंतु समत्त रह
रक्खंतु देव दाणव गह-वि   रक्खंतु दिवायर बारह-वि   ४
रक्खंतु गरुड-गंधव्व-गण   रक्खंतु महा-रिसि सत्त जण
रक्खंतु रुद्द रक्खंतु वसु   रक्खउ रक्खेवए सत्ति जसु
रक्खउ सहसक्खु तियक्ख-समु   रक्खउ कालि-कालु कयंतु जमु
रक्खउ वइसाणरु वइसवणु   रक्खउ रवि राहु-वि पवणु घणु   ८

घत्ता

परिरक्ख करेहि   सहुं तइलोकें तुहु-मि हरि ।
मारेवउ कल्ले मइं   समरंगणे तो-वि अरि ॥   ९

[१५]

तो सयल-भुवण-जाणिय-गुणहो   परितुट्ठु जणद्दणु अज्जुणहो
पडिवण्णें तहिं संतोस भरे   उप्पाय जाय-कउरवहं घरे
सिव-कंदणु सुक्कासणि-वडणु   मयरहरखोहु महिहर-चलणु
णच्चियइं कबंधइं गयणयले   ओवुट्ठइं रुहिरइं धरणियले   ४
अइ-विरुवइं रुव विहंगमहं   पुच्छइं जलियाइं तुरंगमहं
चिंताविय सुरवर सयल मणे   को जाणइ होसइ काइं रणे
उद्धसिउ धणंजउ जाउ दिहि   पज्जलउ महारउ कोव-सिहि
णारायण-पवणालुंखियउ   वरवइरिंधण-संधुक्कियउ   ८

घत्ता

हरि-जुए हरि-चिंधे   हरि-बलु करे गंडीउ जहिं ।
सइं भुव-बल-हीणु   जाइ जयद्दहु संढु कहिं ॥

*

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए सत्तावण्णमो इमो सग्गो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठावण्णमो संधि

भणइ धणंजउ पणय-सिरु पुण्णिम-इंदु-रुंद-मुहयंदहे ।
दुक्ख-दवाणलु उल्हवहि जाहि जणद्दण भवणु सुहद्दहे ॥१

[१]

कोइल-कल-कोलाहल-सद्दहे काइं भडारा जियइ सुहद्दहे
पुत्त-विओय-सोय-तम-छाइय किं जीवइ किं मुइय वराइय
जाहि गवेसहि देव जणद्दण कालिय-देह-दमण दणु-मद्दण
एम भणेज्जहि णियय-सहोयरि लइ सुय-सोउ पमोयहि सुंदरि ४
केत्तिउ रुवहि खणंतरु सुप्पइ पडिउ धुरंधरु को धुरे जुप्पइ
सव्वहो जीवहो जम्मणु मरणउं धम्मु मुएविणु को वि ण सरणउं
तो वरि अप्प-हियत्तणु किज्जइ वउ चारित्तु सीलु पालिज्जइ
बंधव-सयण सव्व जीवंतहं पच्छए को-वि ण जाइ मरंतहं ८

घत्ता

हउ-मि कुमारहो लग्गु कुढे जिम सिरु खुडिउ जियंते जयद्दहे ।
जिम कल्लए ओयारियइं महुसूयण कंकणइं सुहद्दहे ॥ ९

[२]

अण्णु-वि सुहड मडप्फर-साडहो एम देव भणु दुहिय विराडहो
उत्तरे तालुय-वम्म-वियारउ थिउ रण-दिक्खहे ससुरु तुहारउ
जइ समरंगणे ण हउ जयद्दहु जइ ण समत्तु समाणिउ भारहु
जइ तव-सुएण ण भुत्त जियंते तो पडिवण्णु सुहद्दहे कंते ४

रि-२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जो उप्पज्जइ पुत्तु तुहारउ तासु वसुंधरि दिण्ण ति-वारउ
गयउरु तासु तासु वाइत्तइं तासु सेय-चामरइं विचित्तइं
छत्तइं तासु तासु सिंहासणु णं तो तुहुं जे सक्खि गरुडासणु
तुज्झु समक्खु सव्वु परिछिण्णउं अण्णु परिक्खि णाउं मइं दिण्णउं ८

घत्ता

एम भणेवि वीभच्छु थिउ दुद्दम-दाणव-देह-विमद्दणु ।
संख-चक्क-सारंग-धरु पासु सुहद्दहे चलिउ जणद्दणु ॥ ९

[३]

कंस-महासुर-जय-सुय-घायणु गउ णिय-बहिणि-भवणु णारायणु
दिट्ठ तेण रोवंति सहोयरि पिहुल-णियंविणि कुलिस-किसोयरि
जण-मण-णयणाणंद-जणेरी हत्थ-भल्लि णं वम्मह-केरी
जउ जउ ढुकइ तउ तउ भिंदइ कंतिए ससहर-कंति णिसिंधइ ४
उट्ठइ पडइ समुद्द-णियंसी णेउर-रव-हक्कारिय-हंसी
गोविय-कंधि वलय-पालंवेहि चंदण-लय भुयंग-सिलिंवेहिं
तिवलि-तरंग-मज्झे तियकायहो णाइं ति-अंगुलि वम्मह-रायहो
घोलइ मोत्तिय-हारु थणंतरे गंगा-वाहु-व सुरगिरि-कंदरे ८

घत्ता

वाह-जलोल्लिय-लोयणिय पुत्त-विओय-सोय-उक्कंठुल ।
दिट्ठ सुहद्द जणद्दणेण मोक्कल-केस-कलाव विसंठुल ॥ ९

[४]

णिएवि सहोयरु सुद्धुम्माहिय कम-कमलुप्परे पडिय स-धाहिय
हा परमेसर सिरे गिरि-धारा तिहुयण-लग्गण-खंभ भडारा
कउरव-संढहं वले पहरंतउ घइ-मि ण रक्खिउ बालु मरंतउ
जं तुहुं जगहं सरणु तं अलियउं सव्वहं देवहं दइउ जे वलियउं ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दइउ देइ दइउ जे उद्दालइ   मारइ दइउ दइउ परिपालइ
तुहु-मि भडारा दइवायत्तउ   दूसह-दुक्ख-परंपर-पत्तउ
पइ-मि रुण्णु पज्जुण्णहो जम्मणे   घल्लिउ महुरहे जिणेवि महा-रणे
जइ उयरेण वहहिं तइलोउ-वि   तो किं बालु ण रक्खिउ एक्कु-वि ८

घत्ता

तुहुं भायरु भत्तारु णरु   भीमु भाउ भावंगु घुडुक्कउ ।
केण-वि धारेवि ण सक्कियउ   एक्कल्लउ कुमारु किह मुक्कउ ॥ ९

[५]

धीरइ दुघर-धराधर-धारउ   माए माए संसारु असारउ
सव्वहो पिंडहो तिहि-मि पयारेहिं   एक्क जे णिट्ठ दुट्ट-किमि-छारेहिं
एह जे णिट्ठ णराहिव-विंदहं   एह जे णिट्ठ-वि णाय-खगिंदहं
एह णिट्ठ वरुण-वइसवणह   एह जे णिट्ठ हुवासण-पवणहं ४
एह जे णिट्ठ भाणु-वंभाणहं   एह जे णिट्ठ सव्व-गिव्वाणहं
एह जे णिट्ठ णिसायर-जक्खहं   एह जे णिट्ठ विहंगम-लक्खहं
एह जे णिट्ठ गरुड-गंधव्वहं   एह जे णिट्ठ भुयंगम-सव्वहं ८

घत्ता

जाह-मि महि जा महिअ-महि   जाह-मि णिरवसेसु जगु भुंजइ ।
ताह-मि ताह-मि अम्हह-मि   एह जे णिट्ठ माए किं रुज्जइ ॥ ९

[६]

वीर-जणेरि वीर-भत्तारी   वीरहो धीय वीर-परिवारी
वीर-पिउच्छ वीर-भत्तिज्जी   वीरहं वहुव वीर-सयणिज्जी
वीर-वडाय वीर-दोहित्ती   वीरहो तणिय भइणी जगे वुत्ती
धीरीहोहि रुवंति ण लज्जहि   माए माए सुय-सोउ विवज्जहि ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माए माए घर-वासु णिहालहि   माए माए परियणु परिपालहि
माए माए सहारहि अप्पउं   तरु दुक्ख-णइ करेवि दिहि-तप्पउं
माए माए किं रुज्जइ वीरहो   जसु ओसरइ ण लच्छि सरीरहो

घत्ता

अट्ठ सहास महारहहं   सउ राउत्तहं सहसु णरिंदहं ।
सहस चउद्दह किंकरहं   हयइं जेण णव-सयइं गइंदहं ॥ ८

[७]

तो उव्वाहुल-वद्दुल-वाहए   रुण्णु सुहद्दए मुक्कल-धाहए
पुत्त पुत्त किह वूहे पइट्ठउ   पुत्त पुत्त किह वइरिहिं दिट्ठउ
पुत्त पुत्त किह वाणेहिं भिण्णउ   पुत्त पुत्त किह खग्गेहिं छिण्णउ
पुत्त पुत्त किह वइरिहिं दिट्ठउ   पुत्त पुत्त किह महियले सुत्तउ ४
पुत्त पुत्त किह डाहुप्पाइउ   पुत्त पुत्त णारायणु आइउ
पुत्त पुत्त जयकारहि माउलु   पुत्त पुत्त कहो छंडिउ राउलु
पुत्त पुत्त तुहुं केत्तहिं दीसहि   पुत्त पुत्त उत्तर मंभीसहि
पुत्त पुत्त जायव-जणु दुच्छिउ   पुत्त पुत्त पइं को-वि ण पुच्छिउ ८

घत्ता

देवइ-रोहिणी-रुप्पिणिहिं   दोमइ-कोंतिहिं णिच्च-णवल्लउ ।
बंधव-सयणइं परिहरेवि   कवणु दोसु जहिं गउ एक्कल्लउ ॥ ९

[८]

सुह-गइ लहहि पुत्त महु दुल्लह   रण-वहु-अमर-वरंगण-वल्लह
छिण्णइं जेहिं सव्व-पसु-पासइं   कियइं जेहिं उववास-सहासइं
लद्धइं जेहिं सुखेत्तइं मरणइं   चिण्णइं जेहिं महा-तव-चरणइं
दिण्णइं जेहिं चउव्विह-दाणइं   वसियइं जेहिं पंच-कल्लाणइं ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंच महावय जेहिं ण भग्गा जे पुरुएवहो सासणे लग्गा
जेहिं धम्म गुरु देव ण णिंदिय जेहिं परज्जिय पंच-वि इंदिय
ते गय जेत्थु जेत्थु जाएज्जहि जिण-गुण-गणं-संपत्ति लहेज्जहि
तहिं अवसरे अच्चंत-विणीयउ आयउ दुमय-वियाडहं धीयउ ८

घत्ता

तहिं धाहाविउ उत्तरए तुम्हेहिं जाणहुं कुरुवेहिं पिट्ठउ ।
णं मरइ णाहु पहु-राणउ महु पइ अच्छइ हियए पइट्ठउ ॥ ९

[९]

तेण ण हियवउ फुट्टु महारउ जइ ण वज्जु तो किउ मउयारउ
णिवडिउ करेंहि हणंतु उर-त्थलु थण-सिहरेहिं ण पत्त महि-मंडलु
वसुमइ दइव दवत्ति पइसारउ जेण गवेसमि कंतु महारउ
दइवहो कालहो जमहो कयंतहो सिरु ण फुट्टु अहिमण्णु हरंतहो ४
वरि तिण-सिह वरि विल्लिए खण्णी णउ मइं जेही तिय उप्पण्णी
रुण्णु रुवंतिए णहयले इंदें रुण्णु रुवंतिए दुमयाणंदें
रुण्णु रुवंतिए पुणु-वि सुहद्दए × × ×
पभणइ कण्हु कण्हे धाहारहि उत्तर तुहुं रोवंति णिवारहि ८

घत्ता

धीरेय सुंदरि दोमइए महसूयणेण सुहद्दाएवि ।
पत्थहो तणिय वत्त कहेवि गउ णिय-भवणहो दारुइ लेवि ॥ ९

[१०]

णरेण विरइय सेज्ज वहु-वण्णेहिं णव-दब्भेहिं वेरुलिय-वण्णेहिं
तहिं णिवण्णु रण-दिक्खए थाएवि थंडिले सासण-देवय झाएवि
सव्वहो जगहो जाउ उण्णिद्दउ कुरुव-राउ समरंगणे णिद्दउ
दुक्कर किय पइज्ज सेयासें विजउ ण जाणहुं कवणें पासें ४

के-वि देंति सु-पसत्थासीसउ दहि-दुव्वक्खय-सलिल-वि मीसउ
जइ अम्हइं गुरु-देवहं भत्ता माय वप्पु जइ वे-वि ण मत्ता
जइ किउ धम्मु सच्चु जइ पालिउ जइ तिण-समु पर-दव्वु णिहालिउ
जइ णीसारिउ जिणवर-पुज्जउ तो समरंगणे जिणउ धणंजउ ८

घत्ता

जेहिं अक्खत्तें वालु हउ जेहिं ण दिण्णु अद्धु मग्गंतहं ।
ताहं हयासहं कउरवहं पडउ वज्जु सिरे दुण्णयवंतहं ॥ ९

[११]

जइ णरु मरइ मरइ तो माहउ वज्जिउ धम्म-सुएण महाहउ
लोयहं पंडव-पक्खु वहंतहं अद्धरत्तु गउ एम चवंतहं
णिद् ण जाइ ताम महसूयणु पभणइ सव्वाकरिसिय-पूयणु
दारुइ जिह महु रुच्चइ अज्जुणु तिह ण संवु अणिरुद्ध ण पज्जुणु ४
तिह ण दसारुह सच्चइ-हलहर ण रह ण तुरय ण हत्थि ण किंकर
तेण मरंतें मरमि णिरुत्तउ एउ तुज्झु मइं अग्गए वुत्तउ
किं तव-सुएण काइं किर पत्थें मइं मारेवा वइरि स-हत्थें
मइं गुरु-रइय वूह फोडेवा मइं कुरु-कप्प-रुक्ख मोडेवा ८

घत्ता

सीस-फलइं पाडेवाइं सर-दंडेहिं घाय-जज्जरियइं ।
सउण-सयइं भक्खेवाइं वहु-मत्थिक्क-महारस-भरियइं ॥ ९

[१२]

विस-जउ-भवण-जूय-केसग्गह वण-दुक्खइं विराड-वह्-गोग्गह
ते दुण्णय डहंति महु अंगइं णरहो तेण साहिज्जु करेवउ
भाइणेय-वहु सहेवि ण सक्कमि णरवर खयहो णेंतु परिसक्कमि
दारुइ पत्तिउ करहि विहाणए सज्जीहोज्जहि पढम-पयाणए ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जुत्ति जुआलए जुयल महाहय   मेहपुप्फ-सुगंधि-वलाहय
गारुड-धयहो म ढोयहि वासणु   सज्जोकरि सारंगु सरासणु
रहवरु राय-वारु पइसारहि   एम करेमि देव गउ सारहि
महुमहणे-वि पढुक्कउ तेत्तहे   चिंतावण्णु धणंजउ जेत्तहे ८
एयारह-अक्खोहणि-पलउ   वूह-मज्झे किह वइरि णिहालउं

घत्ता

भणइ जणद्दणु किं ण हउं   किं गंडीउ स-सरु णउ करयले ।
किं ण तुरंगम किं ण रहु   जेण विसूरहि तुहुं महु अग्गले ॥ १०

[१३]

तो णारायण-वयणु णिहालेवि   उर-मुह-कर-चरणइं पक्खालेवि
एक्क-मणेण दब्भ-सयणत्थें   सुमरिय सासण-देवय पत्थें
जइ मइं पंचाणुव्वय पालिय   जइ जणणि व पर-णारि णिहालिय
जइ पर-कसमरु तिण-समु मण्णिउ   जइ गुरु-वयणु ण मइं अवगण्णिउ ४
जइ णिय-सामिसालु णउ वंचिउ   जइ देवाहिदेउ मइं अंचिउ
जइ देवयउ अत्थि जइ सासणु   तो तुहुं देहि भडारिए दंसणु
सुर-अंजलिउ होउ उवलद्धउ   एम भणेवि णिवण्णु कइद्धउ
सासण-देवय ताम तुरंति   आय म जाणहो केत्तहे होंति ८

घत्ता

कहिउ ताए सिविणंतरे   बिण्णि-वि जेत्थु लेमि तहिं गम्मइ ।
तं तुम्हहं दक्खवमि सरु   जेण जयद्दहु परए णिहम्मइ ॥ ९

[१४]

एम भणेवि थिय देवय अग्गए   णर-णारावण धाइय मग्गए
बिण्णि-वि गयइं णहंगण-मग्गें   गह-तारायण-रिक्खालग्गें
दिट्ठइं गाम-णयर-उज्जाणइं   जम्मण-णिक्खवणइं बहु-ठाणइं
वुड्डुण-वावि दिट्ठ कउवेरी   सुरयण-णयणाणंद-जणेरी ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कंचण-कमल-कांविय-णीरी विविह-विहंगम-सेविय-तीरी
काल-महागिरि दिट्ठु अणंतरु पुणु मणिवंत-सिहरु लिहियंवरु
वम्ह-तुंग-विसदंसु स-कंदरु पुणु मयसिगु स-संगु स-मंदरु
दिव्वु पुरिसु अण्णेतहे दीसइ संभासणु करेवि तें सीसइ ८

घत्ता

एहु जो णियडउं कमल-सरु तहिं अच्छंति विण्णि-वि दुज्जय ।
एक्कु सरासणु अवरु सरु पइं पेक्खेप्पिणु होंति धणंजय ॥९

[९]

तं उवएसु लहेवि गय तेत्तहे आसीविस दएसय-फड जेत्तहे
एक्कु जाउ सरु अवरु सरासणु लइय णरेण णवेवि गरुडासणु
पडिणियत्त लद्धए धणुवरे सरे दीसइ वम्हचारि तहिं अवसरे
तें संधाणु वाणु विण्णासिउ दिट्ठि-मुट्ठि-थित्ताणउं पयासिउ ४
सव्वु धणंजएण तं सिक्खिउ अंजलियत्थु कियत्थु णिरिक्खिउ
कहिं एवहिं रिउ जंति अ-घाइय पर-वलु एम चवंत पराइय
तं सरु तं जे सरासणु लेप्पिणु थाणु रएवि संधाणु करेप्पिणु
सिंधव-सिरु सिविणंतरे छेइउ णर-णारायणेहिं तं चेइउ ८

घत्ता

ताम गलिउ तारा-णिवहु दित्तुल्लसिय संझ णिसि दूसिय ।
कुंकुमेण णव-वहुय जिह पुव्व-दिसारुणेण सइं भूसिय ॥ ९

*

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए अट्ठावण्णमो इमो सग्गो ॥

⊕

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उणसट्ठिमो संधि

उयय-महीहर-सिंगे उग्गमिउ भुअण-परिपालउ
पत्थ-जयद्दह-जुज्झु णं दिणमणि आउ णिहालउ ॥

[१]

राउ विउद्धु ढुक्कु पहु-पालिय मागह सूय वंदि वेयालिय
मंगल-पाढा पढिय विचित्तइं दिण्णइं वायणेहिं वाइत्तइं
गेयइं गायणेहिं आढत्तइं णच्चाणेहिं णच्चाविय पत्ताइं
णड कइ छत्त डोंव थिय वारेहिं किंपि ण सुम्मइ जय-जय-कारेहिं ४
अण्णेत्ताहे पइमंति णिओइय तलवर तलवग्गिय भड भोइय
कुलवत्तालिय मति सासणहर सेणावइ संगर-कड्ढिय-हर
वेज्ज पुरोहिय भंडागारिय अंतरवंसिय कोट्ठागारिय
अण्णेत्ताहे सामंत स-साहण साउह संगावरण स-वाहण ८

घत्ता

रह-गय-तुरय-भडेहिं जउ गमइ दिट्ठि तउ रुभइ ।
तव-सुउ सायरु जेम वाहिणिहिं वहंतिहिं खुब्भइ ॥ ९

[२]

तूरइं हयइं अणेय-पयारइं दुंदुहि घण-समुद्द-रव-सारइं
झल्लरि झज्झरि झिंखिर वज्जइ कत्तारि करड कणइ आउज्जइं
भंभा-भेरि-भूर-भीभभीसइं तूणव-पणव-गोमुह-गोसीसइं
मद्दल-णंदि समुद्दातालइ खुंखुण-संखा-संख-वमालइं ४
काहल-टिविला-लंवल-णामइं एयावरइ-मि हयइं पगामइं
कंचण-कलस-सएण जल-भरिएं अट्ठोत्तरेण वरंगण-धरिएं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ण्हाउ जुहिट्ठिलु जय-जय-सद्दें वद्धावणु अणुसरिस-णिणद्दें
मंगल सिय सिचय परिहेप्पिणु इट्ठा-देवय-पुज्ज करेप्पिणु ८

घत्ता

धणु दीणाणाहहं देवि भद्दासणे णाहु णिविट्ठउ ।
णरेहिं णराहिउ तेत्थु णं सुरेहिं सुराहिउ दिट्ठउ ॥ ९

[३]

तो दुवारिएण हक्कारिय महुमह-पमुह सव्व पइसारिय
पंडव-णाहु णवेप्पिणु घोसइ एउ ण जाणहु किह हरि होसइ
तेरह-वरिसइं सुक्खु ण लद्धउ संधि-काले पडिवण्णु ण अद्धउ
तेरह दिवस णिरंतरु जुज्झिउ बाल-मरणु तं तुम्हेहिं बुज्झिउ ४
एवहिं किय पइज्ज धर-धारा तिह करि जिह णिव्वहइ भडारा
तिह करि जिह भारहु जे समप्पइ तिह करि जिह महि सयल विढप्पइ
हउं परियारु देव तुह खंडउ रणे वुड्डंतहो होहि तरंडउ
तो महुमहेण हसेप्पिणु वुच्चइ आयहं सव्वहं णरु जे पहुच्चइ ८

घत्ता

कवणु धणुद्धरु तासु सरवर-संधाणु करेसइ ।
जो सवडम्मुहु थाइ सो रण-मुहे सव्वु मरेसइ ॥ ९

[४]

तहिं पत्थावे पत्थु पत्थिव-सह पइसइ सक्कत्थाण-समप्पह
किउ तव-सुयहो तेण अहिवायणु जय-कारिउ स-भीमु णारायणु
मत्थए चुंवेवि पंडव-णाहें दिण्णासीस सु-णेह-सणाहें
सहल पइज्ज होउ समरंगणे सुर पेक्खंतु सव्व गयणंगणे ४
जिणहि जयद्दहु हरिहे पसाएं एमासीस दिण्ण जं राएं
भणइ धणंजउ सउरि जे मंगलु भुंजहि तुहु-मि देव कुरु-जंगलु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सु-विणउ कहिउ सुहिहिँ अहिणंदिउ पंडव-लोउ सव्वु आणंदिउ
पयहिण करेवि हयहँ गुणवंतहँ संदणे चडिउ भडहँ पेक्खतहँ ८

घत्ता

सच्चइ महुमहु पत्थु रहे तिण्णि-वि चडिय चिरंतणे ।
णं जमु कालु कियंतु थिय एक्कहिँ जुय-परिवत्तणे ॥

[५]

पुत्तु जसोयहे णंदहो णंदणु सो थिउ धुरहे धरेप्पिणु संदणु
दारुएण जमलोकिउ रहवरु सुरगिरि-कडय-लग्गु णं मंदरु
ताम्व समुट्ठियाइं सु-णिमित्तइं णं सचारिम सुहइं विचित्तइं
सुहु सीयलु सुअंधु अणुकूलउ वाइ समीरणु मंगल-मूलउ ४
हरिणु पधाइउ पयहिण देंतउ वामउ खरु दिहि उप्पायंतउ
ताइं णिमित्तइं णिएवि धणंजउ पभणइ तालुय-वम्म-पुरंजउ
सिणिवइ जाहि जाहि वहु-जाणउ पइं दोणहो रक्खेवउ राणउ
वम्महु णवर एक्कु पइं सीसइ जे पइं जिणइ सो को-वि ण दीसइ ८

घत्ता

सच्चइ जाहि दवत्ति परिरक्ख करेहि णरिंदहो ।
मइं णत्थंतए सूरे मारेव्वउ अज्जु जयद्दहो ॥ ९

[६]

णर-णारायण गय कुरुखेत्तहो सच्चइ पासु पत्तु तव-पुत्तहो
जहिँ सण्णद्ध कुद्ध वेयंड-व सोमय-सिंजय-कइकय-पंडव
जहिँ पंचाल-मच्छ वल-सायर पुंडरीय-परिपिहिय-दिवायर
जहिँ अवर-वि णरिंद कुरु-डामर चालिय-चारु-चामीयर चामर ४
जहिँ मयंध गंधुद्धुर सिंधुर करि-सिक्कार तहिंण-तिम्मिय-खुर
जहिँ पासाय-सम-प्पह संदण मागह-सूय-वंदि-कय वंदण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहिं णिग्गय कय-जय-सिरि संगम फुरुहुरंत तुरमाण तुरंगम
तहिं सिणि-पुत्तु पत्तु थिउ रक्खणु णं रामायणे रामहो लक्खणु ८

घत्ता

रह-गय-तुरय-णरिंद रण-रहसें कहि-मि ण माइय ।
गह-गण-रक्खस-रिक्ख णं एक्कहिं मिलेवि पधाइय ॥ ९

[७]

एत्तहे चंदकेउ तव-णंदणु विविह-महाउहु कंचण-संदणु
सेय-वत्थु सिरि-खंड-पसाहणु कणय-पुच्छ-सेयउसो (?) वाहणु
एत्तहे भीमसेणु जस-लुद्धउ वर-वेरुलिय-मइंद-महद्धउ
लउडि-विहत्थु पयाव-पसाहणु रोरी-वण्ण-तुरंगम-वाहणु ४
एत्तहे मद्दि-पुत्तु लहुयारउ हरिण-केउ कोंताउह-धारउ
एत्तहे रहे सहएउ समच्छरु हंस-केउ करवाल-भयंकरु
एत्तहे गिद्ध-चिंधु सूलाउहु भइमि भयावण-वयणंभोरुहु
ओए-वि अवर-वि तव-सुय-किंकर धाइय घोय-धार-पहरण-कर ८

घत्ता

सेण्णु असेसु-वि एवं स-रहसु सण्णहेवि पयट्टउं ।
कुरुवहं उप्परि णाइं दीसइ जमकरणु विसट्टउं ॥ ९

[८]

तो रउरव-रव-पंडव-रण-तूरइं हयमाणहं गय मुहहं व कूरइं
गलगज्जियइं मत्त-मायंगहं भीसावण-हिंसियइं तुरंगहं
गुरु-चिक्कार महारह थक्कइं चवल वहल-कलयल पाइक्कइं
णर-णारायण-पूरिय-संखहं कण्ण-कडुउ रउ हुयउ असंखहं ४
णर-गंडीव-सउरि-सारंगहं मइ सुणेप्पिणु कुरुव-कुरंगह
जाउ महाहउ पडियइं चिंधइं णं गिरिवर-सिहरइं पवि-विद्धइं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तो धयरट्ठें पुच्छिउ संजउ थिउ रण-महि पइसरेवि धणंजउ
एवहिं किं करंति कहि कउरव गलिय-पयाव पाव गय-गउरव ८

घत्ता

कलुए करेवि अखत्तु जं धाइउ वालु हयासेहिं ।
तहो पावहो फलु अज्जु दावेवउं हरि-सेयासेहिं ॥ ९

[९]

जइ पंडव परिपालिय-वंगहं जइ भीमहो विसु दिण्णु ण गंगहं
जइ जउ-भवणे ण हुयवहु लाइउ जइ अक्खेहिं ण कोउप्पाइउ
जइ दोमइहे ण किउ केसग्गहु जइ ण विराड-णयरे किउ गोग्गहु
जइ महि-अद्धु दिण्णु मग्गंतहं जइ दिवसा ण य गय कलहंतहं ४
जइ रविखउ इरवंतु पयत्तें जइ ण णिहउ अहिमण्णु अखत्तें
तो किं एत्तिउ होइ णराहिव सइं एमहिं वलंतु कुरु-पत्थिव
गए पाणिए किं वरणें वद्धें मुयहं काइं किर ओसह-गंधें
जं पहु पभणइ तं विसु केवलु पइ-मि सव्वु माराविउ कुरु-वलु ८

घत्ता

मग्गइ मेइणि-अद्धु तव-णंदणु सव्वहिं जेट्ठउ ।
पंच-वि गाम ण देइ दुम्मइ दुज्जोहणु हेट्ठउ ॥ ९

[१०]

तो दोणायरिएण महारणे कोक्किय किंकर वूहहो कारणे
आइय कुरु करंत अहिवायणु मरु मरु कहिं णरु कहिं णारायणु
कहिं अणिरुद्धु संवु कहिं पज्जुणु कहिं सच्चइ सिहंडि धट्ठज्जुणु
सइं गुरु कालसेण धय-दंडें सउवलु कउ सिएण किवु सोंडें ४
अउरगेण सइं कुरुव-णराहिवु धूमद्धय-धएण मद्दाहिवु
करि-कर-काकेयणेण वियत्तणु हरि-लंगूलएण गुरु-णंदणु

मोर महाधएण सुउ कण्णहो अण्णों लंणेण भउ अण्णहो
एम पराइय स-बल स-कलयल सयल स-वाहण साउह-कलयल ८

घत्ता

स-रहसु सं-रसु स-रोसु ओत्राहिय-रह-गय-वाहणु ।
चउ-दिस तूरइं देवि उद्घाइउ कउरव-साहणु ॥ ९

[११]

तुरयारूढें अक्खय-तोणें ताम जयद्दहु धोरिउ दोणें
सहस चउद्दह तरुण-मयंगहं आजाणेयहं लक्खु तुरंगहं
सट्ठि सहास रहहं परिसंखहं लक्खइं एक्कवीस पाइक्कहं
रक्खणु देप्पिणु सिंधव-रायहो पेसिउ वूहारुह-महि-भायहो ४
मत्त-गइंदहो णवहिं सहासेहिं तुरयहं पंचवीस पंचासेहिं
सुहडहं लक्ख चउत्थें भाएं गउ दुज्जोहणु अग्गिम-भाएं
वारह गाउयाइं आयामें वूहु रइज्जइ सायडु णामें
दस गाउयइं परम-वित्थारें गुरु-परिरक्खिएण दुव्वारें ८

घत्ता

अग्गए सायड-वूहु किउ पउम-वूहु तहो पच्छए ।
सिणिउ जयद्दहु जेत्थु सूई-मुहु तासु-वि पच्छए ॥ ९

[१२]

तिण्णि-वि वूहइं थियइं अ-भेयइं सुरवर-मणे चिंतंति अणेयइं
सगड-पउम-सूईमुहु-णामइं अइ-पिहुलइं अचंतायामइं
महिहर-तुंगइं विलिहिय-गयणइं णं जम-काल-कयंतहं वयणइं
आयइं एत्थु केम फोडेसइ केम जयद्दह-सिरु तोडेसइ ४
ताम समुट्ठियाइं दु-णिमित्तइं असिवइं सिव आयरइ विचित्तइं
वायस करयरंति लल्लक्कइं होंति अणेयइं छिक्का-वंकइं
धट्ठज्जुणेण ताम्व हय दाविय णं भयरहर-तरंग विहाविय
दिट्ठु फुरंतु महाधए वाणरु णं विझइरि-सिहरि वइसाणरु ८

घत्ता

णिएवि धणंजय-चिंधु कुरु-लोएं एम णिज्झाइउ ।
सिंधव-संढहो कज्जे संघाय-मरणु लइ आइउ ॥ ९

[१३]

तो दुज्जोहणेण मइ-मूढें उत्तम-सेय-तुरंगारूढें
दक्खाविय-फुरंत-माणिक्कहं सहसइं पंचवीस पाइक्कहं
सहसु महारहाहं सउ दुरयहं तिण्णि सयइं अइ-उत्तम-तुरयहं
तामं धणंजय-रहवरु आइउ हिम-गिरि लद्ध-पक्खु णं धाइउ ४
दढ-विणिवद्ध-गोहंगुलि ताणउ × × ×
करे गंडीउ धुणंतु कइद्धउ पासे जणद्दणु गरुड-महद्धउ
करे सारंगु ससंतु भयंकरु णं गयणंगणे स-धणु पयोहरु
विहि-मि कंड-मोक्खंतरे थाएवि पूरिय संख सत्तु णिज्झाएवि ८

घत्ता

अज्जुण-महुमहणेहिं सइं भुवेहिं लएप्पिणु वाइय ।
गह-कल्लोलें णाइं विहि-मि विण्णि(?) चंद मुहे लाइय ॥ ९

*

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभूएव-कए
उणसट्ठिमो इमो सग्गो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सट्ठिमो संधि

रहवरे चडियउ सुय-वह-वेहाइद्धउ ।
वूहइं फोडेवि मंड पइट्ठु कइद्धउ ॥१

[१]

(हेला)

गय-घड-सुहड-संकडे णिविड-भड-समूहे ।
रक्खिउ जं जयद्दहो थवेवि सूई-वूहे ॥

तं स-धणु धणंजउ भणइ एवं जइ वइरि ण मारमि अज्जु देव
जइ फोडोहेडि(?) ण करमि वूहु पंचाणणु जिम वणे हरिण-जूहु
जइ सरेहिं ण सीरमि कुरुव-लोउ तो अण्णु ण लेमि ण पियमि तोउ
गंडीउ ण धरमि ण करमि जुज्झु जइ भणमि ण दोणु ण णवमि तुज्झु
पइसरमि जलंतए जलण-जाले अहवइ पेक्खेमहि तहिं जे काले
हरि वोल्लइ मं वोल्लहि अ-भव्वु किं कउरव-साहणु संढु सव्वु
जहिं गुरु जस-धवलिय-सयल-खोणि किउ कण्णु विकण्णु कलिंगु दोणि
दूसासणु सउणि सयाउ सल्लु जहिं गुरु-सुय भूरि-भडेक्क-मल्लु

घत्ता

तिण्णि-वि वूहइं भिंदेवि जाम ण गम्मइ ।
ताम जयद्दहु अज्जुण केम णिहम्मइ ॥

[२]

(हेला)

खंडव-डाह-डामरो पंडवो पलित्तो ।
णं जुय-खय-दवाणलो पलय-पवण-छित्तो ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महुसूयण चंदाइच्च वे-वि हरि-हर-चउराणण तिण्णि ते-वि
चउ सायर पंच-वि लोयपाल जम-सणि-कलि-पलय-कयंत-काल
ओए-वि छ-वि सत्त महा-रिसिंद वसु अट्ठ णवग्गह दस दिसिंद ४
एयारह रुद्द कियावलेव दिवसयर दुवारह सयल देव
चउदह महिंद भुवण-त्ताए-वि परिरक्ख करउ अवरे-वि के वि
सरु दारुणु तोणा-जुयलु तिव्वु रहु पक्कलु करे गंडीवु दिव्वु
तुहुं जवलउ जायव-णाहु जासु कउ चुक्कइ वइरि जियंतु तासु ८
महु मरइ जयद्दहु अज्जु देव केसरि-कमे णिवडिउ हरिणु जेम

घत्ता

महु महुसूयण लहु करि करि जमलउ संदणु ।
तुज्झु णियंतहो किज्जइ कउरव-कडमद्दणु ॥ ९

[३]

(हेला)

तो जमलिउ महारहो तुरिउ केसवेणं ।
दिण्ण देव-दुंदुही गयणे वासवेणं ॥

रण-रहसुब्भडु कड्ढिय-पइज्जु पर-महिहर-पत्थिव-पलय-वज्जु
किय-कंचण-राहा-जंत-वेहु गिव्वाण-महा-सर-लिहिय-लेहु
खंडव-डह-डामरु कुरु-मसाणु तव-तालुय-बम्भ-वलावसाणु ४
परिसेसिय-उव्वसि-सुरय-सोक्खु कुरु-णर-परमेसर-वंदि-मोक्खु
रण-रामालिंगिय-वियड-वच्छु परियड्ढिय-धणु-तोसविय-मच्छु
मेरुण्णय-रहवरु वर-तुरंगु चंदक्क-चक्क-पक्कल-रहंगु
पवणुद्धुय-धयवडु धवल-छत्तु तवणिज्जावरणावरिय-गत्तु ८
गोहाजिण-वद्धंगुलिय-ताणु गंडीव-धणुद्धरु लइय-वाणु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

रहिउ धणंजउ हरि जमलउ धए वाणरु ।
णं विहिं सइलहं उप्परि तवइ दिवायरु ॥ १०

[४]

(हेला)

उड्डुवइ णरिंदहो णिय-धए पयंगो ।
हरि वोलिउ भीमहो णउलहो कुरंगो ॥
सहएवहो हंसु सुवण्ण-घडिउ हइडिंवहो गिद्धु धयग्गे चडिउ
पंचालहं पंच-वि लोयपाल वम्मह-वलएवहं मयर-ताल
सोवण्ण-सोहु सिणि-णंदणासु धय पेक्खेवि गरुडु जणद्दणासु ४
वीभच्छहो गग्गरु कंठु जाउ णयणंतरे थिउ जल-लव-णिहाउ
एत्तडेण ण सोहइ सुहड-सिंधु जण्ण-वि अहिमण्णुहो तणउं चिंधु
णिब्भच्छिउ अज्जुणु माहवेण जइ संकिउ ता किं आहवेण
वोल्लंतहं णर-णारायणाहं उप्पंगुरंत-गय-हरिण-णाह(?) ८
महुसूयणु घोसइ परम संति रिउ जिणहि पत्थ णउ का-वि भंति

घत्ता

पर-वलु पेक्खेवि णरु परियड्ढिय-मच्छरु ।
थिउ अवलोयणे कुरुवहं णाइं सणिच्छरु ॥ १०

[५]

(हेला)

तो दुम्मरिसणेण गंधारि-णंदणेण ।
वेढाविउ वलेण सोवण्ण-संदणेण ॥
स-रहसेण पवड्ढिय-कलयलेण काहल-कुल-किय-कोलाहलेण
तूर-रवोहामिय-सायरेण सर-मंडव-पिहिय-दिवायरेण
स-कवए स-धएण स-वाहणेण णरु वेढिउ किंकर-साहणेण ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छाइउ दप्प-हरण-पहरणेहिं   णव-पाउसे रवि-व महा-घणेहिं
एक्कल्लउ विंधइ सव्वसाइ   लक्खिज्जइ लक्खहं लक्खु णाइं
सर-सप्पेहिं खावइ पर-बलाइं   रिउ-ताडहं तोडइ सिर-फलाइं
गय-गिरिहिं सयदह-सय-दलाइं   फोडइ कुंभयल-सिलायलाइं
रहवरहं पलोट्टइ चिंध खंभ   पाडइ बहु जय-सिरि-कण्ण-लंभ

घत्ता

स-धणु धणंजउ सर-संधाणु ण दीसइ ।
दुम्मरिसण-बलु णवर पडंतउ दीसइ ॥

[६]

(हेला)

आयस-तोमराहया   णिग्गया गइंदा ।
तिक्ख-खुरुप्प-कप्पिया   कंपिया णरिंदा ॥

हय रह रहंग   पाडिय तुरंग
सुहडहं दु-खंड   किय बाहु-दंड
खुडियइं सिराइं   कडु-भासिराइं
छिण्णइं धयाइं   वसुमइ गयाइं
पर-बलु खयत्थु   चिंतइ खयत्थु
कहिं तणउं अज्जु   किर सामि-कज्जु
पाणह-मि इट्ठु   ण कलत्तु दिट्ठु
सिरु गयउ तो-वि   जाणइ ण को-वि
कहिं तणउ पत्थु   आइउ अणत्थु
णासणहं लग्गु   परिगलिय-खग्गु
चिंतंति के-वि   रण-दिक्ख लेवि
लइ जाहु केत्थु   सव्वह-मि पत्थु
पहरणेहिं पत्थु   वाहणेहिं पत्थु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कवणेहिँ पत्थु चिंधेहि पत्थु
अप्पणउ हत्थु किर सो-जे पत्थु १६
अप्पणउ पाउ किर सो-जे आउ
अप्पणउ देहु किर सो-जें एहु

घत्ता

जलु थलु णहयलु पत्थ-णिरंतरु दिट्ठउ ।
तं वलु भज्जेवि कुरु-वले गंपि पइट्ठउ ॥ १९

[७]

(हेला)

तो दूसासणेण साहारिया णरिंदा ।
गल-गज्जंत मत्त मोक्कल्लिया गइंदा ॥

गय-साहणु धायउ गुलुगुलंतु हय-ढक्का-रव-वहिरिय-दियंतु
सुरवर-वर-वइरि-पुरंजएण णाराएहिँ लइउ धणंजएण
कप्परियइं करि-कुंभ-त्थलाइं कड्ढियइ धवल-मुत्ताहलाइं ४
सहुं करि-विसाणइं खुडेवि घित्त णं वंस-करीरइं भुअग-लित्त
दस वीस तीस पंचास दंति एक्केक्के सरेण धरंति जंति
काह-मि कुंभयलेहिँ पइसरंति सर पच्छिम-भाएं णीसरंति
णीसरियइं काह-मि दिहि ण दिंति हत्थिहडहं णियडहं पाण लिंति ८
दूसासणु सहुं गयवरेहिँ भग्गु कप्परिय-कवउ णासणहं लग्गु

घत्ता

णर-सर-पीडिउ केण-वि कहि-मि ण दिट्ठउ ।
वण-वियणाउरु दोणहो सरणु पइट्ठउ ॥ १०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[८]

(हेला)

स-सर सरासणाउहे दढ-णिवद्ध-तोणो।
मा भज्जहो भणंतो थिउ वूह-वारि दोणो ॥

महु करयले संतए वाण-जाले को पइसइ वूहब्भंतराले
लइ वलहो वलहो आयारणेण लज्जिज्जइ किण्ण पलायणेण
संगामे मुएवि णिय-सामिसालु जीवेसहो किर केत्तडउ कालु
गुरु-वयणुच्छाहिय थक्क के-वि तो णर-णारायण पत्त वे-वि
सेयासें पणय-महा-सिरेण वोल्लाविउ सायर-रव-गिरेण
पइसारु भडारा देहि ताय रक्खेवि पइं महु तणिय छाय
मारेवउ सेंधउ संढु पाउ गोत्तारु जे जइ तेलुक्कु साउ
तो वंभणु भारवि भणइ एम मइं रक्खिउ तुहुं आहणहि केम

घत्ता

अज्जुण एत्थहो जइ एक्कु-वि पउ गम्मइ।
तो पइं रण-मुहे दूसल-णाहु णिहम्मइ ॥

[९]

(हेला)

एम भणेवि झंपिओ अज्जुणो सरेहिं।
णं विंझइरि पाउसे स-जल-जलहरेहिं ॥

गुरु सीसें णवहिं सरेहिं णिहउ तेण-वि स-कण्हु दु-गुणेहिं पिहिउ
हय जोव जोव गंडीव-हत्थु घणु पाडमि किर चिंतवइ पत्थु
तो आसत्थामुप्पायणेण गुणु छिण्णु कमंडलु-केयणेण ॥
जो अवर करेवि दूसह-पयावें खंडव-णिमित्त-सिहि-दिण्ण-चावें

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छहिं सत्तहिं दसहिं सएण विद्धु   पुणु सएहिं सहासेहिं पडिणिसिद्धु
पुणु लक्खेहिं पुणु अगणिय-सरेहिं   कुरु खद्ध णाई बहु विसहरेहिं
वज्जमएहिं चूरिय सयल जोह   अग्गिमएहिं दड्ढ महारहोह
वाउमएहिं उद्धविय गइंद   सूरमएहिं संताविय णरिंद

घत्ता

जे जे पत्थेण   दिव्व महासर पेसिय ।
ते ते दोणेण   पडिसरेहिं णिण्णासिय ॥ १०

[१०]

(हेला)

दोण-महाघणेणं   णाराय-किरण-कूरो ।
तेहत्तरि सरेहिं   परिपिहिउ पत्थ-सूरो ॥

अवरेण थणंतरे जणिउ डाहु   तिहिं वाणरु पंचहिं पउमणाहु
तिण्णि-वि आसीविस-फणि-मुहेहिं   पडिवारा पिहिय सिलीमुहेहिं
गुरु-चरिउ णिएप्पिणु वासुएउ   चिंतवइ ण किज्जइ कालखेउ
जज्जाहि धणंजय वेय-गमणु   गुरु-सीसहं किर संगामु कवणु
जं एम वुत्तु णारायणेण   रहु दिण्णु णं दु-णारायणेण
भालयले ठियउ जो पट्ट-बंधु   सोवण्णइं सक्कि रहवखंधु(?)
पयहिण करेवि गउ सव्वसाइ   पर-बल जगडंतु कयंतु णाइं
जमलीकिउ हरि-रहु दारुएण   णं सिहि संधुक्किउ मारुएण
फोडेप्पिणु वूहहो तणउ वारु   पइसरइ करेप्पिणु हत्थियारु

घत्ता

अज्जुण-मग्गए   कुरु-गुरु पच्छए धावइ ।
जले बोलीणए   वरणु णिबद्धउ णावइ ॥ ११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[११]

(हेला)

पिइ-सुय थाहि थाहि कहि जाहि महु जियंतो ।
अच्छमि हउं जयद्दहो वइरि-कुल-कयंतो ॥

पणवेप्पिणु सुरवइ-सुएण वुत्तु तुहुं गुरु हउं आसत्थामु पुत्तु
तुहुं पंडु जुहिट्ठिलु पउमणाहु जुज्झेवए ताय म करहि गाहु
पइं सहुं ण भिडंतहो कवणु दोसु सो हम्मइ उप्परि जासु रोसु
गउ एम भणेवि किरीड-मालि पर-बले करंतु दारुण दुवालि
परिरक्ख जुहामण-उत्तमोज्ज तो दोणहो वलिय विढत्त-लज्ज
पडिलग्गु पत्थु पर-पत्थिवाहं वंगंग-कलिंग-णराहिवाहं
जउहेय-जवण-जालधराइं गंधारि-मगह-मद्देसराहं
कंवोज्ज-होज्ज-णारायणाहं सग-सूरसेण-पमुहहं गणाहं

घत्ता

एक्कु धणंजउ लक्खइं णरवर-विंदहं ।
फोडइ जोहइ सीहु व मत्त-गइंदहं ॥

[१२]

(हेला)

सइं खर-पवण-पूरिओ रसइ देवयत्तो ।
हय वर फुरहुरंति थरहरइ रहु वहंतो ॥

उत्थरइ चक्क-चिक्कारु घोरु पवियंभइ णर-केसरि-किसोरु
गंडीउ भमइ सर णीसरंति कोसावहे खग-वि ण संचरंति
विप्फुरइ कणय वाणरु धयग्गे णं तवइ तवणु तणु-गयण-मग्गे
हरि पेक्खइ पहरइ सव्वसाइ एक्कल्लउ णरवर-कोडी णाइं
पडिवारउ पच्छए लग्गु दोणु हर वह-व खंधु वसहुद्ध-घोणु (?)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुणु णर-णारायण वे-वि विद्ध   णं णर-मुहे जमेण वि-रह विद्ध (?)
णरु णिहउ पंचवीसहिं सरेहिं   णं मंतु करंतेहिं अक्खरेहिं
वम्हत्थें अत्थें पडिणिसिद्ध   पुणु णर-णारायण वे-वि विद्ध
विहिं पंचहिं अज्जुण-संगएहिं   णक्खत्तणेमि दस-सत्तएहिं

घत्ता

थुउ गुरु सीसेण   जाहिं ताय णिय थामहो ।
किं रूसेवउ जुत्तु   उप्परि आसत्थामहो ॥

[१३]

(हेला)

एम भणंतु अज्जुणो   गउ गुरु णियत्तो ।
भिण्णेवि वेण्णि वूहइं   तइययं वि पत्तो ॥

पइसंतु धणंजउ पडिणिसिद्धु   कियवम्में दसहिं सरेहिं विद्धु
तिह णरेण णरिंदासंसएण   पंचासेहिं जायव-वंसिएण
पंडवेण एकत्रीसेहिं सरेहिं   धणु अवरु छिण्णु कड्ढेवि करेहिं
वीसद्धेहिं पत्थु थणंतराले   कह-कह-वि ण पाडिउ तेत्थु काले
वच्छत्थले णवहिं णरेण भोउ   मुच्छाविउ वेविउ कुरुव-लोउ
हरि भणइ धणंजउ पडिणिसिद्धे   पडिवारउ उप्परि चिंधे चिंधे
जं एम पवोल्लिउ णर-मुरारि   तं वंचेवि गउ गंडीव-धारि
हक्कारिउ ताव सुदक्खिणेण   कंबोज णराहिव-सक्खिएण

घत्ता

ताम पराइउ   स-सरु स-कड्ढिय-धम्मउ ।
पत्थहो पच्छए   जिह कयंतु कियवम्मउ ॥

12.2 J उच्चलइ. 7b-9a Bh. drops.

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

[१४]

(हेला)

ताम समुत्तमोऽज्ज- जुहमण्ण चक्क-रक्खा ।
भोयाहिवहो धाइया वे-वि बद्ध-लक्खा ॥

सम-कंडिउ विहि मि धणुद्धरेहिं ते तेण-वि सत्तिहिं मग्गणेहिं
तेहि-मि तहो वीसहिं मग्गणेहिं धणु छिद्दु विद्ध पडिलग्गणेहिं
ते अवरु सरासणु लेवि ताहं छिण्णइं धणुहरइं धणुद्धराहं ॥
अवरइं विहिं विण्णि सरासणाइं लइयइं जम-भउंहा-भीसणाइं
कियवम्मु णिवारेवि जंति जाम णर-रहवरु दूरीहूउ ताम
पइसारु ण लद्धु णियत्त वे-वि पहरंति परिट्ठिय कहि-मि ते-वि
तहिं अवसरे माण-महिंद-थक्क दोहि-मि णरेण पेसिय पिसक्क ॥
तोडियइं सिरइं पंकयइं जेम थिय सयल णराहिव णिरवलेव

घत्ता

सामिय-अवसरे रण-रहसुद्धुय-खंधेहिं ।
सीसइं देप्पिणु णच्चिउ णाइं कबंधेहिं ॥

[१५]

(हेला)

माण-महिंद-महणे संदणो पयट्टो ।
णं हय-गय-णरिंदहं भमइ मयइवट्टो ॥

कइ-केयणु णाइं कयंतु पत्तु गुंजइ हरि-संखु ण देवयत्तु
गज्जइ गंडीउ महा-रउद्दु णं महणावत्थहे गउ समुद्दु
गोंदलु कोलाहलु वहलु जाउ णं भिण्णु तिसूलें कुरुव-राउ
अहो अहो सामंतहो जहि(?)ण भाहु थिय णिय-णियि-थाणंतरेहिं थाहु ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एहु कलयलु केवलु वणे(?) अणत्थु   पइसारिउ महुमहणेणं पत्थु
ण णिवारिउ केहि मि राणएहिं   गुरु-पमुहेक्केक्क-पहाणएहिं
तं सुणेवि सुआउहु भणइ एम   दुज्जोहण महु देव वि अ-देव
मणुसहुं अवज्झु वरुणहो वलेण   को छिवइ जयद्दहु करयलेण ॥ ८

घत्ता

वाणर-चिंधेण   जमलोकिएण कयंते ।
एउ धणंजउ   जइ संहरिउ कियंते ॥ ९

[१६]

(हेला)

ताम सुरिंद-णंदणो   रुंद-संदणत्थो ।
कुरुहुं जणद्दणेण   पइसारिओ अणत्थो ॥

चूरंतु असेसइं साहणाइं   रह-तुरय-दुरय-वर-वाहणाइं
धय-छत्तइं चिंधइं चामराइं   कर-धरणंगुलि-सिह-सेहराइं
पोवरणाहरणइं साहणाइं   णं महिहे णिंतु तारायणाइं ४
जं दिट्ठु धणंजय-रवि तवंतु   सर-किरणेहिं कुरु-तरु णिद्दहंतु
तं समुहोवाहिय-संदणेण   हक्कारिउ वरुणहो णंदणेण
हेवाइउ तल-तालुय-मएहिं   अवरेहिं समर-तण्हालुएहिं
णामेण सुआउहु हउं पसिद्धु   जसु पहरणु वारुण-तणउ सिद्धु ८

घत्ता

एम भणेप्पिणु   छाइय सर-जालें ।
णर-णारायण   जिह पाउस-कालें ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१७]

(हेला)

ताम धणंजएण सर कप्पिया सरेहिं ।
णं विसहर णिवारिया विसम-विसहरेहिं ॥

तो वरुण-सुएण सुआउहेण कोवंड-चंड-कंडाउहेण
तहिं अज्जुणु एक्कें चिंधे विद्धु सत्तरिहिं जणद्दणु पडिणिसिद्धु
णउइहिं णारएहिं णरेण विद्धु तो सरि-सुएण सत्तरि-णिसिद्धु
पंडवेण संख-परिवज्जिएहिं बाणेहिं गंडीव-विसज्जिएहिं ४
हउ सारहि सीरिय वर तुरंग धउ पाडिउ दोहाइय रहंग
तहिं अवसरे सरि-रयणुक्ख-गत्त गय चिंतय वारुणि वारुणत्त
जइयहुं वण्णासए लद्धु पुत्तु तइयहुं पणवेप्पिणु वरुणु वुत्तु
अजरामउ किज्जइ किण्ण तोउ गय दिण्ण तेण लइ एम होउ ८

घत्ता

पुणु-वि णियंविणि पियएण पयत्तें वुच्चइ ।
जो ण-वि जुज्झइ तहो संगामे ण मुच्चइ ॥ ९

[१८]

(हेला)

चिंतियमेत्त आय सा णहयलाणुलग्गा ।
णाइं सु-कंत कंतहो करयले वलग्गा ॥

जा करिवर-करड-मयंबु-सित्त वर-चंदण-कद्दम (?) -विलित्त
सुर-कुसुमोमालिय दिण्ण-धूअ कंकाल-करणि जम-पडिम धूअ
दुद्दम-णरिंद-विद्दवण-सील णं गय-णिहेण थिय अमर-लील
दुपक्ख-तिक्ख-पडिवक्ख-पलय परिमल-मेलाविय-भसल-वलय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जग-जीव-गवेसण-कारण-कुंढ णं काल-गइंदहो तणिय सुंढ
खय-कारिणि णरवरहं (?) पदीह णं विउल ललाविय जमेण जीह
भूमीव भुवण-भोयण-रुसाढ णं गलिय कयंतहो तणिय दाढ
कालायस-घडिय सुवण्ण-वण्ण णं फुरिय-महामणि णाग-कण्ण

घत्ता।

भणइ जणद्दणु जइ पट्ठविय महा-गय ।
तो विहिं एक्कु ण-वि दुक्करु जावइ धणंजय ॥

[१९]

(हेला)

जिज्जइ एह लउडि उज्झिएण पहरणेणं ।
जइ एव-मि पसिद्धि तो काइं जुज्झिएणं ॥

एहु अज्जुण भरु सव्वो-वि मज्झु थिउ कारणु भारिउ तउ असज्झु
थिउ मुएवि धम्म-संधाणु पत्थु हउं करमि उवाएं रिउ णिरत्थु
हक्कारिउ वइरि तिविक्कमेण लइ मेल्लि लउडि णिय-विक्कमेण
तो कोवे गएण गयाउहेण परिचिंतिउ एउ सुआउहेण
किं किज्जइ अण्णें आहवेण णरु णिहउ जे णिहएं माहवेण
उक्कमइ एहु जे कलह-मूलु फेडिज्जइ कउरव-पट्टसूलु
तो मुक्क गयासणि महुमहासु दहगीवें सत्ति व लक्खणासु
जीमुत्तें विज्जु व महिहरासु हिमवंते गंग व सायरासु

घत्ता

हरि-वच्छ-त्थले पडिय णियंतहो इंदहो ।
णाइं चडाविय कमल-माल गोविंदहो ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२०]

(हेला)

णिएवि अ-जुज्झमाणु हरि पडिगया गया सा ।
तासु जे पडिय मत्थए विज्जुला-विलासा ॥

जं णिहउ सुआउहु रणे रउद्दु तं धाइउ किंकर-वल-समुद्दु
पवणुद्धुय-धय-कल्लोल-लोलु गय-णक्क-गाह-उच्छलिय-रोलु
दप्पहरण-पहरण-जलयरोहु सेयंग-तुरंग-तरंग-सोहु
हक्कारिउ णरु मुए वाण-जालु कहिं गम्मइ हणेवि अ-सामिसालु ४
तो पत्थें छिण्णइं छत्त-धयइं स-सरीरइं सीसइं सरेहिं हयइं
विणिवाइय हय-गय-रहवरोह कप्परिय खुरुप्पेहिं सयल जोह
रुहिर-णइ वहाविय अप्पमेय णर-रुंड पणच्चाविय अणेय
पहरंत के-वि धरणियलु पत्त णासंति के-वि सर-भरिय-गत्त ८

घत्ता

को-वि धणुद्धरु अज्जुणु णिएवि रण-त्थले ।
स-सर-सरासणु घिवइ सयं भुव-मंडले ॥ १०

*

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए सट्ठिमो इमो सग्गो ॥

*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक्कसट्ठिमो संधि

कप्पिय-कुरु-करिंद-कुंभ-त्थलु कड्ढिय-कित्ति-धवल-मुत्ताहलु ।
धय-लंगूलु सरासण-आणणु वियरइ रण-वणे णर-पंचाणणु ॥ १

[१]

विणिवाइए वण्णासा-णंदणे किय-गय-घड-भड-थड-कद्दवंदणे
जिह गयवरु गयवरहो समत्थहो भिडिउ सुदक्खिणु रणमुहे पत्थहो
करे गंडीउ करेवि रणत्थले सत्तहिं सरेहिं विद्धु वच्छ-त्थले
तेण-वि दसहिं सिलासिय-बाणेहिं तिहिं माहउ जम-दूय-समाणेहिं ४
णरु पडिवारउ पंचहिं ताडिउ तेण स-धणुहु महा-धउ पाडिउ
रहु खंडिउ चक्कइं विक्खिण्णइं सारहि-तुरय-सरीरइं भिण्णइं
सत्ति सुदक्खिणेण तहो पेसिय असइ-व सु-पुरिसेण परिपेसिय

घत्ता

तेल्ल-धोय वर-कुसुमेहिं अंचिय एंति धणंजएण स-वि वंचिय ।
विद्धु णराहिउ उरे तिहिं बाणेहिं पउ-वि ण चल्लिउ मेल्लिउ पाणेहिं ॥ ८

[२]

कुरुहुं णियंतहं पडिउ रणंगणे देवेहिं कलयलु किउ गयणंगणे
दोणहिं(?णेण) भणिउ सुदक्खिणु मारिउ सूईवूहु णरिंदेहिं सारिउ
तहिं अवसरे णिय-णाम-पगासेहिं वेढिउ छहिं सामंत-सहासेहिं
रहवर-गयवर-हयवर-जोहेहिं हम्मइं विविहाउह-विच्छोहेहिं ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लइय धणंजएण णाराएहिं 		तीरिय-तोमर-कण्णिय-घाएहिं
वइहत्थिय-वेसढ-वावल्लेहिं 		वच्छदंत-खुरु-भल्लु(?)-भल्लेहिं
अद्धयंद-वर-सूयर-कण्णेहिं 		आएहिं अन्नेहि-मि वहु-वण्णेहिं
दिट्ठि-मुट्ठि-संधाणु ण दावइ 		भमइ अलाय-चक्कु धणु णावइ 	८
विंधइ एक्कु अणेय-विलासेहिं 		सर दीसंति णवर चउ-पासेहिं
साहणु णिरवसेसु लोट्टाविउ 		जंवुय-वूहु सिवेहिं वोट्टाविउ(?)

घत्ता

रहगय-तुरय-जोह-जंपाणइं 		पडियइं वहुयइं अ-प्परिमाणइं ।
वहु-कालहो किसि-कम्मु करंतें 	सूडिउ वल्लरु णाइं कयंतें ॥ 	११

[३]

सारहि विण्णवंतु धुर-धारा 		वेण्णि वि-रह ण वहंति भडारा
हय थक्कंति चलंति ण चक्कइं 		कम्मइं थियइं होंति ललक्कइं
मग्गु ण लब्भइ सिर-पाहाणेहिं 		पहरण-कंटएहिं अ-पमाणेहिं
गय-गिरिवरेहिं महागुरु-काएहिं 		उद्ध-कवंध-खुंट्ट-संघाएहिं 	४
रह-रुक्खेहिं पडिएहिं अदंडेहिं 		सोणिय-पूरायारिय-खंडेहिं
णं णर-झंखरेहिं भुय-डालेहिं 		णह-कुसुमेहि अंगुलिय-पवालेहिं
रुहिरामिस-विमद्द-चिक्खिल्लेहिं 		चक्क-तुरंगेहिं दुप्परियल्लेहिं
ताव विहंग-सिरेहिं सव फेडिय 		कहइ सु-खेडएहिं रह खेडिय 	८

घत्ता

णरु जगडइ माहउ जगडावइ 		सर लिहंति गंडीउ लिहावइ ।
विंधइ तुरय संख उवलिंगइ(?) 	किं जमकरणहो मत्थए सिंगइं ॥९

Jain Education International 		For Private & Personal Use Only 		www.jainelibrary.org

[४]

तोव चयारि सहोयर भायर णिम्मज्जाय जाय णं सायर
ताहं सयाउ राउ पहिलारउ अंबुआउ रण-भर-धुर-धारउ
दीहराउ णिउ णाउ चयारि-वि जाहुं ण समरे मल्लु तिउरारि-वि
धाइय संदणेहिं सोवण्णेहिं छत्तेहिं पंडुर-पड-पच्छण्णेहिं ४
चामरेहिं चामीयर-दंडेहिं अमर-सरासण-सम-कोवंडेहिं
तहिं जेट्ठाणुजेट्ठ-कमवत्तेहिं विहि-मि समच्छरु रणे पहरंतेहिं
विद्धु धणंजउ दस-सय-वाणेहिं छिण्ण तेण तेत्तिहिं पमाणेहिं
तोमरेण उरे भिण्णु सयाएं णं तरु कंपाविउ दुव्वाएं ८

घत्ता

अणुजेट्ठेण सुहड-सद्दूलें गरु दूसहु जे समाहउ सूलेंहि ।
मुच्छा-विहलंघलु गय-सण्णउ अज्जुणु थिउ धय-थंभे णिसण्णउ ॥

[५]

णिएवि अवत्थ पुरन्दर-तोयहो पुण्ण मणोहर कउरव-लोयहो
पंडव खयहो जाउ कलि-रोहणु भुंजउ सयलु पुहवि दुज्जोहणु
जाउ पसाएं कुरु-कुलु णंदणु वसुमइ-वसु-भर-भारिय-फंदणु
एहु जो संख-चक्क-गय-धारउ एवंहि कहि-मि जाउ मायारउ ४
कलयलु किउ वहु णरवर-विंदें सइं सारंगु लयउ गोविन्दें
पूरिउ पंचयण्णु रव-संदणु दारुव वाहि वाहि तहिं संदणु
अच्छइ जहिं परिवड्ढिय-विग्गहु मइं मारेवउ पाउ जयद्दहु
जाम ण ढुक्कइ रवि अत्थवणहो जाम ण ईदु जाउ णिय-भवणहो ८

घत्ता

ताम पइज्ज णेमि णिव्वाहहो देमि वसुंधर पंडव-णाहहो ।
एत्तिउ णवर एक्कु अवरत्तउ जं ण णरेण दिट्ठु पहरंतउ ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[६]

चेयण लहेवि ताम सेयासें जोइउ णाइं कयंत-महासें
वाम-करेण लयउ वाणासणु वारिउ खंडवे जेण हुवासणु
जेण णिवालय-कवय णिवाइय काल-कंज सम-घाएं घाइय
जेण णियत्तिउ गोग्गहे गोहणु छंडाविउ रण-महि दुज्जोहणु ॥ ४
जेण अणेय वार जालंधर छंडाविय धणुवरइं धणुद्धर
तं गंडीउ लएवि सहत्थें किउ वइसाह-वाणु रणे पत्थें
सरवर-सहसएण रिउ रुद्धा जममुह-कुहरे चयारि-वि छुद्धा
पंच सयइं किंकरहं समत्तइं रहिय पंच सयइं महि पत्तइं ८

घत्ता

सलहहं तणिय इत्ति जिह धावइ एक्कहो एक्कु-वि खंडु ण पावइ ।
जाय महावलु रणे सर-जालहो थिउ अवयच्छिउ जे मुहु कालहो ॥ ९

[७]

तहिं अवसरे णरु वरिउ वरेण्णेहिं पारव-दरयाभीसव-सेण्णेहिं
भोट्ट-कोंठ-जावण-जउहेएहिं जालंधर-णारायण-मेएहिं
मउरल-केरल-कउहड-णामेहिं पच्छल-मेहल-गणेहिं पगामेहिं
मालव-मद्दव-गण-गंधारेहिं ललिय-तुरुक्क-तिउड-तोक्खारेहिं ४
वहुहिं रण्ण-पुरवासिय-राएहिं णाहल-मेच्छ-पुलिंद-चिलाएहिं
वव्वर-लंपड-कक्कस-कीरेहिं गुज्जर-गउड-लाड-आहीरेहिं
ताइय-तामलित्त-वंगंगेहिं दाहिणत्त-कंवोय-कलिंगेहिं
सुंड-पउंड-कुणिंद-कुणोरेहिं कंसावरणावरिय-सरीरेहिं ८

घत्ता

आएहिं अवरेहि-मि सामंतेहिं वेढिउ अज्जुणु एक्कु अणंतेहिं ।
सरु एक्केक्कु करइ वहु-वाणेहिं सव्व धवावइ वाण-सहासेहिं ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[८]

विंधइ पत्थु णियय-विण्णाणेहिं सरु एक्केक्कु करइ बहु-बाणेहिं
कुंजर वीस सहासय पोयइ(?) जमलीहोइ जणद्दणु जोयइ
जेम तुरंगम तेम णरिंद-वि तेम पयत्थ महा-भड विंद-वि
किर होसंति कहि-मि खायंतहो सुंवाल्लखइं(?) कयइं कयंतहो ४
कत्थइ हय-गय-सुहड-सहासेहिं पुंजोकयइं सेल-संकासेहिं
कत्थइ णर-सर-विसहर-भीयइं णट्ठउ दिसउ लएवि अणीयइं
कत्थइ सर-विभिण्ण गय गयवर गय-पय-सय-सचूरिय हयवर
रह रहंग रंगाविय रहवर हय-खुर-खुण्ण ण उट्ठिय किंकर ८

घत्ता

एम पलायमाण बहु मारिय रह गय तुरय जोह वइसारिय ।
किय रण-महि बल-पड-पंगुत्तो पाडिय जमेण णाइं समसुत्ती ॥ ९

[९]

तहिं अवसरे जल्लंधु समुट्ठिउ णं सवडम्मुहु एक्कु परिट्ठिउ
पीडिउ पत्थु तेण सर-जालें णं णंदंतउ देसु दुकालें
छिण्णु णरेण-वि णिय-विण्णाणेहिं गिलिय णाइं झस झस-संघाएहिं
रहवरोवकरणइं णिट्ठवियइं सव्वइं रण-वसुमइ पट्ठवियइं ४
घाइउगय-विहत्थु गोविंदहो णावइ मत्त-गइंदु मइंयहो
देइ णदेइ घाउ किर जावहिं विजएं लउडि वियारिय तावहिं
अवर गयासणि लइय तुरंतें णाइं ललाविय जोह कयंतें
सवि णाराय-सहासेहिं ताडिय विहिं वे बाहु खुरप्पें पाडिय ८
अवरें तोडिउ सीसु स-कुंडलु णं तरु-तल-खुंटहो परिणय-फलु

घत्ता

पडेवि ण इच्छिउ थिउ गयणंगेण णर-णारायण धरेवि रणंगणे ।
स-रहसु समुहु स-मच्छरु धावइ गय-मुहु चंदाइच्चहुं णावइ ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१०]

तं तेहउ णिएवि आओहणु एक्क-महारहेण दुज्जोहणु
दिव्व-सरीरावरणावरियहो पासु पढुक्कउ दोणायरियहो
ताय ताय महु केरए साहणे किंकर-दुरय-तुरय-रह-वाहणे
वे-वि पइट्ठ पत्थ-गरुडासण लग्ग णाइं वणे पवण-हुवासण ४
जइ सावेण सरेण-वि मारहि तो किं वइरि वूहे पइसारहि
गरु ण भग्गु ण जयद्दहु रक्खिउ होहि णिरुत्तउ पंडव-पक्खिउ
खत्तिउ मुएवि भिच्चु किं भुज्जइ डोड्ड-किराडहं एउ ण-वि जुज्जइ
किवि-कंतेण वुत्तु तो राणउ तुहुं महु आसत्थाम-समाणउ ८

घत्ता]

भणु भणु कुरुव-राय जं वुच्चइ को णारायण-णरहं पहुच्चइ ।
केत्तिउ दिवे दिवे कलहु पउंजहि दुण्णय-दुमहो फलइं अणुहुंजहि ॥ ९

[११]

तो गंधारि-पुत्तु आहासइ अज्ज-वि ताय कज्जु ण विणासइ
अज्ज-वि सुहडहं सिरइं ण छिंदइ × ×
अज्ज-वि अट्ठ-महारह-पासेहिं अज्ज-वि रक्खिउ सयण-सहासेहिं ४
अज्ज-वि सुसइ ण कुरुव-महादहु अज्ज-वि सव्वहं मज्झे जयद्दहु
पइं जे भडारा तेत्तहिं ठवियउ कंदंतु-वि ण घरहो पट्ठवियउ
भणइ दोणु वूहइं दुब्भेयइं अंतरे अंतरे बलइं अणेयइं
जहिं रह-गय-तुरंग-हय पत्थे संदणु केम जाइ तें पंथें ८
हउं सु-महत्तरु जिह परिसक्कमि पवलु धणंजउ जिणेवि ण सक्कमि

घत्ता

जाहि णराहिव अप्पणु जुज्झहि सुरवइ-सुयहो परक्कमु वुज्झहि ।
मइं संगामु महंतु करेव्वउ अज्जु जुहिट्ठिलु अवसु धरेव्वउ ॥ १०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१२]

कंचण-कवउ दिव्वु आइज्झहि जेण रणंगणे सुर-वि णिसिज्झहिं
इंदहो तणउ पत्तु अंगिरसहो पुणु सुमरंति(?) पुणु सिहि वइसहो
पुणु महु मइ-मि दिण्णु तहो पत्थिव णर-णारायण जिणहि णराहिव
दिव्वु सरासणु दिव्व महा-सर दिव्वु तोणु लइ कुरु-परमेसर ४
सायर लोयवाल णइ गिरिवर रिसि वसु गह दिस चंद-दिवायर
सासण-देवयाउ आहंडलु सव्वइं देंतु णराहिव मंगलु
तेण-वि लइयइं कुरुवइ-हत्थहो गउ दुज्जोहणु पच्छए पत्थहो
दोणु-वि वूह-वारे ठिउ जावहिं पंडव-सेण्णु पराइउ तावहिं ८

घत्ता

वाहिय-रह-गय-तुरयाणीयइं आहय-तूरइं पहरण-वीयइं ।
किय-कलयलइं रुद्ध-रण-मग्गइं पंडव-कुरुव-वलइं पडिलग्गइं ॥ ९

[१३]

सव्वारोहु करेवि स-वाहणु धाइउ तिहिं मुहेहिं कुरु-साहणु
पहिलए गुरु कियवम्मु दुइज्जए मुहे जलु संवु परिट्ठिउ तिज्जए
तो स-सरासण-कर-परिहत्थें जिय विंदाणुविंद रणे पत्थें
जमलेहिं सउणि-मामु ओसारिउ सच्चइ दूसासणेण णिवारिउ ४
सल्लु जुहिट्ठिलेण सोवण्णेहिं पहउ पिसक्केहिं सत्तावण्णेहिं
तहिं महाहिव-तव-सुय-संगरे कियवम्मेण दिण्णु रहु अंतरे
चूरेवि चंदिर-चमु वीसत्थउ स-रहसु स-सर-सरासण-हत्थउ
धाइउ भीमसेणु जरसंधहो णं गयवरु [गयवरहो मयंधहो ८

घत्ता

तो पारावयास-सोणासहं धुय-केसर-केसरि-संकासहं ।
घोरागारे समरे आभिट्टइं धणु-वावारहो अवसरे फिट्टइं ॥ ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१४]

असि-फर-करु धट्ठज्जुणु धाइउ दोणहो रहवरे चडिउ महाइउ
देइ ण देइ घाउ सिरि जावहिं दसहिं सरेहिं छिण्णु असि तावहिं
चामीयर-चामरु सय-चंदउ खंडिउ सर-सएण वसुणंदउ
चक्क-रक्ख विहिं वे-वि णिवारिय सट्ठिहिं कह-वि तुरंग ण मारिय ४
अवरें किर वच्छ-त्थले भिंदइ सच्चइ चाउ ताम तहो छिंदइ
विहि-मि परोप्परु वाणेहिं छाइउ विहि-मि परोप्परु कह-व ण घाइउ

घत्ता

विहि-मि परोप्परु छिण्णइं छत्तइं चिंधइं विहि-मि वसुंधर पत्ताइं ।
सुरवर रण-रस-रहसुद्धूआ रणु पेक्खन्तहं कोडीभूआ ॥ ८

[१५]

तो सिणि-सुएण सरासणु ताडिउ पहिलउं वीयउं तइयउं पाडिउ
एम चउत्थउं पंचमु छट्ठउं सउ एकोत्तरु जाम पणट्ठउं
गुरु चिंतवइ चित्तु वड्ढारउं अइसंधिउ विण्णाणु महारउं
जं ण णरहो रामहो गंगेयहो धणु-विण्णाणु सव्वु तं एयहो ४
मणे चिंतेवि मुक्कइं दिव्वत्थइं सच्चइ सव्वइं करइ णिरत्थइं
दोणें सरु अग्गेउ विसज्जिउ वारुणेण सिणि-सुएण परज्जिउ
सोमय-सिंजएहिं एत्थंतरे सव्वेहिं दिण्ण महारह अंतरे
उट्ठिउ रण-रउ कहि-मि ण माइउ णं अ-कुलीणउं उप्परि धाइउ ८

घत्ता

वियलिय-खग्गइं मुक्क-केसइं भग्गइं कउवर-वलइं असेसइं ।
कुसुमइं पंडव-भडेहिं पयंडेहिं घित्ताइं सुरेहिं सइं भुव-दंडेहिं ॥ ९

*

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए एकसट्ठिमो सग्गो ॥

⊕

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बासट्ठिमो संधि

खंडव-डामरु चाव-करु णारायण-किय-साहेज्जउ ।
कणय-कइद्धउ दिव्व-रहु पर-बलु पइसरइ धणंजउ ॥१॥

[१]

(मात्रा)

रहहो दूसहु चक्क-विकारु
गंडीवहो विसमु रउ अइ-रउरउ सरु देवयत्तहो ।
तिहिं वहिरिउ कुरुव-बलु समुहु को-वि णउ णरहो जंतहो ॥

(मंजरी)

सर भमंति कोसावहि चउहु-मि पासेहिं ।
पहरणाइं परिचत्तइं सुहड-सहासेहिं ॥
परिसक्कइ रहवरु जेम जेम णासंति धणुद्धर तेम तेम
फुट्टंति दिसो-दिसि रिउ-बलाइं मंदरहो जेम जलणिहि-जलाइं
तो णरहो वलिय विंदाणुविंद णं सीहहो मत्त महागइंद
णं चिरु जमलज्जुण महुमहासु णं चंदाइच्च महा-गहासु
कंचण-रह कंचण-चाव-दंड कलहोय-विंदु-चित्तलिय-कंड
धवलायवत्त धूवंत-चिंध दुव्वार-वइरि-वाहिणि-णिसिद्ध
चउसट्ठि-पिसक्केहिं पिहिउ पत्थु सत्तरिहिं सउरि सारंग-हत्थु
सरसउ सारिच्छ-भुवंगमाहं लाइउ अट्ठहेहिं तुरंगमाहं

(घत्ता)

वाणेहिं णवहिं णवहिं णरेण वे-वारउ छिण्णइं चावइं ।
दुट्ठ-कलत्तइं जिह थियइं णिग्गुणइं अणुज्जुअ-भावइं ॥१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२]

(मात्रा)

हय तुरंगम णिहय जुत्तार
चिंधाइं दोहाइयइं पाडियाइं सेयायवत्तइं ।
कंचण-चावइ आहयइ चक्क-रक्ख-चक्कइं विहत्तइं ॥

(मंजरी)

चामराइं धवलाइ मणोहर-दंडइं ।
साडियाइं रिउ-जोहहं णं जस-खंडइं ॥

उब्भड-भू-भंगुर-भिडिउ भीसु अवरेण खुरुप्पें खुडिउ सीसु
रण-रहस-वसुद्धुय-अवय-खंधु दस-दिसइं गंपि णिवडिउ कबंधु
विणिवाइए विंदे महाणुभावे दारुण-दवग्गि-दूसह-पयावे
अणुविंदु पधाइउ तेण-काले णारायणु लउडिए हउ णिडाले
तो पत्थे सट्ठिहिं मग्गणेहिं आसीविसाहिं विसमाणणेहिं
सिरु पाडिउ पाडिय बाहु-दंड चरणोरु वे-वि किय खंड-खंड
किंकर-साहणु पहरंतु पत्तु णिविसद्धहो अद्धें सो समत्तु
विंदाणुविंद विहविय जाम मज्झण्हहो गउ दिवसयरु ताम

घत्ता

भणइ जणद्दणु पत्थ पइं पायत्थें वइरि धरेवा ।
तिसिय तुरंगम समहो गय सारहि-वि विसल्ल करेवा ॥

[३]

(मात्रा)

भणइ फग्गुणु माहवासण्णु
रण-रुक्खहो उड्डुवमि करयरंत कउरव-विहंगम ।
सारहि-वि मेल्लंतु इह जलु पियंतु इच्छए तुरंगम ॥

(मंजरी)

भणइ कण्हु तं पाणिउ कहिं पाविज्जइ ।
एत्थु णत्थि सरि सरवरु केत्तहे पिज्जइ ॥

णारायणु पभणिउ अज्जुणेण   सर दिण्ण दिव्व महु पज्जुणेण
गंगेयहो जलु दक्खविउ जेहिं   कड्ढमि भाईरहि तलहो तेहिं
सहसत्ति विसज्जिउ बाण-जालु   महि दारिय जाउ महा-खयालु
कड्ढिय विचित्त पायाल-गंग   तारोह-तार-तरलिय-तरंग
हल्लिर-महल्ल-कल्लोल-लोल   परिहच्छ-मच्छ-कच्छव-विओल
हर-ससहर-कर-संचलिय-तोय   हरि-चरण-णह-प्पह-जाय-धोय
तुहिणइरि-तहिण कारण-विसुद्ध   णइ णिग्गय पावण वण-समिद्ध
किउ सरि जे महासरु पंडवेण   पच्छाइउ सो सर-मंडवेण

घत्ता

अच्छउ दारुणु ताम रणु   सुरवरेहिं णहंगणे वुच्चइ ।
जं जलु कड्ढिउ अज्जुणेण   लइ एण जि किण्ण पहुच्चइ ॥ १४

[४]

(मात्रा)

मुक्क संदण डीण जोत्तार
पइसारिय तुरय जले   किय विसल्ल परिमट्ठ ण्हाविय ।
तहिं अवसरे पडिभडेहिं   सउरि पत्थ पायरथ जाणिय ॥

(मंजरी)

दिण्ण तूर किय-कलयल उक्खय पहरण ।
उद्ध-सोंड णं सीहहो धाइय मत्त वारण ॥

मरु विंधहु वेढहु धरहु लेहु   णिय-सामिय-कज्जावसरु एहु
णारायणु समरे अ-जुज्झमाणु   ण समप्पइ पवर तुरंग-अण्हाणु
एक्कल्लउ पत्थु धरत्थु जाव   आढवहो अक्खत्तें मिलेवि ताव
किं जोहिउ पुणु रह-पत्त पत्थु   पडिवारउ तुम्हहं वले अणत्थु
अण्णोण्णुच्छाहिय कुरुव ढुक्क   मयरहर व णिय-मज्जाय-चुक्क
वंगंग-कलिंग-रिसिक्क-राय   दूसासणु दूसासणहो भाय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रह तुरय गइंद णरिंद सव्व ओए-वि अवर-वि किय-गरुय-गव्व
सर-लक्खेहिँ छाइउ सव्वसाइ णव-पाउस-मेहेहिँ विंझु णाइं

घत्ता

एक्कु धणंजउ रिउ बहुअ एत्तियहँ-मि धरेवि ण सक्किकउ ।
मज्झे गइंदहं मत्ताहं पंचाणणु जिह परिसक्किउ ॥

[५]

(मात्रा)

कण्ण-चामर-वइजयंतीउ
पक्खरय-घंटा-जुयइं पुरउ गेज्ज-णक्खत्तमालउ ।
सहुं करिहिं कडंतरिय पाय-रक्ख-पय-रक्ख-सुहडउ ॥

(मंजरी)

छिण्ण टंक हय हयवर-गय-रह-चक्कइं ।
णर-णरिंद-किंकर-कर-सिर-सीसक्कइं ॥
अणवरय-णीरे परिहत्थे पत्थे गंडीउ वियंभइ वाम-हत्थे
णेयरु करु दीसइ तेत्थु काले तोणीर-सरासण-अंतराले
हरि एक्कवार ओसरइ जाम सय-वार करइ संधाणु ताम
अपमाण बाण पेसिय णरेण णं चउ-दिसु किरण दिवायरेण
तहो थायहो पउ-वि ण देइ एक्कु जुत्तारेहिं जोइउ एक्कमेक्कु
ण तुरंगु ण संदणु ण-वि गइंद ण पडाय ण छत्त णो णरवरिंद
जसु भीम-भुवंगम-दीहरंग दस वीस तीस तोमर ण लग्ग
तो सूएहिं कुरु-णर-घायणाहं रह ढोइय णर-णारायणाहं
आरूढ पणट्ठइं साहणाइं पायत्थइं छंडिय-वाहणाइं

घत्ता

ताम पराइउ कुरुव-पहु मंभीस देंतु णिय-भिच्चहं ।
अग्गए विहि-मि परिट्ठियउ णं णव-घणु चंदाइच्चहं ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[६]

(मात्रा)

गुरु-समप्पिय-दिव्व-कवचेण
पच्छाइय णियय-तणु दसहि सएहिं ढक्का-मयंगहं ।
सहसेण महारहहं सय-सएण उत्तम-तुरंगहं ॥

(मंजरी)

पत्तएण साहणेण परिट्ठिउ अग्गए ।
अ-णयणेण धुरे पुच्छिउ णिय-बले भग्गए ॥

किं कज्जें णासइ णर-णिवहु किं करइ पत्थु किं कुरुव-पहु
तं णिसुणेवि अक्खिउ संजएण सुणु जं किउ पढमु धणंजएण
बलु सयलु भग्गु दुम्मरिसणहो गय-घड घाइय दूसासणहो
गुरु भणेवि दोणु परिवज्जियउ कियवम्मउ सरेहिं परज्जियउ
पुणु माणइ-मइंद-सुआउहहं जीवियइं हियइं गहियाउहहं
स-सुदक्खिण आउ चयारिथय अंवट्ठ-विंद-अणुविंद मय
पायालहो कड्ढिय अमर-सरि जोत्तारेहिं पाइय ण्हविय हरि
अवरु वि जं काइ-मि किउ णरेण तं कहिउ सव्वु एक्कक्खरेण

घत्ता

बिहिं रहिएहिं बिहिं रहवरेहिं बिहिं सूएहिं बलु ओट्ठद्धउं ।
एक्कहिं मिलेवि मणिदिएहिं तिहुयणु असेसु णं खद्धउं ॥

[७]

(मात्रा)

गुरु विगरहिउ कुरु-णरिंदेण
पइं वारे परिट्ठिएण केम वूहे अज्जुणु पइट्ठउ ।
किं दोणु ण होहि तुहुं किं ण अत्थ किं साउ झुट्ठउ ॥

(मंजरी)

किं ण तोणं किं ण-वि सर किं ण सरासणु ।
किं ण सामि हउं किं ण महारउं पेसणु ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जं वेहाइद्धउ दिट्ठु कुरु तं लग्गु चवेवए दोणु गुरु
अज्जुणु जुवाणु जगे पायडउ हउं कुरुव-राय पुणु थेरडउ
ण पहुच्चहि अप्पुणु करहि रणु लइ अत्थइं लइ देहायरणु
इंदहो अंगिरसहो सुर-गुरुहो सिहि-वइसहो मज्झु तुज्झु कुरुहो
अइ हत्थोहत्थिए अप्पियउ णउ वज्ज सुरेहि-मि कप्पियउ
तो तेण होइ दूणाहिवहो णं अयसु चडाविउ पत्थिवहो
करयले धणु स-सरु परिट्ठविउ वकत्तणु विउणउं णाइं किउ

घत्ता

तुहुं ण पहुच्चहि अज्जुणहो भमरावहि-भुय-सर-दंडेहिं ।
घग्घर-गुण-धणु-गुण-रवेण णं वुत्तु काय-कोयंडेहिं ॥

[८]

(मात्रा)

स-सरु सरासणु कवउ(?) तं लेप्पिणु
दुज्जोहणु आथउ (?) पभणइ भिच्च थक्कहो म भज्जहो ।
एक्कहो जि रिउ-संदणहो पुट्ठि देंत रणे किं ण लज्जहो ॥

(मंजरी)

खत्तियाहं तं कुल-धणु जं पहरिज्जइ ।
जसु जएण सुर-वहु मरणेण लइज्जइ ॥
सामिय-सम्माण-दाण-रिणहो एहु अवसरु सीसइं विक्किणहो
ओसरेवि लहेसहु कवण गइ को महु जीवंतहो परिहवइ
पेक्खंतु सुरासुर गयण-वहे लायमि सर-धोरणि पत्थ-रहे
पाडमि धय-यट्ठि पवंगमहो सहुं गरुडें चिंधु तिविक्कमहो
भंजमि गंडीउ धणंजयहो सउरिहे सारंगु रणुज्जयहो
दोमइहे करमि विहवत्तणउं भाणुवइहे घरे वद्धावणउं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गंधारिहे देमि अणंत दिहि कोंतिहे वड्ढारमि सोय-सिहि
जय-लच्छि समप्पमि कउरवहं दावमि जम-पट्टणु पंडवहं

घत्ता

एम भणेवि णराहिवइ धणु-लोल-ललाविय-जीहहं ।
धाइउ णर-णारायणहुं णं एक्कु हत्थि विहिं सीहहं ॥ १४

[९]

(मात्रा)

एत्थु अवसरे रिट्ठ-णिट्ठवणु
कंसासुर-पलय-करु वासुएउ दक्खवइ पत्थहो ।
कुरु-णाहु समावडिउ एक्कु मूलु सव्वहो अणत्थहो ॥

(मंजरी)

एण-वि विसु दिण्णु भीमहो जउहरु वालियउं ।
महिय-अद्धु जूय-च्छलेण उद्दालियउं ॥
एहु अंकुरु भारह-तरुवरहो एहु कारणु दाइय-मच्छरहो
एहु दणु दोमइ केस-ग्गहहो वणवासहो अरणिहे गोग्गहहो
तं एण जे संधि-कज्जु ण किउ एण जे समरंगणु आढविउ
सरि-सुय-भयवत्तहं एहु जे खउ माराविउ णंदणु एण तउ
एहु दुण्णय-दुज्जस-कुसुम-सहो( ) एहु फलु अवराह-महा-दुमहो
कलिरुक्खहो मूल-जालु खणहो को काल-खेउ लहु आहणहो
भडु भणइ भडारा महुमहण एहु दुम्मइ समर-भरुव्वहण
चुक्कइ एत्तडेण अ-मारियउ जं भीमें थुत्थुक्कारियउ

घत्ता

पूरिउ देवयत्तु णरेण दिज्जइ णिय-संखु अणंते ।
णं तिहुवणु उवसघरेवि विहिं वयणेहिं हसिउ कयंते ॥ १४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१०]

(मात्रा)

पलय-घंघलु दिण्ण-रण-तूरु ।
घण-घोस-समुद्द-रउ णारसीह-ओरालि-भीसणु ।
हर-हास-सहास-समु दस-दिसा-विसट्टंत-णीसणु ॥

(मंजरी)

सुरवरेहिं तो दुंदुहि दिण्ण णहंगणे ।
भिडिय पत्थ-दुज्जोहण वे-वि रणंगणे ॥
ते वे-वि पंडु-धयरट्ठ-सुय णग्गोह-रोह-पारोह-भुय
सोवण्ण-पवंग-भुवंग-धय सुर-वहु-कडक्ख-विक्खेव-हय
स-धणुद्धर दुद्धर दुव्विसह तुरमाण-तुरंगम-गमिय-रह
मणि-कुंडल-मंडिय-गंडयल रण-रामालिंगिय-वच्छयल
दोमइ-भाणुवइ-लद्ध पसर भुयइंद-भयंकर-भूरि-सर
कंपाविय-सायर-स-धर-धर × × ×
परिचिंतिउ मणे णारायणेण होएवउ केण-वि कारणेण
कुरु कासु-वि बलेण परिप्फुरइ अवरेण पयारेण वित्तुरइ (?)
तो माग-गइंदारोहणेण पच्चारिउ णरु दुज्जोहणेण

घत्ता

देवेहिं दिण्णइं जाइं तउ लइ ताइं पत्थ दिव्वत्थइं ।
दुक्खइं अणवेल्लियइं जिह जा सव्वइं करइ(? मि) णिरत्थइं ॥

[११]

(मात्रा)

तुहुं विहंदलि वे-वि वलयाइं
रूवेण महिलामएण महिल-मज्झे-णच्चंतु सोहहि ।
गोवीहिं य विग्गोवियउ णंद-गोव-गोहणइं रक्खहि ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(मंजरी)

अक्खु संढ गोवालेहिं कहि महि भुत्तिय ।
कइयवेहिं किं लब्भइ पर-कुलउत्तिय ॥

स-कसाएं कुरु-परमेसरेण अक्कोसेवि स-सर-धणु-धरेण
तिहिं णरु वाणरु वारहेहिं हउ णारायणु णवहिं णिरत्थु कउ
णाराय-चउक्कें चउ तुरय विहिं वे-वि णिवाइय पाण-गय
छहिं अट्ठहिं विद्ध कइद्धएण गय ते-वि णिरत्थ खणद्धएण
पुणु मुक्क चउद्दह पवर सर गय ते-वि कुमित्त व णिप्पसर
पुणु वीस विसज्जिय विहल गय आराहण रहियहं मंत-पय
हरि हसिउ लहसिउ गंडीव-धर कइयहु वि ण गय अकयत्थ सर
राहाहवे खंडवे सुर-समरे तव-तालुय-वम्म-वहावसरे

घत्ता

जो जसु गोग्गहे लद्धु पर भययत्त-तिगत्त-महाहवे ।
पेक्खमि तासु विणासु हउं उप्पण्णु महाहउ माहवे(?) ॥ १४

[१२]

(मात्रा)

किं ण करयले स-सरु गंडीउ
किं तोणा-जुयलु ण-वि किण्ण हत्थ किं गुणु ण भल्लउ ।
किं पवर तुरंग ण-वि किं ण सूउ किं रहु ण भल्लउ ॥

(मंजरी)

किं-ण पत्थु तुहुं किं ण उ हउं णारायणु ।
कुरुहे जेण णउ लग्गइ एक्कु-वि पहरणु ॥

पणवेप्पिणु पंडु-पुत्तु चवइ जस-हाणि केम महु संभवइ
णेयारु जासु तुहुं महुमहणु दुज्जोहणु तासु कवणु गहणु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एत्तडिय वार चिंतंतु थिउ   कहो वलेण एण संगामु किउ
किं वंभहो रुद्दहो दिणयरहो   किं धणयहो जमहो पुरंदरहो
किं अवरें केण-वि दिण्णु वरु   किं तुहुं पसण्णु सारंग-धरु
किं दइवें लोह-पिंडु घडिउ   किं वज्ज-खंडु रहवरे चडिउ
मइं एवहिं णवर वियप्पियउ   जिह दोणें कवउ समप्पियउ
महिलए जे होंवि आढविउ रणु   कहिं मिगु कहिं विसइ सीह-भवणु

घत्ता

तउ पेक्खंतहो महुमहण   कुरु देहावरणु जे दारमि ।
तरु-कोडरेहिं भुवंग जिह   भुय दंडेहिं सरइं पइसारमि ॥ १४

[१३]

(मात्रा)

हरि णवेप्पिणु पंडु-पुत्तेण
वाणासणि पट्ठविय   हय तुरंग जोत्तारु विद्धउ ।
रहु खंडिउ छिण्णु धणु   थरहरंतु पाडिउ महद्धउ ॥

(मंजरी)

खुडिउ छत्तु महिमंडले-वि थिउ अ-सहाइउ ।
दंड-हीणु जिह कुरुवइ तिह पच्छाइउ ॥
दुज्जोहण-मण-संताव-कर   दसमिहिं अंगुलियहिं गमिय सर
णं केवइ-सूइहिं भमर गय   णं वर-जुवइहिं सहुं वीर सय
णं रवियर अवर-दिसा-मुहेहिं   वण-दव-फुलिंग णं गिरि-मुहेहिं
णं विसहर भवणेहिं अप्पणेहिं   तिह सर पइट्ठ णह-दप्पणेहिं
णं उद्ध-बाहु रिसि तउ करइ   पच्छाउहुं पउ पउ ओसरइ
णं कहइ असेसहो सुरयणहो   हउं अणहियारि तव-णंदणहो
विणु कज्जें कइ विण मारियउ   सूइउ णहेहिं पइसारियउ

घत्ता

कें एकल्लउ सर-णियरु   अण्णु-वि जो परु संतावइ ।
छिद्द-पडिच्छउ विद्धणउ   णह-सम पीड विहावइ ॥ १३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१४]

(मात्रा)

भग्गु कुरुवइ भग्गु कुरु-सेण्णु
विहडाविय हत्थि-हड भिण्णु वूहु पंचालि-कंतेण ।
गंडीउ विप्फारियउं पंचयण्णु पूरिउ अणंतेण ॥

(मंजरी)

धणु-रवेण हरि-संख-रवेण रउद्देणं ।
रसिउ णाइं वड्ढंतए मद्देण समुद्देणं ॥

विहिं सद्देहिं वहिरिउ कुरुव-वलु णं कण्णहो भिण्णु कण्ण-जुयलु
किउ कंपिउ कंपिउ सल्लु मणे सलु सल्लु जेम उड्डविउ खणे
तो दुण्णय-सलिल-महद्दहहो धणु हत्थहो पडिउ जयद्दहहो
णित्थामिउ आसा-थामु हुउ भूरीसउ रवेण जे णाइं मुउ
विससेणु णाइं घारिउ विसेण णं पडिउ वज्जु धणुव-मिसेण
भय जाय परोप्परु कुरु-जणहो पेक्खंतहो अवत्थ दुज्जोहणहो
अज्जुणु ण आउ आयउ मरणु कहिं णासहुं पइसहुं कहो सरणु
एक्कु जे तिहुयणु उवसंघरइ विहिं कहिउ के-वि किं उव्वरउ

घत्ता

धुउ मरिएवउ कउरवेहिं धयरट्ठहो सिह भंजेवी ।
णरहो पहावें पंडवेहिं महि सयल सइं भुंजेवी ॥ १४

*

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभुएव-कए बासट्ठिमो इमो सग्गो ॥

⊕

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेसट्ठिमो संधि

कुरुव-णराहिवे भग्गए गंडीव-ल्लाविय-जीहेण ।
दिट्ठु जयद्दह-हरिणउ रण-काणे अज्जुण-सीहेण ॥ १

[१]

(दुवई)

णिय-गब्भरूव-विओइयउ करि-व जूह-विच्छोइयउ ।
पडिगय-वह-लालस-मणउ भमइ भग्ग-तरु वारणउ ॥ १

णर-णारायणाहिं पइसंतेहिं रह-चक्क-चिक्कारु करंतेहिं
फुरहुरंत-तुरमाण-तुरंगेहिं चिंध-ग्गलग्गहं गरुड-पवंगेहिं
णिय-कंबुव-वर-धणु-टंकारेहिं वहिरिउ सयलु भुअणु फुक्कारेहिं
पहु-सम्माण-दाण-रिण-घत्था रिक्ख-समप्पह पहरण-हत्था ४
रहसुद्धाइय अट्ठ महारह भूरीसव-किव-कण्ण-जयद्दह
सल-विससेण-सल्ल-गुरुणंदण गिरिवर-गरुओवाहिय-संदण
अज्जुण थाहि थाहि कहिं गम्मइ एवहिं समर-महापिडु रम्मइ ८
जिह भुव-दंड भिण्ण कुरु-रायहो तिह उरु ओड्डुहि सर-संघायहो

घत्ता

देवि महारण-तूरइं अट्ठहि-मि करेप्पिणु करयलु ।
वेढिउ खंडव-डामरु णं दिस-गयवरेहिं महि-मंडलु ॥१०

[२]

(दुवई)

विहडाविय-रिउ-जलहरउ उज्जोइय-समरंवरउ ।
सर-किरणोह-भयंकरउ तवइ धणंजय-दिणयरउ ॥ १

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तो तिहिं भल्लेहिं सव्वायामें   विद्धु विरुद्धें आसत्थामें
तेहत्तरिहिं णिहउ महुसूयणु   एक्कें कणय-महाकइ-केयणु
चउहिं तुरंगम कह-वि ण घाइय   तेण-वि तहो छम्मग्गण लाइय
छव्विससेणहो वारह कण्णहो   भूरीसवहो तिण्णि छ विगण्णहो
सव्व-पत्थ-पत्थिव-पडिमल्लहो   सउ अट्ठोत्तरु लाइय सल्लहो
भूरीसवेण णिहउ तिहिं वाणेहिं   कण्णें वारह परिसंखाणेहिं
पंचहिं पंचाहिव-दायाएं   तेहत्तरिहिं जयद्दह-राएं
दसहिं किवेण णवहिं मद्देसें   सट्ठिहिं गुरु-सुएण सविसेसें

घत्ता

वीसहिं विसम-खुरुप्पेहिं   आउंखिउ देवइ-णंदणु ।
मलय-महागिरि-मत्थए   णं कसण-फणिंदें चंदणु ॥

[३]

दुवई

वणयर-वाह-णिवद्ध-कमउ   दस-गुण-वड्ढिय-विक्कमउ ।
आयामिय-जूहाहिवइ   वियरइ णरहो णराहिवइ ॥
दसहिं कण्णु तिहिं कण्णहो णंदणु   तिहिं भूरीसउ कंचण-संदणु
किउ सर-सयहो चउत्थें भाएं   सिंधउ सएण पडु-दायाएं
गुरु-सुएण ओसरिउ जणद्दणु   भूरीसवेण पुरंदर-णंदणु
सयल-वि ते गंडीव-विहत्थें   सएण सएं विणिवारिय पत्थें
घाइउ सल्लु हुवासण-वीयए   धय-धूवए कंचणमय-मीयए
सिंधउ सूयरेण सोवण्णें   हत्थें कक्खकिय-विंधए कण्णें
वसहु किवेण मोरु विससेणें   हरिणंगूलहो णिग्गुण-थाणें

घत्ता

हरि चामीयर-गारुडेण   णरु वाणरेण सोवण्णेण ।
पक्क-रहेण वियंभइ   सर-णियरें अगणिय-गण्णेण ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[४]

(दुवई)

लक्खइं जेण परज्जियइं   कियइं मडप्फर-वज्जियइं ।
तहो दह-हरिणाहय-करिहे   धुर धरंति कउ केसरिहे ॥ १
मुहु मुहु पंचयण्णु ओरुंजइ   मुहु मुहु गुणु गंडीवहो रुंजइ
मुहु मुहु पंचयण्णु जगु बहिरइ   मुहु मुहु गुणु गंडीवहो वियरइ
मुहु मुहु पंचयण्णु भेसावइ   मुहु मुहु गुणु गंडीवहो तावइ ४
एम महाहउ जाउ भयंकरु   वड्ढइ कुरु-णर-णरहं परोप्परु
धाइउ ताम दोणु दुप्पेच्छहं   उप्परि सोमय-सिंजय-मच्छहं
कइकय-पंडु-पुरा-पंचालहं   अवसेसहं-मि महा-महिपालहं
जाउ अजायसत्तु-किविकंतहं   संगरु वग्घदंत-सिणिपुत्तहं ८
भीमालंबुस-णउल-विगण्णहं   धाइय अण्ण रणंगणे अण्णहं

घत्ता

माणियइं जुज्झइं   पंडव-कउरव-सामंतहं ।
जायइं णिब्भज्जायइं   णं जमहं परोप्परु-खंतहं ॥ १०

[५]

(दुवई)

करिणी-विरह-विसंठुलइं   जस-विसकंदुकंठुलइं ।
एक्कमेक्क-वहणाउलइं   रण-वणे भिडियइं करि-कुलइं ॥ १
तो तव-सुएण णवहिं णाराएहिं   तच्छिउ कुरु-गुरु णवहिं जे धाएहिं
सइ-संजमिअक्खय-तोणीरें   दोणें सधर-धराधर-धीरें
पंचवीस सर मुक्क खणंतरे   पडिवउ वीसहिं विद्धु थणंतरे ४
पंडव-णाहु महावइ पाविउ   सुर-णिहाउ संदेहे चडाविउ
वणिय तुरंगम सारहि ताडिउ   करहरभाणु महाधउ पाडिउ
विण्णि वार वाणासणु खंडिउ   णिग्गुणु दुक्कलत्तु जिह छंडिउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडिवउ धाइउ बाण-सहासेहिं   हाहाकारु समुट्ठिउ पासेहिं   ८
लइ लइ लइउ लइउ तव-णंदणु   पंडव-लोउ परिट्ठिउ दुम्मणु

घत्ता

ताम विओयर-जेट्ठेण   सोवण्ण सत्ति रणे घत्तिय ।
आसत्थामहो बप्पेण   बंभत्थें एंति विहत्तिय ॥   १०

[६]

(दुवई)

जं तव-तणउ णिरत्थु किउ   असरु सरासणु लेवि थिउ ।
पडिबंभत्थु विसज्जियउं   दोणहो चाउ विहंजियउं ॥   १
मुक्कइं एम विहि-मि बंभत्थइं   सुकइ-पयाइं व गयइं कियत्थइं
बाणासणइं विहि-मि रणे छिण्णइं   विहि-मि सरीरावरणइं भिण्णइं
धाइय वे-वि गयागणि-करयल   उक्खय-खंभ णाइं वर मयगल   ४
विहि-मि परोप्परु कह-व ण मारिउ   तो सहएवें पहु ओसारिउ
णियय-महारहेण णिव्वाहिउ   संदणु दुम्मुहेण तो वाहिउ
वलु वलु राउ वुत्तु कहिं गम्मइ   सुर पेक्खंतु परोप्परु हम्मइ
एम भणेवि सट्ठि सर पेसिय   महि-सुएण दसहिं णीसेसिय   ८
अवरें धउ अवरें धणु घट्टिउ   अवरें सारहि-सिरु णिग्घट्टिउ

घत्ता

अवरेहिं चउहिं तुरंगम   अवरेण महारहु खंडिउ ।
अच्छउ पडिपहरेवउ   जहिं रणु सो देसु वि छंडिउ ॥   १०

[७]

(दुवई)

रह खत्तियपणु क्खिवत्तिएण   चडिउ णिरामंत्ताहो तणउं ।
सो सहएवं णिट्ठविउ   वइवस-पट्टणु पट्ठविउ ॥   १
दुम्मुहु झंप देवि गउ णिय-वलु   ण किउ जेण किउ तेण वि कलयलु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ताम विकण्णु समच्छरु धाइउ सरु सहएव-मडुद्धए लाइउ
णउले अंतरे वाहिउ संदणु जाउ महंतु विहि-मि कडवंदणु
मद्दी-सुयहो परक्कमु वुज्झेवि भग्गु विकण्णु ण सक्किउ जुज्झेवि
तहिं अवसरे रण-रामासत्तहो खेमपुत्ति धुत्तिहिं विहसंतहो
रहु विद्धंसिउ छिण्णु सरासणु पाडिउ सीसु णाइं थेरासणु
वग्घदंतु वग्घाजिण-संदणु धणु-करयलु मगहाहिव-णंदणु
धाइउ तो सच्चइहे समच्छरु णं झस-रासिहे समुहु सणिच्छरु

घत्ता

केम-वि लद्धावसरेण सो वग्घदंतु सिणि-पुत्तेण ।
उरे कप्परिउ खुरुप्पेण विज्झइरिव रेवा-सोत्तेण ॥

[८]

(दुवई)

वग्घदंते विणिवाइयए सिणि-णंदणे पोमाइयए ।
मगहाहिवेण मउक्कडेहिं परिवेढाविय गय-घडेहिं ॥
तो सच्चइ-णाराय-वियारिउ गय-साहणु असेसु ओसारिउ
तहिं अवसरे ओवाहिय-रहवरु संधिय-सरु आयड्ढिय-धणुधरु
धाइउ धट्ठकेउ वीरहणहो णाइं महागहु गहवइ-गहणहो
वीराहिवेण सरासणु छिज्जइ वेइवेण उरे सत्तिए भिज्जइ
गउ वीराहिउ वइवस-पट्टणु ताम दोणु परवल-दलवट्टणु
धाइउ दोमइ-सुयहं विरुद्धउ णं इंदियहं महारिसि कुद्धउ
पंच-वि पंचहिं पंचहिं कंडेहिं वसह णाइं हय हाणिय-दंडेहिं
तेहिं-मि तिहिं तिहिं विद्धु थणंतरे सोमयत्तु थिउ कुरु-गुरु-अंतरे

घत्ता

रहु केण-वि धउ केण-वि वाणासणु केण-वि ताडिउ ।
जिह णर कलत्तु(?) वलवंतउ स-मउडु सिरु केण-वि पाडिउ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[९]

(दुवई)

पंचहिं तिहिं धाइउ एक्कु जणु ताम णिसायरु कुविय-मणु ।
धाइउ णिय-रहवरे चडिउ अज्जुण-जेट्ठहं अब्भिडिउ ॥
भिडिय भडुब्भड भीमालंवुस मत्त महागय णाइं णिरंकुस
विण्णि-वि वावरंति विण्णाणेहिं कप्पिय-पुंख-सिलासिय-वाणेहिं
णवहिं विओयरेण धारायरु तेण-वि पंचहि तव-सुय-भायरु
एम परोप्परु पिहिउ पिसक्केहिं दूसह-दिणयर-कर-लक्केहिं
आरिसलिणि समरे संतावइ पंडु-पुत्तु केत्तहे-वि ण पावइ
जुज्झिउ ताम जाम मुच्छाविउ कुरुव-वलहो रोमंचु चडाविउ
णिसियरेण पंडव-परिपालहं हयइं चयारि सयइं पायालहं ८
चेयण-भाउ लहेवि विओयरु उट्ठिउ णर-णरवइ-एक्कोयरु

घत्ता

उब्भड-भिउडि-भयंकरु आयंबिर-लोयणु कुद्धउ ।
दिट्ठु भीमु कुरु-लोएण णं सुएवि कयंतु विउद्धउ ॥ १०

[१०]

(दुवई)

कोवारुण-किरणावरिउ पहरण-विंवालंकरिउ ।
सर-धउ-तेय-भयंकरउ उइउ विओयर-दिणयरउ ॥ १
तो रयणीयरेण आसोइउ वलु मारुइ कहिं जाहि अ-घाइउ
अज्जु मित्त लइ लइ उरे ढुक्कहि मइ जिअंते जीवंतु ण चुक्कहि
तो वरि णासु णासु मिल्लु भायह अंगु ण सक्कहि ओड्डेवि धायहं ४
जइ भुक्खिएण कहि-वि मइं भुञ्जहि तो भुउ एक्कु-वि कवलु ण पुज्जहि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुहुं सो भीमु हिडिंबि-पियारउ   तुहुं सो भीमु वगासुर-मारउ
तुहुं सो भीमु भीम-किम्मीरहो   जीविउ जें पिउ मइउ सरीरहो
तुहुं सो भीमु जडासुर-घायणु   तुहुं सो कीया-कुल-णिणवायणु ८
तुहुं सो दूसासणु मारेसहि   तुहुं कुरु-णाहहो मउडु मलेसहि

घत्ता

तुहुं सो रक्खस-डामरु   उब्भडु भज्जहि भड-वाएण ।
णवर महुत्तणए × ×   मुच्छाविउ एक्कें घाएण ॥ १०

[११]

(दुवई)

धणु-इंधण-संधुक्कियउ   वाण-फुलिंगालुंखियउ ।
धय-धूमावलि-भीसावणउ   पज्जलियउ भीम-हुवासणउ ॥ १
विद्धु अलंवुसु एक्कें वाणें   णवर वियंभिउ विज्जा-पाणें
खणे वराहु खणे मत्त-महाकरि   खणे सद्दूलु रिक्खु खणे केसरि
खणे आरण्ण-महिसु खणे तरुवरु   खणे कुल-पव्वउ खणे वइसाणरु ४
खणे मयारि सु खणंतरे सायरु   खणे ससहरु खणे होइ दिवायरु
चिंतेवि पंडव-कुल-पायारें   विद्धु महाउहेण तट्ठारें
णिसियर-णाहहो णट्ठउ मायउ   केत्तहे गयउ ण केण वि णायउ
कह-व कह-व सो मरणु ण पत्तउ दोणहो पासु पइट्ठु तुरंतउ ८
ताम स-पहरणु अग्गए ढुक्कउ   णं आयासहो पडिउ घुडुक्कउ

घत्ता

पभणिउ आरिससिंगि रणे   वलु वलु कहिं एवहिं गम्मइ ।
कुरु-पंडवहं णियंताहं   विहिं एक्कु रणंगणे हम्मइ ॥ ९

[१२]

(दुवई)

कुरुवइ-तव-सुय-किंकरहं   माया-रूव-भयंकरह ।
जाउ महाहउ ढुक्काहं   आरिससिंगि-घुडुक्काहं ॥ १

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तो खयकाल-दूय-पडिबिंबें   बीसहिँ सरेहिँ विद्धु हडिंबें
सो-वि अलंवुसेण अ-पमाणेहिँ   चित्तभाणु-सम-प्पह-बाणेहिँ
जं जं करइ रूउ भीभंगउ   तं तं फुसइ रक्खु रोसंगउ
तो पंडव-पत्थिवेहिँ पयत्तें   मिलेवि असेसेहिँ लइउ अखत्तें
बाण-सएण दुमय-दायाएं   णवहिँ विओयरेण पिहि-काएं
राय-चउत्थएण तिहिँ सट्ठिहिँ   पंचमेण पंचहिँ सर-लट्ठिहिँ
भीमहो णंदणेण लक्खेहिँ   पंचेहिँ सत्तरिहिँ पिसक्केहिँ
तेण-वि ते जमदंड-समाणेहिँ   ताडिय पंचहिँ पंचहिँ बाणेहिँ

घत्ता

सव्वेहिँ विद्धु पडीवउ   दीहर-णाराय-सहासेहिँ ।
अरुणीकिउ रयणीयरु   णं फग्गुणु फुल्ल-पलासेहिँ ॥

[१३]

(दुवई)

वणिउ असेसेहिँ एक्कु जणु   तो-वि तासु ण-वि फुट्टु मणु ।
सयल-वि सरेहिँ गयाउसेण   छाइय गिरि जिह णव-पाउसेण ॥१

तो फुरंत-णक्खत्त-समाणेहिँ   विद्धु जुहिट्ठिलु सट्ठिहिँ बाणेहिँ
भीमहो पंचवीस सर पेसिय   तिहत्तरि णउलंगे णिवेसिय
तव-सुय-पाय-पओरुह-सेवहो   लाइय पंच बाण सहएवहो
भीम-सुयहो इसु पंच विसज्जिय   तेण-वि ते बारहहिँ परज्जिय
पुणु पंचहिँ सत्तहिँ विब्भाडिउ   छिण्णु महाधउ सारहि पाडिउ
उत्तम-वेग्गु करेप्पिणु रहवरे   धाइउ भीमसेणु तहिँ अवसरे
धुरहिँ धुरग्गु देवि स-विसेसें   धरिउ अलंवुसु बाहु-पएसें
लग्गु भमाडण मुयहं घुडुक्कउ   जाम तइरि जीवेण विमुक्कउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

पुणु घरहिं अप्फालेवि मेल्लिउ णिसियरु भयगारउ ।
कुरुवेहिं दिट्ठु असेसेहिं णं णहहो पडिउ अंगारउ ।। ९

(१४)

दुवई

दिण्णइं तूरइं पंडु-वले सुर परिओसिय गयणयले ।
थिउ कुरु-साहणु भग्ग-मणु तुहिण-दट्ठु णं कमल-वणु ।। १

तो संताविय-रिउ-णिउरंवहो धाइउ कलस-केउ हइडिंवहो
एंतु पडिच्छिउ गुरु जुज्जहाणें विद्धु थणंतरे एक्कें वाणें ४

पडिवा पंचवीस सर-पेसिय किवि-कंतेण णवेहिं णीसेसिय
पडिवउ वज्जसारु सुमसारिउ पंचेहिं देहावरणु वियारिउ
पंचासेहिं सिणि-सुएण स_तोणें वाण-सएण समाहउ दोणें
जाउ णिरुज्जमु रणु परिसेसिउ ताम जुहिट्ठिलेण वलु पेसिउ ८
धावहो जाम ण खयहो पवच्चइ गुरु-दंतंतरे वट्टइ सच्चइ
धाइय सोमय-सिंजय राणा पंडव-कइकय-मच्छ-पहाणा

घत्ता

एहए अवसरे पडिवण्णए रणभर-धुरे जेहिं समिच्छय ।
जिह णइ-णिवह समुदेण ते दोणें एंत पडिच्छिय ।। ११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(१५)

दुवई

एक्क-महारहु आइरिउ णरवर-सएहिं समोत्थरिउ ।
तो-वि ण तीरइ धरेवि रणे हरिणेहिं जिह हरिणेंदु वणे ।।

दुसहु दोणु जाउ तहिं अवसरे णं रवि जेट्ठहो केरए वासरे
विंधइ वलइ धाइ रहु रुंभइ जो ढुक्कइ सो सरेहिं णिसुंभइ ४
कइक्कय पंचवीस रणे घाइय अवर णराहिव बहु विणिवाइय
सोमय-सिंजय-मच्छ-णरिंदहं सउ मारियउ सरहहं गइंदहं
एम करेवि संगामु भयंकरु कलस-केउ गउ णिय-थाणंतरु
वूह-वारे थिउ स-वलु स-वाहणु जाउ णिरुज्जमु पंडव-साहणु ८
ताम समुद्दु जेम गज्जंतउ सुव्वइ पंचयण्णु वज्जंतउ
अज्जुण-धणु-गुण-सद्दु ण सुव्वइ णिज्झुणि देवयत्तु ण विउव्वइ

घत्ता

खणे खणे संखु जणद्दणु सइं भुएहिं लेवि आऊरइ ।
मंछुडु भाइ समत्तु तव-णंदणु हियए विसूरइ ।। ११

*

इय रिट्ठणेमिचरिए धवलइयासिय-सयंभूएव-कए तिसट्ठिमो संधि समत्तो ।।

*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org